असली ख़जाना

,d vUroklh dk vorkj egj ckck dh e.Myh
ds lkFk thou

लेखक

रुस्तम बी फलाहाटी

अनुवाद

मेहेर मनी निगम

सर्वाधिकार सुरक्षित

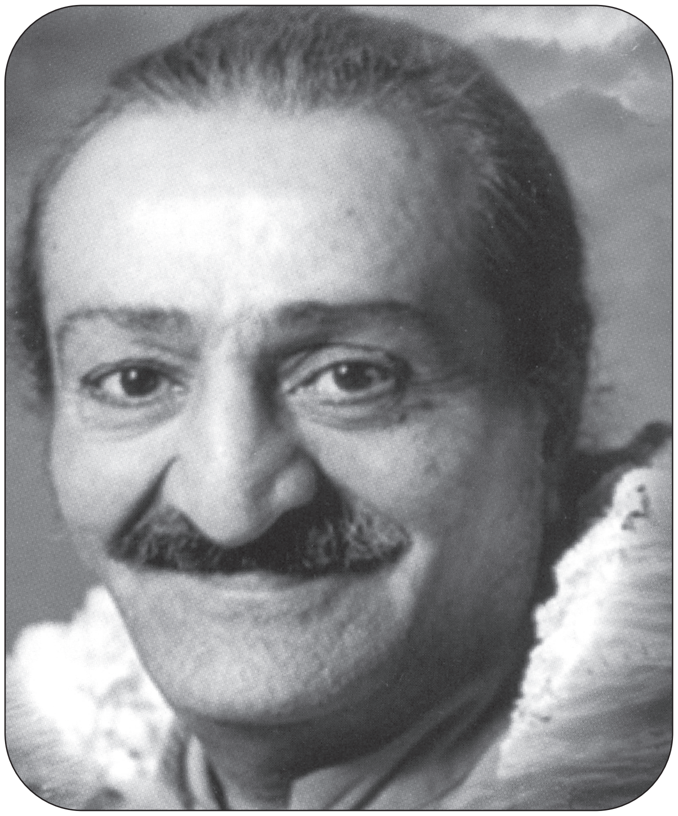
© 2011 रूस्तम बी फलाहाती

असली ख़ज़ाना - IV

प्रकाशक :–
अवतार मेहेरबाबा केन्द्र, अमरावती
नोंदणी क्रं. महाराष्ट्र/३६६४/ अम.९३/एफ–३७४७ अम.
खारकर ले आऊट, विद्यापीठ कॉलनी,
जुना बायपास रोड,अमरावती–४४४ ६०७
फोन नं.०७२१–२५२२१७७
e-mail-ambcamravati@gmail.com

प्रसर्वाधिकार सुरक्षित :–
रुस्तम बी फलाहाटी
अवतार मेहेरबाबा के सारे कथन और फोटो
अवतार मेहेरबाबा परपेचुअल पब्लिक चेरीटेबल ट्रस्ट
अहमदनगर–महाराष्ट्र ४१४००१, भारत

मुद्रक :–
श्री. निशीकांत नानासाहेब डहाणे
स्वस्तीक ऑफसेट प्रिंटर्स, तिरूपती नगर,
शंकर नगर रोड, अमरावती, पिन.४४४ ६०६
फोन न. ०७२१–२६७१९५४



मैं किसी धर्म का नही हूँ।
मेरा धर्म प्रेम है।
प्रत्येक हृदय मेरा मन्दिर है।

अवतार मेहेरेबाबा

समर्पण

मैं यह पुस्तक प्रियतम अवतार मेहेरबाबा के मण्डल के उनसे गहराई से जुड़े हुये, उनके मंडल के शिष्यों को समर्पित करता हूँ जिनके बारे में बाबा ने कहा है कि "वे उनके साथ एक हैं लेकिन पर्दे के पीछे होने के कारण, वे ईश्वर को देख नहीं सकते हैं।"

जय मेहेर बाबा

जुन २०१६ मे श्री रुस्तमजी फलाटी मुंबई इन्होने असली खजाना भाग ४ छपाई करने हेतू, तथा बेचने के लिये श्री राजेन्द्र रोहनेकर को फोन किया इन्होने अमरावती मेहेर बाबा केन्द्र के पदाधिकारीयोसे मिलकर यह किताब छपवाने के लिये बिनती की । और उन्होने तत्काल मान्यता दी । यह किताब छपाई खर्चा हेतू अमरावती केन्द्र के बाबा प्रेमीयो द्वारा आर्थीक योगदान दिया गया । इस तरहसे असली खजाना (भाग ४) सभी बाबाप्रेमी तथा पाठक के सेवा मे प्रस्तृत किया जा रहा है। निम्नलिखीत बाबा प्रेमीद्वारा आर्थिक योगदान मिला।

असली खजाना खंड ४ का किताब छपाई व प्रकाशन

समीती के सदस्योके नाम

१)	श्री. राजेंद्रजी रोहणेकर,अमरावती	9404338831
२)	श्री. दिलीपराव टप्पे, अमरावती	9545216506
३)	श्री. गणेशराव चव्हाण, अमरावती	9423622272
४)	श्री. प्रविणभाऊ मानेकर, अमरावती	9421787028
५)	श्री. राजेंद्रजी तंबाखे, अमरावती	9370163971
६)	श्री. विजयराव धर्मासरे, अमरावती	9422888276
७)	श्री. सुधाकरराव पाटील, अमरावती	8888985893
८)	श्री. राजेंद्रजी कदमसर, अमरावती	9673840099
९)	श्री. एल. के. मानकर,अमरावती	9422888276

विषय सूची

****

आभार

मैं इस पुस्तक को लिखने में प्रियतम मेहेर बाबा की मण्डली के निरन्तर सहयोग और मार्गदर्शन के लिये उनका आभारी हूँ। विशेषरूप से चेयरमैन भाऊ कलचुरी को हार्दिक धन्यवाद जो अपनी व्यस्त दिनचर्या और अस्वस्थता के बावजूद मेरी सहायता के लिये हमेशा तत्पर रहते थे।

मैं मेहेरवान जसावाला को न केवल मुझे और अधिक लिखने को प्रोत्साहित करने के लिये, बल्कि मुझे बहुमूल्य सूचनायें देने के लिये भी धन्यवाद देता हूँ। विशेष रूप से मैं उनको उन सूचनाओं को देने के लिये जब वह बाबा के पास रहते थे तब बाबा ने मण्डली के विषय में जो मत प्रकट किया था, जिसको उन्होंने सुना था जिसके वह गवाह थे, धन्यवाद देता हूँ।

मैं अपनी पत्नी मेहेर को इन कहानियों को लिखने के लिये धन्यवाद देता हूँ क्योंकि मैं अपनी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के कारण स्वयं नहीं लिख सकता था। स्टीव क्लाइन को मेरा धन्यवाद जिन्होंने हर समय स्वेच्छापूर्वक अपनी सेवायें प्रस्तुत कीं। स्टीव का योगदान इतना बहुमूल्य है कि विवादस्पद कहानियों के प्रकाशन के सम्बन्ध में मण्डली के एक जन ने अपना मत प्रगट करते हुए उसकी सिफ़ारिश की थी, ''यदि स्टीव इसको स्वीकृत करता है तो यह दुनियाँ के पढ़ने के योग्य है।'' मैं साइरस और सौम्या खम्बाटा और मीठू गार्ड को धन्यवाद देता हूँ क्योंकि वे हमेशा मेरी सहायता करने के लिये तत्पर रहते थे।

भाऊजी के साथ मेरे सम्पर्क को बनाये रखने में मेरी सहायता करने के लिये जेनिस, शिआना और जोएना को विशेषरूप से धन्यवाद। मैं क्रैग रफ, वार्ड पार्क्स, दवाना, केसी, डाॅ शैली और हैदर नाडेल को धन्यवाद देता हूँ क्योंकि वे मण्डली के साथ अपने अनुभवों की छोटी से छोटी बात भी प्रायः मुझे बतलाते थे।

अन्त में, लेकिन उतने ही महत्वपूर्ण, मैं उन सभी बाबा प्रेमियों की विशाल संख्या को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने अपने हृदयों को प्रेरणा और बाबा के प्रति अपने प्यार के कारण, इन पुस्तकों का विभिन्न भाषाओं में, मुख्यरूप से हिन्दी, मराठी, तेलुगू, फ़ारसी और चीनी भाषा में; अनुवाद किया है।

मैं बाबा के प्रेम में अपने सभी भाई और बहिनों को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने न केवल अपना समय देकर योगदान दिया है बल्कि और अधिक विषय वस्तु लाने के लिये भी मुझे प्रोत्साहित करते रहे हैं। बाबा प्रेमियों के नाम की सूची (लिस्ट) इतनी विशाल है कि प्रत्येक का नाम देने के लिये मुझे अलग से एक ग्रन्थ (भाग) लिखना पड़ेगा। मैं बाबा प्रेमी समुदाय के उस अत्यधिक प्रेम से प्रभावित हूँ जिसकी बौछार उन्होंने मुझपर अपना निरन्तर सहयोग देकर की है।

मैं अपने सभी पाठकों को उनके ई–मेल और फोन कॉल्स के लिये धन्यवाद देता हूँ। आपके बीच में ऐसे कई पाठक हैं जिन्होंने असली ख़ज़ाना पढ़ने के बाद, धन्यवाद देने के लिये मुझे फोन किया। उनसे मैं यह कहना चाहता हूँ कि उन्हें मुझे धन्यवाद न देकर प्रियतम बाबा को धन्यवाद देना चाहिये क्योंकि असली ख़ज़ाना वास्तव में उनके द्वारा लिखी गई है और मैं उनके हाथों में मात्र एक पेन्सिल के रूप में था। दैवीय माली ने विश्व में अपने प्रेमियों के लाभ के लिये इन कहानी रूप फूलों को खिलाया है। न तो मैंने उन्हें लगाया है और न ही उन्हें खिलाया है। उनके दास के रूप में मैंने इन फूलों को केवल प्रस्तुत किया है जिनको दैवीय माली विश्व में अपने प्रेमियों तक पहुँचाना चाहते थे। यह मेरा सौभाग्य था कि अपने कई दासों में से उन्होंने मुझे इस कार्य के लिये चुना, और इन फूलों को उनसे उनके प्रेमियों तक ले जाने की प्रक्रिया में, इनकी महक मेरे हाथों में, वस्तुतः मेरे पूरे अस्तित्व में निरन्तर बनी रही और इसने ही तीव्र कष्ट और पीड़ा के क्षणों में मुझे संभाला है। इसी कारण से मैं उन पाठकों को धन्यवाद देता हूँ जो फोन करके बहुधा विभिन्न प्रश्न पूँछते थे तथा उन कहानियों की खोज में, असली ख़ज़ाने से कुछ रत्नों की खोज में, स्मृति की तंग गली में भटकने के लिये मुझे बाध्य करते थे जिनको मैं उनके प्रेमियों तक पहुँचाना भूल गया था।

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि कोई भी बाबा प्रेमी जो इन सन्देशों को अपनी ज़िन्दगी में अपनायेगा, वह यह पायेगा कि ये प्रभाव डालते हैं। ये जादू की तरह कार्य करते हैं। वास्तव में, केवल यही चीज़ कार्य करती है जब अन्य सबकुछ निष्फल हो जाता है। इन कहानियों को केवल पढ़ो ही नहीं बल्कि इन कहानियों के सन्देशों को अपनी ज़िन्दगी में कार्यान्वित करो और तब तुम्हारी अपनी ज़िन्दगी असली ख़ज़ाना बन जायगी। प्रत्येक व्यक्ति को इन

फूलों को, जिन्हें दैवीय माली ने दिया है, अपने हृदयों में रोपना चाहिये, जहाँ अधिकतर इच्छाओं के पौधे अपने आप उग आते हैं। समुचित देखभाल से, ये फूल प्रत्येक के हृदय में कई गुना होकर इच्छाओं के अवांछनीय पौधों को पूर्णरूपेण हटा देंगे और उस अनन्त प्रेम का अनुभव करने में प्रत्येक की सहायता करेंगे जो स्वय उसके अन्दर है, जिसकी प्रत्येक जीवात्मा खोज करती है।

यात्रा दुर्गम और कठिन है लेकिन पुरस्कार किये गये प्रयासों को न्यायोचित सिद्ध करते हैं। तुम्हारे अन्दर, माया के प्रलोभन जो तुम्हें अति सूक्ष्म तरीकों से मार्ग से भटकाने का प्रयत्न करते हैं– और यथार्थता–जो तुम्हें निरन्तर इशारा करके अपनी ओर बुलाती है– के मध्य निरन्तर एक युद्ध होगा। कभी–कभी तुम असफल होगे जैसा होना निश्चित है। तुम यह भी अनुभव करोगे कि बाबा पर तुम्हारी पकड़ छूट रही है, लेकिन विश्वास करो कि तुम्हारे द्वारा ईमानदारी से किये गये प्रयास का छोटे से छोटा संकेत भी तुम्हारी ओर उनका ध्यान आकर्षित करने के लिये पर्याप्त होगा। यहाँ तक कि जब तुम असफल होते हो और तुम्हारी पकड़ छूटती है, वह तुम्हें पकड़े रहेंगे। वस्तुतः वह तुम्हें उस स्थिति से होकर ले जा रहे होते हैं। इसलिये आशा और विश्वास रखो और, उनका बनने के लिये तीव्र लालसा और साहस होना चाहिये। शेष वह संभालेंगे। इस पर विश्वास करो।

जिन्होंने असली ख़ज़ाना को पसन्द किया, उन अनेक पाठकों में से मुट्ठी भर कुछ पाठक ऐसे भी थे जिन्हें यह लगा कि जिस तरह मैंने मण्डली को महिमा मंडित किया है, वह न्यायोचित नहीं था। उनसे मुझे यह कहना है कि मैंने ईमानदारी से वही व्यक्त किया है जो मेरे हृदय ने उनके साथ रहकर अनुभव किया है और समझा है। मुझे केवल एक बात का पश्चाताप है; भाषा की सीमितता पूर्ण न्याय नहीं कर सकी है– उनके साथ रहकर और उनके बारे में मैंने जो असीम महानता का अनुभव किया है, उसे भाषा व्यक्त करने में असफल रही है। मै उन पाठकों को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने सुगन्ध के उस नैसर्गिक गुण को उन तक पहुँचाने की मेरी सीमाओं से मुझे अवगत कराया जिसका प्रतिनिधित्व मण्डली करती है।

अन्त में, जब मैं अपने प्रियतम के सामने उन्हें धन्यवाद देने के इरादे से खड़ा हूँ, मैं अवाक् हूँ। अपने हृदय की कृतज्ञता को व्यक्त करने के लिये मैं

किन शब्दों का प्रयोग कर सकता हूँ जब कि उन शब्दों का स्वयं का अस्तित्व उनसे है? कोई अपने सृजनकर्त्ता को कैसे धन्यवाद दे सकता है? किन शब्दों का वह प्रयोग कर सकता है? क्योंकि उन शब्दों का स्वयं का स्रोत भी सृजनकर्ता–प्रियतम अवतार मेहेर बाबा– से है। सूर्य के प्रकाश की कोई किरण सूर्य को कैसे धन्यवाद दे सकती है? उसका स्वयं का अस्तित्व ही उसके कारण है।

मेरा हृदय रोता है जब मुझे यह एहसास होता है कि अपने प्रियतम को अर्पित करने के लिये मेरे पास अपना कुछ भी नहीं है। वह केवल असली लेखक ही नहीं हैं अपितु इस पुस्तक के सभी पात्र, मुद्रक, पाठक और पुस्तक भी स्वयं वे ही हैं। ये सब वह ही हैं। उनके अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। केवल वह ही हैं। मैं इस सृजनकर्त्ता सृष्टि के उद्‌गम– प्रियतम अवतार मेहेर बाबा–को खामोशी से अपना सबकुछ अर्पित करता हूँ।

मैं अपना हृदय खामोशी से उनके चरण कमलों में रखता हूँ क्योंकि असली ख़ज़ाना के मूल में वह ही हैं जिन्हें हम सभी खोजते हैं।

****

असली खज़ाना भाग III का लेखन

जब मैंने असली ख़ज़ाना भाग–II (२) लिखना समाप्त किया, मैंने अनुभव किया कि मैं सबकुछ कह चुका हूँ और पाठकों तक पहुँचाने के लिये कुछ भी बाकी नहीं था। इसलिये जब बाबा प्रेमी इस विषय पर और अधिक लिखने का अनुरोध करते थे, उनको मेरा उत्तर होता था, ''यदि तुम असली ख़ज़ाना भाग १ और २ में मण्डली द्वारा दिये गये सन्देशों को जीते हो, तब तुम्हारी स्वयं की ज़िन्दगी ही असली ख़ज़ाना का अगला भाग होगी। इसके अतिरिक्त, मेरे पास अच्छी कहानियाँ समाप्त हो गई हैं।''

एक दिन मेहेराबाद में मैं टेड जडसन से टकरा गया। उसने मुझे बतलाया कि पुरानी स्मृतियों में आनन्ददायी हलचल करने के कारण उसे पुस्तक कितनी अधिक पसन्द थी। उसने बतलाया कि वह भाग ३ के आने की प्रतीक्षा कर रहा था। मैंने उसे अपना स्वाभाविक (सामान्य) उत्तर दिया और जब मैंने उससे कहा कि मेरे पास लिखने के लिये और अधिक कहानियाँ नहीं थीं, टेड ने मुझे

थोड़ा अचरज के साथ देखा और कहा, ''मुझे विश्वास है कि तुम्हारे पास कहानियों का पूरा संग्रह है। तुम मण्डली के साथ इतने वर्षों तक रहे हो। प्रतिदिन कुछ न कुछ नया होता था। तुम्हारे पास और कहनियाँ कैसे नहीं हैं?''

मैंने उससे कहा, ''हमारी प्रतिदिन की बातचीत में अत्यधिक हाजिर जवाबी (वाक्‌पटुता) और हास्य–परिहास होता था लेकिन पाठकों तक पहुँचाने के लिये उनमें कोई सन्देश नहीं है। मैं इस विषय में और लिख सकता हूँ लेकिन, जब तक कहानी कोई आध्यात्मिक सन्देश नहीं देती, उसे कौन पढ़ना चाहेगा ?''

टेड के चेहरे पर अचरज का भाव और बढ़ गया जब उसने मुझसे कहा, ''तुमसे किसने कहा कि हम हाज़िर जवाबी (वाक्‌पटुता) और हास्य परिहास का आनन्द नहीं लेंगे ? तुम ऐसा क्यों सोचते हो कि हम उन्हीं कहानियों का आनन्द लेते हैं जो आध्यात्मिक सन्देश देती हैं ? मण्डली के साथ गुजारे हुए उन पलों से जुड़ी हुई आनन्ददायी यादें ही हैं जिनको हम पुस्तक में पढ़ने का आनन्द लेते हैं। वर्तमान में और भविष्य में आने वाले बाबा प्रेमियों में कई ऐसे भी होंगे जिनका मण्डली के साथ परस्पर सम्पर्क न रहा होगा और वे उनके (मण्डली के) बारे में सबकुछ जानना पसन्द करेंगे। मुझे विश्वास है कि वे भी इस विषय में पढ़कर आनन्द लेंगे और मण्डली की हाज़िर जवाबी (वाक्‌पटुता) और हास्य परिहास के द्वारा उनके व्यक्तित्व की बेहतर जानकारी प्राप्त करेंगे।''

टेड जो कह रहा था उस विषय में अभी भी मुझे सन्देह था; इसलिये मैंने उत्तर दिया, ''मैं इस विषय में सोचूँगा। बल्कि मैं कहानियाँ लिखूँगा क्योंकि उन क्षणों का स्मरण करने में मुझे स्वयं ही आनन्द आता है, लेकिन उन्हें छपवाने और प्रकाशित करने का मैं कोई वायदा नहीं करता। यदि कहानियों की संख्या एक पुस्तक के लिये पर्याप्त होती हैं, केवल तभी मैं उनको प्रकाशित करूँगा।''

टेड मुस्कुराया और उसने विनोदपूर्ण भाव के साथ कहा, ''मैं भाग ३ का इन्तजार करूँगा।'' ऐसा लगता था कि उसे विश्वास था कि ऐसा होने वाला था, यद्यपि मुझे विश्वास नहीं था।''

कुछ दिनों पश्चात्, मैं भाऊजी के साथ बैठा था, जब किसी प्रकार उन्होंने असली ख़ज़ाना के विषय में वार्तालाप प्रारम्भ कर दिया और मुझसे कहा, ''तुमने जो लिखा है उसे सभी ने पसन्द किया है और उस विषय पर तुम्हें और अधिक लिखना चाहिये।'' मैंने इसका विरोध किया और भाऊजी से कहा, ''मेरा

स्वास्थ्य इस समय पूरी तरह खराब है। मैं कठिनाई से बिस्तर से उठ पाता हूँ और चल फिर पाता हूँ। मुझे कहानियाँ अपनी पत्नी मेहेर से बोलकर लिखवानी पड़ती हैं। यहाँ तक कि मैं एक बार में आधे घण्टे से अधिक बैठ भी नहीं सकता। अन्यथा मुझे और अधिक लिखने में प्रसन्नता होती। मैं अब ''टूटा हुआ फर्नीचर'' (एक कथन जिसे मण्डली सामान्यतया प्रयोग करती है) हो गया हूँ। मैं बाबा के लिये अब और उपयोगी नहीं हूँ क्योंकि मैं शारीरिक रूप से कुछ भी करने में असमर्थ हूँ।''

भाऊजी ने मुझे गम्भीरतापूर्वक देखा और कहा, ''मैं नहीं जानता क्यों, लेकिन बाबा टूटे हुए फर्नीचर से प्रेम करते थे और वह दूसरों की अपेक्षा उन पर अत्यधिक कार्य और जिम्मेदारियों का बोझ डालते थे, जैसा उन्होंने पेण्डू के साथ किया था। सतारा कार दुर्घटना के बाद पेण्डू पूर्णतया अशक्त थे। पक्षाघात (लकवा) के कारण वह चल भी नहीं सकते थे। इसके बावजूद, बाबा ने पेण्डू के कन्धों पर दर्शन प्रोग्राम के सभी प्रबन्ध करने का बोझ डाल दिया। कार्य बहुत बड़ा था और एक स्वस्थ व्यक्ति को भी यह कठिन लगता, लेकिन पेण्डू ने उसे पूरा किया। बाबा ने यह ड्यूटी किसी अन्य को नहीं दी। वह चाहते थे कि केवल पेण्डू ही इस कार्य को करे। बाबा ने न केवल यह बोझ उसके कन्धों पर डाला, अपितु वह ही थे जिन्होंने पेण्डू के लिये इस कार्य को पूरा करना सम्भव बनाया क्योंकि पेण्डू बाबा की आज्ञा का पालन करने के लिये तैयार हो गये थे।''

भाऊ जी तब मेरी ओर मुड़े और कहा, ''तुम इस विषय में चिन्ता न करो कि तुम पुस्तक कैसे लिखोगे या छपवाओगे। इस कार्य को केवल उनके लिये करते रहो और वह इसे सम्भव बनायेंगे।'' मैंने भाऊ जी से कहा, ''मेरे पास अच्छी कहानियाँ नहीं हैं। मैं नहीं जानता कि और क्या लिखूँ, लेकिन जैसा आप कहते हैं, ''यदि वह ऐसा चाहते हैं; तो ऐसा होगा।''

कुछ दिनों पश्चात्, मैं ट्रस्ट कम्पाउण्ड में भोजनालय में बैठा था जब एक बाबा प्रेमी मेरे पास आया और बोला कि उसे मेरी पुस्तक कितनी अधिक पसन्द थी। उस विषय पर मुझसे और अधिक लिखने का आग्रह करने के स्थान पर, उसने मुझसे पूँछा कि मैंने जो लिखा था उसके अतिरिक्त क्या कुछ अन्य कहानियाँ भी थीं जिनको मैं उसे सुना सकता था। मैं मण्डली जनों की आवाज एवं संकेतों की नकल करते हुए उसे उनकी हाज़िरजवाबी (वाक्‌पटुता) और हास्य परिहास की कहानियाँ सुनाने लगा। हम सभी दिल खोलकर हँसे। जब

मैंने समाप्त किया, वह मेरी ओर मुड़ा और बोला, ''आपको हाज़िरजवाबी (वाक्पटुता) और हास्य परिहास की कहानियों सहित एक नया भाग लिखना चाहिये।'' मुझे अभी भी सन्देह था और मैंने उससे पूँछा, ''संकेतों और नक़ल उतारने के कारण ये कहानियाँ विनोदपूर्ण लगती हैं। मुझे सन्देह है कि लोग इनके पढ़ने का आनन्द लेंगे।'' उसने मुझसे बहुत गम्भीरतापूर्वक कहा, ''मैं वर्तमान पीढ़ी की बात नहीं कर रहा जिसने मण्डली को देखा है और उनसे बातचीत की है, मैं भावी पीढ़ी के विषय में बात कर रहा हूँ। वे मण्डली के विषय में छोटी से छोटी जानकारी प्राप्त करने के लिये उत्सुक होंगे और आपकी पुस्तक उनके लिये एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ के रूप में कार्य करेगी।''

मैंने भावी पीढ़ी या भावी सन्तति के विषय में कभी नहीं सोचा था लेकिन अब जब इस बाबा–प्रेमी ने इसका उल्लेख किया, तो इससे मुझे सबकुछ लिपिबद्ध करने का (लिखने का) एहसास हुआ। मैंने अभी भी लिखने का निर्णय नहीं लिया था और मैंने इसे आगे के लिये स्थगित कर दिया था जब मेहरू ने भी वैसी ही टिप्पणी की जब मैं उनसे मेहेराज़ाद में मिला। लिखने के विषय में मेरी अनिच्छा के सभी कारणों को जानकार एवं मेरी टिप्पणी, ''भाग २ भी कैसे लिखा गया मैं नहीं जानता। वे बाबा ही थे जिन्होंने उसे लिखा है,'' को सुनकर मेहरू ने कहा, ''आश्चर्यचकित मत होना यदि भाग ३ को भी तुम्हारे द्वारा लिखवा दें और मैं उसकी प्रतीक्षा करूँगी।'' मैं थोड़ा आश्चर्यचकित था कि मेरे अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति को विश्वास था कि भाग ३ लिखा जायेगा।

इसके बाद, संयोगवश मेहेरवान जसावाला से मेरी बात हुई। हम उन पुराने अच्छे दिनों के संस्मरणों को याद कर रहे थे जब मैं मेहेराज़ाद में रह रहा था मैं, अलोबा और उनके विनोदपूर्ण तरीकों और प्रत्येक व्यक्ति केटी को कैसे परेशान करता था, उन सबके बारे में बात कर रहा था, तब मेहेरवान ने मुझसे कहा, ''तुम्हें इस सबके विषय में लिखना चाहिये।'' उन्होंने तब मुझे बतलाया कि यह बाबा के कार्य का कैसे एक महत्वपूर्ण हिस्सा था जिसको पूरा करने की आवश्यकता थी और उसको करने में बाबा मेरा उपयोग कर रहे थे। उन्होंने इस विषय पर भी अपनी राय दी कि बाबा ने कैसे बीमारी के द्वारा मेरी कार्य करने की क्षमता को कम कर दिया था, लेकिन मेरी स्मरणशक्ति को अक्षुण्ण (अछूता) छोड़ दिया था जिससे वह उसे अपने कार्य के लिये प्रयोग कर सकें।

मुझे और अधिक लिखने के लिये प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने कहा, ''छोटी

से छोटी बात भी लिखो जिसका तुम्हें स्मरण हो क्योंकि वह बाबा प्रेमियों की भावी पीढ़ियों के लिये बहुत महत्वपूर्ण होगी।'' मेहरवान ने तब गुरुप्रसाद के दिनों की कुछ घटनायें बतलाईं जहाँ बाबा ने अपनी मण्डली की अत्यधिक प्रशंसा की थी और जब एक बाबा प्रेमी एक मण्डली जन के बारे में थोड़ा अपमानजनक और आलोचनात्मक दृष्टिकोण के साथ बोला, बाबा बहुत नाराज़ हुए और उस बाबा प्रेमी को अधिकारपूर्वक डाँटते हुए बतलाया, ''क्या तुम जानते हो ये आत्मायें कौन हैं? वे सबसे अधिक सम्मान की पात्र हैं जो किसी को दिया जा सकता है। उन्हें हल्के में मत लो। जब भी उनके बारे में बात करो, सम्मानपूर्वक करो।'' लिखना पुनः प्रारम्भ करने के लिये मेरे लिये यह कारण पर्याप्त था और मुझे उम्मीद थी कि कहानियों का प्रवाह प्रारम्भ हो जायेगा और विश्वास था कि भाग ३ के रूप में समाप्त होगा।

इसके बाद जो हुआ उसने मुझे न केवल आश्चर्यचकित किया अपितु मुझे अत्यधिक हैरानी और अचम्भे में डाल दिया। मैंने अपने बाबा प्रेमी मित्रों से सम्पर्क किया जिन्होंने मेरी सहायता भाग १ एवं भाग २ में की थी और मैंने उनको सूचित किया कि मैं भाग ३ लिखने का प्रयास कर रहा था और यदि बाबा ऐसा चाहते हैं तो ऐसा ही होगा। मैंने यह भी उल्लेख किया कि उसमें अधिकांश हास्य परिहास ही होगा। जब मैंने पुस्तक लिखना प्रारम्भ किया, मुझे याद आया कि मैंने तीन–चार गम्भीर कहानियाँ नहीं लिखी हैं और हास्य परिहास के विषय में लिखने के पूर्व उनको लिखने का निश्चय किया। जैसे ही मैं उन गम्भीर कहानियों को लिखने का कार्य समाप्त करने वाला था, कि तीन या चार अन्य गम्भीर कहानियाँ मेरे मस्तिष्क में आने लगीं। ऐसा लगता था जैसे बाबा उन कहानियों को मेरे मस्तिष्क में भेज रहे थे और लिखने के लिये मुझे प्रोत्साहित कर रहे थें।

जब ये कहानियाँ पूर्ण होने वाली होती थीं और मैंने उन्हें लगभग समाप्त ही कर लिया होता था तथा हास्य–परिहासपूर्ण कहानियों के विषय में सोच रहा होता था जिन्हें मैं इसके बाद लिखने वाला था, अचानक ही मुझे गहन सन्देश की एक महत्वपूर्ण कहानी का स्मरण हो आता था। पिछली रात को निर्धारित किये गये तरीके के अनुसार मैं अपनी पत्नी मेहेर से बोलकर कहानियाँ लिखवाना प्रारम्भ करता था, कि तभी तरीका बदलने लगता था। ऐसा महसूस होता था जैसे जो मैं बोलता था, उस पर मेरा अब कोई नियन्त्रण नहीं था। मैं

स्वयं की आवाज़ को सुनने वाला मात्र एक श्रोता था।

लगातार प्रवाहित होकर जो बाहर आ रहा था उस पर अचम्भित होकर, मैं अपने ही शब्दों को ध्यानपूर्वक सुन रहा था। कोई दूसरा बात कर रहा था और वे शब्द मेरे हृदय को सान्त्वना दे रहे थे, क्योंकि मैं जानता था कि वह मेरे प्रियतम बाबा थे। पूरा अनुभव मेरे लिये बहुत जबरदस्त था। जिस बात ने मुझे घोर आश्चर्य में डाल दिया था वह यह थी कि मैंने एक भी हास्य–परिहास की कहानीनहीं लिखी। हर बार मैं सोचता था कि गम्भीर कहानियाँ समाप्त हो चुकी थीं, तभी और अधिक कहानियाँ मेरे मस्तिष्क में आने लगती थीं।

ऐसा हमेशा होता था कि जब मैं अपनी पत्नी के साथ, कुछ चीजों के विषय में जो मण्डली कहती थी और करती थी, बात कर रहा होता था, वह कहती थी, ''वह एक अच्छा उद्धरण (उदाहरण देने योग्य कथन) है। इसकी एक अच्छी कहानी बनाओ।'' मैं यह कहकर ऐतराज़ करता था कि दो पंक्ति के उद्धरण से कोई कैसे एक कहानी बना सकता है? वह कम से कम एक पेज़ लम्बी तो होनी ही चाहिये। उसके पश्चात् मैं उस विचार को छोड़ देता था। आश्चर्यजनक रूप से मैं मध्य रात्रि में जाग जाता था और उस खास कथन को लेकर कहानी बन जाती थी। ऐसा लगता था जैसे कि बाबा उस पूरे घटनाक्रम का विवरण दे रहे होते थे जिससे कि कहानी बननी होती थी।

इस प्रकार से यह सब सम्भव हुआ। मैंने इसे नहीं लिखा है। ऐसा स्वयं हुआ। बाबा ने विश्व के अपने प्रेमियों के लाभ के लिये इसे सम्भव बनाया। मेरा कार्य, उनके दास के रूप में, दैवीय माली द्वारा खिलाये गये इन फूलों को विश्व में उनके प्रेमियों तक पहुँचाना था। मैंने इनको न तो लगाया था, न ही इन्हें खिलाया था। इसका श्रेय केवल दैवीय माली को जाता है। इन फूलों को उनके प्रेमियों तक पहुँचाना मेरा सौभाग्य था, क्योंकि इनकी सुगन्ध अभी भी मेरे अस्तित्व में समाई हुई है, जो मुझे सहारा दे रही है।

उस दौरान जब मैं लिख रहा था, मैं भाऊ जी के साथ कहानियों के विभिन्न विवरणों की जाँच पड़ताल करता था। हालांकि भाऊ जी बहुत व्यस्त होते थे, तो भी जो समय वह मुझे देते थे, उसका मैं सम्मान करता हूँ लेकिन बहुधा, कार्य की अधिकता के कारण, वह उपलब्ध नहीं होते थे, इसलिये मैं मेहेरवान जसावाला के सम्पर्क में रहता था, जिनको मैं हर सप्ताह न केवल कहानियों के विवरणों की जाँच पड़ताल करने के लिये फोन करता रहता था

जहाँ पर मुझे सन्देह होता था, बल्कि लिखने के समय होने वाले अनुभवों के बारे में बतलाने के लिये भी फोन करता था। मैं उन्हें बतलाता था कि किस प्रकार मैं एक निश्चित चीज़ लिखने का प्रारम्भ करता था लेकिन कुछ अलग ही बोलने लगता था जिससे मै विस्मित हो जाता था और मुझे आश्चर्य होता था कि यह कहाँ से आ रहा था।

आश्चर्यजनक रूप से, मेहेरवान ने मुझसे कहा, ''हमारा अनुभव भी ऐसा ही है। जब हम मण्डली हाल में बैठते हैं और बातचीत प्रारम्भ करते हैं, शब्दों का प्रवाह बाहर की ओर होने लगता है और हमें उनकी गहराई पर आश्चर्य होने लगता है, उस पूरे समय हम उन शब्दों को स्वयं सुन रहे होते हैं और उनका आनन्द ले रहे होते हैं जबकि उसी समय हम उसे बतला भी रहे होते हैं। हम जानते हैं कि ये बाबा हैं, क्योंकि केवल बाबा ही शब्दों में इतनी गहराई और गूढ़ता उत्पन्न कर सकते हैं।'' जब मेहेरवान ने मुझसे यह कहा, मैं यह समझ गया कि मैं सही दिशा में जा रहा था। अब अगर ये कहानियाँ विवाद भी उत्पन्न कर देतीं और मन में हलचल भी उत्पन्न कर देतीं, तब भी यह वह रास्ता होता जिस पर बाबा चाहते थे कि मैं आगे बढ़ूँ। इस प्रकार से भाग ३ लिखा गया।

मैं पाठकों को यहाँ पर पुनः स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि पुस्तक इस बारे में नहीं है कि मैं उस विषय पर क्या अनुभव करता हूँ, बल्कि इस विषय में है जो बाबा ने मंडली से कहा है और जो मण्डली ने वर्षों तक इस विषय पर बतलाया है। बाबा के औजार के रूप में ध्यान मण्डली पर केन्द्रित होना चाहिये। मेरा उद्देश्य यही है। पाठकों की तरह मैं भी उसी नाव पर हूँ और अभी भी उन्हीं समस्याओं से संघर्ष कर रहा हूँ जिनके द्वारा हमारे प्रतिदिन के संस्कार हमें कष्ट देते हैं। अधिक से अधिक, मेरी भूमिका एक साईन–पोस्ट (नामपट्ट) के समान है जो यात्रियों को दिशा दिखलाते हैं। मैं अभी भी लक्ष्य तक नहीं पहुँचा हूँ। बाल नातू हमेशा यह कहते थे। जब लोग उनकी पुस्तकों की प्रशंसा करते थे, वह कहते थे, ''यद्यपि मुझमें एक बहादुर प्रेमी की तरह मार्ग पर चलने और लक्ष्य तक पहुँचने का साहस नहीं है, मैं कम से कम यात्रियों को लक्ष्य तक जाने वाले मार्ग का संकेत देने वाला साईन–पोस्ट (नामपट्ट) तो बन सकता हूँ। मैं एक साईन–बोर्ड (सूचनापट्ट) की तरह हूँ जो बतलाता है, ''ईश्वर की ओर जाने वाला मार्ग यह है।''

मेरी इच्छा है कि इन कहानियों के लिये पाठक मण्डली को धन्यवाद दे ओर अपने पीछे मण्डली को हमारे लिये साकार औजारों; (tangible instruments)

के रूप में छोड़ने के लिये बाबा को धन्यवाद दें जिससे मण्डली के दिये गये इन सन्देशों के द्वारा हम उन तक पहुँच सकें। जब लगभग उन्हत्तर (६६) कहानियाँ हो गई थीं, मेहेरवान ने मुझसे कहा कि इतनी कहानियाँ काफी हैं। इससे अधिक कहानियों को एक साथ छपवाने के लिये उन्होंने मना किया और यह भी कहा कि बाबा प्रेमियों के पढ़ने के लिये यह पुस्तक छोटी एवं सरल रखूँ, विशेष रूप से आजकल के व्यस्त दिनों में लोग बड़ी पुस्तकें पढ़ने में असमर्थ होते हैं। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं हास्य परिहास को अगले भाग के लिये छोड़ दूँ और इसीलिये इस भाग को लिखने की आवश्यकता हुई। मेहेरवान के सुझाव पर, स्टीव क्लाइन को विवादास्पद कहानियों की गलतियों को सूक्ष्मता से जाँच पड़ताल करके सम्पादन का कार्य दिया गया– एक ऐसा कार्य जिसको उसने बहुत अच्छी तरह से किया है– क्योंकि मण्डली के साथ कई वर्षों तक रहने के कारण उसने भी ज़िन्दगी के उस स्वाद का अनुभव किया है।

इस भाग के द्वारा, मुझे विश्वास है कि अब तक लगभग सबकुछ लिखा जा चुका है लेकिन यदि वे ऐसा चाहते हैं, तो आगे भी यह सिलसिला ज़ारी रह सकता है। इसका निर्णय उन्हें ही करना है। उनके दास के रूप में, मैं सदैव उनके आदेश का पालन करने के लिये तैयार हूँ।

****

असली याद में हृदय खो जाता है।

'' 'बाबा को याद करने का' क्या अर्थ है? जब कोई व्यक्ति कहता है, ''वह (पुरुष/महिला) बाबा की याद करता है, तो उसका क्या अर्थ होता है?'' एक बार एरच ने यह प्रश्न मण्डली हाल में पूँछा। इसके बहुत से उत्तर मेरे दिमाग में आ रहे थे और मुझे विश्वास है कि दूसरों के साथ भी ऐसा ही हो रहा होगा, लेकिन हम लोग यह समझकर चुप रहे कि एरच कोई गहरी बात करने वाले थे। थोड़ी देर चुप रहने के बाद, एरच ने यह कहते हुए अपना मौन (चुप्पी) तोड़ा, ''एक मशीन की तरह उनका नाम दोहराना उनकी याद करने से भिन्न है। एक मशीन की तरह उनका नाम रटना काफ़ी नहीं है, यद्यपि यह एक अच्छी शुरूआत है क्योंकि आखिरकार यह तुम्हें उनकी याद की ओर ले जायगा। इसलिये उनकी असली याद क्या है और उनका नाम रटने से यह किस तरह भिन्न है?''

एरच चुप रहे, इस बात का समय देने के लिये, ताकि हम दोनों बातों का अन्तर समझ सकें और उनके द्वारा कहे शब्दों के अर्थ को ग्रहण कर सकें। एरच ने कहना जारी रखा, ''असली याद हृदय से होती है। असली याद में, हृदय हर क्षण प्रियतम की खुशी खोजता है और इसलिये वह हमेशा प्रियतम के बारे में सोचता है और हमेशा उन्हें खुश करना चाहता है। उसको अपना कोई ध्यान नहीं होता– उसके लिये केवल अपने प्रियतम की खुशी ही मायने रखती है और इस तरीके से, वह अपने को पूर्णतया भूल जाता है और प्रियतम के विचारों में खो जाता है।''

एरच ने कहना ज़ारी रखा, ''हम हृदय की इस अवस्था को कैसे प्राप्त कर सकते हैं? बहुधा तीर्थयात्री उत्तेजित होकर मुझसे यह प्रश्न पूँछते हैं क्योंकि वे नहीं जानते कि उन्हें क्या करना चाहिये। ठीक तौर पर, इस मार्ग पर जाने का रास्ता है कि हम अपनी दिनचर्या में उन सभी चीज़ों को करने का अभ्यास करें जो बाबा ने हमें करने के लिये बतलाया है, यह याद रखते हुए कि यदि हम ऐसा करते हैं तो बाबा उससे खुश होंगे।

''उदाहरण के लिये, जब कोई व्यक्ति हम पर चिल्लाते है, हमें गालियाँ देता है या किसी तरीके से हमारा अपमान करने की कोशिश करता है, तो तुरन्त हमारी प्रतिक्रिया होती है और हम ईंट का जवाब पत्थर से देते हैं (अर्थात् बदला लेते हैं)। ऐसा क्यों? क्योंकि हम अहम् के मिथ्यापन में इतना जकड़े हुए हैं कि उस क्षण अपने प्रियतम की खुशी का ध्यान नहीं रहता। क्योंकि वह व्यक्ति जो अपने प्रियतम को हर क्षण याद कर रहा होता है और हर समय उनकी खुशी चाहता है तो वह हर समय में संयम रखते हुए– अपमान से गुजरने एवं अहम् के नाश में – अपने आपको संभालता है।

''क्यों ? क्योंकि वह उसके प्रियतम की खुशी है। वह जानता है कि इसमें उसके प्रियतम को खुशी होगी यदि वह अपनी ज़िन्दगी के सभी हालात एवं परिस्थितियों में संयम बनाये रखता है। अपने प्रियतम की खुशी के प्रति उसकी जागरूकता ही उसकी ज़िन्दगी को चलाने वाली शक्ति है और अपने प्रियतम को हमेशा खुश रखने के लिये वह अपनी ज़िन्दगी को उसके अनुकूल बनाता है। ऐसा व्यक्ति–अपने प्रियतम की खुशी का निरन्तर ध्यान रखते हुए– अन्त में इस मिथ्या अहम् से छुटकारा पाने में सफलता प्राप्त करता है और अपने प्रियतम में समा जाता है। ऐसा ही प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिये यदि वह चाहता है

कि उसका हृदय उनमें लीन हो जाये।''

''एक बार हृदय उनकी याद में पूर्णतया लीन हो जाता है तो हर परिस्थिति में उसे केवल प्रभु की महिमा और दया ही दिखती है। अत्यधिक विपरीत परिस्थिति में भी, वह प्रियतम का हाथ ही देखता है और वह परिस्थिति उसके लिये प्रसन्नतादायक हो जाती है। बहुत अधिक कष्ट में भी वह प्रसन्नता का अनुभव करता है। क्या ? क्योंकि वह जानता है कि प्रभु कष्ट उन्हीं को देते हैं जो उनके हृदय के नज़दीक होते हैं। उसे इस विचार से ही खुशी मिलती है कि वह प्रभु के क़रीब है और प्रभु ने उसे इस कष्ट के उपहार को देने के योग्य पाया है। यह विचार ही उसके हृदय और अस्तित्व में खुशी भर देता है और वह कष्ट पर ध्यान नहीं देता। वह प्रभु की उपस्थिति, उनकी दया और उससे प्राप्त आनन्द का ही अनुभव करता है। वह अपने आप को इसमें पूर्णतया खो देता है।'' एरच ने बोलना समाप्त किया।

''हमें हृदय की ऐसी अवस्था को प्राप्त करने के लिये प्रयास करना चाहिये। इसलिये जब विपरीत परिस्थितियाँ हों, कष्ट और बढ़ जायं, तो उनकी याद के द्वारा अपने मन को शान्त करने का प्रयत्न करो। उस क्षण याद रहे कि यह एक उपहार है जो वह अपने क़रीबी लोगों को देते हैं। याद रहे कि इन मायावी कष्टों से और तुम्हें तुम्हारे सपने से जगाने के लिये यह एक पुकार है। इस अनुभूति के साथ यह सब याद रखो। विषम परिस्थितियों के अपने क्षणों में यह भावना अपने हृदय में उत्पन्न करो और तब तुम भी प्रत्येक स्थिति में–विषम परिस्थितियों और अत्यधिक कष्ट में भी–प्रसन्नता और उनकी उपस्थिति का अनुभव करने लगोगे। तब तुम यह समझने लगोगे कि सबकुछ वही हैं– उनके अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। यही असली याद करना है जिसमें हृदय पूर्णतया

****

प्रेम की अभिव्यक्ति

मेहेराबाद में पूरे वर्ष बाबा के प्रेम में मतवाले तीर्थयात्री दर्शकों का भारी जमाव रहता है। कुछ दूसरों का जी बहलाते थे, लेकिन अधिकांश लोग परेशानी खड़ी करते थे और वहाँ रहने वालों के लिये परेशानी का कारण बन जाते थे। वहाँ के निवासी होने के कारण, हममें से अधिकतर लोग पूरे दिन

इतना व्यस्त रहते थे कि हमारे लिये ऐसी किसी अतिरिक्त समस्या को निपटाना बहुत कठिन था। हम ऐसे तीर्थयात्रियों को थोड़ी सी चेतावनी देने के बाद मेहेराबाद से हटा देना ज़्यादा पसन्द करते, लेकिन मण्डली इसकी अनुमति नहीं देती थी। वे ऐसे तीर्थयात्रियों को मेहेराबाद में रहने देने में विश्वास करते थे, इसका कोई महत्व नहीं था कि वे लोगों को कितना परेशान करते थे और वहाँ के निवासियों से उम्मीद की जाती थी कि वे प्रेम से समस्या को हल करें। ऐसी स्थिति में एरच कहते, ''व्यक्ति को प्रेम से जीतो। यदि तुम उसे प्रेम से नहीं जीत सकते हो, तो तुम हार गये हो।'' जब वे बाबा के साथ थे तब यही वह तरीका था जिसके द्वारा वे परिस्थिति से निपटते थे। न केवल वहाँ के निवासियों के लिये बल्कि मण्डली के लिये भी यह अनुभव बहुधा मुश्किल हो सकता था।

ऐसी ही एक घटना पश्चिम की एक महिला तीर्थयात्री से सम्बन्धित है जो कि १९६० के दशक में मेहेराबाद आई थी और वह वहाँ अधिक समय तक रही। वह न केवल सनकी जैसा व्यवहार करती थी, बल्कि वह भिन्न–भिन्न प्रकार के परिधान भी पहनती थी और मूक अभिनय करती थी, जैसा कि उसने पूरे समय किया। वह सामान्य वस्त्र नहीं पहनती थीं वह ऐसी वेशभूषा पहनती थी जो कि जोकरों जैसी होती थी। चाहे नाश्ते का समय हो या दोपहर और रात्रि के भोजन का अथवा चाय का समय हो, यदि वह तीर्थयात्रियों का समूह देखती थी, वह दूसरों की नक़ल उतारने का अभिनय शुरू कर देती थी। क्योंकि उसका अभिनय न तो अच्छा होता था, न ही मनोरंजक होता था, दूसरे तीर्थयात्री उससे बचते थे।

रविवार को, तीर्थयात्री बस द्वारा मेहेराज़ाद जाते हैं, जहाँ पर वह मण्डली से मिल सकते हैं और उनसे बातचीत कर सकते हैं। तीर्थयात्रियों का अभिवादन करने के बाद, मण्डली के सभी जन सामान्य रूप से मण्डली हॉल में बाबा की फिल्म देखने के लिये इकट्ठे हो जाते हैं। यह ख़ास तीर्थयात्री हमेशा मूक अभिनय करना चाहती थी और उसे इसकी अनुमति दी जाती थी।

कुछ समय तक सबकुछ सामान्यरूप से चलता रहा जब तक कि उसने एक दिन आरती के समय समाधि पर अपना नकल उतारने का अभिनय करने का निर्णय नहीं किया। बाबा की प्रार्थनायें और आरती समाप्त होने के पश्चात्, समाधि पर हमेशा भजन गाये जाते हैं। जैसे ही आरती समाप्त हुई, उसने मूक अभिनय करना शुरू कर दिया। क्योंकि आरती के बाद भजन गायन का केवल

एक घण्टे का समय होता है– उस अवधि के बाद बाबा की समाधि पर सख्ती से मौन वातावरण बनाये रखा जाता है– कई तीर्थयात्री जो गाने के इच्छुक थे निराश हो गये। इतना ही नहीं, अन्य तीर्थयात्रियों का विचार यह भी था कि इससे ध्यान भंग होता है, क्योंकि इससे ध्यान बाबा की तरफ से हटकर अभिनय करने वाले व्यक्ति की तरफ चला जाता है। वहाँ की ड्यूटी पर रहने वाले निवासी ने उस महिला तीर्थयात्री से ऐसा न करने और दूसरे दर्शकों को भी गाने का अवसर देने की प्रार्थना की, लेकिन उसने नहीं सुना। यदि कोई उसको रोकने का प्रयास करता था, वह उस पर चिल्लाना शुरू कर देती थी।

आखिरकार, शिकायत मनी तक पहुँची, जो कि उस समय ट्रस्ट की चेयरमैन थीं। मनी ने उसको बतलाया कि बाबा के प्रति अपनी भक्ति और प्रेम को किसी भी तरीके से, जैसे वह चाहे, प्रकट करना ठीक था जब तक कि वह हृदय से हो। बाबा इसे पसन्द करते थे। उन्होंने तीर्थयात्री को आश्वस्त किया कि बाबा निश्चित रूप से उसके अभिनय का आनन्द ले रहे थे। फिर भी, यदि वह बाबा को प्रसन्न करना चाहती थी तो उसे सामन्जस्य बनाये रखने का प्रयत्न करना चाहिये था, दूसरों की खुशी के आगे झुकना और दूसरों को भी अवसर देना सीखना चाहिये था। मनी ने उसको अभिनय जारी रखने के लिये प्रोत्साहित किया, लेकिन यह भी कहा कि वह इसे केवल बाबा के लिये करे। और इसे वह उनके (बाबा के) लिये कहीं भी कर सकती थी, जहाँ पर केवल वह और बाबा हों और उन्होंने (मनी ने) उसे समाधि पर आरती के समय ऐसा करने से रोका। मनी ने सुझाव दिया कि वह इसे अपने कमरे में या अध्ययन कक्ष में अकेले में करे जहाँ कोई आस–पास न हो। तीर्थयात्री महिला ने मनी की सलाह पर ध्यान नहीं दिया और समाधि पर नकल उतारने का अपना अभिनय जारी रखा। इसके परिणामस्वरूप उसके और दूसरे तीर्थयात्रियों के बीच एक बड़ा विवाद खड़ा हो गया।

मनसारी उन दिनों समाधि की केयरटेकर थीं। जब उन्होंने इस विवाद के बारे में सुना तो उन्होंने इस विषय में पूछताछ की। जब उन्हें संक्षेप में स्थिति बतलाई गई, तो उन्होंने इस तीर्थयात्री को अपने कमरे में बुलाया। पहले, मनसारी ने उसे चाय एवं कुछ नाश्ता दिया, जैसी कि उनकी आदत थी। वह सभी मिलने वालों के साथ ऐसा ही करतीं थीं। जैसे ही तीर्थयात्री सहज हुई, मनसारी ने उससे पूँछा कि वह बाबा के सम्पर्क में कैसे आई। इसके बाद, मनसारी ने उसे बाबा की कहानियाँ सुनाना प्रारम्भ कर दिया, और उसे एक

ख़ास कहानी सुनाई जिसमें उन्होंने जोर दिया कि कैसे, जब एक प्रेमी ने बाबा के आदेश का पालन करने के लिये अत्यधिक कठिनाइयों का सामना किया, तो बाबा बहुत अधिक खुश हुए।

तब वह उस तीर्थयात्री को बाबा के टीन शेड के नीचे ले गईं जहाँ उनकी गादी, जो कि उनके सिंहासन के रूप में भी जानी जाती है, रखी हुई है और उन्होनें उसे वे कहानिया सुनाईं कि प्रारम्भिक वर्षों में बाबा पहाड़ी पर कैसे आते थे और अपनी गादी पर बैठते थे और कैसे सभी महिलायें उनके चारों ओर एकत्रित हो जाती थीं। मनसारी ने यह भी बतलाया कि चूँकि उन्हें समाधि तक चलकर जाने में परेशानी होती थी, वह स्वयं उनकी गादी पर ही प्रार्थना करतीं थीं। उन्होंने तब तीर्थयात्री महिला से प्रार्थना की कि वह इस जगह पर अपना नकल उतारने का अभिनय किया करे क्योंकि यदि वह यहाँ पर ऐसा करेगी तो कोई भी उसे मना नहीं करेगा। आश्चर्यजनक बात है कि तीर्थयात्री इसके लिये सहमत हो गई और मामला सुलझ गया। मनसारी ने ''उसे प्रेम से जीतने की'' युक्ति निकाल ली थी।

कुछ समय गुज़र गया, और एक तीर्थयात्री ने एरच से मण्डली हाल में यह प्रश्न पूँछा, ''क्या बाबा प्रेमियों को आरती के समय समाधि पर, जैसा वे चाहें, करने की अनुमति दी जानी चाहिये, केवल इस कारण से कि वह हृदय से है? जिस तरह से कुछ लोग अपने प्रेम और हृदय की भावनाओं को प्रकट करते हैं उससे दूसरे तीर्थयात्रियों को, जो वहाँ की शान्ति का आनन्द लेते हैं और उसके द्वारा बाबा से अपना सम्पर्क अनुभव करते हैं, परेशानी हो सकती है।

एरच काफ़ी देर तक चुप रहें और फिर उन्होंने धीरे से कहा, ''बाबा प्रत्येक के हृदय की तड़प को पहले से ही जानते हैं, किसी को कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है। केवल अपनी उन सभी इच्छाओं का त्याग कर दो जिनसे तुम्हारा हृदय भरा हुआ है और केवल उनके (बाबा के) लिये तड़प पैदा करो। उचित व्यवहार और प्रेम की अभिव्यक्ति के सही मार्ग के विषय में कई मतभेद उत्पन्न किये जा रहे हैं। कुछ समय पहले, एक तीर्थयात्री ने पूछा कि जब बाबा का नाम ले रहे हों तो किसी को बाबा कहना चाहिये अथवा मेहेर बाबा। हाँ तो ठीक हैं, जब तक तुम हृदय से पुकार रहे हो तो इसका महत्व नहीं है– तुम केवल 'हे प्रियतम' कह सकते हो और बाबा तुम्हारी पुकार सुनेंगे। वह जानते हैं कि तुम उन्हें ही पुकार रहे हो।

''मस्त क्या करते हैं? किस नाम का वह जप करते हैं? तुम उन्हें इस प्रकार

का कुछ भी करते हुए नहीं देखते हो। फिर भी उनका हृदय अपने प्रियतम के लिये प्रत्येक क्षण रोता रहता है। वे मौन प्रेमी—असली प्रेमी हैं। उस स्थिति को पाने के लिये प्रयास करो, क्योंकि वही चीज़ है जिसे बाबा चाहते हैं। इन सभी मतभेदों से ऊपर उठो। फिर भी, क्योंकि हम उन्हें इस तरह से प्रेम नहीं कर सकते, क्योंकि हमारे हृदय इच्छाओं से भरे हुए हैं, इसलिये उनके लिये अपने प्रेम को प्रगट करने के लिये हमें सुनिश्चित साधनों को खोजने की आवश्यकता होती है। यह केवल तभी तक अच्छा है जब तक सच्चे हृदय और हृदय की प्रेरणा पर सहज भाव से इसे किया जाए। इसमें लिप्त न हो, न ही इसे कर्मकाण्ड बनाओ, न ही इसका सार्वजनिक रूप से दिखावा करो। इसे केवल प्रभु के लिये करो। अगर अपने प्रेम को प्रगट करते सयम तुमने अपने—आप को उनकी याद में भुला नहीं दिया है, तब तुमने अपने प्रेम को उन्हें अर्पित नहीं किया है। ऐसा ही होता है। हृदय द्वारा सहज रूप से की गई भेंट, जहाँ भेंट करते समय प्रेमी खुद को पूर्णतया भूल जाता है और उसे केवल अपने प्रियतम का भान होता है— वही सच्ची भेंट है जिसका उत्तर प्रियतम भी देता है। बाबा ऐसा ही चाहते हैं।

इसे और अधिक स्पष्ट करने के लिये मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ। एक गाँव था जहाँ पर गाँववासी क्रिसमस को खासतौर से एक पारम्परिक तरीके से मनाते थे जैसा कि वहाँ वर्षों से होता आ रहा था। परम्परानुसार गाँव के सभी लोग चर्च में एकत्र होते थे और प्रभु की प्रशंसा में भजन गाते थे और उसके बाद प्रत्येक व्यक्ति प्रभु के चरणों में उपहारस्वरूप कुछ भेंट अर्पित करता था। इस गाँव में एक विदूषक (जोकर) रहता था। वह गाँव में जन्मदिन समारोहों और शादियों में अपना नाटक दिखलाकर जीविकोपार्जन करता था। क्योंकि गाँव छोटा था, तो उसे अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने में भी कठिनाई होती थी। इसलिये क्रिसमस के समय वह बहुत शर्मिन्दगी का अनुभव करता था, क्योंकि अपने प्रभु को भेंट करने के लिये उसके पास कुछ भी नहीं होता था।

इस प्रकार वर्ष गुजरते गये और क्रिसमस के समय में वह बहुत अधिक खिन्नता का अनुभव करता रहा। वह चुपचाप चर्च के एक कोने में खड़ा रहता था और प्रभु को अपनी श्रद्धा अर्पित करता रहता था और फिर वहाँ से चला जाता था। ऐसा ही होता रहा और एक दिन उसे एक विचार आया। 'यद्यपि अपने प्रभु को भेंट करने के लिये मेरे पास कुछ भी नहीं है, मैं उस दिन अपनी भेंट के रूप में अपना नाटक तो उनके सामने प्रस्तुत ही कर सकता हूँ।'

''इसलिये, अगली क्रिसमस पर उसने जोकरों के जैसी वेशभूषा पहनी और अपने प्रभु और प्रियतम के लिये अपना नाटक प्रस्तुत करने की प्रत्याशा में चर्च गया। भजनों के समाप्त हो जाने पर जब वह नाटक प्रस्तुत करने लगा, लोगों ने उस पर चिल्लाना शुरू कर दिया और उसे ऐसा करने से रोक दिया। पादरी ने भी उसे कुछ भी नया प्रस्तुत करके क्रिसमस के पारम्परिक तरीकों को तोड़ने से रोका। विदूषक (जोकर) उदास हो गया और अपने प्रभु को पुकारते हुए, उसने अपने अपमान को चुपचाप सहन किया।

''उस रात वह सो नहीं सका। उसका हृदय जल रहा था और क्योंकि वह बहुत बेचैनी अनुभव कर रहा था। वह मध्य रात्रि को उठा और जोकरों की वेशभूषा में चुपचाप चर्च पहुँच गया। वह जानता था कि पूरा गाँव सो रहा होगा और अपने प्रभु के लिये अपने हृदय की भेंट के साथ वह वहाँ अकेला होगा। विदूषक प्रभु के लिये किये गये अपने नाटक से इतना खुश था कि वह अपने नाटक में पूर्णतया खो गया। वह इतना मस्त हो गया कि वह अपने नाटक को करते समय आवाजें करने लगा, भूल गया कि इससे पादरी की नींद में बाधा पहुँचेगी और वह जाग जायेगा। ऐसा हुआ कि पादरी जाग गया और यह खोजने के लिये वह निकल पड़ा कि चर्च में यह गड़बड़ कौन कर रहा था।

''जब उसने चर्च में प्रवेश किया, उसने गाँव के विदूषक को वहाँ पाया। पादरी उसको देखकर इतना क्षुब्ध हुआ कि वह उसे झपटकर पकड़ना चाहता था और उसे वहाँ से बाहर कर देना चाहता था। जैसे ही पादरी विदूषक की ओर चला, उसने कुछ ऐसा देखा कि वह स्तब्ध रह गया। वह उस पर विश्वास नहीं कर सका जो उसकी आँखों ने देखा था। उसने देखा कि विदूषक जब अपना नाटक प्रस्तुत कर रहा था, वहाँ एक दूसरा व्यक्ति बैठा हुआ था और नाटक को देखकर उसका आनन्द ले रहा था। और वह व्यक्ति कौन था, इतना तेजस्वी, इतना कान्तिमय, जो विदूषक के नाटक का आनन्द ले रहा था। वह कोई और नहीं स्वयं प्रभु ईसामसीह थे। प्रभु स्वयं उस विदूषक की हृदय द्वारा दी गई भेंट को लेने आये थे।''

पवित्र स्थान

जब मैं पहली बार मेहेराबाद में रहने के लिये आया, मैं इसके प्राकृतिक दृश्यों के ग्रामीण सौन्दर्य को देखकर मोहित हो गया। अपने बचपन में, मैंने

अपनी अधिकांश छुट्टियाँ अपने चाचा के फार्म हाऊस में बिताई थीं। शहरी ज़िन्दगी की तुलना में मुझे ग्रामीण ज़िन्दगी पसन्द है। यद्यपि मेहेराबाद तुलनात्मक दृष्टि से सूखा और बन्जर था, फिर भी मैंने इससे प्यार किया क्योंकि यह बाबा के कार्य का प्रमुख स्थान था। मेरे दिल में यह इच्छा हुई कि मैं भविष्य में अपने उपयोग के लिये थोड़ी भूमि खरीद लूँ। उस समय मैं मेहेराबाद में ट्रस्ट परिसर में रह रहा था और उस स्थान की राजनैतिक गतिविधियों पर मुझे बहुधा आश्चर्य होता था कि वहाँ के कुछ अन्य निवासियों की तरह भविष्य में मुझे भी न निकाल दिया जाय। शायद इसी वज़ह से मुझे लगा कि यदि मुझे ट्रस्ट छोड़ने के लिये बाध्य किया गया तो मेरी अपनी जमीन मुझे मेहेराबाद छोड़ने की मेरी आशंकाओं को समाप्त कर देगी।

जैसे–जैसे समय गुजरता गया, मैंने देखा कि वे लोग जिनके पास ज़मीन थी और जिन्होंने अपने खुद के घर बनवा लिये थे, वे इसकी विभिन्न प्रकार की समस्याओं में व्यस्त हो गये। उनकी तुलना में, जो लोग ट्रस्ट की जमीन पर रह रहे थे उन्हें न तो अपनी जमीन (सम्पत्ति) की देखभाल की चिन्ता करनी थी, न नौकरों को वेतन पर रखना था और न ही उन पर अनुशासन रखना था। जमीन का एक टुकड़ा मुझे उसकी समस्याओं में बाँध देता और मुझे मण्डली के साथ मिलने जुलने और बात करने की आजादी भी कम ही मिलती। मेरी स्थिति उस गाय के समान हो जाती जिसे उसके खूँटे से बाँध दिया गया हो। इस विचार ने मुझे उस समय वह कदम उठाने से रोक दिया, क्योंकि मैं वास्तव में इस अवसर का अधिकतम लाभ उठाना चाहता था जो बाबा ने मुझे दिया था और अपना पूरा समय मण्डली को समर्पित करना चाहता था।

अभी भी यह निश्चय न कर पाने के कारण कि मुझे अपने हृदय की कौन सी ईच्छा को पूरा करना चाहिये, मैं एरच के पास सलाह लेने के लिये गया। जब एरच ने मुझसे जमीन खरीदने का कारण पूँछा, मैंने उन्हें विस्तार से बतलाया कि मैं कैसे इस पवित्र वातावरण में रहना चाहता था और इस पवित्र जमीन का एक टुकड़ा खरीदना मेरे इसके प्रति समर्पण के लिये मुझे निश्चिन्त कर देता। एरच मन ही मन हँसे और अपना सिर हिलाते हुए उन्होंने कहा, ''पवित्र जमीन का इकलौता टुकड़ा, जिसका वास्तव में अस्तित्व है, तुम्हारा हृदय है जहाँ बाबा वास्तव में रहते हैं। यह सब जिसे तुम पवित्र मानते हो– समाधि, मेहेराबाद, मेहेराज़ाद, मण्डली और वह शरीर भी जिसे तुम मेहेर बाबा

के रूप में पहचानते हो, कुछ भी नहीं है, केवल एक स्वप्न है। इसका वास्तव में तुम्हारी कल्पना, तुम्हारे स्वप्न के अलावा कहीं कोई अस्तित्व नहीं है। जब तुम्हारी आँखें खुलती हैं और तुम स्वप्न से जागते हो तो तुम पाते हो कि इस सबका कभी कोई अस्तित्व नहीं था। वास्तविकता तो यह है कि केवल तुम और तुम्हारे प्रियतम का ही शाश्वत एकता की स्थिति में अस्तित्व है। इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

''हर समय यह याद रखो, यह महत्वपूर्ण नहीं है कि तुम क्या कार्य करते हो या तुम कहाँ हो। स्वप्न के द्वारा सम्मोहित मत हो क्योंकि उससे आसक्ति पैदा होगी जो कि तुम्हें बाद में स्वप्न में फसा देगी और तुम स्वप्न में ही उलझ जाओगे। तुम स्वप्न की सुन्दरता में विश्वास करना शुरू कर दोगे और तुम्हारा पूरा ध्यान स्वप्न को और सुन्दर बनाने में लग जायेगा। इससे तुम्हारा ध्यान वास्तविक लक्ष्य से भटक सकता है जो कि स्वप्न से जागना है।

''ऐसी पवित्र कही जाने वाली भूमि सबसे बड़ा भ्रम है। यह एक स्वप्न है। फिर भी यह एक महत्वपूर्ण स्वप्न है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह तुम्हें यथार्थ के प्रति जाग्रत करने में सहायता कर सकता है, बशर्ते तुम स्वप्न को बेहतर बनाने की प्रक्रिया में खो न गये हो। यदि तुम, निरन्तर याद करते हुए कि तुम्हारा लक्ष्य जागना है– हर क्षण याद रखते हुए कि अपने अहम् के मिथ्यापन का नाश करते हुए अपने प्रियतम की खुशी को बनाये रखना है, यदी इस तरह इस अवसर का उपयोग कर सकते हो तो, इस महत्वपूर्ण स्वप्न का उपयोग करो। तब तुम लक्ष्य तक पहुँचोगे जिसके लिये तुम यहाँ आये हो। जिस पवित्र भूमि को तुम खोज रहे हो, उसे तुम अपने अन्दर ही पाओगे। तुमसे बाहर कुछ भी नहीं है। यह सब तुम्हारा स्वप्न है, तुम्हारी कल्पना है जो तुम्हें विश्वास दिलाती है कि तुम्हारे बाहर एक पवित्र भूमि है।''

****

बाबा अपने प्रेमी का दामन पकड़े रहते हैं

जब पुराने समय के बाबा–प्रेमी, जिन्होंने बाबा का दर्शन किया था, मेहेराज़ाद मिलने आते थे, मण्डली पुराने सम्बन्धों के कारण प्रसन्नता अनुभव करती थी। एरच अक्सर ऐसे बाबा प्रेमियों का परिचय मण्डली हॉल में बैठे तीर्थयात्रियों से करवाते थे और उस प्रेमी से अपने अनुभव बतलाने के लिये कहते थे। एक अवसर पर, जब मैं एरच के पास बैठा था, संयोग से पूना के एक

पुराने बाबा–प्रेमी वहाँ थे। वह वहाँ हमेशा आते थे और मैंने पहले कई अवसरों पर उन्हें देखा था। एरच ने उस व्यक्ति से मधुसूदन के विषय में पूँछताछ की कि वह क्या कर रहे थे और क्या वह पूना सेण्टर पर आते थे और क्या वह दूसरे किसी अन्य बाबा–प्रेमी से बातचीत करते थे। उस व्यक्ति के उत्तर ने मुझे चकित कर दिया।

उसने एरच से कहा, ''नहीं, मधुसूदन अभी भी सेण्टर पर नहीं आते और न ही पूना के बाबा प्रेमियों में से किसी से भी बात करते हैं।'' एरच ने पूँछा कि किसी बाबा प्रेमी ने क्या कभी उनके घर जाने और उनसे बातचीत करने का प्रयास किया? बाबा प्रेमी के उत्तर ने मुझे चौंका दिया। उसने कहा, ''हाँ मैं स्वयं उनके घर गया था और यद्यपि उन्होंने मुझे अन्दर आने की अनुमति दी, वह मुझसे मेहेर बाबा अथवा पूना के बाबा प्रेमियों के विषय में बात नहीं करना चाहते थे। यहाँ तक कि, उनके घर में बाबा की एक फोटो भी नहीं थी। कुछ मिनट बाद, उन्होंने मुझसे सज्जनतापूर्वक घर से चले जाने की प्रार्थना भी की, क्योंकि वह अकेले रहना चाहते थे।''

क्योंकि एरच इस व्यक्ति के साथ स्थानीय भाषा में बात कर रहे थे, मैं सब कुछ समझ गया यद्यपि दूसरे कुछ तीर्थयात्री कुछ भी नहीं समझ सके। मैं अपने कानों पर विश्वास नहीं कर सका और सोचने लगा कि मैं उसे ठीक से समझ नहीं पाया। निश्चितरूप से वे मधुसूदन के बारे में बात नहीं कर रहे थे जिनके बाबा के भक्ति गीतों की रचनायें सभी बाबा केन्द्रों पर गाई जाती हैं। एरच ने केवल एक गहरी साँस ली, अपना सिर हिलाया और मण्डली हॉल में बैठे हुए तीर्थयात्रियों को बाबा की कहानियाँ सुनाने लगे।

जब प्रोग्राम समाप्त हो गया तो मैंने एरच से पूँछा कि जो प्रश्न वह पूना के बाबा प्रेमी से पूछ रहे थे क्या वह उस मधुसूदन के विषय में थे जिनके बाबा गीत हर जगह गाये जाते थे। एरच ने गहरी सांस ली और कहा, ''हाँ।'' मेरे चेहरे पर अविश्वास था। ''आपके कहने का मतलब है उन्होंने बाबा को छोड़ दिया?'' एरच ने बहुत धीरे से कहा ''मैं यह नहीं जानता। केवल बाबा यह जानते हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि अब वह बाबा या बाबा प्रेमियों के साथ भी कोई सम्पर्क नहीं रखना चाहते । ऐसे प्रतीत होता है कि उसने बाबा का दामन छोड़ दिया है।''

मैंने एरच से पूँछा, ''ऐसा क्या हुआ था कि मधुसूदन ने ऐसा कदम उठाया ?'' एरच की इच्छा इस विषय पर और अधिक बात करने की नहीं थी, लेकिन जब मैंने उन पर जोर दिया तो उन्होंने कहा, ''और क्या हो सकता है? यह हमेशा मिथ्या अहम् की दृढ़ता होती है जो ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करती है जो तुम्हें बाबा से दूर कर देती हैं। इससे अधिक और क्या होगा?'' जब मैंने इस विषय पर पहली बार विचार किया तो मैंने बहुत बेचैनी अनुभव की। जो विचार मुझे परेशान कर रहा था वह यह था कि यदि मधुसूदन जैसे किसी व्यक्ति से बाबा का दामन छूट सकता है तब मेरे जैसे व्यक्ति का क्या होगा। मैं पूर्णतया हिल गया था।

दूसरे अवसर पर, मैंने मनसारी को यह बतलाते हुए कि मैं कितनी बेचैनी अनुभव कर रहा था, इस विषय पर बात करने का प्रयास किया। मनसारी ने केवल एक महत्वपूर्ण घटना का उल्लेख किया कि कैसे भजन गायन के प्रोग्राम के दौरान, जब मधुसूदन बाबा का दामन न छोड़ने के विषय में एक गाना गा रहे थे, बाबा ने मधुसूदन को रोक दिया और उससे कहा, ''मेरे दामन को दोनों हाथों से दृढ़तापूर्वक पकड़े रहना क्योंकि परिस्थितियाँ ऐसा मोड़ लेंगी कि तुम यह समझ ही नहीं पाओगे कि तुम्हारी पकड़ कैसे छूट गई है।'' बाबा ने यह बात मधुसूदन से कई बार दोहराई।

मनसारी ने आगे कहा, ''बाबा ने मधुसूदन को जो होने वाला था, उसके विषय में चेतावनी देने का प्रयत्न किया। यदि वह अधिक सतर्क हो गया होता और बाबा की और अधिक याद करते हुए दामन पर अपनी पकड़ दृढ़ कर दी, होती, शायद यह सब न होता।'' मनसारी की कहानी ने मुझे और अधिक बेचैन कर दिया। ईश्वर होते हुए बाबा ने मधुसूदन को उस विषय में चेतावनी दी, जो होने वाला था। ईश्वर के रूप में बाबा, ऐसा होने से रोक भी सकते थे, लेकिन उन्होंने मधुसूदन को उन्हें छोड़ कर चले जाने दिया। ऐसा उन्होंने क्यों किया? मैं अब और भी अधिक बेचैन हो गया कि बाबा ने, ईश्वर होते हुए, अपने एक निकटतम प्रेमी को, जिसने ऐसे प्रभावपूर्ण प्रेम गीत लिखे थें, इस तरह से छोड़कर चले जाने दिया।

मुझे प्राप्त होने वाले उत्तरों से मैं सन्तुष्ट नहीं था और एक दिन मैंने पुनः इस विषय को एरच के सामने उठाया, ''एरच, मैं यह नहीं जानना चाहता कि क्या हुआ था। मैं जानना चाहता हूँ कि ऐसा क्यों हुआ था। बाबा ने मधुसूदन को और यदि मधुसूदन जैसा व्यक्ति बाबा को छोड़कर जा सकता है, तब मेरे जैसा

व्यक्ति आखिर कहाँ ठहरता है। मुझे इस सबसे बहुत परेशानी है और मैं चाहता हूँ कि इस विषय पर आप कुछ कहें।''

काफ़ी समय तक चुप रहने के बाद एरच ने बहुत धीरे–धीरे कहा, ''यह बाबा नहीं थे जिन्होंने उसे छोड़कर चले जाने दिया। यह उसका मिथ्या अहम् था। उसे इस तथ्य (बात) से सतर्क रहना चाहिये था कि मिथ्या अहम् किसी न किसी बहाने से गलत रास्ते पर डालने के लिये मार्ग और साधन खोज लेता है।'' एरच ने तब आगे कहा, ''हाँ, तुम सही हो जब तुम कहते हो कि यदि वह (मधुसूदन) छोड़ कर जा सकता है तो तुम या कोई अन्य भी ऐसा कर सकता है। ये घटनायें उदाहरण के तौर पर तुम्हें याद दिलाती रहें कि इस मार्ग से कभी भी कोई भटक सकता है। इसलिये निश्चिन्त होकर न बैठो। उनको (बाबा को) और अधिक याद करके और उन पर और अधिक निर्भर होकर, अपनी पकड़ उन पर और अधिक मजबूत करने के लिये प्रयास करते रहो। अहम् के मिथ्यापन के दावों के प्रति सतर्क रहो। अपना सिर हमेशा उनके (बाबा के) चरणों पर झुकाये रखो और उनसे याचना करते रहो कि उनके दामन पर तुम्हारी पकड़ को मजबूत बनाने में तुम्हारी सहायता करें। उनसे हमेशा दया की प्रार्थना करते रहो। उनसे विनती करते रहो कि तुम्हें मार्ग से भटकने से रोकने के लिये वह तुम पर अपनी दया, करुणा और कृपादृष्टि की बौछार करते रहें। ऐसा ही प्रत्येक को करना चाहिये।''

वर्षों तक मधुसूदन का बाबा से कोई सम्बन्ध नहीं रहा। एक दिन, मैं ऑफिस में था और बाल नातू मेरी ओर मुड़े और मुझसे कहा, ''इतने वर्षों बाद मधुसूदन यहाँ थे। क्या तुम उनसे मिले?'' मैं उन्हें नहीं जानता था, इसलिये बाल ने उनका हुलिया बतलाया। मैंने बाल को बतलाया कि मैंने इन सज्जन को ऑफिस के आस–पास देखा था। बाल ने कहा, ''सच में, तुम्हें जानना चाहिये कि उसने क्या कहा। इससे केवल यह दिखलाई पड़ता है कि बाबा कितने दयालु और करुणामय हैं। मधुसूदन रोते रहे और उन्होंने कहा, 'मैं नहीं जानता कि मैं बाबा का दामन पकड़े हुए था या कि उस पर से मेरी पकड़ छूट गई थी, लेकिन एक बात मैं निश्चित रूप से जानता हूँ– वह मुझे पकड़े हुए थे। हाँ, वह मुझे पकड़े हुए थे और इसीलिये मैं वापस आया हूँ।'

ईश्वर के सन्मुख पूर्ण ईमानदारी

अपने प्रतिदिन के कार्यों में, जब मण्डली के साथ बातचीत होती थी, वे अक्सर हमें याद दिलाते थे कि हमें बाबा के प्रति अपने कार्य में पूर्णरूपेण ईमानदार होना चाहिये। भाऊ जी लगभग प्रतिदिन ही हमें इसकी याद दिलाते थे। प्रतिदिन उनको ऐसा कहते हुए सुनकर भी, मैंने इस पर अधिक ध्यान नहीं दिया, लेकिन एक बार जब मैं इस बात पर विचार कर रहा था, अचानक ही इस विचार से मैं घिर गया। ईश्वर के सन्मुख पूर्ण ईमानदार होने का क्या अर्थ है? मेरा हृदय इच्छाओं और कमजोरियों से भरा हुआ था और ईश्वर पहले से ही यह जानते थे। मैं ईश्वर के सामने पूर्ण ईमानदार कैसे हो सकता हूँ जब तक मैं अपनी सभी इच्छाओं और कमजोरियों से छुटकारा नहीं पा लेता? इस विषय में सन्तों और सद्‌गुरुओं के अलावा और कौन इच्छाओं और कमजोरियों से मुक्त हो सकता है? इन आत्माओं के अलावा, अन्य कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो हृदय की निर्मलता के साथ ईश्वर के सन्मुख खड़ा हो सके और यह कहे कि वह पूर्णरूपेण ईमानदार है। इस विचार से पूर्णतया घिर जाने के कारण, मैं अपने को पूर्णतया असहाय अनुभव करने लगा और एक बार जब भाऊजी ने पूर्ण ईमानदारी की बात का स्मरण कराया, मैंने उनसे इस विषय की चर्चा छेड़ दी।

मैंने उनसे कहा, ''भाऊजी, जब मैं आपको ऐसा कहते हुए सुनता हूँ, मैं स्वयं को पराजित और असहाय अनुभव करता हूँ। केवल वही व्यक्ति ईश्वर के सन्मुख पूरी ईमानदारी और सत्यता के साथ खड़ा हो सकता है जो पूर्णतया इच्छाओं और दुर्बलताओं से मुक्त हो। ईश्वर साक्षात्कार प्राप्त आत्माओं और सद्‌गुरुओं के अलावा, कोई भी व्यक्ति इस अवस्था को प्राप्त नहीं कर सकता है, इसलिये हम अपने दैनिक कार्यों में इसका अभ्यास कैसे कर सकते हैं? यह केवल एक दिखावा होगा।''

करुणामय प्रेम दृष्टि से मुझे देखते हुए, भाऊजी ने उत्तर दिया, ''ऐसा नहीं है। तुम सद्‌गुरुओं और ईश्वर साक्षात्कार प्राप्त आत्माओं के पूर्णरूपेण इच्छाओं और दुर्बलताओं से मुक्त होने के विषय में जो कह रहे हो, वह सच है और उनके हृदय की पूर्ण निर्मल अवस्था का प्रतिबिम्ब है। वे सृष्टि की सबसे अधिक पवित्र आत्मायें हैं। फिर भी, पूर्ण ईमानदारी इससे कुछ भिन्न ही है।

यदि तुम अपने को कुछ अलग ही दिखलाते हो जैसे तुम नहीं हो, तब तुम ईमानदार नहीं हो। यदि तुम ऐसा कुछ नहीं करते हो, तब तुम पूर्ण ईमानदार हो। अपनी रोजमर्रा की ज़िन्दगी में और अपने प्रतिदिन के क्रियाकलापों में तुम्हें अपने हृदय की इच्छाओं और दुर्बलताओं पर बाबा की निरन्तर याद करते हुए सतर्क दृष्टि रखनी चाहिये और उनसे (बाबा से) इनसे छुटकारा पाने की याचना करनी चाहिये, और जब तुम ऐसा कर रहे होते हो, यदि तुम उस समय शुद्ध एवं पवित्र व्यक्ति होने का दिखावा नहीं करते हो, यदि तुम अपनी ज़िन्दगी विनम्रतापूर्ण ढंग से बिताते हो, तब तुम ईश्वर के प्रति पूर्ण ईमानदार हो।''

अन्त में, भाऊजी ने कहा, ''जब तुम उनके लिये कार्य कर रहे हो तब पूर्ण ईमानदारी का अर्थ है हमेशा विनम्र रहना और जो तुम हो उससे अलग दिखावा न करना। इसे प्राप्त करने के लिये तुम्हें उनके लिये कार्य करते समय निरन्तर उनकी याद करना है।''

जब भाऊजी ने अपनी बात समाप्त की, मैंने चैन की साँस ली। पराजय और असहायता की भावना जो इतने लम्बे समय से मुझे घेरे हुई थी, पूर्णतया समाप्त हो गयी। भाऊजी ने हमें कार्य करने के लिये एक वास्तविक लक्ष्य दिया है जिसे प्राप्त करने के लिये प्रत्येक व्यक्ति प्रयास कर सकता है, चाहे वह किसी भी स्तर पर हो। भाऊजी के कथन ने मुझे वह याद दिला दिया था जो कि प्रियतम बाबा ने स्वयं कहा है, कि ईश्वर पाखण्ड के अलावा सबकुछ क्षमा कर सकता है।

बाबा अभी भी बोलते हैं

१९५२ में, जब बाबा अभी भी नई ज़िन्दगी में थे, उन्होंने पश्चिम की यात्रा की योजना बनाना प्रारम्भ कर दिया। एरच ने बाबा के साथ पश्चिम की यात्रा पर जाने के लिये अपनी असमर्थता व्यक्त की क्योंकि नई ज़िन्दगी के दौरान दुष्कर परिस्थितियों में बाबा के साथ मस्तों से सम्पर्क करने के कठिन परिश्रमपूर्ण कार्य के कारण उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था। उन्होंने बाबा से क्षमा याचना करते हुए तर्क दिया कि वह अत्यधिक थके हुए थे और अस्वस्थ थे और वह बाबा पर केवल बोझ ही होंगे। बाबा बहुत नाराज हुए और एरच को आदेश दिया कि वह (एरच) उनको (बाबा को) छोड़ कर चले जायें। फिर भी,

बाबा ने उन्हें बाद में क्षमा कर दिया, लेकिन उनसे कहा कि वह पेण्डू के साथ उनके प्रेमियों तक उनके प्रेम और सत्य के सन्देश को पहुँचाने के लिये भारत की यात्रा पर जायें।

जब एरच यह घटना बतला रहे थे, वह इस बिन्दु पर रुके, एक गहरी आह भरी और कहा, ''हमें इन यात्राओं में सौ गुना अधिक परेशानी का सामना करना पड़ा और मैं सोचने लगा कि मैं बाबा के साथ चला गया होता तो वहाँ पर इससे कम कठिनाईयाँ होतीं।'' एरच ने कहना ज़ारी रखा, ''जब बाबा ने मुझसे ऐसा करने को कहा, तब किसी तरह मैंने उनसे कहा, 'लेकिन बाबा मैं उनको क्या सन्देश दूँगा। मुझे न तो कोई आध्यात्मिक ज्ञान है, न ही सत्य का अनुभव है, इसलिये मैं उनसे क्या कहूँगा?'

''बाबा ने मुझसे कहा, 'तुम इतने वर्षों से मेरे साथ हो। तुम मेरे साथ मेरे सभी दौरों और यात्राओं पर गये हो और मेरे द्वारा किये गये कई सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में मेरे साथ रहे हो। उस विषय पर बात करना। तुमने जो स्वयं देखा और सुना है, उस बारे में मेरे प्रेमियों से बात करना।'

''मैंने इस बात पर ऐतराज़ करते हुए कहा, 'लेकिन बाबा, मैं वक्ता नहीं हूँ। मैंने कभी भी लोगों की अधिक भीड़ के सामने भाषण नहीं दिया है और न ही मुझे इसका अनुभव है।' बाबा ने मुझसे कहा, ''कौन कहता है कि तुम बोलोगे? यह मैं हूँ जो तुम्हारे द्वारा बोलूँगा। इसे याद रखना और इसको भूलना मत।' बाबा ने तब मुझसे कहा, 'अपना भाषण प्रारम्भ करने के पहले तुम यह कहते हुए मुझे आमन्त्रित करना, 'बाबा अब आप अपने प्रेमियों से बात करिये। तुम यह करना और बाकी मैं करूँगा।''

एरच ने कहना जारी रखा, ''फिर भी, मेरे मन में अभी भी एक और सन्देह था। उस समय बाबा के देवत्व पर मुझे विश्वास न था, यद्यपि मैं इतने वर्षों से उनके साथ था। जब बाबा कहते थे वह अवतार हैं, पुरातन पुरुष हैं, ब्रह्माण्ड के स्वामी हैं, मेरा मन कार्य करना शुरू कर देता था और प्रश्न पूँछने लगता था, 'क्या ऐसा है? ऐसा कैसे हो सकता है?'

''तुम जानते हो, वह हम लोगों के साथ इतना अधिक सहृदय थे कि मेरे लिये इस दृढ़ विश्वास के साथ उनको स्वीकार करना कठिन था। बाबा चाहते थे कि मैं अब देश का भ्रमण करूँ। यह माना जा रहा था कि मैं प्रेमियों की भारी भीड़ को सम्बोधित करूँगा और बाबा के देवत्व की घोषणा करूँगा और उनके प्रेम

और सत्य के सन्देश को बतलाऊँगा। मैं परेशानी अनुभव कर रहा था और स्वयं को ऐसा करने के लिये तैयार नहीं कर पा रहा था। मैं उनके प्रेमियों की भारी भीड़ को कैसे सम्बोधित कर सकता था और उनसे मैं कैसे यह कह सकता था कि बाबा ईश्वर हैं जबकि मुझे स्वयं ही इस पर विश्वास नहीं था?

''यहाँ पर भी, मेरे मन के सन्देहों और द्वन्द को समझकर बाबा ने मेरी सहायता की। बाबा ने मुझे बतलाया, 'जब तुम भीड़ को सम्बोधित करना, जब मेरे देवत्व की घोषण करना, तब तुम यह मत कहना कि बाबा ईश्वर हैं, बाबा अवतार हैं। तब तुम क्या कहोगे और इसको कैसे कहोगे?' बाबा ने तब स्वयं बतलाया, 'कहना कि बाबा कहते हैं कि वह ईश्वर हैं, बाबा कहते हैं कि वह अवतार हैं, पुरातन पुरुष हैं।' यहाँ पर भी बाबा ने मुझे सही रास्ता दिखला कर मुझे उस विषम परिस्थिति से उबार लिया।

''बाद में हमने भारत का भ्रमण किया और मेरा विश्वास करो कि उनके प्रेमियों ने हमें उनसे भी अधिक परेशान किया। हम लोगों को बिल्कुल भी आराम नहीं मिलता था क्योंकि वे लोग हमें कभी भी अकेला नहीं छोड़ते थे। हम कठिनाई से कुछ ही घण्टे सो पाते थे और अक्सर कुछ प्रेमी हमें हमारी नींद से केवल इसलिये जगा देते थे क्योंकि हमने पहले जो कहानी उन्हें सुनाई होती थी, उसके बारे में उन्हें सन्देह होता था और उस विषय में उन्हें कुछ स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती थी। हमें उनसे याचना करनी पड़ती थी कि वे हमें सोने दें।''

एरच अक्सर यह कहानी हाल में सुनाते थे। एक अवसर पर एक तीर्थयात्री ने एरच से पूँछा, ''एरच, उनके प्रेमियों को सम्बोधित करते समय क्या आपने वास्तव में अनुभव किया कि वे बाबा थे जो आपके द्वारा बोल रहे थे?'' एरच ने उत्तर दिया, ''हाँ, मैंने ऐसा अनुभव किया। उन्होंने अपना वायदा पूरा किया जैसा कि वह हमेशा करते हैं।'' तीर्थयात्री ने आगे प्रश्न किया, ''क्या आप अब भी अनुभव करते हैं कि बाबा आपके द्वारा समय–समय पर बात करते हैं? एरच ने उत्तर दिया, ''हाँ, मैं अभी भी अनुभव करता हूँ।'' तीर्थयात्री ने आगे पूँछा, ''अन्तिम बार कब बाबा ने आपके द्वारा बात की जब आपने अनुभव किया कि वह बाबा थे जो बात कर रहे थे?'' पलक झपकने से भी कम समय में एरच का त्वरित उत्तर आया, ''मैं प्रत्येक क्षण अनुभव करता हूँ कि वह मेरे द्वारा बात करते हैं। यहाँ तक कि मेरे मुँह से निकलने वाले ये शब्द भी और कुछ नहीं हैं

बल्कि वह बात कर रहे हैं।

ऐसा एरच का विश्वास और अनुभव था जो उन्होंने हमें बतलाया। जब एरच ने इस बारे में बोलना समाप्त किया, तब मण्डली हॉल में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति पूर्णतया मौन था और उनसे (एरच से) प्रवाहित होने वाली बाबा की उपस्थिति को अनुभव करते हुए उसका आनन्द ले रहा था।

सब कुछ काट कर अलग कर दो जो बाबा नहीं हैं

बाल नातू का सम्बन्ध बाबा के साथ उस कमजोर बच्चे के जैसा था जो कि अपने पिता पर पूर्णतया निर्भर होता है। वह स्वयं ही कहते थे, ''शक्तिशाली और साहसी प्रेमियों के विपरीत जिनमें बहुत साहस होता है और जो महान बलिदान करते हैं, मैं उस कमजोर बच्चे के समान था जो निरन्तर शिकायत करता था और बाबा, दैवीय मातृ–पितृवत्, मेरी पुकार का उत्तर देते थे और मुझे बतलाते थे कि उनकी दृष्टि निरन्तर अपने इस कमज़ोर बच्चे पर भी थी।

'वार्तालाप (Conversations) शीर्षक के अन्तर्गत पुस्तकों की श्रृंखला लिखकर बाल नातू ने काफी महान कार्य किया। ये पुस्तकें ज़्यादातर उनकी ज़िन्दगी और एक कमज़ोर बच्चे का अपनी प्रतिदिन की शिकायतों के द्वारा ईश्वर के साथ सम्बन्धों के विषय में हैं और इस विषय पर हैं कि ईश्वर कैसे, अपने प्रेम, करुणा और दया के कारण, इस कमज़ोर प्रेमी को उत्तर देते हैं और उसके विश्वास का पोषण करते हुए उसे सहारा देते हैं और हर क़दम पर उसके आध्यात्मिक विकास में सहायता करते हैं। मुझे उनकी पुस्तकें पसन्द हैं और मैं जानता हूँ कि बहुत से बाबा प्रेमी उनसे बहुत अधिक प्यार करते थे क्योंकि इस कमजोर प्रेमी के रूप में अपनी पहिचान करना हमारे लिये आसान था जो दिन–प्रतिदिन की समस्याओं से घिरा हुआ था और हर कदम पर उसे दैवीय पिता की सहायता की आवश्यकता होती थी। बहुत से तीर्थयात्री उन पुस्तकों की प्रशंसा बाल नातू से करते थे।

एक बार एक तीर्थयात्री ने बाल से पूँछा कि उन्होंने उस ग्रन्थमाला को कैसे लिखा था? वह क्या था जो उनको लिखने के पहले उनके अन्दर घटित हो रहा था? वह प्रेरणादायक शक्ति क्या थी जिसने उन्हें लिखने के लिये प्रेरित किया? बाल नातू इससे इतना अधिक आश्चर्यचकित हुए कि वह कुछ न

कहकर हकलाने लगे। जब भी कोई उनकी प्रशंसा करता था वह हमेशा ऐसा ही करते थे, क्योंकि वह स्वयं को घिरा हुआ अनुभव करते थे।

थोड़ी देर के बाद उन्होंने यह कहते हुए उत्तर दिया, ''मैंने कुछ भी नहीं लिखा है। यह सब बाबा ने लिखा है। मैं इतना कमजोर हूँ कि मेरे लिये स्वयं कुछ भी करना सम्भव नहीं है। मैं अपनी छोटी से छोटी आवश्यकता के लिये उन पर निर्भर करता हूँ और वह मुझे सहारा देते हैं और संभालते हैं। उनकी सहायता और प्रतिदिन उनके सहारे के बिना, मैं अपने दैनिक कार्यों को भी करने में असमर्थ हूँ। उन्होंने ही मुझसे वार्तालाप (Conversations) ग्रन्थमाला लिखवाई है। मैं एक इतना कमजोर प्रेमी था कि मैं साधारण चीजों में भी उनकी आज्ञा का पालन नहीं कर पाता था। वह मुझसे कहते थे, वास्तव में मुझे आदेश देते थे, कि किसी भी परिस्थिति के विषय में चिन्ता न करूँ और वह परिस्थिति को स्वयं संभाल लेंगे। यद्यपि मैं उनके समीप था और मुझे उनका आश्वास प्राप्त था, तब भी मैं चिन्ता करता था।

''मैं उनके आदेशों का पालन न कर पाने के कारण उनकी याद अधिक से अधिक करता था। मैं एक कमजोर बच्चे की तरह था जो उन्हें अन्य साहसी बच्चों की तरह प्रसन्न नहीं कर सकता था। लेकिन एक बात है, मैंने उनको प्रसन्न करने का प्रयास किया, और क्योंकि वह दयालु पिता हैं, उन्होंने अपने इस कमजोर बच्चे की छोटी सी चेष्टा की भी प्रशंसा की। मैंने उन सभी चीज़ों को अपनी ज़िन्दगी से दूर करने का प्रयास किया जिससे कि वे अप्रसन्न होते। यदि मैं उन्हें प्रसन्न नहीं कर सकता था, तो कम से कम मुझे उन चीजों को नहीं करना चाहिये था जो उन्हें अप्रसन्न करतीं। इस प्रकार से उनका स्मरण और उन पर मेरी निर्भरता बढ़ती गई और वार्तालाप (Conversations) ग्रन्थमाला की रचना हुई।

''अपनी बात को और अधिक स्पष्ट करने के लिये मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ। किसी छोटे शहर (कस्बे) में एक मूर्तिकार था जो भगवान बुद्ध की मूर्तियाँ बनाता था। उसकी तराशी हुई मूर्तियाँ इतनी अच्छी होती थीं जैसे कि वे स्वयं भगवान की हूबहू नकल हों। उनकी विशेषता यह थी कि वे जीवन्त प्रतीत होती थीं। कोई भी मूर्तिकार ऐसी मूर्तियाँ नहीं बना सकता था। इस मूर्तिकार से एक बार उसके कार्य के पीछे छुपे हुये रहस्य के बारे में पूँछा गया और उसने उत्तर देते हुए वास्तविकता बतलाई, ''जब मैं पत्थर तराशना शुरू करता हूँ, तो

मेरे मन में कोई भी काल्पनिक मूर्ति नहीं होती। मेरी कोई योजना नहीं होती जैसे कि मैं क्या बनाऊँगा या कैसे प्रारम्भ करूँगा। भगवान की मूर्ति पहले से ही पत्थर पर बनी होती है। मैं केवल यह करता हूँ कि पत्थर के उस भाग को तराशकर अलग कर देता हूँ जो बुद्ध नहीं है। यदि तुम अवांछनीय चीजों को काटकर अलग कर देते हो तो शेष भगवान बुद्ध होते हैं।''

बाल नातु मंडलीजन ने यह कहते हुए बात समाप्त की, ''मैं ऐसा ही करता हूँ। मूर्तिकार के समान, मैं अपनी ज़िन्दगी, से बाबा के अतिरिक्त और सबकुछ काट कर अलग कर देता हूँ और वार्तालाप ग्रन्थमाला में जो भी बाहर आया वह केवल बाबा थे।''

यथार्थ अनुभव

कई बाबा प्रेमी ऐसे थे जो अपने स्वार्थपूर्ण हितों के पीछे लगे रहते थे और उसके लिये अनुचित कार्यों में भी लिप्त रहते थे, और यह कहकर अपने कार्यों को उचित ठहराते थे कि बाबा ने उनसे ऐसा करवाया था। कुछ बाबा प्रेमियों ने अपने नकारात्मक कार्यों की जिम्मेदारी से बचने के लिये ऐसा कहना अपनी आदत बना लिया था। जब ऐसा व्यक्ति भाऊ जी के सामने आता था, तब विरक्ति (घृणा) का भाव भाऊजी के चेहरे पर स्पष्ट दिखलाई पड़ता था। एक अवसर पर, जब ऐसा ही एक अभ्यस्त अपराधी भाऊ जी के आस–पास था, उन्होंने उस अपराधी के लाभ के लिये उसको सीधे सम्बोधित करने के स्थान पर उस विषय पर चर्चा करना प्रारम्भ कर दिया।

''बाबा को बेईमानी कभी भी पसन्द नहीं थी। ऐसे भी लोग हैं जो पूर्णरूपेण बेईमान हैं। वे सभी प्रकार के अनुचित कार्य करते हैं और कहते हैं, 'बाबा ने मुझसे ऐसा करवाया।' वे केवल स्वयं को धोखा दे रहे हैं और वे कष्ट पायेंगे। ऐसा करना उचित नहीं है। जहाँ तक बाबा का सम्बन्ध है, प्रत्येक व्यक्ति को पूर्णतया ईमानदार होना चाहिये। जब कोई व्यक्ति अनुचित कार्यों में लिप्त होता है और कहता है कि बाबा ने उससे ऐसा करवाया है, क्या वह वास्तव में ऐसा अनुभव करता है या यह उसका मन है जो उससे ऐसी बातें कहलाता है। जब वह केवल बाबा को प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक व्यक्ति में देखता है, केवल तब ही वह व्यक्ति उस अनुभव को प्राप्त कर सकता है जहाँ वह यह देखने लगता है कि बाबा, न केवल उसके द्वारा बल्कि उसके चारों ओर प्रत्येक के द्वारा भी, सबकुछ स्वयं ही कर रहे हैं।

"मान लो कोई व्यक्ति लूटपाट करता है और तब वह कहता है, 'बाबा ने मुझसे ऐसा करवाया।' क्या यह सही है? क्या वह वास्तव में ऐसा अनुभव करता है? यदि स्थिति ऐसी ही है और वह वास्तव में ऐसा अनुभव करता है तब वह पुलिस से क्यों भागता है? बाबा पुलिस वाले में भी हैं और न्यायाधीश (जज) में भी हैं जो उसे जेल जाने की सजा सुनाता है। लेकिन क्या चोर स्वेच्छापूर्वक पुलिस के पास जाता है? क्या वह प्रसन्नतापूर्वक जेल जाता है क्योंकि वह बाबा हैं जो उसे सजा देते हैं? वह ऐसा नहीं करता। क्यों? क्योंकि उसे ऐसा अनुभव नहीं है कि बाबा प्रत्येक व्यक्ति में हैं। वह अपनी स्वार्थपूर्ण इच्छाओं को पूरा करने के इरादे से ही केवल यह कह रहा है कि बाबा ने उससे ऐसा करवाया। इस तरह वह बिना किसी अपराध भावना के स्वयं को उसमें लिप्त रहने की स्वतन्त्रता अनुभव करता है। उसे इन शब्दों की सत्यता का कोई अनुभव नहीं होता है जिन्हें वह बोलता है।

"यह पूर्णतया बेईमानी है और बाबा इसे कभी पसन्द नहीं करते थे। दूसरी तरफ, छठवीं भूमिका का एक संत जो प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक वस्तु में ईश्वर को देखता है, उसका अनुभव क्या है? वह डाकू में ईश्वर को देखता है और पुलिस वाले और न्यायाधीश में भी ईश्वर को देखता है। वह और कुछ नहीं देखता बल्कि ईश्वर को ही हर जगह देखता है। उसका वास्तविक अनुभव यही है। ऐसा व्यक्ति यदि कोई भी सही या गलत कार्य करता है, तो वह ईमानदारीपूर्वक कह सकता है 'ईश्वर ने मुझसे ऐसा करवाया।' अपने अनुभव के प्रति पूर्ण ईमानदार बनो और स्वयं को धोखा मत दो, नहीं तो तुम अपने लिये और अधिक परेशानी पैदा कर लोगे।"

सच्चे प्रेमी उनको किस तरह याद करते हैं

एक बार मैं एक समस्या में उलझा हुआ था जो कि सरलता से नहीं सुलझ रही थी। मैं एरच के पास इस आशा से पहुँचा कि वह कुछ ऐसा बतलायेंगे जो मुझे इस समस्या को सुलझाने में सहायता करेगा। समस्या व्यक्तिगत प्रकार की थी। जब मैंने अपनी समस्या को उनसे बतलाया और उनसे उसका समाधान (हल) पूँछा, तो उन्होंने मुझसे कहा, "बाबा को अधिक और अधिक याद करो। जब भी समस्या तुम्हें परेशान करे, तो ऐसा करने का प्रयास करो और इसे करते रहो। इसे धैर्यपूर्वक करते रहो और तुम्हारी समस्या का समाधान हो जायगा।"

यह सोचकर कि एरच इस समस्या में उलझने से बचने का प्रयत्न कर रहे थे, मैंने उनसे कहा, "मैं बाबा की याद पहले से ही कर रहा हूँ ओर उनका नाम ले रहा हूँ लेकिन उससे कुछ भी नहीं हो रहा है। यदि आप कुछ अस्पष्ट जैसे 'बाबा की याद करो और समस्या सुलझ जायगी कहने के स्थान पर इस ख़ास समस्या के सम्बन्ध में और अधिक विशिष्ट निर्देष देंगे तो वह मेरे लिये पर्याप्त होगा। जैसा कि मैंने आपको बतलाया है, मैं पहले से ही बाबा की याद कर रहा हूँ।"

एरच ने बहुत नम्रतापूर्वक मुझसे कहा, "मैंने तुम्हें तुम्हारी समस्या का सही समाधान दिया है लेकिन तुम उसका अनुपालन नहीं करना चाहते हो।" मैंने इस पर ऐतराज़ करते हुए उनसे कहा, "मैं उनकी याद पहले से ही कर रहा हूँ" एरच ने मुझसे कहा, "तुम बाबा की याद नहीं कर रहे हो।" इस समय मैं थोड़ा सा उत्तेजित हो गया और मैंने उनसे कहा, "आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि मैं उनकी याद नहीं कर रहा हूँ?"

एरच ने गहरी साँस ली, अपना सिर हिलाया और बहुत धीरे–धीरे कहा, "कोई भी व्यक्ति जो कि बाबा की याद करता है, इस तरह दावा नहीं करता जैसा तुमने अभी किया है। वह हमेशा दिन भर के उन क्षणों के प्रति सचेत रहता है जब वह उनकी (बाबा की) याद नहीं कर सका था। वह उन क्षणों को अपने प्रियतम के स्मरण से भरने का सचेतन प्रयास करता है। जितना अधिक वह उनकी याद करता है, उतना ही अधिक वह अनुभव करने लगता है कि वह जितनी याद कर रहा है, वह पर्याप्त नहीं है। और जब यह भावना अविरल (निरन्तर) उसके मन में रहती है तब यह कहा जा सकता है कि ऐसा व्यक्ति उनकी याद कर रहा है। जब तुम उनको (बाबा को) इस तरह याद करोगे तो तुम्हारी मायावी समस्यायें समाप्त हो जायंगी। इस तरह से उनको याद करने का प्रयास करो।"

मेरे जैसे किसी व्यक्ति के लिये यह एक अविश्वसनीय आदेश था। अब जब एरच ने यथार्थ स्मरण के अर्थ के बारे में मुझे समझाया, तब मैंने यह अनुभव किया कि मेरा बाबा का स्मरण कितना नगण्य (कम) था। वास्तव में, मैंने अनुभव किया कि जिस तरह से ईश्वर के सच्चे प्रेमी इस खेल को खेलते हैं, मैंने उस तरह से स्मरण का खेल खेलना प्रारम्भ ही नहीं किया है। कुछ माह पश्चात् जब मेहेराज़ाद में दिन–प्रतिदिन के कार्य में एक खास समस्या उत्पन्न हो गई, तब एरच ने संयोगवश ये शब्द कहे, "अरे बाबा, यह सब कब समाप्त होगा?"

उनको चिढ़ाने के इरादे से, मैंने मज़ाकपूर्वक उनसे कहा, ''जब आप उन्हें (बाबा को) उसी तरह याद करेंगे जैसे कि सच्चे प्रेमी उन्हें याद करते हैं।'' उस विषय पर एरच क्या कहते हैं, यह जानने के लिये मैं उनके ही शब्दों को उनसे कह रहा था। एरच ने जो किया वह पूर्णतया अप्रत्याशित (उम्मीद से परे) था और वह देखकर मेरे आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा। उन्होंने (एरच ने) कहा, ''तुम ठीक कहते हो। मैं पूरे दिन में उनका स्मरण पर्याप्त रूप से नहीं कर रहा हूँ।'' तब उन्होंने अपने दोनों हाथ जोड़े और दीनतापूर्वक अपना सिर झुकाया। ''मुझे याद दिलाने के लिये तुम्हारा धन्यवाद। इस विषय में मैं आत्म सन्तुष्ट था कि मैं बाबा का स्मरण पर्याप्तरूप से कर रहा हूँ।'' उन्होंने यह बात पुनः दोहराई। ''मुझे याद दिलाने के लिये आपका धन्यवाद, बाबा। साथ ही साथ रुस्तम को यहाँ भेजने के लिये आपका धन्यवाद।''

एरच को ऐसा करते देखकर मेरे हृदय पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा और मुझे इसका अनुभव हुआ कि उनका अपने प्रभु का स्मरण करना कितना महान और सहज था। उनकी विनम्रता कितनी महान थी, क्योंकि मैं जानता था कि यदि कोई मुझे यह बतलाता कि मैं बाबा की याद नहीं कर रहा था, मैं इसे अपना अपमान समझता। लेकिन एरच ने मुझे धन्यवाद दिया। उनके लिये यह उनके प्रभु थे जिन्होंने उनको यह याद दिलाया कि यह उनके प्रभु थे जिन्होंने मुझे वहाँ पर भेजा। यह देखकर, उस दिन मैं यह सोचने पर मजबूर हुआ कि क्या कभी मैं बाबा को इस तरह याद करने में सफल हो पाऊँगा जिस तरह से वह (एरच) अपने प्रभु को याद करते थे और, यदि मैं कभी ऐसा कर पाया तो मुझे उस लक्ष्य तक पहुँचने के प्रयास में कितने जीवन लग जायेंगे।

तटविहीन सागर पर तट प्रकट होता है

बाबा ने कहा था कि उनके शरीर छोड़ने के बाद उनकी भौतिक उपस्थिति सौ वर्षों तक रहेगी। एरच ने मण्डली हाल में वहाँ बैठी हुई तीर्थयात्रियों की एक भीड़ को सम्बोधित करते हुए एक बार यह कहा था। ''यह ऐसा होगा जैसे कि वह अभी भी वहाँ भौतिक शरीर में हों और इसका प्रभाव पूरे ब्रह्माण्ड पर होगा। इस अवधि के दौरान जो लोग उन तक पहुँचना चाहते हैं, वे उन तक (बाबा तक) सरलतापूर्वक पहुँचेंगे।'' एरच थोड़ा रूके जो कि कहानियाँ सुनाते समय उनका अपना विशिष्ट तरीका था। प्रत्येक नाटकीय कथन के

पश्चात्, वह थोड़ा रुकते थे जिससे कि तीर्थयात्री उन शब्दों को आत्मसात् कर सकें और उनके महत्व को समझ सकें।

एरच ने कहना ज़ारी रखा, ''बाबा के यह कहने का क्या तात्पर्य था कि उनके शरीर छोड़ने के पश्चात् सौ वर्षों तक उनकी उपस्थिति रहेगी? इसका क्या यह अर्थ है कि सौ वर्षों के पश्चात् यह (बाबा की उपस्थिति) उपलब्ध नहीं होगी? उन्होंने अपना शरीर छोड़ने के पश्चात् सौ वर्षों की इस अवधि को महत्व क्यों दिया है? यदि वह (बाबा) ईश्वर हैं और वह सर्वव्यापी हैं तो उन्हें हर समय हर जगह विद्यमान होना चाहिये। इसलिये वह एक खास अवधि को महत्व क्यों देते हैं?''

थोड़ी देर रुकने के पश्चात्, एरच ने पुनः बहुत धीरे–धीरे कहना जारी रखा, ''जो उन्हें इस अवधि के दौरान खोजेंगे, वह (बाबा) उनको सरलता से प्राप्त होंगे। साकार रूप लेने के कारण, उन्होंने उनको प्रेम करना, उनकी इच्छाओं का पालन करके उन्हें प्रसन्न करना और इस प्रकार ईश्वरत्व के लक्ष्य तक पहुँचना हमारे लिये बहुत सुनिश्चित एवं सरल बना दिया है। बाबा का अवतरण मानवता को इस मायावी स्वप्न से जगाकर उनको ईश्वरत्व का अनुभव देने के लिये था। वह माया में जकड़ी सभी तथाकथित बूँदों को अपनी शाश्वत शक्ति, ज्ञान और आनन्द के महासागर में विलीन करने में सहायता करने के लिये आये थे।

''संक्षेप में ईश्वर तुम्हारे बीच तुम्हारी दहलीज पर, मूलरूप से, स्वयं ही ईश्वर को प्लेट में रखकर तुम्हें देने के लिये आया है। वह (बाबा) तुममें से प्रत्येक को ईश्वर बनाने, तुम्हें उसका यथार्थ अनुभव देने के लिये आये हैं। यह सहज, सर्वसुलभ अवसर अभी उपलब्ध है जब वह (बाबा) बहुत सरलता से प्राप्य हैं, क्योंकि उनकी भौतिक उपस्थिति की ताजगी उनके शरीर छोड़ने के सौ वर्षों तक रहेगी जैसा कि उन्होंने (बाबा ने) कहा था। ''यह वह अवधि है जब दया का सागर लगभग सूख गई नदियों को पुनर्जीवित करने के लिये उनमें बह रहा है। कोई यह भी कह सकता है कि यह वह अवधि है जहाँ तटविहीन सागर को एक तट प्राप्त हो जाता है। बाबा का मानव रूप लेना ऐसा ही है जैसे इस तटविहीन सागर के चारों ओर एक तट प्रकट हो गया है। यह तट हमारे लिये सागर पर चलने, उसकी लहरों से खेलने और उसके अनुभव का आनन्द लेने के लिये इसे साकार बनाता है। तट उन सभी लोगों के लिये इसे सरल बनाता है जो सागर

का अनुभव प्राप्त करने में रूचि रखने के कारण उस तक पहुँचना चाहते हैं। ऐसे भी लोग हैं जो तट से सागर के मध्य तक तैरते हैं और दूसरे वे लोग हैं जो यथार्थ के मोती को पाने के लिये सागर की सतह तक डुबकी लगाने का प्रयास करते हैं।

''इस तट के कारण ही ये सभी गतिविधियाँ इस समय वेग से उत्पन्न होती हैं और अपना आधिपत्य जमा लेती हैं। यहाँ तक कि लोग सागर का आनन्द लेने के इरादे से आते हैं, क्योंकि यह तट ही है जिसने विशाल संख्या में लोगों के लिये इसे सम्भव बनाया है। इसी कारण से तुम अवतार के भौतिक अवतरण के दौरान संसार में इतनी अधिक आध्यात्मिक परिवर्तन (क्रान्ति) देखते हो।''

''एरच आगे बढ़ने से पहले पुनः थोड़ी देर रुके। ''सौ वर्षों के बाद क्या होगा? तट पुनः अदृश्य हो जाता हैं, सागर पुनः तटविहीन हो जाता है और इसलिये सागर लोगों की विशाल संख्या के लिये पहुँच से बाहर हो जाता है। तटविहीन सागर के उस पार पहुँचना अब सरल नहीं होता। केवल एक दृढ़निश्चयी जिज्ञासु (Seeker) और ईश्वर प्रेमी ही ईश्वर के इस तटरहित सागर तक पहुँच सकता है जो अत्यधिक त्याग और कष्ट उठाने के लिये तैयार होगा। तट के कारण जो दैवीय वातावरण लोगों को सरलता से प्राप्त था, अब केवल उन दुर्लभ आत्माओं को उपलब्ध होता है जो उसके प्रति अपने प्रेम में पूर्णतया मर जाने के लिये तैयार होते हैं।

''ईश्वर की उपस्थिति सभी समय और हर समय होती है। वह सर्वज्ञ और सबके लिये उपस्थित होता है लेकिन, अपने अवतरण के समय के दौरान, उस तक बहुत सरलता से पहुँचा जा सकता है। फिर भी, उनके शरीर छोड़ने के पश्चात् जब उनकी उपस्थिति की यह सौ वर्ष की अवधि समाप्त हो जाती है, तब उन तक पहुँचने के लिये प्रत्येक को बहुत अधिक प्रयास करना पड़ता है और केवल वे दुर्लभ आत्मायें ही उन तक पहुँचने में सफल होती हैं जिनका साहस और प्रेम महान होता है। लोगों की विशाल संख्या के लिये अवतरण के पहलू के दौरान जो कुछ सहजरूप से उपलब्ध होता है, वही अवतरण के पहलू के समाप्त होने के पश्चात केवल उन लोगों को बहुत भारी क़ीमत पर उपलब्ध होता है जो कि इसकी क़ीमत का भुगतान करने के लिये इच्छुक होते हैं। इस प्रकार ऐसा ही होता है।

''इसलिये इस अवसर का अधिक से अधिक लाभ उठाओ जब स्वयं ईश्वर ही प्लेट में ईश्वर को रखकर तुम्हें भेंट कर रहा है। वह तुमको जो कुछ दे रहा है उसे हाथ बढ़ाकर लो क्योंकि भविष्य में यह अवसर तुम्हें इतनी सरलता से नहीं दिया जायगा।''

सांस्कृतिक भिन्नतायें

मैंने पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त की थी और बाद में मैंने समुद्रीय अभियन्ता (marine engineer) जैसा व्यवसाय अपनाया जिससे मैंने पूरे विश्व का भ्रमण किया, फिर भी जब मैं मेहेराबाद में रहने के लिये आया तो मैं वहाँ पश्चिम के प्रेमियों का रवैया देखकर अत्यधिक विस्मित हुआ।

उदाहरणार्थ, भारत में हमारा पालन पोषण इस प्रकार होता है कि हमें न केवल अपनी व्यक्तिगत समस्याओं में बल्कि कार्य सम्बन्धी मामलों में भी अपने से बड़े और वरिष्ठ बुद्धिमान लोगों की सलाह और निर्देशन लेना होता है। इसलिये, जब मैं पहली बार समाधि पर गया, तो मेरे लिये यह स्वाभाविक ही था कि मैंने स्वयं ही उस स्थान के नियम, व्यवस्था और शिष्टाचार को जानना चाहा। मैंने लोगों से उम्मीद की कि वह मुझे निर्देशित करें और यह बतलायें कि मुझे क्या करना है और क्या नहीं करना है, जैसा कि पूरे भारत में पवित्र स्थानों के आस–पास हमेशा होता है। जब समाधि की देखभाल करने वाले व्यक्ति मुझे इस विषय में निर्देशित करते थे और बहुधा मेरी ग़ल्तियों को सुधारते थे, तब मैं उनको मुझे मार्ग दिखलाने के लिये धन्यवाद देता था क्योंकि, जैसा मैंने कहा था, इसकी उम्मीद हर वह व्यक्ति करता है जो भारत में किसी तीर्थ स्थान को देखने जाता है। फिर भी, मैंने देखा कि कुछ पश्चिमी प्रेमी इस पर नकारात्मक ढंग से प्रतिक्रिया करते थे। वे इसको अपना अपमान समझते थे और बाबा के प्रति अपने प्रेम को अपने स्वाभाविक तरीके से व्यक्त करने की अनुमती न मिलने से वे बहुधा अपनी अप्रसन्नता प्रकट करते थे। इस कारण ये शिकायतें बाबा की बहिन मनी तक बहुधा पहुँचने लगीं जो उस समय ट्रस्ट की चेयरमैन थीं।

एक दूसरी चीज़ जो कि मैं, अपने भारतीय पालन पोषण के कारण, बहुत स्वाभाविक तरीके से करने का अभ्यस्त था, वह यह थी कि मैं अपने सभी सहकर्मियों को विश्वास में लेता था और कार्य की जिम्मेदारी लेने से पहले

कार्य से सम्बन्धित सभी पहलुओं पर उनके साथ बात करता था। इस तरीके से बहुत से विचार उभर कर सामने आते थे और कार्य को बहुत अधिक कुशलता से पूरा किये जाने के लिये उन विचारों में से एक सबसे अच्छे विचार को मैं चुन लेता था, यद्यपि वह विचार मूलरूप से मेरा नहीं होता था।

मुझे एक आश्चर्यजनक धक्का लगा जब मैंने यह देखा कि कुछ पश्चिम के प्रेमी, जिनके साथ मुझे कार्य करना था, मेरे द्वारा उनको दिये गये छोटे से छोटे सुझाव को भी वह अपना अपमान समझते थे और बहुधा मेरे अच्छे इरादों को भी अपने कार्य पर एक व्यक्तिगत आक्रमण के रूप में देखते ओर समझते थे। इसका अभ्यस्त होने में मुझे थोड़ा समय लगा और, बाबा की सहायता और मण्डली के निद्रेशन में, मैं ऐसी परिस्थितियों को अपनी सूझबूझ और हास्य– परिहास द्वारा संभालने का करता था, जैसा कि मण्डली मुझसे आशा करती थी।

ऐसी परिस्थितियों से निपटने में मेरी सहायता मनी के द्वारा मुझे दी गई उस सलाह ने की जो उन्होंने मुझे उस समय दी थी जब मैं वहाँ रहने के लिये पहली बार आया था। उन्होंने मुझसे कहा था, ''याद रखो, जब भी तुम किसी नये स्थान, नई संस्था या नये पर्यावरण में जाते हो, उस स्थान में घुलमिल जाने का अपनी पूरी क्षमता से प्रयास करो। यह आशा मत करो कि स्थान तुम्हारे लिये बदले। तुम जो हो वही रहो, लेकिन सामन्जस्य (तालमेल) बनाये रखना सीखो। स्थान के सन्तुलन (व्यवस्था) में बाधा मत डालो। यदि तुम ऐसा करते हो, तो वह स्थान तुम्हें अपनायेगा और, यदि तुम इसमें असफल होते हो, तब तुम पाओगे कि तुमने अपना स्थान खो दिया है।''

मैं यह दृढ़ निश्चय कर चुका था कि मैं वहाँ रहने वाला था और इसलिये मनी मुझसे जैसी आशा करती थीं, मैंने उनके द्वारा दी गई सलाह को क्रियान्वित करने का पूरा प्रयास किया। लगभग एक वर्ष पश्चात् मनी ने मुझसे इस विषय पर बातचीत की और उन्होंने मुझसे कहा, ''क्या तुम्हें याद है कि मैंने तुमसे अपना स्थान बनाने के विषय में क्या कहा था जब तुम यहाँ रहने के लिये आये थे? अच्छा है तुमने अपना स्थान बना लिया। ध्यान रखना कि तुम इसे खो न दो। तुम्हें इस मार्ग पर सदेव सतर्कतापूर्वक चलना है।''

वर्षों तक मैं इस विषय में बहुत सतर्क रहा। मैं जो करता था उसमें विस्फोट का खतरा हमेशा रहता था और सांस्कृतिक भिन्नतायें इस खतरे को

बहुत बढ़ा देती थीं। यहाँ तक कि जब मेरे इरादे अच्छे होते थे और व्यक्ति की सहायता करने के होते थे हानि पहुँचाने के लिये नहीं, तब भी ऐसी ही प्रतिक्रिया मैं बहुधा देखता था। मैं कह नहीं सकता कि यह सांस्कृतिक था या कि यह उस व्यक्ति विशेष के कारण होता था, लेकिन एक सामान्य नियम के रूप में मैंने यह पाया कि पश्चिम के प्रेमियों से मुझे बहुत समझदारी से व्यवहार करना था।

मैं इसका उल्लेख इस कारण से कर रहा हूँ कि आगे होने वाली घटनाओं को समझने में पाठकों को सहायता मिल सके। मैं यह पुनः कहना चाहता हूँ कि मैं जो भी कह रहा हूँ वह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है जो मैंने उस क्षण देखा, सुना और अनुभव किया था। पाठकों के सन्मुख यह प्रस्तुत करने में मेरा इरादा किसी व्यक्ति की आलोचना करना, दोष देना या उस पर आक्रमण करना नहीं है, बल्कि वहाँ घटित हुई उन कुछ घटनाओं को समझने में उनकी सहायता करना है जिनको दर्शकों द्वारा सीमित सांसारिक परिपेक्ष्य में देखे जाने के कारण उन्हें तोड़–मरोड़ कर विकृत रूप में प्रस्तुत किया गया है। वहाँ उन लोगों के साथ रहने के कारण जो उनके (बाबा के) थे और जिनके हृदय वास्तव में निर्मल थे, मैंने उन्हीं तथ्यों को भिन्न तरीके से देखा और समझा है तथा पाठकों के सामने मैं जो भी प्रस्तुत कर रहा हूँ वह एक भिन्न दृष्टिकोण है– एक दृष्टिकोण जो मण्डली द्वारा मुझे इसलिये दिया गया था कि मुझे उससे अपनी पुरानी मान्यतायें, सोचने के सीमित तरीके का त्याग करने में सहायता मिल सके।

''सही और गलत की धारणा को त्यागना और लक्ष्य तक पहुँचने की यात्रा में प्रत्येक आत्मा को संघर्ष करते हुए देखने का विचार ऐसा था जिसने दूसरी सभी मान्यताओं को चुनौती दे दी जिनके साथ मेरा पालन पोषण हुआ था। यह मेरी हस्ती और सीमित ख़ुदी के रूप में मेरे अस्तित्व के लिये एक ख़तरा था जैसा कि मैं अपने आप को समझता था। इस धारणा को अपनाना और अपनी प्रतिदिन की ज़िन्दगी का एक हिस्सा बनाने का अर्थ अपनी सीमिताओं के बन्धन को तोड़कर उनसे मुक्त होना था, क्योंकि यह न केवल प्रत्येक को बिना शर्त, बिना परखे स्वीकार करने, बल्कि उन्हें प्यार भी करने की मुझे शक्ति (सामर्थ्य) प्रदान करता था, यह महत्वपूर्ण नहीं था कि वे कौन थे। यह एक उच्च्व स्तरीय आदेश था और मेरा कमजोर हृदय यह जानने के बावजूद भी भय का अनुभव कर रहा था कि बाबा की कृपा, उनकी सहायता सदैव उन लोगों को प्राप्त होती है जो असम्भव को सम्भव करने का प्रयास करना चाहते हैं– उस मार्ग पर चलने का

प्रयास करते हैं।

मैं ''पूरब के लोग'' या ''पश्चिम के लोग'' जैसे शब्दों का प्रयोग करने में हिचकिचाता हूँ क्योंकि बहुधा लोग इसे जातीय टिप्पणी समझते हैं। फिर भी, यह उस कहानी के लिये आवश्यक है जो आगे घटित होती है। सांस्कृतिक भिन्नताओं का वर्णन करने का मुख्य कारण यह है कि मण्डली जनों में से एक, विशेषरूप से मनसारी, को जाति भेद के कारण दोष दिया जाता था। मेरी कहानी उनके विषय में है और मैं आशा करता हूँ कि यह कहानी उनके कुछ कार्यों के सम्बन्ध में प्रचलित गलत धारणाओं को दूर करने में सहायता करेगी।

पाठकों को भारत के पारम्परिक पालन पोषण को समझाने के लिये, मैं यह बतलाना पसन्द करूँगा कि हमारा – मेरी पीढ़ी के बच्चों का, पालन पोषण किस प्रकार हुआ था। हम एक बहुत ही गहराई से जुड़े परिवार में पले बढ़े थे जहाँ पर रिश्तेदारों और पड़ोसियों को भी एक विस्तृत बड़े परिवार के सदस्यों के रूप में माना जाता था। हमेशा उनसे बातचीत होती थी और हमारे बन्धन बहुत मजबूत थे, जो कि बढ़ते हुए बच्चों के लिये एक विस्तृत सुरक्षा कवच प्रदान करते थे। सम्बन्ध विच्छेद (तलाक) तो सुनाई ही नहीं देते थे।

फिर भी, समस्यायें थीं। बच्चों को बहुधा बड़ों के द्वारा अनुशासन के लिये प्रताड़ित भी किया जाता था जो कि पाश्चात्य देशों में शायद बाल शोषण के रूप में माना जाता। हमारे लिये, यह केवल सामान्य अनुशासन था। बच्चे होने के कारण हमें न केवल अपने माता–पिता का सम्मान करना होता था बल्कि इस विस्तृत परिवार के बड़ों का भी सम्मान करना पड़ता था। जाने अनजाने कहा गया कोई भी असम्मानजनक शब्द उन्हें बड़ों के द्वारा डाँटना फटकारना या घर से बाहर निकाल देना और भोजन न देना इत्यादि को अनुशासन बनाये रखने के लिये दण्डस्वरूप आमन्त्रित करना था। जब हम क्षमा मांग लेते थे और फिर से वह गलती न करने का वादा करते थे, तब बड़े लोग हमें क्षमा कर देते थे और हमें समझाते थे कि हमें सजा क्यों दी गई थी।

इसलिये हम यह समझते हुए बड़े होते थे कि बड़े लोग हम पर जो अनुशासन लागू करते थे वह हमारी अपनी भलाई के लिये था, भले ही वह कितना कठोर या क्रूर होता। दूसरी एक कमी यह थी कि यदि हम कुछ करना चाहते थे, तो भी हमें सभी बड़े लोगों से अनुमति लेनी पड़ती थी और जब तक वह इसके लिये स्वीकृति नहीं देते थे, हम अपनी अभिरूचि को पूरा करने के

लिये स्वतन्त्र नहीं थे। इस सम्बन्ध में स्त्रियों को और भी कम स्वतन्त्रता थी क्योंकि, ऐसा माना जाता था कि वे सभी घरेलू कार्य करें और आखिरकार उनकी शादी होगी और वे बच्चों का पालन पोषण करेंगी। अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में और कुछ हद तक शहरों में भी अभी तक ऐसा प्रचलित है।

प्रत्येक को यह समझना होगा कि मनसारी का पालन पोषण ऐसे ही पारम्परिक संस्कृति वाले एक परिवार में हुआ था जो मेरी पीढ़ी से दो पीढ़ी पुराना था। इसलिये, वे बच्चों के अपने पालन पोषण में बहुत अधिक पुराने रीतिरिवाज और विचारधारा के लोग थे। मनसारी बाबा की मण्डली में से एक थीं जो बाबा से न केवल प्यार करतीं थीं, बल्कि बाबा को पूज्यनीय दृष्टि से देखतीं थीं और मूल रूप से पूज्य मानती थीं। वह हमें कहानियाँ सुनाती थीं कि किस प्रकार वह बाबा को एकटक देखतीं थीं और उनके शब्दों पर ध्यान देना भूल जातीं थीं। जब बाबा उनसे पूँछते थे कि जो उन्होंने (बाबा ने) कहा था, क्या उसे उन्होंने (मनसारी ने) समझ लिया था, तब वह बाबा के सामने स्वीकार करती थीं कि वह (मनसारी) उनके (बाबा के) सौन्दर्य की पूजा करने में खो गई थीं और उनके शब्दों पर ध्यान नहीं दे पाईं थीं।

छोटे क़द की होने और बहुत तेज स्वभाव की होने से, बाबा ने उनका उपनाम ''मिर्ची'' रखा था। एक बार, जब बाबा मनसारी से अपने साथ पहाड़ी पर चलने के लिये कह रहे थे, बाबा ने अचानक ही अपना हाथ पहाड़ी के चारों ओर हिलाया और उनसे (मनसारी) से कहा, ''मैं जल्दी ही पश्चिम की यात्रा पर जाने वाला हूँ। यदि मैं तुम्हें अपने पीछे इस पहाड़ी पर इसकी देखभाल के लिये छोड़ दूँ, तब क्या तुम मेरे लिये ऐसा करोगी?'' मनसारी तब रोने लगीं, क्योंकि वह बाबा से अलग होने के विचार को सहन नहीं कर पा रहीं थीं। बाबा ने उनको यह कहकर सान्त्वना दी कि वह (बाबा) मज़ाक कर रहे थे। अन्ततोगत्वा, ऐसा हुआ कि मनसारी पहाड़ी पर अकेले रहने लगी। कैकोबाद दस्तूर का परिवार ही केवल ऐसा अन्य परिवार था जिसे वहाँ रहने की अनुमति थी।

बाबा के शरीर छोड़ने के पश्चात्, मनसारी स्वाभाविकरूप से उनकी समाधि की देखभाल करने लगीं। शुरू के वर्षों में, जब पहले तीर्थयात्रियों ने आना प्रारम्भ किया था, मेहेराबाद में उस समय ठहरने की कोई सुविधा नहीं थी। ये तीर्थयात्री अहमदनगर में होटलों में रहते थे। वे साइकिलें किराये पर

लेते थे और मेहेराबाद आने जाने में उनका उपयोग करते थे और अपने दिन का अधिकांश समय वे समाधि में या सभा मण्डप के नीचे या बाबा की गादी के पास बिताते थे। मनसारी इन प्रारम्भिक तीर्थयात्रियों को चाय और स्नैक्स (बिस्कुट) के लिये आमंत्रित करती थीं, और उनके साथ बाबा का प्यार बाँटती थीं। वह (मनसारी) तीर्थयात्रियों से उनकी बाबा की कहानियाँ सुनने का आनन्द लेतीं थीं और, जैसा कि वह स्वयं कहतीं थीं, उन्हें अधिक से अधिक बाबा प्रेमियों से मिलने ओर उनके साथ बाबा का प्रेम बाँटने का लालच था।

वह तीर्थयात्रियों को ऊपरी मेहेरबाद में विशेषरूप से म्यूजियम और बाबा का पिंजरानुमा कमरा घुमाने के लिये ले जाती थीं। इन प्रारम्भिक तीर्थयात्रियों के साथ वह बहुत अच्छी तरह घुलमिल गईं थीं और उस समय की उनके पास आनन्ददायक यादें थीं जिन्हें वह बहुधा मेरे साथ बाँटती थीं। तब प्रत्येक चीज़ सरल व सहज थी और वह उस सरलता और समर्पण को पसन्द करती थीं जो वह उन प्रारम्भिक तीर्थयात्रियों में देखती थीं। वे (तीर्थयात्री) वहाँ पर रहने और बाबा की कहानियाँ सुनने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं चाहते थे। कठिनाईयाँ बहुत थीं, लेकिन तीर्थयात्री उनकी परवाह नहीं करते थे, क्योंकि वे बाबा के प्रेम का अनुभव करना चाहते थे।

मनसारी बहुधा यह अनुभव करती थीं कि जब से मेहेर पिल्ग्रिम सेन्टर तीर्थयात्रियों के ठहरने के लिये बनाया गया था, तभी से आने वाले तीर्थयात्रियों के ध्यान की एकाग्रता में परिवर्तन आना शुरू हो गया था। अधिकांश तीर्थयात्री अपना समय ऊपर समाधि स्थान पर बिताने के बजाय MPC में उलब्ध सुविधाओं में रहकर आराम से बिताना अधिक पसन्द करते थे। धीरे–धीरे जैसे–जैसे उन्हें अधिक आराम और सुविधायें प्रदान की गईं, उस स्थान पर जाने वाले कुछ तीर्थयात्रियों ने, पूर्व और पश्चिम दोनों के ही प्रेमियों ने, ट्रस्ट से और अधिक सुविधाओं की मांग करना प्रारम्भ कर दिया। इन माँगों ने मण्डली के अन्य सदस्यों की अपेक्षा मनसारी को अधिक परेशान कर दिया क्योंकि उन्हें (मनसारी को) उस सादगीपूर्ण ज़िन्दगी से बहुत अधिक प्रेम था जो कि, तीर्थयात्री, अब तक बाबा के साथ पहाड़ी पर बिताते थे। वह तीर्थयात्रियों का बाबा पर ध्यान केन्द्रित करने में उनकी सहायता करने के इरादे से न केवल प्रेमपूर्वक, बल्कि आवश्यकता होने पर कठोरतापूर्वक उनका मार्गदर्शन करती थीं। वह अपने अत्यधिक क़रीबी लोगों को यह हमेशा समझाती थीं कि प्रेम का अर्थ त्याग और

अपने प्रियतम के प्रति स्वेच्छापूर्वक समर्पण है। प्रत्येक को यह मण्डली के जीवन से सीखना चाहिये जो बाबा के साथ रहते थे और उसी तरीके से, जितना सम्भव हो सके, बाबा से प्रेम करने का प्रयास करना चाहिये, न कि बाबा से प्रेम करने के अपने काल्पनिक विचारों में लिप्त रहना चाहिये।

कुछ तीर्थयात्री, यह बहाना लेकर कि यह बाबा के प्रति प्रेम प्रकट करने का स्वाभाविक तरीका था, समाधि पर बहुधा हास्यास्पद् चीज़ें करते थे जिससे हर कोई परेशान हो जाता था। मनसारी इन तीर्थयात्रियों को बाबा के समय की कहानियाँ नम्रतापूर्वक सुनाती थीं, जिनमें बाबा ने स्वयं कहा था कि वह (बाबा) अपने प्रेमियों से क्या चाहते थे और उन्हें किस बात से प्रसन्नता होती थी। जब बाबा के आदेशों का पालन कोई व्यक्ति असुविधा होने पर भी करता था, तब इससे बाबा को प्रसन्नता होती थी। अधिकांश तीर्थयात्री, पूरब और पश्चिम दोनों के ही, मनसारी के इरादों को समझ जाते थे और उन लोगों का मार्गदर्शन करने के लिये मनसारी को धन्यवाद देते थे।

फिर भी, पश्चिम के कुछ तीर्थयात्री, जो उनसे असहमत थे, बाबा की बहिन मनी के पास गये और उनसे (मनी से) मनसारी के द्वारा उन्हें परेशान किये जाने के सम्बन्ध में शिकायत की। उन्होंने मनसारी के विरुद्ध जातिवाद का आरोप लगाया, क्योंकि वह बहुधा पश्चिम के इन प्रेमियों की कठोरतापूर्वक भर्त्सना करते समय अपनी भारतीय संस्कृति और पालन पोषण का उल्लेख करतीं थीं। मेरे जैसे कुछ लोग, जो उनके (मनसारी के) करीबी थे, शायद अपने स्वयं के पालन पोषण के कारण उन चीजों को उस नजरिये से न देखते थे और न ही समझते थे।

अनुशासन ऐसी चीज़ थी जिसकी हम अपने बड़ों से आशा करते थे। विद्यालय और कालेज के द्वारा भी, हमें एक कठोर अनुशासनात्मक शासन प्रणाली से होकर गुजरना होता था। पश्चिम के कुछ लोगों को इस तरह प्रतिक्रिया करते और मनसारी के विरुद्ध जातिवाद का आरोप लगाते देखना मेरे लिये बहुत कष्टकारी था, लेकिन मैंने इसे बाबा पर छोड़ दिया क्योंकि मैं जानता था कि वह (मनसारी) उनकी (बाबा की) थीं। मैं यह अनुभव करता था कि मनसारी न केवल मेरे लिये बल्कि उनके लिये (बाबा के लिये) भी एक विशिष्ट आत्मा थीं अन्यथा बाबा पूरी ज़िन्दगी उनको पहाड़ी पर क्यों रखते और उनकी मृत्यु के बाद उनकी अस्थियों की राख को पहाड़ी पर क्यों दफ़नाया जाता–

एक ऐसा स्थान जिसे केवल कुछ मुट्ठीभर मण्डली के सदस्यों को दिया गया है। इस अवतारकाल की यह विलक्षणता है कि बाबा ने, स्वयं ही, अपने नज़दीकी लोगों में से कुछ की क़ब्रों को भावी पीढ़ी के लिये अपनी समाधि के पास स्थान दिया है। यह स्थान दिया जाना मुझे विशेष रूप से महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। जब बैदुल ने बाबा से पूँछा कि क्या वह उनकी (बाबा की) समाधि के केयरटेकर हो सकते थे तब बाबा ने उत्तर दिया, ''तुम बेवकूफ हो, एक दिन तुम्हारी समाधि का भी एक केयरटेकर होगा।'' उन लोगों का अपना ऐसा ओहदा था।

मनी, जब भी मेहेराबाद आतीं थीं, मनसारी से मिलने को भी महत्व देतीं थी। वह मनसारी के साथ बाबा के साथ के अच्छे पुराने दिनों के विषय में बात करतीं थी और तुम उन दोनों के चेहरों की चमक देख सकते थे जो उन स्मृतियों के कारण चमकते थे। मनी पूरी महिला मण्डली के साथ माह में एक बार समाधि पर जाती थीं और कभी–कभी जब उन्हें समाधि और पहाड़ी पर बने भवनों के रखरखाव और उनको उसी तरह अच्छी अवस्था में बनाये रखने से सम्बन्धित कार्यों के कुछ मामलों में बातचीत करनी होती थी, तब मीटिंग पुस्तकालय में या अध्ययन कक्ष में आयोजित की जाती थी जिससे मनसारी भी उस मीटिंग में सम्मिलित हो सकें और उनको बाबा द्वारा दिये गये पहाड़ी न छोड़ने के आदेश का उल्लंघन भी उनके द्वारा न हो।

मनी की इस तरह की मुलाकातों में से एक मुलाकात के दौरान, जब उन्होंने अपनी सभी ड्यूटियों से स्वयं को मुक्त कर लिया था, वह मनसारी के कमरे में उनसे उनके कार्य के सम्बन्ध में कुछ बातचीत कर रहीं थीं। तब अनायास मनी ने मनसारी से कहा, ''पश्चिम की महिला तीर्थयात्री पिछले दिन केवल तुम्हारी शिकायत करने ऑफ़िस में आई थीं। उसे यह अनुभव हो रहा था कि तुम पश्चिम के लोगों से अच्छा व्यवहार नहीं करतीं क्योंकि तुम उन लोगों को पसन्द नहीं करतीं।'' मनसारी ने तुरन्त ही उत्तर दिया, ''कौन कहता है कि मुझे पश्चिम के लोग पसन्द नहीं है? वास्तव में, पश्चिम में बहुत से बाबा प्रेमी हैं जिनसे मैं प्रेम करती हूँ और उनका साथ चाहती हूँ क्योंकि वे मुझे बाबा के प्रेम की याद दिलाते हैं और मुझे उसमें आनन्द मिलत है।''

मनसारी तब पश्चिम के बाबा प्रेमियों के नाम की एक लम्बी लिस्ट बतलाने लगीं जो कि उन्हें प्रिय थे। उस लिस्ट में तीर्थयात्रियों के साथ–साथ अन्तेवासियों (वहाँ रहने वालों के) के भी नाम थे। उन्होंने तब आगे कहा, ''हाँ,

एक चीज़ है जो मुझे पश्चिम के कुछ बाबा प्रेमियों की पसन्द नहीं है और वह उनका व्यवहार है जो कहता है, 'मेरे अलावा पूरी दुनियाँ को मरने दो।' जब लोग यहाँ आते हैं और प्रिय बाबा के नाम पर इस प्रकार का व्यवहार करते हैं, तो मैं उसे पसन्द नहीं करती। यह एक पवित्र स्थान है और इस स्थान की पवित्रता को बनाये रखना चाहिये। उन्हें इस स्थान को छुट्टियाँ मनाने का स्थान नहीं समझना चाहिये। ऐसे लोगों को उचित मार्ग दिखलाने के लिये हमें ही उनका मार्गदर्शन करना होगा। नहीं तो वे यह कैसे सीखेंगे?''

मनसारी ने तब, चेहरे पर पीड़ा के भाव के साथ, कहा, ''इन लोगों में से कुछ के लिये मैं दुख का अनुभव करती हूँ जो ऐसा व्यवहार करते हैं क्योंकि मैं जानती हूँ कि वे आन्तरिक रूप से कष्ट पा रहे हैं। उनके हृदय और मस्तिष्क कष्ट पा रहे हैं। अन्यथा वे ऐसा व्यवहार नहीं करते। मैं इन लोगों को भी इनके ऐसे व्यवहार के लिये दोष नहीं देती; मैं पाश्चात्य संस्कृति को दोष देती हूँ जो ऐसे व्यवहार को प्रोत्साहित करती है। यह उन लोगों के लिये अच्छा हो सकता है जो इस दुनियां में रहते हैं और सांसारिक खुशियों के पीछे भागते रहते हैं, लेकिन यह निश्चितरूप से उन लोगों के लिये अच्छा नहीं है जो इस मार्ग पर चलना चाहते हैं। यह ईश्वर की खोज करने वालों के लिये नहीं है।''

मनसारी थोड़ी देर रुकीं और तब उन्होंने आगे कहा, ''लेकिन तुम उन्हें कैसे दोष दे सकते हो? उनके विवाह सम्बन्धों को देखो। वे कितनी सरलता से टूट जाते हैं। इसे वे सामान्य नहीं मानते यदि कोई एक ही व्यक्ति से विवाह करके अपनी पूरी जिन्दगी उसके साथ बिताता है और उसका एक बार भी सम्बन्ध विच्छेद (तलाक) नहीं होता। उस दिन एक लड़की मुझसे मिलने आई। वह एक नया चेहरा था। मैंने सोचा कि वह किसी बाबा प्रेमी की लड़की होगी और मैंने उससे उसके माता–पिता के विषय में पूंछतांछ करने का प्रयास किया। तब उसने (लड़की ने) मुझसे (मनसारी से) कहा, 'मेरे पास पिता के चार और माँ के तीन समूह (सेट) हैं।' एक बच्चे से, जो ऐसे भुला न सकने वाले कटु अनुभव के प्रभाव में हो, कोई कैसे उचित व्यवहार की आशा कर सकता है? उसका मार्गदर्शन कौन करेगा? उसके माता–पिता का दायित्व (भूमिका) कौन निभायेगा? और जब माता–पिता स्वयं ही इस प्रकार की चीजों में लिप्त हों, तो वे अपने बच्चों पर किस प्रकार का प्रभाव डाल सकते हैं?''

मनसारी ने तब आँखें बन्द कर लीं, और सिर हिलाते हुए कहा, ''बेचारी बच्ची। कितना कष्ट, क्या संस्कार हैं। बाबा उसकी सहायता करें।''

तब उन्होंने (मनसारी ने) मनी को देखा और पुनः कहा, ''मुझे यह सब पसन्द नहीं हैं। मैं उनको प्रेम से समझाने का प्रयास करती हूँ और उनमें से अधिकांश मेरी बात पर ध्यान भी देते हैं। फिर भी, कुछ ऐसे लोग हैं जो इस पर ध्यान नहीं देना चाहते, इसलिये मैं उनके प्रति कठोर हो जाती हूँ।'' फिर वह मनी की ओर मुड़ीं और उन्होंने कहा, ''इसमें गलती तुम्हारी और मेहेराज़ाद मण्डली की भी है। तुम लोग उन्हें केवल अच्छी कहानियाँ सुनाते हो और लाड़प्यार देकर बिगाड़ते हो। इसके अतिरिक्त, तुम लोगों को सप्ताह में केवल कुछ दिन ही उनसे बातचीत करनी होती है। तुम लोग उनको नहीं बतलाते हो कि बाबा की कठोर वास्तविकता क्या है और अपने प्रेमियों से वह क्या चाहते हैं। क्योंकि तुम लोग उनसे केवल अच्छी–अच्छी बातें करते हो, वे यह नहीं समझ पाते कि बाबा से प्रेम करने में कितने कष्ट सहने पड़ते हैं। मैं अनुभव करती हूँ कि यह मेरा कर्तव्य है कि मैं उनको यह बतलाऊँ, भले ही कुछ लोग इसे पसन्द न भी करें। इसलिये यह स्वाभाविक है कि जो लोग मेरे इरादों को गलत समझते हैं, वे मेरी शिकायत ही करेंगे।''

मनसारी ने तब मनी से कहा, ''मेहेराज़ाद मण्डली को भी तीर्थयात्रियों को अवगत कराना चाहिये कि बाबा प्रेम करने की वास्तविकता क्या है और वे अपने प्रेमियों से क्या आशा करते हैं।'' मनसारी ने इस टिप्पणी के साथ अपनी बात समाप्त की।

मनी ने तब उस विषय पर यह कहते हुए अपना दृष्टिकोण व्यक्त किया, ''मैं जानती हूँ कि तुम यह भूमिका निभा रही हो। यही कारण है जो हमें ऐसा करने की परेशानी से बचा लेता है। इसके अतिरिक्त, ये तीर्थयात्री यहाँ थोड़े समय के लिये आते हैं। इतने कम समय में कोई कितना बाबा का प्रेम उनमें भर सकता है? हमें उस चीज़ को प्राप्त करने में पूरी ज़िन्दगी लग जाती है जो बाबा के पास देने के लिये है। इसलिये यह सबकुछ हम उन्हें कुछ दिनों में कैसे दे सकते हैं? उन्हें यहाँ छुट्टियाँ मनाने दो और बाबा के नाम का पौधा अच्छी कहानियों के द्वारा हमें लगाने दो और शेष बाबा को करने दो। बाबा के प्रेम को उसके वास्तविक रूप में प्राप्त करने और उसे स्वीकार करने के लिये तैयार होने में कई ज़िन्दगी की तैयारी लग जाती है। इसलिये हमें कठोरता के साथ उन पर बोझ डालने का या उनको भयभीत करने का प्रयास नहीं करना है। इसके अतिरिक्त, हम जानते हैं कि तुम (मनसारी) ऐसा करके उनकी

सहायता कर रही हो।'' मनी के बात समाप्त करने के पश्चात् दोनों ने (मनी और मनसारी ने) एक दूसरे का आलिंगन किया और उसके बाद मनी वहाँ से चली गई।

उन दोनों महान आत्माओं को अलग–अलग तरीके से बाबा प्रेमियों की सहायता एक ही लक्ष्य तक पहुँचने में करते हुए देखना मेरे लिये नितान्त एक अनोखा अनुभव था।

एक अवसर पर मैंने एरच के साथ विभिन्न नकारात्मक चीज़ों के इस अत्यधिक विवादस्पद विषय पर चर्चा छेड़ दी जैसा कि मैंने लोगों को उनके (एरच), मनी, पेण्डू और कैकोबाद दस्तूर सहित मण्डली के विषय में कहते हुए सुना था। कैकोबाद दस्तूर ने न केवल बाबा के एकान्तवास के कार्य में एक महान भूमिका निभाई थी, बल्कि उन्हें बहुधा विचित्र आध्यात्मिक अनुभव भी होते थे। एरच ने समझाया; ''मण्डली जन दर्पण के समान हैं। जो तुम देखते हो वह मूलरूप से तुम्हारे अन्तर में हैं– तुम्हारे अपने नकारात्मक अवरोध (रुकावटें) हैं। यह जानने की कोशिश करो कि जिस तरीके से तुम चीजों का अनुभव करते हो और उन्हें समझते हो, वैसा क्यों है और उससे छुटकारा पाने के लिये बाबा से सहायता की प्रार्थना करो। जो कुछ तुम्हारे अन्दर है, उस सबके लिये इस तरह कार्य करते रहो। बाबा की सहायता से तुम इस सभी मिथ्यापन से छुटकारा पा जाओगे जिससे तुम नकारात्मक दृष्टि से चीजों का अनुभव करते हो और उन्हें समझते हो और फिर तुम भिन्न तरीके से उन्हें देखने लगोगे। तुम्हारा दृष्टिकोण बदल जायेगा, सब चीजों में तुम्हें उनका (बाबा का) सौन्दर्य, उनकी करुणा दिखलाई पड़ेगी और एक समय ऐसा भी आयेगा जब तुम प्रत्येक चीज़–अच्छी और बुरी दोनों ही में– उनके (बाबा के) प्रेम का अनुभव करने लगोगे और समझने लगोगे। वास्तव में प्रेमी को प्रत्येक चीज़ में उनका प्रेम, दया और करुणा समझ में आने लगेगी। तब अन्य किसी चीज़ का अस्तित्व नहीं होगा। एरच के द्वारा कहे गये शब्दों की गहराई और उसको प्राप्त करने की सम्भावना से मैं अभिभूत था।

भटके हुए बच्चे

वहाँ रहने वाले एक अन्तेवासी ने, जो भाऊजी के साथ एक बहुत लम्बे समय से कार्य कर रहा था, अचानक ही यह निश्चय किया कि उसे भाऊजी के पास रहकर प्रतिदिन शब्द रूपी हथौड़े के प्रहार से बचने के लिये परिवर्तन की

आवश्यकता थी और इसलिये अन्यत्र कहीं काम करने का उसने निश्चय किया। भाऊजी ने ऐसा करने की उसे अनुमति दे दी। अतः वह अन्तेवासी ट्रस्ट कंम्पाउण्ड से चला गया और मेहेराबाद में रहने लगा। कई महीने गुज़रने के बाद, भाऊजी ने इस खास अन्तेवासी के बारे में बात की। उन्होंने कहा, ''ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वह मेरी उपेक्षा कर रहा है। जब भी मैं थोड़ी दूर पर उसे देखता हूँ, वह मुझे देखता है और वहाँ से चला जाता है यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति मेरे पास अभिवादन करने के लिये वहाँ आता है। इतना ही नहीं, जब मैं मेहेराज़ाद जाता हूँ और जैसे ही वह मुझे पहुँचता हुआ देखता है, वह मुड़ जाता है और वहाँ से दूर चला जाता है। यह उसके लिये अच्छा नहीं है और इससे मुझे कष्ट होता है क्योंकि मेरे साथ इतने वर्षों तक रहने के बाद वह ऐसा कर रहा है।

हम सभी चुप थे क्योंकि हम अनुभव कर सकते थे कि भाऊजी वास्तव में उस माता–पिता के समान आहत थे जिन्होंने अपने बच्चे का पालन पोषण किया हो और उस बच्चे ने उसे गाली दे दी हो। मैंने निश्चय किया उस से इस विषय में बात करने का क्योंकि मैं उसके करीब था और मैं यह भी जानता था कि वह खुले विचारों का था और वह ऐसा व्यक्ति था जो मण्डली द्वारा हम लोगों को दिये जाने वाले आध्यात्मिक प्रशिक्षण को भी समझता था। मैं स्वयं उसके व्यवहार पर आश्चर्यचकित था और इस विषय की तह तक पहुँचना चाहता था।

इसलिये एक दिन, जब वह संयोगवश ट्रस्ट कम्पाउण्ड में था, मैंने उससे कहा कि वह कार्य समाप्त होने के पश्चात् मुझसे मिले क्योंकि मुझे उसके साथ कुछ आवश्यक कार्य था। जब उसने अपना कार्य समाप्त कर लिया और मुझसे मिलने के लिये आया, मैंने पूरे मामले की उसके साथ चर्चा की और उसको यह जानकारी दी कि उसके ऐसे व्यवहार से भाऊजी स्वयं को कितना अधिक आहत महसूस करते थे। आवासी आवेश में आ गया और उसने कहा, ''मैं प्रतिदिन आध्यात्मिक प्रशिक्षण में शब्द रूप हथौड़ों के प्रहार से ऊब गया था और मुझे परिवर्तन की आवश्यकता थी। मुझे उन चीज़ों को करने की आवश्यकता थी जिसमें मेरी रूचि हो, और सौजन्यतापूर्ण वातावरण में बाबा के लिये करना हो।''

मैं यह नहीं चाहता था कि अन्तेवासी व्यक्ति अपने बचाव की स्थिति में

क्योंकि तब मैं अपने उद्देश्य में असफल हो जाता, इसलिये मैं यह कहते हुए उससे सहमत हो गया कि, ''हम सभी यह समझते हैं और जानते भी हैं कि भाऊजी के साथ काम करना कितना कठिन है। ईमानदारी से कहूँ तो कई अवसरों पर मैंने भी ऐसा ही अनुभव किया है कि मैं यहाँ से भाग जाऊँ, लेकिन यह बाबा हैं जिन्होंने मुझे यही रोक रखा है। लेकिन तुम उनकी उपेक्षा क्यों करते हो? तुम उनको (भाऊजी को) देखकर चेहरा क्यों घुमा लेते हो और वहाँ से चले क्यों जाते हो? इससे उन्हें (भाऊजी) बहुत अधिक कष्ट होता है और मैं समझता हूँ कि हर किसी को कष्ट होगा। निश्चितरूप से तुम उनसे 'जयबाबा' करने का प्रयास तो कर ही सकते हो। कुछ मिनट के लिये ही सही, उनके पास बैठो, उनके स्वास्थ्य और अन्य बातों के विषय में पूँछो। तुम्हें यह प्रतिदिन थोड़े ही करना है। तुम उनसे केवल थोड़ी देर के लिये अभी एक बार मिल लो। निश्चितरूप से तुम इतना तो कर ही सकते हो।;;

उस अन्तेवासी ने अपनी गलती का अनुभव किया; उसको यह नहीं मालूम था कि उसके व्यवहार से भाऊजी को इतनी चोट पहुँचेगी और, यह जानकर वह इस बात पर सहमत हो गया कि भविष्य में वह ऐसा नहीं करेगा। मैंने उसे एक मैत्रीपूर्ण सलाह दी, ''तुम अभी अन्दर जाकर उनका (भाऊजी का) अभिवादन क्यों नहीं करते? उनको बतलाओ कि तुम बीते हुए दिनों में वास्तव में कितने अधिक व्यस्त थे और तुम उनसे मिलने के लिये समय नहीं निकाल सके। तुम अभी ऐसा ही करो और हम सभी को तुम पर गर्व होगा। इसकी उपेक्षा मत करो।''

इस पर वह अन्तेवासी अन्दर गया और भाऊजी से मिला। मैं भी कुछ मिनट पश्चात् इस उद्देश्य से अन्दर चला गया कि भाऊजी जैसे ही उस पर शब्दों के हथौड़े से प्रहार करना प्रारम्भ करते, मैं भाऊजी का ध्यान कार्य सम्बन्धी कुछ मामलों की चर्चा द्वारा उधर से हटा देता जैसा कि मैं बीते हुए दिनों में बहुधा किया करता था। मैं भाऊजी और उस अन्तेवासी की बातचीत से आश्चर्यचकित था। भाऊजी उसे देखकर प्रसन्न थे और उस पर पड़े प्रभाव को दूर करने का प्रयास स्वयं ही कर रहे थे।

उन्होंने (भाऊजी ने) उससे बहुत प्रेमपूर्वक कहा, ''मैं जानता हूँ कि तुम मुझसे बच रहे थे और मैं यह भी जानता हूँ कि तुम ऐसा क्यों कर रहे थे। मैं जानता हूँ कि तुम मेरे बारे में क्या सोचते हो और मुझसे क्यों बचते हो, लेकिन क्या तुम जानते हो कि मैं ये चीज़ें क्यों करता हूँ? मेरा स्वास्थ्य इतना खराब है।

इन सभी कार्यों को करने में मेरे शरीर को कितनी अधिक मेहनत करनी पड़ती है। क्या मैं इतना भी नहीं जानता कि यदि मैं तुम लोगों से अच्छी–अच्छी बातें करूँगा तो तुम लोग भी मेरे विषय में अच्छी बातें कहोगे? क्या मैं नहीं जानता कि यदि मैं तुम सबको प्रिय रहूँगा, तो सभी लोग मुझे घेरे रहेंगे और मेरी प्रशंसा करेंगे? मैं यह सब क्यों करता हूँ जब इससे मेरे शरीर को इतनी मेहनत पड़ती है, क्या तुमने कभी भी इस पर आश्चर्य किया? मैं यह इसलिये करता हूँ कि तुम लोग मेरे हृदय के क़रीब हो। क्योंकि मैं तुम लोगों से प्यार करता हूँ और इसी में तुम्हारी भलाई है। यही बाबा कि वास्तविक देन हैं। अन्यथा मैं इतनी अधिक परेशानी क्यों उठाता? मैं इतना अधिक प्रयास क्यों करता? तुमसे अच्छी बातें कहना और तुम्हारी प्रशंसा करना मेरे लिये आसान है लेकिन मैं ऐसा इसलिये करता हूँ क्योंकि मैं तुमसे प्यार करता हूँ। क्या तुम मुझे अजनबी लोगों से या मिलने आने वालो से या तीर्थयात्रियों के साथ ऐसा करते देखते हो? मैं वैसा नहीं करता। उनसे मैं केवल अच्छी चीज़ें कहता हूँ। तब मैं तुम लोगों के साथ ही यह क्यों करता हूँ? मैं तुम लोगों के साथ भी वैसा ही व्यवहार कर सकता हूँ जैसा व्यवहार मैं बाहर वालों के साथ करता हूँ। मेरे लिये ऐसा करना आसान है। लेकिन ऐसा व्यवहार मैं उन लोगों के ही साथ करता हूँ जो मेरे हृदय के करीब हैं क्योंकि उनकी भलाई इसी में है। यही वास्तविक चीज़ है जो बाबा देते हैं।''

जब भाऊजी ने अपनी बात समाप्त की, तब हम सभी अपनी भावनाओं को नियन्त्रित करने का प्रयास कर रहे थे क्योंकि उस क्षण वह (भाऊजी) वास्तव में एक पिता के समान थे और हम भटके हुए बच्चों की तरह थे जिनको वह (भाऊजी) घर वापस लाने का प्रयास कर रहे थे।

प्रलोभनों से बच कर रहना

मेहेराबाद आने वाले कई तीर्थयात्री बहुधा चिकित्सा क्षेत्र के होते थे। ऐलोपैथिक चिकित्सकों के अतिरिक्त औषधियों के दूसरे क्षेत्रों जैसे काइरोप्रैक्टिक, एक्यूपंक्चर, चीन की औषधियों और स्वास्थ्य लाभ पहुँचाने वाले दूसरे चिकित्सक भी थे जो समय–समय पर मेहेराबाद आते रहते थे। उनमें से कुछ चिकित्सक मण्डली के स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं को दूर करने में सहायता करने हेतु अपनी सेवायें देते थे और वे बहुधा वहाँ रहने वाले लोगों की

भी सहायता करते थे। एक अवसर पर, एक महिला तीर्थयात्री ने, जो मसाज (मालिश) करने की विशेषज्ञ थी, अपनी सेवायें उन मण्डली जनों को अर्पित की जो पीठ की समस्याओं से निरन्तर परेशान रहते थे। क्योंकि वह अपने कार्य में कुशल थी मण्डली की सहायता करने की उसने व्यवस्था भी कर ली थी, इसलिये समाचार चारों ओर फैल गया और कुछ अन्तेवासी उसके पास इलाज के लिये पहुँच गये जो देने के लिये वह इच्छुक भी थी । संयोगवश वह भाऊ जी को भी मसाज की सेवा दे रही थी जिससे उन्हें अपने शरीर में निरन्तर बनी रहनेवाली विभिन्न पीड़ाओं और कष्टों को सहने में सहायता मिल सके। जब वह मसाज करना समाप्त कर लेती थी, तो भाऊजी उसके बाद उसकी बहुत अधिक प्रशंसा किया करते थे।

एक अन्तेवासी को, जो भाऊजी के पास कार्य करता था, संयोगवश पिंडली (पैर का पिछला भाग) की मांसपेशियां में कुछ परेशानी हो गई। उसने (महिला ने) उसकी (अन्तेवासी की) सहायता करने के लिये अपनी सेवायें देनी चाहीं। फिर भी, वह अन्तेवासी उस महिला के द्वारा उसको मसाज देने के विषय में सशंकित था और ऐसा करने से पहले वह भाऊजी से इस सम्बन्ध में स्पष्ट रूप से अनुमति चाहता था। पाठकों को यह मूर्खतापूर्ण और मनोरंजनक प्रतीत हो सकता है, लेकिन उन दिनों मण्डली ऐसे विषयों पर अन्तेवासियों के प्रति बहुत कठोर थी। वे (मण्डली जन) सभी अन्तेवासियों पर कड़ी नज़र रखते थे। यदि कोई विपरीत सेक्स (स्त्री पुरुष भेद) के साथ किसी प्रकार के अनुचित सम्बन्धों में लिप्त होता था, उससे तुरन्त ही स्पष्टीकरण मांगा जाता था। वास्तव में, किसी भी व्यक्ति को अन्तेवासी के रूप में रहने की अनुमति देने के पहले, मनी अनायास ही उससे यह जानने का प्रयास करती थीं कि भविष्य में क्या उसे विवाह करने में रुचि थी। यदि वह (मनी) यह अनुभव करती थी कि उसका झुकाव इस ओर हैं, तब वह उसे अन्तेवासी बनने के लिये हतोत्साहित करती थीं। इस सबके पीछे उनका पूरा उद्‌देश्य बाबा पर ध्यान केन्द्रित करने में सहायता करना था और विवाह से इस रास्ते में रुकावट आती थी।

मण्डली ऐसा ही अनुभव करती थी। वे (मण्डली जन) यह चाहते थे कि हमें अपना पूरा ध्यान बाबा पर केन्द्रित करना चाहिये और अपना पूरा प्यार बाबा के लिये बचा कर रखना चाहिये, केवल वे ही हमारे वास्तविक प्रियतम है। विवाह के द्वारा अपने जीवन में एक और प्रियतम लाने से केवल हमारा ध्यान और प्रेम ही बंटेगा। शुरू में ऐसे कई अन्तेवासियों को वहाँ से चले जाने के लिये कह

दिया गया था जिन्होंने विवाह कर लिया था, क्योंकि मण्डली को विवाहित दम्पतियों का मेहेराबाद में रहने का विचार पसन्द नहीं था और वे (मण्डली जन) चाहते थे कि विवाहित लोग दुनिया में अपने प्रारम्भ के कुछ वर्षों के हनीमून के पहलू को समाप्त कर लें ओर जब वह पहलू समाप्त हो जाय तो वे वापस आ सकते थे और एक दूसरे पर ध्यान केन्द्रित करने के स्थान पर बाबा पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकते थे। पहले से विवाहित उन दम्पत्तियों को विवाह योग्य युवा लोगों की अपेक्षा अधिक सरलता से अनुमति मिल जाती थी जो बच्चों और बड़ों के प्रति अपनी सांसारिक जिम्मेदारियों को पूरा कर चुके थे।

यद्यपि यह नीति कुछ लोगों को हास्यास्पद प्रतीत होती थी, तथापि मैं इस को समझता था क्योंकि मैं अनुभव कर रहा था कि मण्डली ने इस प्रकार की ज़िन्दगी बिताई थी और वे केवल बाबा पर हमारा ध्यान केन्द्रित करने में हमारी सहायता कर रहे थे। इसलिये भाऊजी से मसाज की अनुमति लेने की उसकी चिन्ता को मैं समझ सकता था। जब भाऊ जी कार्य समाप्त करके खाली हुए, तब उसने इस विषय को छेड़ा और उनसे (भाऊजी से) कहा, ''भाऊजी मेरी पिण्डली की माँसपेशियों में दर्द है और जो महिला आपको मसाज देती है, मेरी सहायता के लिये भी तैयार है।'' तब उस व्यक्ति ने पिण्डली की माँसपेशियों की ओर इशारा किया और बोला, ''मुझे केवल इसी जगह मसाज की आवश्यकता है। क्या उसको मेरी पिण्डली की मांसपेशियों की मालिश करने की अनुमति देना ठीक होगा? मुझे उम्मीद है कि ऐसा करके मैं कुछ गलत नहीं कर रहा हूँ।''

जब उस अन्तेवासी ने यह पूछा, तब भाऊजी हँसे और उन्होंने (भाऊजी ने) उससे कहा, ''यदि तुम्हारे हृदय में कामुकता है तब विपरीत सेक्स का उन्हें गले लगाने के साथ–साथ उनका छोटे से छोटा स्पर्श भी ठीक नहीं है। यदि स्पर्श से तुम्हारे हृदय में कामवासना उत्पन्न नहीं होती है, तब किसी विपरीत सेक्स वाले पुरुष या महिलाको तुम्हे छूने की अनुमति देना ठीक है, भले ही वह चिकित्सा कारण से हो या केवल उसका आलिंगन करना हो। जब तुम्हारा हृदय कामवासना से पूर्णतया मुक्त होता है, तब इन सब चीज़ों का कोई महत्व नहीं होता। इससे केवल उन्हीं लोगों को फर्क पड़ता है जिनके हृदय कामवासना से पूर्णतया मुक्त नहीं है। इसलिये सतर्क रहो और उन सब चीज़ों में लिप्त न हो जो तुम्हारे अन्दर कामवासना उत्पन्न कर सकती है।''

एक अन्य अवसर पर मनी ने इस विषय पर मण्डली हाल में कुछ ऐसा

ही कहा, ''प्रलोभनों से दूर रहने का सबसे अच्छा तरीका है कि उन्हें प्रोत्साहित करने वाली उन परिस्थितियों को उत्पन्न ही न होने दिया जाय।'' इस विषय को और अधिक स्पष्ट करने के लिये उन्होंने (मनी ने) आगे कहा, ''यदि तुमने अविवाहित रहने का दृढ़ निश्चय कर लिया है और अपना शत् प्रतिशत (१००%) पूरा प्यार केवल बाबा को देने का निश्चय कर लिया है, तुम उन परिस्थितियों से बच कर रहो जो तुम्हारे उद्देश्य में बाधक हो सकती है। यदि तुम्हे विपरीत सेक्स वाले पुरुष या महिला से बातचीत करनी हो, तब यह बातचीत सार्वजनिक रूप से करो जब आस–पास कोई हो। एकान्त में उससे मत मिलो। जब तुम उससे बार–बार एकान्त में मिलते हो, तब तुम अपने हृदय को प्रलोभित करने के लिय अवसर पैदा करते हो। इसलिये तुम दूरदर्शिता के कुछ मूलभूत नियमों का पालन करते रहो यदि तुम अपना ध्यान उन पर (बाबा पर) केन्द्रित रखना चाहते हो। जब तुम अपने दिन की शुरुआत करो, तब यह याद करो कि तुम्हारा लक्ष्य क्या है और उन परिस्थितियों से बच कर रहो जो तुम्हें लक्ष्य तक पहुँचने से रोकने के लिये बाधक हो सकती हैं। यदि तुम सतर्क नहीं रहोगे तो तुम ऐसी किसीभी परिस्थिति में फंस सकते हो जो तुम्हें पसन्द न हो, तब उस स्थिति में बाबा को दोष मत देना। अपने पूरे दिल से बाबा का शत्प्रतिशत अनुसरण करने की तुम्हारे इरादे की दुर्बलता के परिणामस्वरूप ही ये परिस्थितियाँ उत्पन्न होती है।।''

दया और अनुकम्पा

अगली घटना खोर्शीद की ज़िन्दगी के अन्तिम दिनों में घटित हुई थी। उस समय मैं दो स्थानों पर मेहेराबाद में और ट्रस्ट कम्पाउण्ड में कार्य कर रहा था। सप्ताह के प्रारम्भ में, मैं ट्रस्ट कम्पाउण्ड में रहता था और सरकारी कार्यालयों से सम्बन्धित ट्रस्ट के सभी कार्यों को करता था जिन कार्यों को करने के लिये भाऊजी मुझसे कहते थे। सप्ताह के अन्त में, मैं अपनी मोटर साइकिल से मेहेराबाद जाता था और कुछ दिन रुककर वहाँ मैं अपने कार्य पूरे करता था। एक बार, मेहेराबाद से लौटने पर रात काफ़ी हो चुकी थी, रात्रि के लगभग आठ या साढ़े आठ बजे थे जब मैंने ट्रस्ट कम्पाउण्ड में प्रवेश किया। अपने कमरे में जाने से पहले मैंने अन्दर जाने ओर खोर्शीद का अभिवादन करने का निश्चय किया।

जैसे ही मैं खोर्शीद से मिला, उन्होंने मुझसे कहा, ''मैं तुम्हारा इन्तजार कर रही थी। कुछ बहुत ही आवश्यक कार्य है जिसको तुरन्त ही करने की आवश्यकता है। इसलिये तुम्हें यह कार्य अभी करना चाहिये।'' मैं पूरे दिन कार्य करने से बहुत थका हुआ था और मेहेराबाद से वहाँ तक (अहमदनगर तक) उन ऊबड़–खाबड़ सड़कों पर मोटर साईकिल चलाकर अशक्त हो चुका था। फिर भी, मैंने उनसे (खोर्शीद से) पूछा कि क्या काम था? उन्होंने मुझे ज़ेराक्स कराने के लिये लगभग बीस कागज के पेज़ दिये और वह यह चाहती थी कि मैं उनकी ज़ेराक्स कई प्रतियों में करवाऊँ। मैंने उनसे अत्यन्त विनम्रतापूर्वक पूछा, ''खोर्शीद, क्या मैं सुबह सबसे पहले यह काम तुम्हारे लिये नहीं कर सकता?'' खोर्शीद ने उत्तर दिया, ''नहीं, यह कार्य बहुत महत्वपूर्ण है और इसे अभी तुरन्त किया जाना चाहिये।''

लगभग सभी मण्डलीजन बहुधा ऐसा ही करते थे। वे किसी विशिष्ट महत्वहीन कार्य के लिये बार–बार जोर देते थे कि उसे करना बहुत आवश्यक है और उसे करने में एक मिनट की भी देरी नहीं की जा सकती। ऐसे समय वे हमसे उम्मीद करते थे कि हम अन्य सभी कार्यों को छोड़कर उस कार्य को तुरन्त करें। क्योंकि बाबा हर समय उन लोगों (मण्डली जन) के आस–पास ऐसा ही करते थे, इसलिये इसके महत्व को समझकर मैंने यह अनुभव किया कि उनका इरादा हम लोगों को हमारे प्रियतम की खुशी बनाये रखने में प्रशिक्षित करना था और उसके लिये हमें अपनी सुख सुविधाओं और आवश्यकताओं का त्याग करने के लिये इच्छुक होना चाहिये था। अपने प्रियतम से प्रेम करने का अर्थ है– हर समय उनकी खुशी को बनाये रखना, इसलिये मैंने खोर्शीद से क़ाग़ज ले लिये। यद्यपि रात काफ़ी हो चुकी थी, लेकिन मैं कस्बे में अपने एक मित्र को जानता था जिसकी दुकान रात्रि साढ़े नौ बजे तक खुली रहती थी और इस कार्य में वह मेरी सहायता कर सकता था। उसकी दुकान जिलाधिकारी कार्यालय के पास स्थित थी जहाँ वास्तव में दिन के समय बहुत अधिक यातायात होने से सड़क पर काफ़ी भीड़ होती थी, लेकिन रात्रि के इस समय सड़क बिल्कुल सुनसान थी।

जैसे ही मैं ड्राइविंग करते हुए ज़िलाधिकारी कार्यालय के पास से गुजरकर समीप की खाली सड़क पर पहुँचा, किसी विचित्र अज्ञात कारण से, मेरा सन्तुलन बिगड़ गया और मेरी मोटर साईकिल फिसल गई। मैं उसके साथ

सड़क के मध्य में गिर पड़ा। मैं धीरे–धीरे उठा, यह शंका करते हुए कि कहीं मेरी कोई हड्डी तो नहीं टूट गई थी क्योंकि मैं बहुत ज़ोर से गिरा था। मैंने चारों ओर मुड़कर देखा, मैं मुड, सकता था और इसलिये मैं यह समझ गया कि मेरे हाथ और पैरों के बुरी तरह छिलने के अलावा कोई टूट फूट नहीं हुई थी। मैं बाबा से थोड़ा नाराज़ था और अपने मन में मैंने उनसे कहा, ''मैं बुरी तरह थक चुका हूँ और मैं मण्डली की सहायता करने की कोशिश कर रहा था जो आपकी है और आपने मेरे साथ अब ऐसा किया। मैं जानता हूँ कि आप (बाबा) मुझसे प्रेम करते हैं और इसी कारण से आप ऐसा कर रहे हैं, लेकिन किसी दूसरे से प्रेम क्यों नहीं करते और कुछ समय के लिये मुझे अकेला क्यों नहीं छोड़ देते?'' मैंने अवीला की संत टेरेसा के आवेश में ईश्वर के प्रति कहे गये शब्दों को जान बूझकर दोहराते हुए व्यंग्यपूर्वक कहा, ''आप अपने प्रेमियों से इतना बुरा व्यवहार करते हैं। कोई आश्चर्य नहीं कि इसी कारण से आपके प्रेमी इतने कम हैं।''

किसी तरह, मैं दुकान की ओर बढ़ा, कागजों की ज़ेराक्स करवाई और उन्हें लेकर खोर्शीद के पास वापस गया। मैंने उनसे अपने गिरने का कोई उल्लेख नहीं किया। खोर्शीद उन क़ाग़जों को पाकर खुश प्रतीत हुईं, लेकिन तभी उन्होंने कहा, ''प्लास्टिक कवर कहाँ हैं? पिछली बार जब तुमने ज़ेराक्स करवाया था, तो सभी ज़ेराक्स क़ाग़ज तुम प्लास्टिक कवर में लाये थे।'' मैंने खोर्शीद को बतलाया कि प्लास्टिक कवर पर दुकान का नाम लिखा हुआ था और उस समय प्रचार करने के लिये उन लोगों ने थोड़े से प्लास्टिक कवर दिये थे। लेकिन इस समय वह प्लास्टिक कवर नहीं दे रहे थे। इतना ही नहीं, वे पन्द्रह प्रति ज़ेराक्स करवाने पर केवल एक प्लास्टिक कवर दे रहे थे। खोर्शीद ने ज़ोर दिया कि वह पन्द्रह प्लास्टिक कवर मंगाना चाहती थीं और वह दूकानदार को इसके लिये और अधिक भुगतान करने को वह तैयार थीं और यह कि यह कार्य तुरन्त ही फिर से किया जाना चाहिये।

यह जानते हुए कि जिस कार्य को करने के लिये मण्डली ज़ोर देती थी, उसको करने के अलावा मेरे पास कोई अन्य रास्ता नहीं था, मैं और अधिक शिकायतों के साथ बाबा की ओर मुड़ा। मैंने उनसे कहा, ''मैं जानता हूँ कि ये आप हैं, खोर्शीद नहीं क्योंकि यह सबकुछ आप ही अपने प्रेमियों के साथ करते हैं। आप उन्हें हर समय परेशान करते रहते हैं जिसका कारण आप ही बेहतर जानते हैं और उसका आप आनन्द लेते हैं।'' मैं पुनः दुकानदार से जाकर मिला और प्लास्टिक कवर देने के लिये उसे अतिरिक्त धन देने के लिये कहा। जब मैं

प्लास्टिक कवर लेकर खोर्शीद के पास वापस पहुँचा वह खुश हुईं, लेकिन उन्होंने मुझसे थोड़ी देर बैठने और उनसे बातचीत करने के लिये कहा। कुछ समय पश्चात् उन्होंने मुझे जाने की अनुमति दी। रात्रि के लगभग दस बजे थे जब मैंने यह कार्य समाप्त किया और मैं इतना अधिक थक चुका था कि मैं थोड़ी देर आराम करने के लिये बिस्तर पर लेट गया और कपड़े एवं जूते पहने हुए ही मैं तुरन्त सो गया। मैं थोड़ी देर झपकी लेने की प्रक्रिया में बहुधा अपने कपड़ों और जूतों सहित सो जाता था।

उन दिनों ट्रस्ट कम्पाउण्ड में ज़िन्दगी बहुत व्यस्त थी। एक बार जब एक व्यक्ति ने सोने तथा भोजन करने के लिये भी समय न मिल पाने की शिकायत भाऊ जी से की, तब उन्होंने (भाऊ जी) उस व्यक्ति से कहा, ''इस मार्ग पर तुम्हें भोजन, निद्रा और स्वास्थ्य के विषय में भूल जाना चाहिये और प्रियतम की खुशी बनाये रखने पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिये।'' जब मैं थका होता था, मैं भोजन छोड़ देना पसन्द करता था और सो जाता था जिससे मैं आराम कर सकूँ और अगले दिन के लिये तरोताज़ा रहूँ।

अगले दिन मुझे जिलाधिकारी कार्यालय में कुछ सरकारी काम था। जैसे ही मैं उस स्थल से गुज़रा जहाँ पर पिछली रात मेरी मोटर साईकिल फिसल गई थी, मैं केवल उस स्थल को ध्यानपूर्वक देखने के लिये रूक गया। जैसे ही मैं एक सेकेण्ड के लिये रुका, मेरे पीछे वाहनों ने हॉर्न बजाकर भों–भों करना और चालकों ने पीछे से चिल्लाना शुरू कर दिया। मैं पूरी तरह यह भूल गया था कि दिन के समय वह सड़क यातायात से व्यस्त रहती थी और इसलिये मैं वहाँ से आगे बढ़ गया। तब मुझे वास्तविकता का अनुभव हुआ।

खोर्शीद ने पिछली रात ज़ोर दिया था कि ज़ेराक्स का कार्य अत्यन्त आवश्यक था और उसे तुरन्त ही किया जाना चाहिये था। दूसरे दिन के लिये उसे स्थगित नहीं किया जाना चाहिये था। यदि मैं दिन के समय आया होता और उस स्थल पर मेरी मोटर साईकिल फिसल गई होती, तो मेरे पीछे आने वाले वाहन मुझे निश्चितरूप से कुचल डालते। वह रात्रि का समय था जब मैं गिरा था और केवल रात ही में वह सड़क सुनसान होती थी। मैंने बाबा को धन्यवाद दिया और उनसे अपनी उन सभी शिकायतों के लिये क्षमा माँगी जो कि मैंने पिछली रात उनके विचित्र तरीकों के विषय में की थी। मैंने अनुभव किया कि वह (बाबा) जो भी करते हैं उसमें हमारी सबसे अधिक भलाई होती है और वह उनकी दया और अनुकम्पा का प्रतिबिम्ब होता है।

बाबा के चारों ओर प्रचलित विवादास्पद कहानिया

मण्डली के साथ वर्षों तक गुज़ारी हुई अपनी ज़िन्दगी में, हम कभी–कभी उनको ऐसी कहानियाँ बतलाते हुए सुनते थे जिनसे बाबा की छवि धूमिल होती थी। कहानियों में बाबा अपने आस–पास के नज़दीकी लोगों के प्रति उदासीन, या निर्दयी, प्रतीत होते थे। इनमें से कुछ कहानियाँ बहुत अप्रिय थीं और किसी को भी उनसे धक्का लगता था। यह ईश्वर की उस पारम्परिक छवि को चूर–चूर कर देती थीं जो कि प्रत्येक के मन में होती है। मुझे याद है कि इनमें से कुछ कहानियों को सुनने के पश्चात् मैं अन्दर तक हिल गया था। मैं कई दिनों तक अपने आप को खोया–खोया अनुभव करता रहा था, और आश्चर्य कर रहा था कि इनका क्या महत्व था? ईश्वर ऐसे कार्यों में कैसे लिप्त हो सकता था, ईश्वर ऐसी चीज़ें कैसे कर सकता था? मेरे मस्तिष्क में ऐसे विचार आ रहे थे जो मुझे परेशान कर रहे थे।

ऐसी कहानियाँ सुनने के पश्चात्, मैं बाबा से प्रार्थना करता था कि वह मेरी सहायता करें जिससे मैं वह सबकुछ समझ सकूँ जो कि हो रहा था। मैं सद्गुरु हाफ़िज़ के कथन के सामने, जो समाधि के सामने बाबा के टीन शेड वाले कमरे में और मेहेराज़ाद में बाबा के सोने के कमरे में भी रखा है, खड़ा हो जाता था। मैं अपने मन को शान्त करने के लिये इसे बार–बार पढ़ता था, और इस कथन के शब्द थे, ''तुम जो सद्गुरु से सुनते हो उसे कभी गलत नहीं कहो क्योंकि मेरे बच्चे, गलती उनको (सद्गुरु को) समझने में तुम्हारी असमर्थता में निहित हैं।'' इसमें समय लगा, लेकिन बाबा ने मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया।

मैंने यह अनुभव किया कि मेरे लिये यह आवश्यक था कि मैं प्रेम करने वाले ईश्वर के पारम्परिक विचार को छोड़ दूँ लेकिन, ऐसा करने में, मुझे दैवीय प्रेम की गहरी समझ प्राप्त हुई। पहले मैं इस तथ्य को लेकर भ्रमित था कि बाबा उन लोगों की कभी भर्त्सना नहीं करते थे जो उनका विरोध करते थे, बल्कि उनसे प्रेम करते थे जबकि उन लोगों के साथ बहुधा प्रत्यक्षरूप से इतना निर्दयतापूर्ण व्यवहार करते थे जो उनके थे। केवल काफ़ी बाद में यह मुझे समझ में आया कि बाबा उन लोगों को जानते थे जो आध्यात्मिक मार्ग पर चलने को तैयार थे और अत्यधिक कष्ट देकर वह उन्हें लक्ष्य की ओर जाने के लिये धक्का दे रहे थे। दूसरी ओर, वह (बाबा) अभी भी उन लोगों को जाल के

अन्दर खींचने का प्रयत्न कर रहे थे।

जैसे–जैसे समय गुज़रता गया, तीर्थयात्रियों को सार्वजनिक रूप से बतलाई जाने वाली कहानियाँ की अपेक्षा इन कहानियों में मुझे अधिक आनन्द आने लगा। इन कहानियों से सीखने के लिये, कम से कम मेरे लिये, बहुत कुछ था जो कि एक नास्तिक (ईश्वर में विश्वास न करने वाला) था और जिसे उन लोगों को मानसिक रूप से परेशान करने में आनन्द आता था जो आस्तिक (ईश्वर में विश्वास करने वाले) थे। इन कहानियों ने मुझे यह अनुभव करने में सहायता की कि मेरे जैसे पापियों सहित सभी लोगों के प्रति उनके प्रेम, दया और अनुकम्पा के कारण आज मैं उनकी (बाबा की) पकड़ में था। अचानक ही मेरा झुकाव बाबा के दैवीपन की अपेक्षा उनके मानवीय रूप की तरफ हो गया। मैं बाबा के उन प्रत्यक्ष निर्दयतापूर्ण कार्यों में छुपी हुई उनकी दया को देख सकता था जो वह अपने नज़दीकी लोगों पर करते थे। इससे मुझे यह समझने में सहायता मिली कि यह पूरा खेल क्या था और मेरे साथ वैसी ही परिस्थितियाँ होने पर उनका सामना करने में मुझे इससे सहायता मिली; कम से कम अब मैं यह जानता हूँ कि प्रारम्भिक वर्षों में मैं ऐसी परिस्थितियों का सामना करने से डरता था।

मण्डली के साथ इन कहानियों पर बातचीत करना बहुत कठिन था और वे (मण्डली जन) ऐसा केवल तभी करते थे जब ऐसी परिस्थितियाँ हों, या जब वे अनुभव करते थे कि किसी ख़ास अन्तेवासी को कुछ आध्यात्मिक विषयों के उत्तर की खोज होती थी जिनसे वह भ्रमित होता था। मूलरूप से तब सहायता करने के इरादे से वे (मण्डली जन) ऐसी कहानियों पर बातचीत करते थे। अन्यथा वे इन कहानियों को गुप्त ही रखना पसन्द करते थे। बहुधा कुछ कहानियाँ हम लोगों को सुनाने के बाद वे यह शर्त रखते थे कि हम ये कहानियाँ किसी अन्य को न सुनायें। दूसरे अवसरों पर वे (मण्डली जन) हम लोगों को समझाते थे, ''इस कहानी पर बातचीत केवल उन लोगों के साथ करना जो बाबा के तरीकों से परिचित हों और अन्य किसी से नहीं, विशेषरूप से नये आने वालों के साथ मत करना क्योंकि उनके मन और हृदय बहुत संवेदनशील होते हैं। उन्हें कठिनाईयों से दूर रखो; उन्हें बाबा के साथ अपने स्वर्णिम समय का आनन्द लेने दो।'' इसी कारण से ऐसा था।

यद्यपि इन कहानियों को सुन कर हम अपने आप को सौभाग्यशाली अनुभव करते थे, तथापि हम जानते थे कि बहुत सी कहानियाँ अभी भी थीं

जिन्हें मण्डली हमें नहीं सुना रही थी और शायद इन कहानियों को वे अपने साथ ही कब्र में ले जाने वाले थे।

अगली घटना इसी विषय पर है जो ट्रस्ट कम्पाउण्ड में चाय के समय हुई थी जब हम एरच के पास थे यह घटना उनके अन्तिम दिनों के दौरान तब हुई जब उनका स्वास्थ्य काफ़ी कमजोर था। दवाना, गेरी और मैं उनके पास बैठे हुए थे जब यह घटना हुई। गेरी ने इस विषय को छेड़ा। गेरी एरच के बहुत क़रीब था और केवल वही एक ऐसा अन्तेवासी था जिसे एरच के साथ छूट मिली हुई थी। वह बहुधा एरच के कन्धों पर अपना हाथ रख देता था, एरच के गालों को पकड़ कर मैत्रीपूर्ण ढंग से उन्हें खींचता था और एरच से उसे ऐसा करने की छूट प्राप्त थी।

इस विशेष दिन पर, गेरी ने एरच के कन्धो पर अपना हाथ रखा और उनसे पूँछा, ''भाई हमें बतलाईये, अब जब आप अपनी जीवन यात्रा के अन्तिम छोर पर हैं, कम से कम अब तो हमें ईमानदारी से बतलाईये कि आप कितनी विवादस्पद कहानियाँ अपने साथ क़ब्र में लेकर जा रहे हैं? आप हमें इसलिये कहानियाँ नहीं सुनाते थे क्योंकि आप सोचते थे कि हम उसके लिये तैयार नहीं थे और उससे हमें धक्का लगेगा या आप इस कारण कहानियाँ नहीं सुनाते थे क्योंकि आप बाबा को बचाना चाहते थे? ऐसी कितनी कहानियाँ आप अपने साथ अपनी क़ब्र में लेकर जा रहे हैं?'' एरच ने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया और भावहीन चेहरे के साथ कहा, ''मैं तुमको सबकुछ बतला चुका हूँ।''

जब एरच ने ऐसा कहा, हम तीनों ने लगभग एक साथ ही तुरन्त यह कहा, ''हम आप पर विश्वास नहीं करते।'' गेरी ने एरच को और अधिक बतलाने के लिये यह कहकर उकसाया कि, ''हम यह जानते हैं कि आप इन कहानियों को अपने साथ क़ब्र में लेकर जा रहे हैं और हम आपसे कहानियाँ सुनाने के लिये नहीं कह रहे हैं। हम केवल यह जानना चाहते हैं कि कितनी कहानियाँ है?'' उसने फिर एरच से मज़ाक करते हुए कहा, ''जब कोई व्यक्ति मरने वाला होता है तो उस समय वह सामान्यरूप से सच बोलता है। आपके लिये भी यह अवसर है कि आप स्वीकार करें और ईमानदारी से हमें बतलायें कि आप कितनी कहानियों का अन्त तक गुप्त रखने का इरादा रखते हैं।''

एरच हँसे। थोड़ी देर वह चुप रहे और तब उन्होंने बहुत धीरे से कहा, ''ईमानदारी से मैं सबकुछ तुम्हें बतला चुका हूँ।'' थोड़ी देर वह रुके और तब

बहुत धीरे से उन्होंने आगे कहा, ''वह सबकुछ जिसको जानने की तुम्हें आवश्यकता थी।'' इसके साथ ही एरच ने बाबा के आस–पास प्रचलित विवादास्पद कहानियों पर वार्तालाप को स्थायी रूप से सीलबन्द कर दिया।

सार्थक पाखण्ड

''एक बार जब सभी मण्डली सदस्य बाबा के समीप इकट्ठे थे, उन्होंने (बाबा ने) हमसे निम्नलिखित प्रश्न पूँछा, 'तुम मुझे क्या मानते हो?''' एरच ने यह बतलाया जब वह मण्डली हाल में बैठे हुए तीर्थयात्रियों को एक कहानी सुना रहे थे। ''उन्होंने यह प्रश्न प्रत्येक मण्डली जन से पूँछा और प्रत्येक ने यही उत्तर दिया, 'बाबा आप ईश्वर हैं। तब बाबा ने उनसे दूसरा प्रश्न पूँछा। 'लेकिन क्या तुम ऐसा अनुभव करते हो?' प्रत्येक व्यक्ति ने जो उनके पास था, तब यह कहा, 'नहीं बाबा, हम ऐसा अनुभव नहीं करते हैं।' बाबा ने तब आगे पूँछा, 'तब तुम यह क्यों कहते हो कि मैं ईश्वर हूँ?'

''हमने उत्तर दिया कि हम विश्वास करते थे कि वह ईश्वर थे क्योंकि उन्होंने (बाबा ने) ऐसा कहा था। बाबा ने तब वहाँ एकत्रित मण्डली जनों से कहा, 'लेकिन यह केवल पाखण्ड है। तुम यह अनुभव नहीं करते हो कि मैं ईश्वर हूँ। तुम्हें मेरे ईश्वरत्व का कोई ज्ञान नहीं है और तुम पूरी दुनियां से कहते हो कि मैं ईश्वर हूँ। क्या यह सब पाखण्ड नहीं है?' हम सभी चुप थे क्योंकि जैसा बाबा ने कहा था कि किसी भी ऐसे कार्य को करना हमारे लिये पाखण्ड था जिसका हमें स्वयं अनुभव नहीं था और हम ऐसा ही कर रहे थे।

''हम लोग दुविधा में थे। क्या हमें उनको (बाबा को) ईश्वर कहना बन्द कर देना चाहिये? बाबा ने ऐसा कहकर दुविधा से बचा लिया कि, ''ऐसा कहना ज़ारी रखो यद्यपि यह पाखण्ड ही है, पर यह एक सार्थक पाखण्ड है। यह सार्थक पाखण्ड ऐसा है जो एक दिन तुम्हें वास्तविकता का अनुभव करायेगा। यह तुम्हें मेरे ईश्वरत्व का अनुभव करायेगा।

एरच थोड़ी देर रुके और फिर उन्होंने आगे कहा, ''बाबा ने हमसे ऐसा ही कहा था। उसी तरह बाबा का कार्य क्या है? कई तीर्थयात्री मुझसे पूँछते हैं, 'मैं बाबा के लिये क्या कार्य कर सकता हूँ या बाबा का कार्य क्या है? कई तीर्थयात्री मुझसे पूँछते हैं, 'मैं बाबा के लिये क्या कार्य कर सकता हूँ या बाबा का कार्य क्या है? भवन बनाने और पाईपलाईन डलवाने को क्या कोई बाबा का

कार्य कह सकता है? यहाँ तक कि जब बाबा भौतिक शरीर में थे, उन्होंने इसका उल्लेख केवल अपने कार्य के लिये मचान के रूप में किया था। इसलिये तब बाबा कार्य क्या था? बाबा का कार्य मानवता को उसके मायावी स्वप्नावस्था से जगाना है जिसमें हम लोग अनन्त समय से (कल्प कल्पान्तरों से) जकड़े हुए हैं। इसलिये क्या हम पाखण्डी नहीं हैं जब हम थोड़ा सा भी कार्य करते हैं ओर उस कार्य को बाबा कार्य कहते हैं? यह सब करके क्या हम एक भी जीवात्मा को उसकी स्वप्न की स्थिति से जगा सकते हैं?

''केवल उन्हीं आत्माओं के सम्बन्ध में यह माना जा सकता है कि वे बाबा का कार्य कर रही हैं जो वास्तव में मानवता को जगाने के इस बाबा कार्य में उनकी (बाबा की) सहायता कर रही हैं। और ऐसी आत्मायें दुर्लभ हैं। सच कहा जाय तो केवल बाबा ही यह कार्य कर सकते हैं, क्योंकि हममें से कोई भी इस कार्य को करने में सक्षम नहीं है। इसलिये क्या तब हम पाखण्ड नहीं कर रहे हैं जब हर बार हम कुछ करने पर यह कहते हैं कि यह बाबा का कार्य है?'' एरच थोड़ी देर रुके जिससे हम उनके शब्दों को आत्मसात् कर सकें और उनके शब्दों की गहराई को समझ सकें।

उन्होंने (एरच ने) तब आगे कहा, ''ऐसा करते रहो क्योंकि यह एक महत्वपूर्ण (सार्थक) कार्य है। जो कुछ तुम उनके लिये करते हो उसे उनको सबकुछ अर्पित करने के द्वारा सही ढंग से करते रहो, अहम् के मायावी अधिकारों के प्रति सतर्क रहो जो बहुधा आन्तरिक लड़ाईयों में समाप्त होते हैं। मिथ्या कथन जैसे, 'मैं इसका इन्चार्ज हूँ। तुम यह बतलाने वाले कौन होते हो कि मुझे क्या करना है?' बाबा को तुम्हारी सेवा की आवश्यकता नहीं है। वह ब्रह्माण्ड के स्वामी हैं। प्रत्येक चीज़ उनकी ही है। उनको यह छोटी–छोटी सेवायें अर्पित करने के द्वारा, वह तुम्हें उनको प्रसन्न करने और उनकी कृपादृष्टि पाने का अवसर दे रहे हैं। इसी कारण से जब तुम कोई सेवा उनको अर्पित करते हो, तब हमेशा याद रखो कि तुम्हारे मन में उनकी प्रसन्नता सर्वोपरि होनी चाहिये।

''मिथ्या अधिकारों के साथ की गई सेवा से बाबा कभी प्रसन्न नहीं होते। जब तुम सेवा करते हो, तब हर समय तुम उनकी प्रसन्नता बनाये रखने की याद रखो। तब तुम सार्थक कार्य करते हो। क्यों? क्योंकि तुम अपने प्रियतम की खुशी बनाये रखते हो। वह व्यक्ति जो सफलतापूर्वक हर समय प्रियतम की प्रसन्नता बनाये रखता है, उसकी कृपा को आमन्त्रित करता है जो ईश्वर के

साथ एकरूपता की ओर उसे ले जाती है। ऐसा व्यक्ति अन्त में अपने स्वप्न से जाग जाता है। इसलिये जब भी तुम उनके लिये कोई कार्य करते हो तो इस भावना को हमेशा अपने हृदय में बनाये रखना। अपनी खुशियों में लिप्त न हो जाना जिन्हें तुम अहम् के मिथ्या अधिकारों के द्वारा प्राप्त करते हो।

"हर समय और हर क़ीमत पर प्रियतम की खुशी कार्य को सार्थक बनाती है, उनकी खुशी को प्राप्त करती है, उनकी कृपादृष्टि को आमन्त्रित करती है और अन्त में, यह उनकी कृपा है जो तुम्हें स्वप्न से जगाती है। ऐसे कार्य को सही अर्थों में सार्थक बाबा कार्य के रूप में माना जा सकता है जैसा कि बाबा चाहते थे कि हम करें। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि सांसारिक दृष्टिकोण से तुम्हारा कार्य महत्वपूर्ण है या नहीं। महत्वपूर्ण यह है कि तुम अपनी सेवा से अपने प्रियतम को प्रसन्न कर रहे हो। जब तुम उनके लिये कार्य करते हो, उनके लिये नृत्य करते हो या उनके लिये खेलते हो, यह उनको तभी तक खुशी देता है जब तक तुम उस कार्य का करते समय शत् प्रतिशत केवल उनकी खुशी खोजते हो।"

रिश्वत का लेन-देन

एक बार एक बाबा प्रेमी ने मनी से यह प्रश्न पूँछा था। "भारत जैसे एक देश में, सरकारी कार्यालयों में सभी स्तर पर भ्रष्टाचार फैला हुआ है। लगभग हर व्यक्ति प्रत्यक्ष में नकद के रूप में या, अप्रत्यक्ष में, उपहार या पक्षपात के रूप में रिश्वत लेता है। ऐसा मुख्यरूप से इस कारण है कि सरकार द्वारा दिया जाने वाला वेतन इतना कम है कि उसमें जीवन निर्वाह करना किसी के लिये भी असम्भव है। ऐसी परिस्थितियों में किसी के लिये भी रिश्वत लेना या देना उचित है क्योंकि लगभग हर व्यक्ति इसे छोटे या बड़े तरीके से कर रहा है।" बाबा प्रेमी एक सरकारी कर्मचारी था और उसने सही-सही उल्लेख किया था कि यह सरकारी कर्मचारियों का कम वेतन था जो उन्हें फैले हुए भ्रष्टाचार की ओर ले जा रहा था। वे जो ईमानदार थे उन्हें और उनके परिवार को बहुधा अभावों का सामना करना पड़ता था।

मनी ने उत्तर दिया, "हम सभी जानते हैं कि बाबा ने स्पष्ट रूप से इस विषय पर क्या कहा है। केवल यह कारण कि प्रत्येक व्यक्ति रिश्वत ले रहा है और रिश्वत लेना एक सामान्य धारणा बन गयी है, इसे उचित नहीं ठहाराया जा

सकता। बाबा प्रत्येक व्यक्ति से यह आशा करते हैं कि वह रिश्वत लेने और देने के प्रलोभन से बचे। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि कठिनाईयाँ क्या हैं, या परिस्थिति कितनी कठिन है, प्रत्येक व्यक्ति को उनसे बाहर निकलने के सरल मार्ग की ओर देखने की अपेक्षा उनका सामना करना चाहिये। फिर भी, यदि तुम ऐसी परिस्थिति में हो जहाँ दूसरा व्यक्ति तुम्हें रिश्वत देने के लिये बाध्य कर रहा है और यदि ऐसा करना नितान्त आवश्यक है, यदि मामला अत्यधिक महत्व का है, जैसे कि रिश्वत देकर तुम किसी की ज़िन्दगी बचा रहे हो या तुम कुछ गरीब लोगों की सहायता कर रहे हो, तब ऐसी स्थिति में, इसको (रिश्वत को) बाबा का स्मरण करने के उपरान्त दो।

"याद रखो, तुम इसे स्वेच्छा से नहीं दे रहे हो। दूसरा व्यक्ति तुम्हें देने के लिये बाध्य कर रहा है या इसे तुमसे बलपूर्वक ले रहा है। दूसरे अन्य सभी मार्गों के असफल होने के बाद, तब और केवल तब, अन्तिम साधन के रूप में, कोई भी रिश्वत दे सकता है, बशर्ते कि रिश्वत देने का कारण पूर्णतया स्वार्थरहित हो। रिश्वत देने वाला इससे कोई भी व्यक्तिगत लाभ उठाने में न पड़ें। स्वार्थपूर्ण उलब्धियों के लिये इसे प्रथम विकल्प के रूप में नहीं दिया जाना चाहिये जैसा कि दुनियां में अधिकांश लोग करते हैं। जब दूसरा व्यक्ति तुम्हें ऐसे कार्य के लिये बाध्य करता है और तुम इसे अनिच्छा से करते हो, ऐसे कारण से करते हो जिसमें तुम्हारा कोई स्वार्थपूर्ण उद्देश्य नहीं होता है, तब संस्कार दूसरे व्यक्ति के कन्धों पर होते हैं। यदि तुम इस सबमें मात्र एक अनिच्छुक दर्शक होते हो तब सभी संस्कार उसी व्यक्ति के हैं।"

मनी ने इस विषय पर आगे कहा, "इस तरह से मैं बाबा के शब्दों की व्याख्या करती हूँ और इनको इसी रूप में कार्यान्वित करती हूँ। याद रखो कि इसका प्रथम विकल्प के रूप में आश्रय नहीं लिया जाना चाहिये, लेकिन अत्यधिक विषम परिस्थिति में ही किसी को इनका आश्रय लेना चाहिये।"

बाबा-प्रेमी शायद यह आशा कर रहा था कि मनी से इस सम्बन्ध में कुछ छूट मिल जायगी जो कि नहीं हुआ, इसलिये उसने (बाबा प्रेमी ने) उनसे (मनी से) स्पष्ट रुप से पूँछा, "रिश्वत लेने के सम्बन्ध में आपका क्या कहना है? यदि कोई लगभग प्रतिदिन दबाव डालता है तो क्या करना चाहिये? क्या ऐसी स्थिति में व्यक्ति को रिश्वत ले लेनी चाहिये?"

मनी ने तब बहुत गम्भीरतापूर्वक कहा, "बाबा के शब्दों को हल्के में मत

लो। इनको इस तरह मत लो जैसे ये विष्ठा (मल, पाखाना) हों। जब बाबा भौतिक शरीर में थे और वह कोई भी कार्य करने के लिये हम लोगों से कहते थे, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता था कि वह कितना सामान्य होता था, हम उस कार्य को करने का पूरा प्रयास करते थे। किसी कारणवश यदि कोई व्यक्ति इस कार्य को पूरा नहीं कर पाता था, बाबा बहुत अशान्त हो जाते थे और अधिकारपूर्वक उस व्यक्ति की भर्त्सना यह कहकर करते थे, 'तुम मेरे शब्दों के प्रति ऐसा बर्ताव करते हो जैसे वे विष्ठा (मल) के समान हों।' वह हाथों से ऐसा संकेत करते थे जैसे अपने शरीर का पिछला हिस्सा पोंछ रहे हों और फिर पुनः कहते थे, 'तुम मेरे शब्दों के प्रति विष्ठा के समान बर्ताव करते हो।' इसलिये ऐसा मत करो।

''बाबा ने हमें, स्वयं के उदाहरण के द्वारा, यह दिखलाया है कि वह अपने प्रेमियों से किस प्रकार की ज़िन्दगी जीने की आशा करते हैं। उसी लीक पर चलकर जीने का पूरा प्रयास करो। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि कोई दूसरा ऐसा नहीं कर रहा है। बाबा प्रेमी होने के कारण, तुम्हें ऐसा करना चाहिये। प्रत्येक व्यक्ति को बाबा की ओर अपनी यात्रा पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिये और इस विषय पर नहीं सोचना चाहिये कि दुनियां क्या कर रही है। तुम्हें कोई भी ऐसा कुछ करने के लिये कैसे बाध्य कर सकता है जिससे बाबा अप्रसन्न हों? उनके स्मरण में मजबूत बनो और सभी प्रलोभनों से बचकर रहो। इस तरह से तुम्हें कोई भी व्यक्ति रिश्वत लेने के लिये या बाबा को अप्रसन्न करने वाले किसी अन्य कार्य में लिप्त होने के लिये बाध्य नहीं कर सकेगा। उनकी (बाबा की) याद अधिक से अधिक करो। वह तुम्हारे हृदय से समस्त दूषित इच्छाओं को साफ कर देगा और तुम्हें उनके (बाबा के) प्रति तुम्हारे प्रेम और लालसा में शक्तिशाली बनायेगा जो तुम्हें कठिन मार्ग का अनुसरण करने में तुम्हारी सहायता करेगा।''

मनी ने पुनः इसके आगे कहा, ''वर्तमान समय में, दुनियाँ की परिस्थितियाँ ऐसी हो गई हैं कि प्रलोभन बहुत से हैं। लगभग प्रत्येक व्यक्ति, इसका महत्व नहीं है कि दुनियाँ के किस कोने में है, ऐसी परिस्थितियों का सामना कर रहा है। यह कलियुग है– जहाँ प्रलोभन प्रत्येक दरवाजे की चौखट पर पहुँच चुके हैं। प्रत्येक आत्मा प्रलोभित हो रही है– इससे कोई फर्क़ नहीं पड़ता कि वह कहाँ पर है। बाबा ने दुनियाँ के लिये ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर दी हैं। क्यों? ऐसा इस कारण है कि प्रलोभनों का विरोध करते हुए उनसे बचकर रहने के द्वारा हमें उनके (बाबा के) शब्दों का अभ्यास करने के लिये अवसर प्राप्त हो

सके और दुनियां में रहकर ऐसी ज़िन्दगी जीने का अवसर वह (बाबा) हमें प्रदान कर सकें जैसी कि वह हमसे चाहते हैं।

''ऐसा करके वह प्रत्येक व्यक्ति को, चाहे वह कहीं पर भी हों ज़िन्दगी जीने का एक अवसर देते हैं और यदि कोई ऐसा सफलतापूर्वक करता है, तो वह इसी ज़िन्दगी में वह सबकुछ प्राप्त कर लेता है जिसे योगी एक हज़ार वर्ष की कठोर तपस्या के बाद भी प्राप्त नहीं कर पाते। तुम्हारे पास वह प्राप्त करने का अवसर है जिसको पाने के लिये योगियों की तीर्व लालसा होती है और जिसको पाने में वह कई जीवन बिता देते हैं। तुम्हें केवल यह करना है कि बाबा की याद करते हुए ऐसे सभी प्रलोभनों से बच कर रहो और ऐसी चीज़ों में लिप्त न हो जो बाबा को अप्रसन्न करती हैं। याद रखो कि यही मार्ग है जिसके द्वारा बाबा उनके प्रति तुम्हारे प्रेम की परीक्षा लेते हैं। और उनको असली प्रेमियों को उन लोगों से बचाते हैं जो उनसे (बाबा से) केवल सतही तौर पर प्रेम करते हैं। यह अनाज के छिल्कों के समान है। भूसा हवा के साथ उड़ जाता है और केवल अनाज के दाने उसके पीछे रह जाते हैं। इसलिये बाबा के शब्दों को और ईश्वर को गम्भीरतापूर्वक लेने का अधिक और अधिक प्रयास करो और तुम्हें अन्य सभी चीज़ें महत्वहीन प्रतीत होंगी। उनकी आज्ञापालन करने और ऐसी ज़िन्दगी जीने के इस आश्चर्यजनक अवसर को मत जाने दो जिससे बाबा प्रसन्न होंगे।

''अवसर के विषय में यह कहना है कि जब यह अवसर तुम्हारे मार्ग में आये, तुम्हें तुरन्त ही इसे पकड़ लेना है। तुम इसे भविष्य के लिये इस आशा से नहीं छोड़ सकते कि अवसर आगे और भी हैं। न ही तुम अपना समय इसके विषय में सोच विचार करने में बर्बाद करो। तुम्हें तुरन्त ही इसे (अवसर को) दोनों हाथों से जकड़ लेना हैं। यह एक ऐसा अवसर है जो तुम्हारे रास्ते में पुनः कम से कम सात सौ वर्षों तक नहीं आयेगा। इसलिये इसे अभी पकड़ लो अन्यथा यह निकल जायेगा।

सच्चे मित्र

पश्चिम का एक प्रेमी, जो बहुधा सरल स्वभाव के कारण विवाद में फँस जाता था, मण्डली हाल में बैठा हुआ था जब एरच ने उससे कहा, ''हम वे सभी प्रकार की बातें सुनते रहते हैं जो पश्चिम में तुम्हारे विषय में कही जाती हैं। ऐसा क्यों है कि बाबा समुदाय हर समय तुम्हारे विषय में बातें करता है? तुम ऐसा क्या करते हो कि तुम हर समय उन लोगों के निशाने पर रहते हो? जब भी मैं

किसी से तुम्हारे विषय में पूँछता हूँ, वे हमेशा आवेशपूर्वक उत्तर देते हैं और तुम्हारे विषय में कुछ न कुछ विरोध में बोलते हैं।'' एरच उस तीर्थयात्री की टाँग खींच रहे थे जैसा कि वह बहुधा तब करते थे जब वह किसी को घनिष्ठता से जानते थे।

तीर्थयात्री केवल हँसा और उसने एरच से कहा, ''मेरा अनुमान है कि मैं कचरा (निरर्थक वस्तु) हूँ क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति सोचता है कि मैं कचरा हूँ और मुझसे कचरे के समान व्यवहार करते हैं।'' एरच ने उससे कहा, ''ठीक है। तब इसके लिये तुम्हें उन लोगों को धन्यवाद देना चाहिये।'' तीर्थयात्री चकित दिखलाई पड़ा और उसने एरच से पूँछा, ''अपनी आलोचना करने और मेरे साथ कचरे जैसा व्यवहार करने के लिये मैं उन्हें धन्यवाद दूँ?''

एरच ने उत्तर दिया, ''हाँ। क्या तुम अपने मित्रों को धन्यवाद नहीं देते जब वे तुम्हारी सहायता करते हैं?'' तीर्थयात्री और भी अधिक चकित दिखलाई पड़ा।'' तो आप सोचते हैं कि वे मेरी आलोचना करके और मुझसे कचरे के समान व्यवहार करके मेरी सहायता कर रहे हैं?'' एरच ने उत्तर दिया, ''हाँ, वे तुम्हारी सहायता कर रहे हैं। वे तुम्हें उन सम्बन्धों, जो कुछ नहीं हैं बल्कि माया या भ्रम हैं, के मिथ्यापन में फंसने की अनुमति न देकर आध्यात्मिक रूप से उन्नति करने में तुम्हारी सहायता कर रहे हैं। बाबा ने भी कहा है कि जब कोई व्यक्ति तुम्हारी आलोचना करता है, वह तुम्हारे संस्कारों को अपने ऊपर ले लेता है। जब तुम उस व्यक्ति की आलोचना करके उस पर वापस प्रहार करते हो, तब तुम उन संस्कारों को पुनः वापस ले लेते हो। लेकिन यदि तुम उस व्यक्ति के द्वारा आलोचना किये जाने पर कोई प्रतिक्रिया नहीं करते हो, तब तुम्हारे संस्कारों का बोझ उसे लेना पड़ता है जिन्हें उसने तुम्हारी आलोचना करके अपने ऊपर ले लिया है। इस विषय पर बाबा ने ऐसा ही कहा है।

''इसलिये ये सभी लोग जो तुम्हारी आलोचना करते हैं, वास्तव में तुम्हारे संस्कारों के बोझ को कम करने और तुम्हें तुम्हारी ज़िन्दगी के आध्यात्मिक लक्ष्य की ओर धक्का देकर आगे बढ़ाने में तुम्हारी सहायता कर रहे हैं। वह व्यक्ति जो तुम्हारी सहायता करता है, तुम्हारा मित्र है और वे लोग जो तुम्हारी आलोचना करते हैं, वास्तव में वे तुम्हें तीव्र गति से तुम्हारी ज़िन्दगी के वास्तविक लक्ष्य तक पहुँचने में सहायता कर रहे हैं। ये तुम्हारे सच्चे मित्र हैं। वे जो तुम्हारी सांसारिक समस्याओं में सहायता करते हैं, वास्तव में, तुम्हें भ्रम में बाँधकर रखते हैं। केवल

वे जो तुम्हारी आलोचना करते हैं और तुम्हारे लिये बाधा उत्पन्न करते हैं, उनकी (बाबा की) ओर तुम्हारी वास्तविक यात्रा में वे तुम्हारी सहायता करते हैं।

जब एरच ने अपनी बात समाप्त की, तीर्थयात्री ने उनको धन्यवाद दिया और कहा, ''यह एक अच्छा सन्दर्भ है और मैं इसको याद रखने का प्रयास करूँगा।'' एरच ने यह कहते हुए उपसंहार किया, ''सद्‌गुरु कबीर ने इस विषय पर एक दोहा कहा है। यह कहता है, ''वे जो मेरी आलोचना करते हैं मेरे सच्चे मित्र हैं क्योंकि साबुन या पानी का प्रयोग किये बग़ैर ही, मेरी गन्दगी दूर करते हैं।'' इस प्रकार से यह ऐसा ही होता है।

एक अन्य अवसर पर मेरा एक मित्र कुछ व्यक्तिगत मामलों में सलाह लेने के लिये भाऊजी के पास पहुँचा। उसका कुछ दिनों पहले ही तलाक हुआ था और उसकी पूर्व पत्नी (तलाक शुदा पत्नी) उस फ्लैट का संरक्षण (कस्टडी) माँग रही थी जिसमें वह रहता था। वह मामले को निर्णय के लिये अदालत ले जाने की प्रक्रिया में था और वह भाऊजी से प्रोत्साहन के सान्त्वना देने वाले कुछ शब्द चाहता था।

भाऊजी का उत्तर उससे पूर्णतया भिन्न था जैसा कि वह आशा करता था और उसे इस पर आश्चर्य हुआ। भाऊजी ने उससे कहा, ''यदि वह फ्लैट चाहती है, तो उसको वह दे दो और उस विषय को पूरी तरह भूल जाओ। उसे फ्लैट दे दो और भूल जाओ। अदालत में मामला न ले जाओ। यदि उसका दावा गलत है और वह उसे ले रही है जो न्यायोचित रूप से तुम्हारा है, तब वह उस घर के साथ तुम्हारे संस्कारों के रूप में तुम्हारा सारा कचरा ले जायगी। यदि तुम इसे पूर्णतया जाने देते हो, तब उसे इस बोझ को सहना पड़ेगा। लेकिन यदि तुम यह मानकर अदालत जाते हो कि भारी आर्थिक क्षति उठाकर मुकदमा जीत जाओगे, तुम यथार्थ में क्या जीतोगे? तुम जीतकर अपने सभी संस्कारों को फिर से वापस प्राप्त कर लोगे और तुम्हारे कचरे का बोझ बढ़ जायगा। लड़ाई के बिना उसको फ्लैट देकर तुम जीत जाओगे क्योंकि तब वह तुम्हारे संस्कारों का बोझ ले जा चुकी होगी। इसलिये यह सब छोड़ दो और तुम विजयी होगे। बाबा प्रत्येक चीज़ का इस तरह ध्यान रखेंगे कि वह तुम्हारे लिये सहायक होगा यदि इस सबमें तुम उन पर (बाबा) विश्वास करते हो।''

भाऊजी ने निष्कर्ष देते हुए यह कहा, ''हम सभी जानते हैं जो बाबा ने कहा है, कि जो लोग हमारा धन चुरा लेते हैं, वे जो हमारी आलोचना करते हैं, वे हमारे संस्कारों को ले लेते हैं और हमें उनसे अपने सच्चे मित्रों की तरह व्यवहार

करना चाहिये। लेकिन जहाँ तक इसको अभ्यास में लाने की बात है, क्या हम वैसी ज़िन्दगी जीते हैं? हम ऐसा नहीं कर सकते हैं क्योंकि उनके प्रति हमारे विश्वास में कमी है। इसलिये उन पर विश्वास करना सीखो और वह (बाबा) तुम्हारी सहायता करेंगे।''

आकार देने के लिये बर्तन की ठुकाई

तीर्थयात्रियों को सम्बोधित करते हुए मनी ने एक बार कहा, ''क्या तुमने कुम्हार को कभी काम करते देखा है? वह मिट्टी से बर्तन को कैसे गढ़ता है? वह क्या करता है? मिट्टी को आकार देने के लिय वह इसे घूमते हुए चक्के पर रखता है और अपने हाथों से मिट्टी को आकार देता है। जैसे–जैसे बर्तन अन्तिम आकार लेता है, वह इसे एक हाथ से सहारा देता है और दूसरे हाथ से इसे आकार देते हुए इसकी ठुकाई करता है। ऐसा ही बाबा मिट्टी से त्रुटिरहित बर्तन बनाने के लिये हमारे साथ करते हैं जिनको प्यासे लोगों की सेवा करने के लिये उपयोग में लाया जा सके।''

मण्डली के साथ बिताई हुई अपनी ज़िन्दगी में, मैंने देखा है कि वे (मण्डली जन) हमारे साथ ऐसा ही करते हैं– हमें सहारा देते हैं और साथ ही साथ हमारी ठुकाई करते हैं। शुरू के वर्षों में विशेषरूप से रासायनिक कारखाने की लड़ाई के दौरान, यह पुरुष मण्डली थी जो मेरे मार्ग में सभी प्रकार की रुकावटें और कठिनाईयाँ उत्पन्न करते थी और महिला मण्डली मुझे सहारा देती थी। बाद के वर्षों में, भूमिका बदल जाने से पुरुष मण्डली मुझे सहारा देती थी और महिला मण्डली मेरे इस बर्तन को अन्तिम आकार देने के लिये पीटने का कार्य करती थी। मैं पाठकों के लाभ के लिये कुछ और कहानियाँ बतलाना पसन्द करूँगा।

जब मैंने पहले पहलन रासायनिक कारखाने के विरुद्ध, जो कि मेहेराज़ाद रोड पर प्रदूषण का कारण था, उसके अवैध होने के सुबूत एकत्रित करने का कार्य प्रारम्भ किया, मुझे लगभग रोज़ ही सरकारी कार्यालयों के चक्कर लगाना पड़ता था। क्योंकि कारखाने का मालिक राजनीति से जुड़ा हुआ था, सरकारी कर्मचारी हमें कोई भी सूचना नहीं देना चाहते थे। इसलिये मुझे बार–बार विभिन्न विभागों में शिकायतें दर्ज करवानी पड़ती थीं और बहुधा विभिन्न सीनियर सरकारी पदाधिकारियों से पूना, नासिक या बम्बई में, केवल उन आवश्यक सूचनाओं को प्राप्त करने का प्रयास करने और उन्हें एकत्र करने के लिये मिलना पड़ता था जिन्हें मैं स्थानीय स्तर पर प्राप्त नहीं कर सकता था।

जैसे–जैसे समय गुज़रता गया और लड़ाई अदालत के कमरों में पहुँच गई, साथ ही चारों ओर भाग दौड़ करने की मेरी गति भी बढ़ गई। प्रत्येक नये विकास के लिये मुझे सदैव तत्पर रहना पड़ता था; शिकायतें दर्ज करवाना, स्थल पर सुबूत के तौर पर फोटोग्राफ लेना और अन्त में न्यायाधीश के समक्ष नये सुबूतों को प्रस्तुत करने के लिये दिल्ली अदालत भागना। जब रासायनिक कारखाने की लड़ाई कारखाना बन्द हो जाने के साथ समाप्त हो गई, तो मैंने इससे छुटकारा मिलने पर राहत का अनुभव किया क्योंकि मुझे अब आगे सरकारी पदाधिकारों से कोई और बातचीत नहीं करना था या लाल फीताशाही, भ्रष्टाचार और उन पदाधिकारियों के रुखेपन से मुझे कोई सम्बन्ध नहीं रखना था जो कि क्रोध दिलाने वाला था।

इसलिये एक दिन यह मेरे सामने एक आश्चर्य के रूप में आया जब भाऊजी ने मुझे बतलाया कि कुछ ट्रस्ट सम्बन्धी कार्य से वह जिलाधिकारी कार्यालय जा रहे थे और वह मुझे साथ ले जाना चाहते थे जिससे मैं भविष्य में ट्रस्ट के सरकारी कार्यों में सहायता कर सकूँ। यद्यपि मैं अब इस प्रकार के कार्य नहीं देख रहा था, लेकिन जब तक मण्डली को इससे प्रसन्नता होती थी, मैं उनके लिये यह कार्य करने को तैयार था।

प्रारम्भ में, मैं सरकारी कार्यालयों में, विशेष रूप से रासायनिक कारखाने की लड़ाई के दौरान, अकेले ही जाता था। लेकिन अब, मेहेरनाथ, क्रैग या कभी–कभी भाऊजी के साथ भी उन कार्यालयों में मैं उनके साथ जाता था। भाऊजी ऐसा ही चाहते थे। वह मुझे वहाँ अकेले नहीं जाने देना चाहते थे यद्यपि मेरे लिये वहाँ अकेले जाना तथा कार्य करना अधिक सुविधाजनक था। इस कारण से कार्य में थोड़ी देरी भी हो जाती थी लेकिन फिर भी कार्य तभी तक आसानी से हो रहे थे जब तक कि भाऊजी ने मेरे लिये कठिनाईयाँ खड़ी करने का निश्चय नहीं किया था।

अहमदनगर में एक बाबा प्रेमी था जो भाऊजी को प्रसन्न करने के इरादे से उनसे अच्छी–अच्छी बातें करता था। वह सरकारी पदाधिकारियों के साथ अपने सम्बन्धों की डींगे (बढ़ा–चढ़ा कर कहना) मारा करता था और वह दावा करता था कि यदि उसे अवसर दिया जाय तो वह ट्रस्ट के कार्यों को अपने सम्बन्धों के द्वारा अतिशीघ्र करा सकता था। भाऊजी ने अब मुझसे कहा कि मैं इस व्यक्ति को ट्रस्ट के कार्य के लिये साथ लेकर जाया करूँ क्योंकि लाल फीताशाही के कारण कार्य नहीं हो पा रहे थे। मैं किसी हद तक प्रसन्नता अनुभव कर रहा था,

क्योंकि मुझे विश्वास था कि उस व्यक्ति की डींगों में सच्चाई थी और मैं सोचता था कि इस कारण काम जल्दी ही हो जायगा।

जैसे ही हमने सरकारी कार्यालयों के चक्कर लगाने शुरू किये, यह व्यक्ति हमसे कहता था कि हम कुछ भी न कहें और वह सबकुछ संभाल लेगा। जब हम अधिकारी के पास पहुँचते थे, वह राजनैतिक नेताओं के साथ अपने सम्बन्धों की चर्चा करना प्रारम्भ कर देता था जिनके साथ उसने अतीत में कार्य किया था। वह अपने हाथ के कार्य के अतिरिक्त अन्य सभी चीजों के विषय में बात करता था। वास्तव में, यह व्यक्ति हमारी समस्या या परिस्थिति को समझने का प्रयास ही नहीं करता था। इसलिये मुझे विश्वास नहीं था कि वह सम्बन्धित अधिकारी के सन्मुख हमारे आवेदन पत्र के स्वरूप को सही प्रकार से प्रस्तुत करेगा या वह अधिकारियों को ट्रस्ट के आवेदन पत्र को स्वीकृत करने के लिये किस प्रकार संतुष्ट करेगा।

जब वह कुछ समय तक अपने विषय में बात करता रहा, तो मैंने उसे कोहनी से धक्का मारा और उसका ध्यान कार्य की ओर आकर्षित किया जिसके लिये हम वहाँ आये थे। उस व्यक्ति ने केवल अपना सिर हिलाया और अधिकारी के साथ अपने विषय में बात करता रहा। बातचीत के अन्त में, उसने अधिकारी को बतलाया कि वह अवतार मेहेर बाबा ट्रस्ट की ओर से आया था क्योंकि उनके कुछ प्रार्थना पत्र उनके यहाँ लम्बित (Pending) थे जिनका ट्रस्ट के धर्मार्थ कार्य को ज़ारी रखने के लिये स्वीकृत होना आवश्यक था। अधिकारी ने उत्तर में केवल इतना कहा कि जब फाईल उसके पास पहुँचेगी वह उसे देख लेगा और उस पर निर्णय दे देगा। उसने यह वादा नहीं किया कि वह कार्य को कर देगा।

सामान्यरूप से, जब यह व्यक्ति हमारे साथ में कार्यालय नहीं जाता था, तब हम निचले स्तर पर क्लर्कों से यह जानने का प्रयास करते थे कि हमारी फाईल आगे कहाँ तक बढ़ी है। यदि निचले स्तर पर क्लर्क को कुछ स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती थी और वह कोई दस्तावेज़ माँगता था, तो हमें वह प्रस्तुत करना पड़ता था। जब क्लर्क प्रार्थनापत्र की पूर्णता से पूर्णतया सन्तुष्ट हो जाता था, तभी वह फ़ाईल को आगे उच्च स्तर पर भेजता था जहाँ पर और अधिक सूक्ष्मता से उसका निरीक्षण किया जाता था। दो या कभी तीन स्तरों से गुजरने के बाद ही फाईल उस अधिकारी तक पहुँचती थी जिसे उस पर सबसे अन्त में स्वीकृति देनी होती थी। अन्यथा, किसी को भी उस स्तर पर अधिकारी को सन्तुष्ट करने के लिये उससे मिलकर या तो और अधिक दस्तावेज़ उसको देने

होते थे या वह जो कुछ माँगता था वह देना होता था। इस तरीके से, फ़ाईल में इतनी देर लगती थी जिसका कोई अन्त नहीं था। केवल जब फ़ाईल विभाग के उच्चतम स्तर के अधिकारी के पास स्वीकृति हेतु पहुँचती थी, तब उससे मिलना आवश्यक होता था। उसके पहले, उससे मिलना व्यर्थ होता था क्योंकि वही सामान्य टिप्पणी हमेशा की तरह होती थी, ''मैंने फ़ाईल को नहीं देखा है। पहले मुझे फ़ाईल देखने दो।'' इस बाबा प्रेमी का उस वरिष्ठ अधिकारी से संर्पक करना कम से कम मेरे मत मे व्यर्थ था क्योंकि वह उनको व्यक्तिगतरूप से नहीं जानते थे।

जब हमने वापस लौटकर भाऊजी को रिपोर्ट दी, तब इस बाबा प्रेमी ने भाऊजी को प्रसन्न करने के इरादे से इसका अत्यन्त सुन्दर चित्रण उनके सामने प्रस्तुत किया। इस प्रेमी ने भाऊजी को आश्वस्त किया कि सम्बन्धित अधिकारी ने कार्य करने का वादा किया था और उन्हें (भाऊजी को) इस विषय में ज़रा सी भी चिन्ता नहीं करनी चाहिये थी। भाऊजी बहुत प्रसन्न प्रतीत होते थे और वह (भाऊजी) इस व्यक्ति की प्रशंसा करने लगे। भाऊजी फिर मेरी ओर मुड़े और बोले, तुम प्रतिदिन सरकारी कार्यालयों में जाते हो और कभी भी कोई कार्य नहीं हुआ। इस व्यक्ति ने एक ही दिन में कार्य को कर दिया है।''

मैंने भाऊजी को सही स्थिति बतलाने का प्रयास किया और उन्हें यह जानकारी दी कि फ़ाईल सम्बन्धित अधिकारी तक नहीं पहुँची है और उसने केवल यह वादा किया था कि जब फ़ाईल उस तक पहुँचेगी, वह इसका अध्ययन करेगा और तब उस पर निर्णय देगा। जो कुछ हो रहा था उसकी सही स्थिति बतलाने के लिये मैंने जब भाऊजी से यह कहा, तो वह मुझ पर शब्दों के हथौड़े से और अधिक प्रहार करने लगे। उन्होंने मेरी आलोचना करते हुए कहा कि मैं कार्य में दक्ष नहीं था और मैं कार्य को पूरा करने में उनके लिये बाधायें उत्पन्न कर रहा था और भाऊजी ट्रस्ट के कार्य को इतनी शीघ्रतापूर्वक पूरा करने के लिये उस व्यक्ति की प्रशंसा करते थे।

सरकारी कार्यालयों के अगले कुछ सफर लगभग उसी पैटर्न पर थे। उन सफर के पश्चात्, जब वह भाऊजी को रिपोर्ट देता था, वह उसी पैटर्न का अनुकरण करता था। भाऊजी ज़ोर देते थे कि वह व्यक्ति अपने दृष्टिकोण से पहले सब कुछ बतलाये और फिर वह उसकी प्रशंसा करने लगते थे। उसके पश्चात् वह (भाऊजी) मेरी ओर मुड़ते थे और मेरे दृष्टिकोण से सब कुछ पूँछते थे। जब मैं उनको वास्तविक तथ्य बतलाता था, वह मुझसे नाराज़ हो जाते थे

क्योंकि वह इन्हें नकारात्मक ख़बरें मानते थे और वह मुझ पर प्रहार करने लगते थे। मैं नहीं जानता था कि क्या हो रहा था।

ऐसे व्यवहार के कुछ दिनों के पश्चात्, एक दिन जब भाऊजी ने मुझे बहुत कठोरतापूर्वक धमकाया, तो मैं अब इसे और अधिक सहन नहीं कर सका। जैसे ही हम भाऊजी के कार्यालय से बाहर आये; मैं इस बाबा–प्रेमी पर टूट पड़ा और भाऊजी के सामने पूर्णतया तोड़–मरोड़ कर और सुन्दर चित्रण प्रस्तुत करने और उनकी चापलूसी करने का प्रयास करने के लिये उसका सामना किया जबकि केस से सम्बन्धित वास्तविक तथ्य पूर्णतया भिन्न थे। मैंने उससे उसके व्यवहार के लिये स्पष्टीकरण माँगा और पूँछा कि वह भाऊजी से तब क्या कहेगा जब अन्त में कार्य स्वीकृत नहीं होगा और तब वह भाऊजी को इस विषय में कैसे समझायेगा?

इस व्यक्ति ने स्वयं एक सरकारी पदाधिकारी होने के कारण राजनैतिक उत्तर दिया, ''मालिक से वही चीज़ें कहो जो वह सुनना चाहते हैं, उन्हें ख़ुश रखो और प्रसन्नतापूर्वक जिओ। तुम क्यों सिर खपाते हो? तुम्हें इससे क्या फ़र्क पड़ता है यदि कार्य नहीं होता? आश्रय में अपने रहने का आनन्द लो और प्रत्येक व्यक्ति को वही कहकर प्रसन्न रखो जो वह सुनना चाहता है।'' मुझे इस व्यक्ति के व्यवहार से घिन आने लगी और मैंने उसके समक्ष अपने विचार रखते हुए कहा, ''बाबा कार्य का नुकसान हो रहा है और तुम केवल अपने आनन्द और स्वयं को जिम्मेदारी से बचाने की सोच रहे हो।''

उसी दिन बाद में, जब भाऊजी पहले की अपेक्षा थोड़ा खाली थे, मैंने उनसे इस विषय पर चर्चा की। यह जानते हुए कि वह उस व्यक्ति की कितनी प्रशंसा करते थे, मैंने उन्हें यह जानकारी अत्यन्त विनम्रता से दी कि कार्यालय के बाहर उस व्यक्ति ने मुझसे क्या कहा था जब मैंने तथ्यों की गलत व्याख्या करने के लिये उसका विरोध किया था। भाऊजी ने पुनः मुझ पर शब्द रूपी हथौड़े से प्रहार करना तथा उस व्यक्ति की प्रशंसा करना प्रारम्भ कर दिया।

मैं क्रोध की अधिकता से उबल पड़ा क्योंकि मैं इसे और अधिक नहीं सह सका। मैंने उनसे कहा, ''मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि यहाँ क्या हो रहा है। मैं आपको सही तथ्य बतलाता हूँ और आप देख सकते हैं कि हमारे बार–बार जाने पर भी कार्य नहीं हो रहा है। यह व्यक्ति आपको केवल वह चीजें बतलाता हैं जो आप सुनना चाहते हैं लेकिन यह सच नहीं है। मैं चाहता हू कि जो वह कह रहा है, वह सच हो लेकिन कार्य नहीं हो रहा है। वह केवल आपकी खुशामद करने

और स्वयं को जिम्मेदारी से बचाने का प्रयास कर रहा है। वह केवल अपने स्वार्थपूर्ण हितों की रक्षा कर रहा है और उसे कार्य की कोई परवाह नहीं है। इसलिये वास्तव में मैं नहीं जानता कि वह क्या है जो आप चाहते हैं कि मैं करूँ। क्या आप चाहते हैं कि मैं आपको स्पष्ट बतलाऊँ कि कार्य में कहाँ तक प्रगति हुई है या आप चाहते हैं कि मैं आपसे केवल अच्छी–अच्छी बातें कहूँ जैसा कि वह व्यक्ति करता है? मैं ऐसा कर सकता हूँ यदि आप मुझसे ऐसा चाहते हैं। मेरे लिये चीज़ें और आसान हो जायँगी और मेरा समय भी उस व्यक्ति के समान अच्छा बीतेगा। लेकिन भाऊजी, हो सकता है उसके बाद कार्य पूरा न हो।''

भाऊजी ने मुझे बहुत गम्भीरतापूर्वक देखा और कहा, ''मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे तथ्यों की जानकारी देते रहो जैसा कि तुम अभी कर रहे हो। यदि तुम वही करते हो जो यह दूसरा व्यक्ति करता है, तब तुम बाबा की सेवा करने के अपने उद्देश्य में असफल हो जाओगे।'' मैंने भाऊजी से कहा, ''लेकिन लगता है आपको यह पसन्द नहीं है और आप हमेशा मुझसे नाराज हो जाते हैं।'' भाऊजी ने उत्तर दिया, ''उस व्यक्ति के हर चीज़ बतलाने के बाद मैं हमेशा तुमसे क्यों पूछता हूँ कि तुम्हारे अनुसार क्या हुआ था? मैं तुमसे इसीलिये पूछता हूँ कयोंकि मैं जानता हूँ कि तुम मुझे वास्तविकता बतलाओगे।''

मैंने उनसे (भाऊजी से) पूछा, ''तब आप उसका सामना क्यों नहीं करते हैं और उसे यह क्यों नहीं बतलाते हैं? आप हमेशा उसकी प्रशंसा करते हैं'' भाऊजी ने उत्तर दिया, ''वह ऐसा ही चाहता है। वह इसके लिये ही यहाँ आया है। तुम यहाँ पर उससे भिन्न उद्देश्य से आये हो। तुम बाबा को चाहते हो, इसलिये मैं तुम्हें वास्तविक चीज़ देता हूँ। बाबा हमारे साथ हर समय ऐसा ही करते थे। वह एक नये प्रेमी की उसकी गलती के लिये भर्त्सना नहीं करते थे। वह अपनी मण्डली के पुराने सदस्यों में से किसी एक को चुन लेते थे और कठोरतापूर्वक उसकी भर्त्सना करते थें। इस प्रकार वह अप्रत्यक्ष रूप से नये बाबा प्रेमी को उसकी गल्तियों के लिये चेतावनी देते थे। बाबा का यही तरीका था। मैं उसके सामने तुम्हें भलाबुरा कहता था लेकिन, अप्रत्यक्ष रूप से, मैं उसे यह जानकारी देता था कि मैं उन लोगों से प्रसन्न नहीं होता जो बाबा के कार्य के प्रति ध्यान केन्द्रित नहीं करते हैं और अपने स्वार्थ पूर्ण हितों को उनसे (बाबा से) ऊपर रखते हैं। मैं तुमसे ये चीज़ें कहता हूँ लेकिन प्रत्यक्ष में यह उसके लिये हैं।''

भाऊजी ने अन्त में अपनी बात समाप्त करते हुए कहा, ''उनके (बाबा के) लिये उसी तरह कार्य करते रहो जिस तरह तुम प्रशंसा या निन्दा के प्रति उदासीन रहकर अभी कर रहे हो। मैं तुमसे इसकी आशा करता हूँ और हाँ, विश्वास रखो कि ठुकाई अन्त तक जारी रहेगी। यदि मैं वहाँ नहीं होऊँगा, तो बाबा किसी अन्य का तुम्हारी ठुकाई के लिये प्रयोग करेंगे और तुम्हें आकार देंगे।''

प्रशंसा या निन्दा के प्रति उदासीन

एरच का बर्तन को आकार देने के लिये उसकी ठुकाई करने का अपना अलग ही मार्ग था। वह इसे सूक्ष्म स्तर पर जादा करते थें। कुछ इतना सूक्ष्म कि उनके आस–पास रहने वाले भी शायद ही उस पर ध्यान दे सकते थे। उसे केवल वही व्यक्ति अनुभव कर सकता था और समझ सकता था जिसको निशाना बनाया गया था। वह कभी भी किसी को सर्वाजनिक रूप से बुरा भला नहीं कहते थे लेकिन वह व्यक्ति को इतना अधिक क्रोध दिला सकते थे जिसका कोई अन्त न हो और वह उसे क्रोध में पागल कर सकते थे। जब मैं सरकारी कार्यालयों में मुलाकात करने जाता था और विभिन्न विभागों द्वारा अपने प्रार्थना पत्र की प्रगति के सम्बन्ध में सूचनायें एकत्रित कर लेता था, तब मैं सभी सूचनायें एकत्रित करने के पश्चात् भाऊजी को मामले की रिपोर्ट देता था। भाऊजी मुझसे यह कहते थे कि मैं सूचनायें एरच और मनी को भी दूँ। यदि मामला मेहेराज़ाद से सम्बन्धित होता था, विशेषरूप से रासायनिक कारखाने की लड़ाई के समय, तब मुझे ये सूचनायें मेहेराज़ाद में मण्डली के प्रत्येक सदस्य को बतलानी पड़ती थीं। यह कार्य सरकारी पदाधिकारियों के साथ कार्य करने की अपेक्षा बहुधा अधिक थकाने वाला होता था। मण्डली कभी भी चीजों को सरल नहीं बनाती थी, क्योंकि तब वह बाबा की सेवा नहीं होती थी।

जब मैं एरच को सूचनायें देना प्रारम्भ करता था, तब वह मुझसे सरकारी क्लर्क से हुए वार्तालाप को विस्तार में पूँछते थे। एरच तब यह सलाह देते थे कि मुझे क्लर्क से कुछ और प्रश्न भी पूछने चाहिये थे जो मैंने नहीं पूंछे थे और हो सकता है कि वे प्रश्न कार्य के शीघ्र पूरा कराने में सहायक होते। यद्यपि वे प्रश्न मुझे विषय से असम्बन्धित प्रतीत होते थे, फिर भी मैं एरच को प्रसन्न करने के लिये उन प्रश्नों को क्लर्क से पूँछने के लिये सहमत हो जाता था।

इसलिये जब मैं अगली मुलाकात के बाद क्लर्क के पास से वापस आता था, वह (एरच) प्रश्नों के एक पूरे नये सेट के साथ मुझसे मिलते थे और मुझसे

कहते थे, ''लेकिन तुमने उससे (क्लर्क) ये सब चीज़ें क्यों नहीं पूँछी थी? तुम कुछ व्यावहारिक बुद्धि का प्रयोग क्यों नहीं करते हो?'' मैं यह नहीं समझ पा रहा था कि कैसे उन सभी असम्बन्धित प्रश्नों के पूछने से कार्य की गति को तीव्र करने में सहायता मिलनी थी लेकिन, क्योंकि एरच ऐसा चाहते थे, मैं ऐसा करने के लिये सहमत हो जाता था। उदाहरण के लिये, यदि क्लर्क मुझसे अगले सप्ताह मंगलवार की सुबह मिलने के लिये कहता था, तब एरच मुझसे पूँछते थे कि क्या मैंने क्लर्क से पूँछा था कि वह (क्लर्क) दोपहर में भी मिलेगा या नहीं। वह मुझसे यह भी पूँछते थे कि मैंने क्लर्क से पूँछा था या नहीं कि यदि वह (क्लर्क) उस दिन नहीं मिलता, तब किससे सम्पर्क करना होगा।

जब एरच ने क्लर्क के साथ मेरी प्रत्येक मुलाकात के बाद ऐसा करना प्रारम्भ कर दिया, तब मैं परेशानी का अनुभव करने लगा। इसलिये जब भी मैं सरकारी पदाधिकारियों के पास जाता था तो मैंने उनसे न केवल प्रश्न जो एरच उठाते थे बल्कि उनके स्वास्थ्य एवं पारिवारिक जीवन सहित उन सभी प्रश्नों को पूँछने का निश्चय कर लिया जिन्हें मैं सोच सकता था, भले ही वे कितने भी असंगत होते थे।

इसलिये एरच के पास लौटने से पहले, मैं इस बात का विश्वास कर लेता था कि मैंने क्लर्क से प्रत्येक वह प्रश्न पूँछ लिया था जिसकी कल्पना की जा सकती थी। फिर भी, एरच को प्रत्येक बात की जानकारी देने के बाद, वह मुझे, बतलाते थे, ''लेकिन तुमने प्रश्न गलत ढंग से पूँछा था।'' एरच ज़ोर देते थे कि मुझे वह प्रश्न भिन्न प्रकार से पूँछना चाहिये था मैं ऐसे समय अत्यधिक क्रोधित हो जाता था न केवल इस कारण कि वह मुझे इन असम्बन्धित प्रश्नों से पागल बना रहे थे बल्कि बहुधा यह भी बतलाते रहते थे कि कार्य इसलिये नहीं हो रहा था क्योंकि मैं क्लर्कों से इन प्रश्नों को नहीं पूँछ रहा था।

इसलिये एक दिन मैं एकदम से बोल पड़ा, ''लेकिन ये प्रश्न विषय से पूर्णतया असम्बद्ध हैं और मैं नहीं समझता कि प्रश्न को भिन्न प्रकार से करने से कार्य को मैं उसी दिन करवा लेता, विशेष रूप से तब जब क्लर्क यह बतला रहा था कि प्रक्रिया में एक माह या इससे भी ज्यादा समय लग सकता था। एरच ने केवल इस बात पर ज़ोर दिया कि प्रश्न की रचना उचित प्रकार से करनी चाहिये थी क्योंकि ऐसा हो सकता था कि क्लर्क उस तरीके से किये गये प्रश्न से विषय ही को समझ नहीं पाया था जिस तरह से मैंने प्रश्न की रचना की थी और शायद इसीलिये कार्य नहीं हो रहा था।

चिढ़कर मैं वहाँ से चला गया। मैं जानता था कि यदि मैंने उनके साथ या उस विषय पर मण्डली के किसी भी जन से बहस की या उनके समक्ष तर्क प्रस्तुत किया तो वह ऐसा ही करते रहेंगे जिस की कोई सीमा न थी। जब तक कोई व्यक्ति उनके उकसाने पर प्रतिक्रिया करता था, वे (मण्डली जन) उसी तरह उकसाते रहते थे जिस तरह बाबा करते थे और जिसका कोई अन्त नहीं होता था। इसलिये मैंने एरच से बचने का प्रयास किया, लेकिन उससे कोई लाभ नहीं हुआ क्योंकि वह (एरच) बहुत सतर्क थे और देर–सबेरे मुझे पकड़ लेते थे। आखिकार, मैंने एरच और मण्डली के अन्य सदस्यों के साथ वाक्पटुता और हास्य विनोद का प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया। मैंने देखा कि इससे मुझे काफ़ी सहायता मिली क्योंकि यद्यपि वे अभी भी आध्यात्मिक प्रशिक्षण हेतु मुझे उकसाते थे, पर वे इसे अन्तहीन ढंग से जारी नहीं रख पाते थे यदि मैं वाक्पटुता और हास्य–परिहास का प्रयोग करता था।

वैसे भी, जैसे–जैसे समय गुज़रता गया, उनके (मण्डली जनों के) उकसाने पर अपनी होने वाली प्रतिक्रिया को कम करने में मुझे इससे सहायता मिली और धीरे–धीरे मैं यह अनुभव करने तथा समझने लगा कि ये बाबा थे जो उनके द्वारा (मण्डली के द्वारा) ऐसा कर रहे थे। जब तक मैं प्रतिक्रिया करता रहा, मैं इसे अपनी नकारात्मक (विरोधी) भावनाओं के कारण नहीं समझ सका। लेकिन जब मैंने प्रतिक्रिया करना बन्द कर दिया और उकसाने को स्वीकार करने लगा, इसको हल्के विनोदपूर्ण ढंग से लेने लगा, मैं यह अनुभव करने और समझने लगा कि ये बाबा थे जो ऐसा कर रहे थे। यह एक खेल था जिसे खेलने का आनन्द बाबा लेते थे और अब वह (बाबा) इसे मण्डली के द्वारा खेल रहे थे।

इसलिये जब एरच सबसे अधिक असम्बद्ध विषय में किसी नये अन्तेवासी को चुनते थे और अपने अत्यधिक नाटकीय तरीके से ऐसा दिखलाते थे जैसे कि सम्बन्धित अन्तेवासी ने एक बहुत गम्भीर गल्ती कर दी थी, में उस पर विनोद पूर्वक टिप्पणी करता था, हे मेरे ईश्वर! वह ऐसाकैसे कर सकता है? उसने इस स्थान के आस–पास इतना बड़ा पाप कर दिया है। वह सजा का पात्र है। उसे शूली पर चढ़ा देना चाहिये। एरच, अगर आप ऐसा करना चाहते हैं तो मैंने कीलें और क्रास अपने कमरे में तैयार रखे हैं। आपको केवल यही करना है कि मुझे ग्रीन सिग्नल (हरी झंडी) देना है।'' एरच हँसने लगते थे और इसलिये उनके समीप के सभी लोग हँसने लगते थे और वातावरण हल्का हो जाता था।

केवल बाद के वर्षों में मैंने ऐसा अनुभव किया कि मण्डली हमें प्रशंसा या निन्दा के प्रति उदासीन रहने और बिना किसी प्रतिक्रिया के बाबा का कार्य करने में अपना ध्यान केन्द्रित करने का प्रशिक्षण दे रहे थे।

प्रियतम की खुशी

जब मैं मेहेराज़ाद में रहता था, तब वहाँ मेरी ड्यूटियों में से एक ड्यूटी एरच को रात में समाचार पढ़कर सुनाने की थी। वास्तव में, मेरी केवल यही एक ड्यूटी थी। शेष समय दिन मे मैं बराम्दे में चारों ओर मंडराता रहता था और, यदि किसी को मेरी सहायता की आवश्यकता होती थी, तो इसके लिये वह मुझसे कह देते थे। अन्यथा, मैं पुरुष मण्डली के किसी जन विशेष रूप से एरच, के खाली होने का केवल इन्तजार करता रहता था जिससे कि मैं उनके साथ समय व्यतीत कर सकूँ। शाम को, रात्रि का भोजन जल्द करने के उपरान्त, एरच आते थे और मण्डली हाल के सामने वाली बेन्च पर आकर बैठ जाते थे। मैं एरच के सामने दूसरी बेन्च पर जाकर बैठ जाता था और उनको समाचार पत्र पढ़कर सुनाता था। एरच केवल अण्डरवियर (छोटा पाय जामा) पहने रहते थे और ऊपर कोई वस्त्र नहीं पहनते थे और रात के समय का चौकीदार, जिसके हाथ बहुत मजबूत थे, बहुत दिल से उनकी मसाज करता था जिसका यह आनन्द लेते थे। जब रेडियो पर देर शाम के समाचारों का समय होता था, एरच मुझसे रुकने के लिये कहते थे और जब समाचार समाप्त हो जाते थे, वह अपने कमरे में जाकर आराम करना चाहते थे। रात्रि के भोजन के पहले, वह एकान्त में बाबा के साथ अपने व्यक्तिगत क्षणों को बिताने के लिये मण्डली हाल में जाते थे और कोई भी व्यक्ति उस समय बाधा नहीं डालता था।

एरच की बाबा के साथ अपनी बातचीत सुबह जल्दी भी होती थी। उस समय भी कोई उसमें बाधा नहीं डालता था। एक बार मैं सुबह जल्दी जाग गया और ब्लू बस के दूसरी ओर चला गया। उसके पीछे की ओर चहलकदमी करते समय, मैंने संयोगवश मण्डली हाल की खिड़की से अन्दर झाँका और यह पाया कि एरच बाबा की कुर्सी के सामने खड़े हुए बाबा के साथ अपनी व्यक्तिगत बातचीत कर रहे थे। एरच जब वहाँ खड़े थे, तब उन्होंने अपने बायें हाथ से दायें हाथ की कुहनी को और दायें हाथ से अपने जबड़े को सहारा दे रखा था क्योंकि उनके जबड़ों की माँसपेशियाँ म्यास्थेनिया ग्रेविस नामक रोग के कारण कमजोर हो गई थीं। वह बाबा की कुर्सी के सामने ऐसी स्थिति में खड़े थे जैसे वह बाबा के साथ बातचीत कर रहे थे। यह उनके और उनके प्रभु के बीच पवित्र क्षण थे और इसलिये मैं वापस लौटकर ब्लू बस के सामने पड़ी कुर्सी पर बैठ गया और एरच की बातचीत समाप्त होने की प्रतीक्षा करने लगा जिससे कि मैं सुबह

टहलने के समय उनका साथ दे सकूँ। यह लगभग रोज़ की दिनचर्या थी जिसमें मैं एरच के साथ होता था।

एक शाम, जब मैं एरच को समाचार पत्र पढ़कर सुना रहा था, एरच मेरे कमरे की ओर देख रहे थे और क्योंकि लाईट जल रही थी, उन्होंने कहा, ''तुम्हारे कमरे में लाईट क्यों जल रही है? क्या कोई अन्दर है?'' मैं गेस्ट रूममें रहता था जो कि मण्डली हाल के बरामदे के सामने था। यद्यपि वह कमरा मेरा था, पर उसमें एक सार्वजनिक फ्रिज था। इसलिये लगभग हर कोई फ्रिज से कुछ भी निकालने या उसमें रखने के लिये वहाँ जाता था। इसलिये जब एरच ने मेरे कमरे में लाईट जलने के विषय में मुझसे पूछा, तो मैंने अनुभव किया कि मैं लाईट का स्विच बन्द करना भूल गया था। मैं तुरन्त ही अपने कमरे में वापस गया, लाईट का स्विच बन्द किया और फिरसे एरच के पास पहुँच गया। मेरे द्वारा किये गये इस साधारण कार्य से मुझे एरच से बहुत अधिक प्रशंसा मिली।

अगले दिन, मेहेराबाद का एक ख़ास अन्तेवासी, जो बहुधा एरच से मिलने मेहेराज़ाद आता था, संयोगवश वहाँ था और एरच ने मेरे उस साधारण कार्य के विषय में बतलाया कि किस प्रकार मैंने कोई भी तर्क प्रस्तुत किये बगैर, अपने आप को बचाये बिना, अपनी गल्ती स्वीकार कर ली थी और आकर लाईट का स्विच बन्द कर दिया था। वह इस घटना का प्रयोग उस अन्तेवासी को उकसाने के लिये भी कर रहे थे, क्योंकि उस अन्तेवासी की आदत थी कि वह लाईट खुली छोड़ देता था और जब कोई व्यक्ति उस इस विषय में संकेत करता था, वह सहजतापूर्वक उत्तर देता था, ''इसका मूल्य केवल कुछ पेनी (एक छोटी सी रकम) है और मैं इसे ट्रस्ट को अनुदान में दे दूँगा।''

उस समय इस विषय पर, मुझे विचित्र अनुभव हुआ जब मैं ऐसे कार्यों को कर रहा था जो मुझे महान प्रतीत होते थे, तब मुझे निरन्तर उकसाया जाता था, शब्दों के हथौड़े से प्रहार किया जाता था और मैने कभी भी मण्डली से अपने लिये कोई प्रशंसा नहीं सुनी थी और अब इस साधारण कार्य की इतनी प्रशंसा हो रही थी जैसे कि वह एक महानतम कार्य था जिसे कभी किसी ने नहीं किया था। मैंने उस समय महसूस किया कि एरच मेरी प्रशंसा नहीं, कर रहे थे, बल्कि इसके बजाय वह (एरच) इस घटना का प्रयोग उस दूसरे व्यक्ति को उकसाने के लिये कर रहे थे। फिर भी, जैसे–जैसे समय गुज़रता गया, मैंने देखा कि मेरे इन छोटे–छोटे कार्यों की मण्डली द्वारा बहुत अधिक प्रशंसा की जाती थी। मैंने अनुभव किया कि अकसर कुछ महान, कुछ बड़ा करने के पीछे मैं दूसरों के प्रति

कठोर और रूखा हो जाता था। मेरी स्वाभाविक आक्रामक प्रवृत्ति मुझे अधिकार में ले लेती थी और मैं स्वयं को तथा दूसरों को भी उस कार्य को करने के लिये बाध्य करता था जब तक कि वह कार्य पूरा नहीं हो जाता था।

बाद में मैंने अनुभव किया कि यह वह प्रक्रिया थी जो मण्डली के लिये अधिक महत्वपूर्ण थी। इसलिये प्रेम से किया गया एक छोटा सा कार्य और दूसरों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील होना, उनकी (मण्डली की) प्रशंसा की गारण्टी थी। न केवल बाबा के लिये कार्य करना बल्कि कार्य को इस तरीके से करना जैसा बाबा चाहते थे, कुछ ऐसा था जिसको करने में मण्डली हमारी सहायता कर रही थी। जैसा कि एरच ने एक बार अपना मत प्रगट किया था, बाबा के लिये कार्य करना न केवल उनके लिये कार्य करना है बल्कि जब कार्य कर रहे होते हो तुम्हें हर समय अपने प्रियतम को खुश रखना चाहिये। तुम्हें अपने प्रियतम की खुशी के लिये निरन्तर जागरूक होना चाहिये। यह ठीक नहीं है कि तुम केवल वही करो जो करना तुम्हें पसन्द हो और फिर यह आशा करो कि तुम्हारे प्रियतम तुम्हारे ऐसा करने से प्रसन्न होंगे। पता लगाओ कि तुम्हारे प्रियतम को किससे खुशी होती है और उनकी खुशी पाने के लिये वे ही चीज़े करो। हो सकता है कि ऐसा कुछ हो जो तुम्हें पसन्द न हो या किसी व्यक्ति को तुम पसन्द नहीं करते हो लेकिन हो सकता है कि तुम्हारे प्रियतम को वह पसन्द हो, ऐसी स्थिति में उसे पसन्द करो जिन्हें वह पसन्द करते हैं उन चीजों को नापसन्द करो जो उन्हें पसन्द न हो। जब तुम ऐसा करना सीख लेते हो तब प्रियतम की खुशी तुम्हारी खुशी बन जाती है या तुम यह कह सकते हो कि ज़िन्दगी में प्रियतम की खुशी में ही तुम्हारी अपनी खुशी है। इसलिये उन छोटी चीज़ों को नजर अंदाज न करो जो करने के लिये मण्डली तुमसे कहती है। यदि तुम उनसे प्रेम करते हो, उनको खुश करना सीखो। प्रेम में प्रत्येक को प्रियतम की खुशी रखनी पड़ती हैं ऐसा करने से अन्त में तुम्हें इससे ऐसी ज़िन्दगी जीने में सहायता मिलेगी जैसी ज़िन्दगी बाबा तुमसे चाहते हैं; जिसमें तुम्हारा लक्ष्य किसी भी कीमत पर केवल प्रियतम की खुशी बनाये रखना होता है।''

उनका बाबा का प्रेम प्राप्त करने के लिये तुम्हे तैयार करना

भाऊजी, प्रारम्भ के वर्षों में इतने उग्र थे कि हम लोगों ने शायद ही कभी उनको किसी की प्रशंसा करते हुए सुना था। वास्तव में वह कभी भी

किसी की प्रशंसा नहीं करते थे। उनका वहाँ रहने वाले प्रत्येक कर्मचारी के लिये एक समान ही यह सामान्य मत था कि तथाकथित (अमुक) अन्तेवासी ''पूर्णतया बेकार, परेशानी बढ़ाने वाला, उनके लिये सभी प्रकार की समस्यायें उत्पन्न करने वाला है, वह ऐसा व्यक्ति है जो कुछ नहीं सुनता और केवल वही करता है जो वह चाहता है, ट्रस्ट के लिये कठिनाईयाँ उत्पन्न करता है, बाबा के कार्य में कोई रुचि नहीं दिखलाता, अपने ही विषय में सोचता है और मुझे नहीं मालूम कि हमें परेशान करने के अतिरिक्त वह यहाँ और किस काम से आया है। यही वे विशिष्ट चीज़े थीं जो हमें प्रतिदिन की ज़िन्दगी में भाऊजी से सुनने को मिलती थीं। केवल अन्तेवासियों के नाम बदल जाते थे। कभी–कभी, जब भाऊजी बहुत उग्र मनोदशा में होते थे, वह पूरे दिन कार्यालय में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति से उस विशिष्ट अन्तेवासी की शिकायत करते रहते थे। वह तीर्थ यात्रियों के साथ ऐसा नहीं करते थे, बल्कि केवल अन्तेवासियों के साथ ऐसा करते थे।

एक अवसर पर, जब भाऊजी मेहेराबाद में हुई किसी बात से परेशान थे, सुबह से ही उनकी मनःस्थिति ठीक नहीं थी और पूरे दिन ऐसा ही रहा। उस दिन लगभग कोई भी व्यक्ति कुछ भी कार्य नहीं कर सका क्योंकि सभी कार्यों में भाऊजी की स्वीकृति आवश्यक होती थी और उनको ऐसी खराब मनःस्थिति में देखकर, किसी में भी इतना साहस नहीं था कि वह उनके साथ कार्य से सम्बन्धित किसी नये विषय पर चर्चा कर सके।

अगले दिन, भाऊजी पिछले दिन की अपेक्षा उससे भी अधिक खराब मनःस्थिति में थें दिन में किसी समय, जब मैं उनको (भाऊजी को) कार्य से सम्बन्धित कुछ रिपोर्ट देने के लिये उनके कार्यालय में प्रवेश करने वाला था, तब बाहर आने वाले एक अन्तेवासी ने मुझे चेतावनी दी। ''आज अन्दर मत जाओ। जो भी कार्य हो उसे कल के लिये स्थगित कर दो। वह आज प्रत्येक का जीवन नर्क बना रहे हैं।'' क्योंकि अन्तेवासी मेहेराबाद से था, वह भाऊजी द्वारा की जाने वाली प्रतिदिन की उस ठुकाई से परिचित नहीं था जो ट्रस्ट कम्पाउण्ड के अन्तेवासियों के साथ होती थी। इसलिये मैं उसकी सलाह की उपेक्षा करने वाला था जब, अचानक ही, क्रैग भाऊजी के कार्यालय से बाहर आया। उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे थोड़ी दूर ले गया। ''आज भाऊजी के कार्यालय में मत जाओ,'' उसने मुझे चेतावनी दी। ''मुझे इसकी परवाह नहीं है कि वह क्या है जो तुम उन्हें बतलाना चाहते हो, उसे किसी दूसरे दिन के लिये स्थगित कर दो। स्वयं अपने आप को दूसरे दिन के लिए बचाओं। आज का दिन बुरा है।

इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि वह क्या है जो तुम बतलाने जा रहे हो, अन्दर मत जाओ।''

क्रैग की पूरी ज़िन्दगी कम्पाउण्ड में, रोजमर्रा की ज़िन्दगी में भाऊजी के साथ बातचीत करते हुए बीती थी। उसके शब्दों ने मेरे अन्दर खतरे की घण्टियाँ बजा दीं और मैं शालीनतापूर्वक भाऊजी का क्रोध शान्त होने की प्रतीक्षा में अपने कमरे में लौट गया। इसकी सम्भावना थी कि अगले दिन, या उसके भी अगले दिन, जब भाऊजी थोड़ा बेहतर मनःस्थिति में होंगे, तब हम कार्य सम्बन्धी प्रकरणों पर वार्तालाप कर सकेंगे। मैंने थोड़ा बेहतर मनःस्थिति का प्रयोग किया है क्योंकि प्रतिदिन की ठुकाई जारी थी और उस समय हम इसे सामान्य मानते थे।

इसलिये इस खास दिन पर जब मैं अन्दर गया, क्रैग पहले से ही भाऊजी के पास बैठा था। भाऊजी किसी को झिड़क रहे थे जैसा कि वह सामान्यतया करते थे। मैं किसी ऐसे अवसर की प्रतीक्षा में था कि कब वह इसे बन्द करें और मैं उनसे बात करूँ। ऐसा नहीं लगता था कि वह रुकने वाले थे। ऐसी स्थिति में, क्रैग ने ऐसा कुछ किया जो मूर्खतापूर्ण और आत्मघाती प्रतीत होते थे, लेकिन इससे थोड़ी देर के लिये उनका (भाऊजी) का ध्यान भंग हुआ और उनका ध्यान उस व्यक्ति की ओर से हटकर कार्य पर केन्द्रित हो गया। मैं इसे आत्मघाती कहता हूँ क्योंकि जब भाऊ जी किसी को झिड़क रहे होते थे, तब यदि कोई उस व्यक्ति का पक्ष लेता था या उसे बचाने का प्रयास करता था, तब भाऊजी उस पर आक्रमण करना प्रारम्भ कर देते थे। केवल इतना ही नहीं, यदि कोई केवल भाऊजी का ध्यान भी उस विषय से हटाने का प्रयास करता था, वह (भाऊजी) उस पर (ध्यान हटाने वाले का) उस व्यक्ति (जिसको वह झिड़क रहे होते थे) का पक्ष लेने का दोषारोपण करते थे और वह उस पर प्रहार करना प्रारम्भ कर देते थे।

क्रैग ने जो किया वह यह था कि उसने भाऊजी के कन्धे पर हाथ रख दिया क्योंकि वह उनके बहुत पास बैठा था और भाऊजी से उसने बहुत गम्भीरतापूर्वक पूँछा, ''भाऊजी क्या मैं आपसे एक प्रश्न पूँछ सकता हूँ? क्या आप कभी..........'' क्रैग अपने प्रश्न को नाटकीय अन्दाज़ देने के लिये थोड़ी देर रुका और हम सभी आश्चर्य कर रहे थे कि क्रैग आगे क्या कहने वाला था। तभी क्रैग ने बहुत धीरे से भाऊजी से पूँछा, ''क्या आप कभी, क्या आप कभी– किसी के विषय में अच्छा कहते हैं– किसी के भी विषय में?'' हम सभी जोर–जोर से

हँसने लगे। भाऊजी ने हकलाते हुए प्रत्युत्तर में कुछ शब्द कहें। ऐसा थोड़े समय के लिये ही था, फिर वह थोड़ा सा मुसकुराये और उन्होंने कहा, ''ठीक है, अब हमें काम करना चाहिये।'' क्रैग ने एक ऐसा खतरा उठाया था कि उसकी हत्या भी हो सकती थी, लेकिन जैसे–जैसे समय गुज़रता गया मैंने अनुभव किया कि वाक्पटुता और हास्य परिहास में बहुधा भाऊजी की क्रोध की आग शान्त हो जाती थी और उनका मन उस ओर से हट जाता था।

मुझे याद है कि इस सम्बन्ध में भाऊजी या मण्डली के अन्य किसी जन के हाथों ठुकाई से बचने के लिये उनका ध्यान वाक्पटुता और हास्य परिहास के द्वारा उस ओर से हटाने के लिये एरच किस तरह हमें प्रोत्साहित करते थे। वह (एरच) हमें कहानियाँ सुनाते थे कि किस तरह वे (मण्डली जन) बाबा द्वारा अपने उत्पीड़न को कम करने के लिये वाक्पटुता और हास्य–परिहास कर प्रयोग करने का प्रयास करते थे। इसके अतिरिक्त वे लोग और कर भी क्या सकते थे। अन्तर्यामी के क्रोध ओर उसकी तीव्रता से किस तरह वे बच सकते थे? वह (एरच) कहानियाँ सुनाते थे कि कैसे ग़नी अपनी वाक्पटुता, हास्य परिहास और बुद्धिमत्ता से बाबा की मनःस्थिति को हल्का कर सकते थे, चाहे वह कितनी ख़राब हो या वह (बाबा) कितने क्रोध में हों। ग़नी बाबा से छूट लेने का साहस रखते थे और वह इसका लाभ भी उठाते थे।

जब बाबा वास्तव में क्रोध में होते थे, कोई भी अपना मुँह खोलने का साहस नहीं करता था। यदि ग़नी आस–पास होते थे तो वह कुछ सोचते थे ओर बाबा को हँसाते थे। बाबा ग़नी के नटखटपन का आनन्द लेते थे। उनका (बाबा का) ग़नी के लिये संकेत था, ''बड़ा सिर''। बाबा ग़नी की ओर इशारा करने के लिये अपने हाथों से बड़े सिर का संकेत बनाते थे। बाबा उनसे प्रेम करते थे क्योंकि वह (ग़नी) बाबा के स्कूल के सहपाठी थे। ऐसी कहानियाँ सुनाकर मैं मण्डली को हँसाने के लिये अपनी वाक्पटुता और हास्य–परिहास का प्रयोग करने के लिये उत्साहित अनुभव करता था, विशेष रूप से यदि यह हमें उनके आघातों से बचाने वाला था। मैंने पहले इसका प्रयोग अन्य मण्डली जनों के साथ करना प्रारम्भ किया और कुछ अवधि के बाद, इसका प्रयोग भाऊजी के साथ करने लगा और मैंने देखा कि यह कार्य करता था।

भाऊजी के अधीन कई वर्षों तक कार्य करने के पश्चात्, मुझे केवल एक बार की ही याद है जब मैं विनम्रतापूर्वक अपनी असहमति (विरोध) उनसे प्रगट कर रहा था। मैंने भाऊजी का ध्यान उस ओर से हटाकर बाबा की कुछ कहानियों

की ओर मोड़ने के इरादे से उनसे बाबा के विषय में कुछ प्रश्न पूँछने का प्रयास किया जब भाऊजी ने मुझसे बहुत कठोरतापूर्वक कहा, ''अभी करने के लिये बहुत सा काम बाकी है।'' मेरे पास बाबा की कहानियों के लिये समय नहीं है।'' मैंने बहुत ही अनुनयपूर्ण स्वर में कहा, ''लेकिन भाऊजी इतने वर्षों में मैंने आपको केवल कार्य के सम्बन्ध में बातचीत करते और किसी पर शब्दों का प्रहार करते हुए देखा है। कम से कम एक बार हमें थोड़ी देर बाबा की कुछ कहानियाँ बतलाईये जैसे कि दूसरे मण्डली जन बतलाते हैं।'' भाऊजी मेरे पर भुनभुनाये और कहा, ''तुम बाबा की कहानियाँ सुनना चाहते हो ठीक है। सोमवार और शुक्रवार को शाम साढ़े चार बजे (4.30 P.M.) मैं तीर्थयात्रियों को मेहेर पिल्ग्रिम सेन्टर में भाषण दूँगा। इसलिये तुम हर सोमवार और शुक्रवार को शाम चार बजे मेरे साथ चलना जब मैं कार से मेहेराबाद जाऊँ।''

मुझे अपने मुँह खोलने पर पश्चाताप हुआ, क्योंकि अब मुझे हर सोमवार और शुक्रवार को शाम चार बजे भाऊजी के साथ मेहेराबाद जाना था। भाऊजी के साथ मेहेराबाद की यात्रा अहमदनगर की खराब सड़कों के कारण नहीं बल्कि भाऊजी की उग्र मनोदशा के कारण बहुत कठिन था। उस MPC जाने की और वापस लौटने की आधे घण्टे की यात्रा में भाऊजी मुझे तंग करते रहते थे। इस परिस्थिति से बच निकलने के लिये मैं कुछ भी नहीं कर सकता था क्योंकि यह परिस्थिति मैंने स्वयं उत्पन्न की थी।

भाऊजी के साथ मेहेराबाद जाने की मेरी दिनचर्या तब तक जारी रही जब तक वह गर्मियों में पश्चिम की यात्रा पर नहीं चले गये। उसके बाद भी जब MPC बन्द हो गया था और उनको (भाऊजी को) मेहेराबाद जाना होता था, वह मुझसे साथ चलने को कहते थे। पश्चिम यात्रा पर जाने से ठीक पहले, उनको VRDE के यहाँ कुछ काम था और उसके डायरेक्टर से उन्हें (भाऊजी को) मिलना था। कार्य समाप्त होने के पश्चात् जब हम लौट रहे थे, तब भाऊजी बहुत अच्छी मनःस्थिति में थे। वह बहुत खुश प्रतीत होते थे। उनको ऐसी मनःस्थिति में देखना बहुत दुर्लभ था। उन्होंने मेरी प्रशंसा की और यह मेरे सामने एक आश्चर्य के रूप में आया। मुझे विश्वास नहीं हुआ कि मैंने उनकी बात सही–सही सुनी थी, इसलिये मैंने उनसे (भाऊजी से) पूँछा, "क्षमा कीजिये मैंने आपकी बात ठीक से नहीं सुनी। क्या आप उसे पुनः दोहरा सकते हैं जो आपने कहा है?

भाऊजी ने कहा, ''मैं तुम्हारे कार्य से बहुत खुश हूँ।'' आगे क्या होने वाला था, इस पर आश्चर्य करते हुए मैं उस समय बहुत सशंकित था। मैंने

सतर्कतापूर्वक उनसे पूँछा, ''क्या मैंने कोई ग़ल्ती कर दी है? कुछ ऐसा कर दिया है जिससे आप सहमत नहीं हैं?'' भाऊजी ने कहा, ''नहीं, तुम एक अच्छे कार्यकर्त्ता हो,'' मैं सोच रहा था कि यह एक जाल था। मण्डली बहुधा किसी व्यक्ति पर किसी अप्रिय कार्य का बोझ डालने से पहले उसकी प्रशंसा करती थी और इतने वर्षों के बाद भाऊजी से अपनी प्रशंसा सुनकर मुझे सन्देह हुआ कि कुछ अप्रिय होने वाला था। इतने वर्षों में उन्होंने केवल मेरी ही नहीं, बल्कि लगभग किसी अन्य व्यक्ति की भी प्रशंसा नहीं की थी।

भाऊजी मुझसे ऐसे लोगों के साथ कार्य करने को कहते थे जिनकी किसी से भी नहीं बनती थी और मुझे यह अप्रिय ओर मानसिकरूप से थका देने वाला कार्य लगता था। मैं आशा कर रहा था कि मेरी प्रशंसा करने के पश्चात् भाऊजी ऐसे ही किसी कार्य को करने की बुरी खबर देंगे, इसलिये मैंने उनसे सतर्कतापूर्वक पूँछा, ''क्या कोई कार्य ऐसा है जिसे आप चाहते हैं कि वह मेरे द्वारा हो? क्योंकि आपने मेरी प्रशंसा कि, तो क्या अब इसका अप्रिय भाग आप मुझे बतलाने जा रहे हैं?''

भाऊजी आश्चर्यचकित दिखलाई पड़े और उन्होंने मुझसे कहा, ''तुम ऐसा क्यों कहते हो? मैं तुम्हारे कार्य से प्रसन्नता का अनुभव कर रहा था और इसीलिये मैंने ऐसा कहा था।''

मैंने उत्तर दिया, ''इसके पहले आपने कभी मेरे कार्य की प्रशंसा नहीं की थी, इसलिये मैं आश्चर्य कर रहा था कि मुझसे क्या गल्ती हो गई थी। आपसे हमें प्रतिदिन केवल ठुकाई और उसके पश्चात् आप जो सामान्यतया कहते हैं, वहीं प्राप्त होता है। आप कहेंगे, 'यही वास्तविक चीज़ है। बाबा हमारे साथ हर समय यही करते थे। बाबा के साथ रहने का यही वास्तविक अनुभव है और यही उनकी वास्तविक दया और कृपा है।' आपने आज ये सब सामान्य चीज़ें नहीं की बल्कि इसके बजाय आपने मेरी प्रशंसा की, इसीलिये मुझे इस पर आश्चर्य हुआ।

जब मैंने यह कहा तब भाऊजी हँसने लगे, लेकिन तभी उन्होंने गम्भीरतपूर्वक कहा, ''यह सच में ऐसा ही है जैसा कि बाबा के साथ होता था। बाबा के अन्तिम दिनों के दौरान जब मैं उनके पास रात्रि की ड्यूटी करता था, तब उनके समीप होना मेरे लिये अत्यधिक कष्टदायी था। न केवल इसलिये क्योंकि बाबा बहुत खराब मनःस्थिति में होते थे बल्कि उनका स्वास्थ्य भी बहुत

खराब था। साथ ही चीजों को मेरे लिये और कठिन बनाने के लिये बाबा मेरे साथ बहुत बुरा व्यवहार करते थे। यहाँ तक कि वह मेरी ओर देखते भी नहीं थे। वह प्रत्येक व्यक्ति से बात करते थे लेकिन मेरी उपेक्षा करते थे। जब पीने के लिये मैं उनको पानी भी देता था, वह अपना चेहरा दूसरी ओर घुमा लेते थे। इससे मेरे हृदय को पीड़ा होती थी और मुझे बहुत अधिक कष्ट होता था। मैं किस तरह उनकी एक नज़र के लिये लालायित रहता था, लेकिन वह मेरे साथ उपेक्षित व्यवहार ही करते थे। यह लम्बे समय तक चलता रहा और, जब यह व्यवहार मेरे लिये असहनीय हो गया और बहुत अधिक हो गया, बाबा ने मेरे ऊपर अपने प्रेम की बौछार की और उसी क्षण मैं समस्त पीड़ा और कष्ट भूल गया जो कि उन्होंने मुझको दी थी। जब वह (बाबा) अपने प्रेम का फाटक खोलते थे, तुमको केवल उनके प्रेम की याद रहती थी और अन्य सबकुछ भूल जाता था। यह सब उनको (बाबा को) तुम्हें उनका (बाबा का) प्रेम प्राप्त करने और उस सबके लिये तुम्हें तैयार करने के लिये करना पड़ता था।''

मण्डली की अधीर प्रकृति

हमने कहानियाँ सुनी हैं कि बाबा कितनी अधीर प्रकृति के थे। वह चाहते थे कि हर चीज़ बहुत शीघ्रतापूर्वक की जाय। वह बहुधा मण्डली सदस्यों में से किसी एक को कुछ महत्वपूर्ण सन्देश के साथ भेजते थे और उसके जाते ही, वह अधीर हो जाते थे और पूछताछ करना शुरू कर देते थे कि वह मण्डलीजन अब तक वापस क्यों नहीं आया था। उसे इतनी देर क्यों लग रही थी? ऐसा करने के कुछ ही मिनट पश्चात्, बाबा दूसरे मण्डली जन को उसके पीछे भेज देते थे। बाबा की अधीर प्रकृति को दिखलाने वाली ऐसी कहानियाँ बहुत प्रचलित थीं। यही एक ऐसा गुण था जो कि लगभग सभी मण्डली के सदस्यों में था। वे (मण्डली जन) इतने अधीर प्रकृति के थे कि जब वे भयानकरूप से बीमार होते थे, उन्हें विश्राम करवाना उनके सहायकों तथा साथ ही साथ चिकित्सकों के लिये भी बहुत कठिन होता था।

एक बार मैं समीप ही था जब डॉ० शेली अन्तेवासी चिकित्सकों में से एक नये चिकित्सक को सलाह दे रही थीं कि बीमार होने की अवधि के दौरान मण्डली की देखरेख कैसे की जाय। उन्होंने कहा, ''उनके (मण्डली के) साथ चिकित्सक बनकर उन्हें यह बतलाने का प्रयास मत करना कि उन्हें क्या करना है। यदि तुम अपने अधिकारों का दावा करोगे तो यह गलत होगा। चिकित्सक

के रूप में उन्हें निर्देशित करके अपनी ड्यूटी जितनी अच्छी तरह से कर सकते हो करना और उनके साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करना। तुम्हें उनके साथ वैसा ही व्यवहार करना है जैसा कि बच्चों के साथ करते हैं। वे (मण्डली जन) तुम्हारी सलाह मानने से भी इन्कार कर सकते हैं। उनसे विनम्रतापूर्वक तर्क प्रस्तुत करना और यदि वे न सुनना चाहें तो इसे बाबा पर छोड़ देना। वे सभी जन बाबा के हैं,'' मण्डली की अधीरता (अस्थिरता, व्यग्रता) ऐसी ही थी और यह बहुधा चिकित्सकों के लिये विषम परिस्थिति होती थी। अगली कहानी उनकी अधीर प्रकृति के एक पहलू को उजागर करती है।

संयोगवश ऐसा हुआ कि एक तीर्थयात्री ने अचानक ही आना बन्द कर दिया जो नियमितरूप से आता था और मण्डली के लिये वह एक जाना पहचाना चेहरा था। यह तीर्थयात्री प्रत्येक वर्ष निश्चित रूप से आता था और कई माह तक ठहरता था। कभी–कभी वह पश्चिम को लौटने के पहले छह महीने तक भी रुक जाता था। जब से वह पहली बार मेहेराबाद आया था, तब से वह लगभग पन्द्रह वर्षों से ऐसा ही कर रहा था। हर व्यक्ति उसे वहाँ देखने का अभ्यस्त हो गया था क्योंकि वह हमेशा बाबा के सभी महत्वपूर्ण उत्सवों पर उपस्थित रहता था। इसलिये जब वह एक वर्ष तक नहीं आया, तब लोगों को आशा थी कि वह आगामी वर्ष में दिखलाई पड़ेगा। लेकिन जब वह आगामी वर्ष में भी नहीं आया, तब मण्डली को चिन्ता हुई और उन्होंने (मण्डली जनों ने) उस स्थान पर आने वाले सभी बाबा प्रेमियों से उस तीर्थयात्री के सम्बन्ध में पूंछताछ करना प्रारम्भ कर दिया।

क्योंकि वहाँ आने वाले किसी भी बाबा–प्रेमी के पास उसके विषय में कोई जानकारी नहीं थी, यह मान लिया गया कि शायद उसकी मृत्यु हो चुकी थी अन्यथा कम से कम मेहेराबाद में वह किसी न किसी के साथ पत्रों के आदान प्रदान द्वारा सम्पर्क में रहता। जैसे ही दूसरा गुजरकर तीसरा वर्ष लगा, हममें से अधिकतर लोगों ने उसके मित्र तीर्थयात्रियों से उसके पते, ठिकाने के विषय में पूंछताछ की, लेकिन किसी का भी लम्बे समय से उसके साथ कोई सम्पर्क नहीं था।

संयोगवश इस बाबा प्रेमी का परिवार ऐसा था जो बाबा के साथ उसके सम्बन्धों का बहुत ज़्यादा समर्थक नहीं था। परिवार से मेरा अर्थ है कि वह अपनी बहिन और उसके पति के साथ रहता था और वह स्वयं अविवाहित था और बहुत

बुज़ुर्ग था। अफ़वाह यह भी थी कि शायद उसे उसका परिवार भारत आने से रोक रहा था। एक बार जब मैं मुम्बई में था और बाबा सेन्टर पर गया था, तब संयोगवश इस तीर्थयात्री के सम्बन्ध में बातचीत होने लगी। इस तीर्थयात्री के पते, ठिकाने के विषय में मण्डली की चिन्ता का उल्लेख मैंने वहाँ पर किया। मेरे लिये यह एक सुखद आश्चर्य के रूप में सामने आया जब एक बाबा प्रेमी ने यह बतलाया कि कुछ समय पहले उसे इस तीर्थयात्री का एक पत्र मिला था।

संयोगवश इस तीर्थयात्री ने इस खास बाबा प्रेमी से एक जगह किराये पर ली थी और, क्योंकि वह कुछ वर्षों से भारत आने में असमर्थ था, उसने इस बाबा प्रेमी को निर्देश देते हुए पत्र लिखा था कि उसके उस सामान को हटा दिया जाय और कुछ लोगों को उसमें से कुछ चीज़ें दे दी जायं जिन्हें वह छोड़ गया था। उसने यात्रा करने में अपनी असमर्थता व्यक्त की थी क्योंकि उसकी उम्र काफ़ी थी और स्वास्थ्य भी ठीक नहीं था। फिर भी अन्य सब कुछ अच्छा था। जब इस बाबा प्रेमी ने इसका उल्लेख मुझसे किया, मैंने उससे पूँछा कि क्या उसके पास उस पत्र की एक प्रति थी जिसे मैं मण्डली को दिखला सकता था।

बाबा प्रेमी ने उस पत्र को संभाल कर रखा था और मैंने उससे पूँछा कि क्या वह मण्डली को दिखलाने के लिये उस पत्र की एक प्रति मुझे दे सकता था। मैंने बाबा प्रेमी को बतलाया कि मै कुछ ही दिनों में वहाँ से जानेवाला था और इस सहयोग के लिये मैं उसकी सराहना करूँगा यदि वह उस पत्र की एक फोटोकापी मुझे व्यक्तिगत रूप से देगा, क्योंकि मैं जानता था यदि मैं इसका उल्लेख मण्डली से करूँगा तो उनकी तुरन्त ही यह प्रतिक्रिया होगी, ''क्या तुम उस पत्र की प्रति लाये हो?'' यदि मैं न कहूंगा, तो वह मुझे डांटेंगे और मेरी गल्तियां निकालकर मुझे तंग करते रहेंगे, ''क्या तुम्हें कोई समझ नही है? तुम पत्र की प्रति क्यों नहीं लाये?'' और इसी प्रकार से वे मुझसे प्रश्न पूँछते रहेंगे।

बाबा प्रेमी सेन्टर पर, एक निश्चित दिन पर आकर मुझसे मिलने और पत्र की एक प्रति देने के लिये सहमत हो गया। फिर भी, निर्धारित दिन पर वह वहाँ नहीं दिखलाई पड़ा। क्योंकि मैं अगले दिन वहाँ से जाने वाला था, मैंने यह निश्चित करने के लिये उस प्रेमी को फोन किया कि क्या वास्तव में उसके पास पत्र था या वह खो तो नहीं गया था। मैंने उसे चेतावनी दी कि यदि मैं मण्डली से पत्र का उल्लेख करूँगा, तो वे न केवल मेरे पीछे पड़ जायेगें बल्कि उसके भी पीछे पड़ेंगे और इसलिये कि वह मेरी बातों को गम्भीरता पूर्वक ले, मैंने बाबा प्रेमी से कहा, ''मेरा विश्वास करो, वे (मण्डलीजन) तुम्हे तब भी परेशान कर

सकते हैं जब तुम दुनियाँ के दूसरे छोर पर भी होंगे। वे (मण्डलीजन) बिल्कुल बाबा की तरह हैं और वे तुम तक पहुँच सकते हैं, कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम कहाँ छुपे हुए हो।''

बाबा प्रेमी ने मुझे बतलाया कि वह पत्र को अगले ही दिन डाक से भेज देगा। क्योंकि मुम्बई से अहमदनगर पहुँचने में डाक में सात दिन लग सकते हैं, इसलिये मैंने उस बाबा प्रेमी से कहा कि मैं सात दिन तक पत्र की प्रतीक्षा करने के बाद मण्डली से उस पत्र का उल्लेख करूँगा। वह पत्र को सीधे मण्डली के पास डाक द्वारा भेजना चाहता था, इसलिये मैंने उसे पत्र डा० गौहर के पते पर भेजने के लिये कहा।

उन दिनों मैं रासायनिक कारखाने की लडाई के कारण अधिकांशतया मेहेराज़ाद में कार्य कर रहा था। यद्यपि मैं ट्रस्ट कम्पाउण्ड में रह रहा था, फिर भी मैं बहुधा मण्डली के आस पास ही होता था। एक भी दिन ऐसा नहीं बीतता था जब मण्डली ने, विशेष रूप से महिला मण्डली ने, इस तीर्थ यात्री के विषय में चिन्ता व्यक्त न की थी। मैं यह सूचना मण्डली को देने के लिये लालायित था, परन्तु मैंने स्वयं को रोका क्योंकि मैं जानता था कि उनकी (मण्डली की) सहायता करने की प्रक्रिया में मुझे बहुत अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता था। इसलिये सात दिनों तक पत्र के आने की प्रतीक्षा करने के उपरान्त मैंने उनको (मण्डली को) यह सोचकर इसकी सूचना दी कि पत्र अब किसी भी समय पहुँचने वाला था। इस सूचना को सुनकर उनकी (मण्डली की) पहली प्रतिक्रिया थी, तुम पत्र लेकर क्यों नहीं आये थे?'' मैंने उनको सब कुछ बतलाया और इसका भी उल्लेख किया कि वह बाबा प्रेमी पत्र को लगभग सात दिन पहले डाक से भेज चुका होगा। मण्डली खुश थी और शान्त प्रतीत हुई, कम से कम उस क्षण ऐसा ही लगा, लेकिन जब मैं अगले दिन मेहेराज़ाद पहुँचा, तब मुझे याद दिलाया गया कि उस दिन आठवाँ दिन था और अभी तक पत्र क्यों नहीं पहुँचा था। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं उस बाबा प्रेमी से फोन पर सम्पर्क करूँ या मुम्बई के दूसरे बाबा प्रेमियों के द्वारा उससे सम्पर्क करने का प्रयास करूँ जो मेहेराबाद आते रहते थे और उस पत्र के विषय में पूछताछ करूँ।

मुझे उस पत्र का उल्लेख करने का पछतावा था, क्योंकि मैं जानता था कि मेरे लिये परेशानी अभी शुरू हुई थीं। यह प्रतीत हो सकता है कि टेलीफोन करना बहुत आसान है।, लेकिन उन दिनों कोई मोबाईल वा एसटीडी सुविधायें

नहीं थीं। ज्यादा दूर सम्पर्क करने के लिये एकमात्र मार्ग ट्रंक काल करना था और तार घर अहमदनगर में था जहाँ जाना पड़ता था और बहुधा अपने नम्बर की प्रतीक्षा में घण्टों एक लम्बी क्यू (पंक्ति) में खड़ा रहना पड़ता था। आपरेटर तुम्हारे लिये तुम्हारा दिया गया नम्बर डायल करता था और यदि दो या तीन बार प्रयत्न करने के बाद भी उस नम्बर से सम्पर्क नहीं हो पाता था, तो वह तुमसे दूसरे दिन आने के लिये कहता था, क्योंकि उसे पंक्ति में खड़े दूसरे व्यक्तियों को भी अवसर देना होता था।

इस बाबा प्रेमी से कई बार सम्पर्क करने का प्रयास करने के बाद भी मैं असफल रहा और इसलिये मैंने मुम्बई के कुछ ऐसे बाबा प्रेमियों से सम्पर्क करने का प्रयास किया जो मेहेराबाद आते रहते थे और उनके द्वारा उस बाबा प्रेमी को सन्देश भी भेजा। मैं उस पत्र के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिये जो भी प्रयास करता था, उसकी सूचना मैं प्रतिदिन मण्डली को देता रहता था। यद्यपि मैं उस पत्र की विषयवस्तु को पहले ही उनको बतला चुका था, फिर भी मण्डली, उन कारणों से जिन्हें वही बेहतर जानती थी, उस पत्र को देखने के लिये अधिक और अधिक अधीर होती गई और मुझे तंग करती रही। कभी–कभी वे मुझसे बार–बार एक ही प्रश्न पूछ कर परेशान करते रहते थे। ''अब तुम इस विषय में क्या कर रहे हो? तुम इस पत्र को कैसे प्राप्त करोगे? पत्र यदि डाक द्वाराभेज दियागया था, तो अब तक क्यों नहीं पहुँचा? क्या बाबा प्रेमी ने इसकी एक प्रति संभालकर रखी होगी?'' और यह इसी तरह होता रहा। मैं उन्हें आश्वस्त करता था कि उसने पत्र की प्रति बनवाकर रख ली थी। ट्रस्ट ऑफिस में भी प्रत्येक व्यक्ति इस पत्र की प्रतीक्षा कर रहा था। साथ ही साथ, उस बाबा प्रेमी को भी कई अलग–अलग व्यक्तियों के द्वारा सन्देश भेजा जा चुका था और इसलिये अब यह केवल समय की बात थी।

इसके एक सप्ताह के बाद, मैं इतना परेशान हो गया कि मैंने निश्चय कर लिया कि मैं ट्रस्ट कम्पाउण्ड में कार्य करूँगा और कम से कम एक सप्ताह तक मेहेराज़ाद जाने से बचता रहूँगा, उस समय तक जब तक यह मामला सुलझ नहीं जाता। इसलिये मैंने उनसे (मण्डली जनों से) यह कहकर क्षमा मांग ली कि सरकारी कार्यालयों में कुछ कार्य लम्बित (रुका हुआ) था और उन्हें पूरा करने के कारण मैं मेहेराज़ाद अगले कुछ दिनों तक नही आऊँगा। मंडली ने इस पर कोई ऐतराज़ नहीं किया क्योंकि मैं उनको पहले ही आश्वस्त कर चुका था कि मैं उस

पत्र को प्राप्त करने के लिये पूरा प्रयास कर रहा था, यद्यपि मेरे पास इसके करने के लिये कुछ भी नहीं था कि मुम्बई के बाबा प्रेमी द्वारा डाक से भेजे गये पत्र की मैं प्रतीक्षा करूँ।

अगले दिन मैं ट्रस्ट कम्पाउण्ड में और मण्डली के द्वारा परेशान न किये जाने के कारण दिन पहले की अपेक्षा अच्छा गुजर रहा था। दोपहर के करीब, एक तीर्थयात्री ने मेरा दरवाजा खटखटाया। यद्यपि मैं कई तीर्थयात्रियों को जानता था, पर यह चेहरा मेरे लिये अपरिचित था। मैंने तीर्थयात्री से पूँछा कि क्या मामला था। तीर्थयात्री के पास मेरे लिये डा० गौहर का भेजा हुआ एक सन्देश था और वह मूलरूप से पत्र के ही विषय में था। डा० गौहर ने उस पत्र में प्रश्नों की एक श्रृंखला (कई प्रश्न) भेजी थी जिनका मुझे उत्तर देना था क्योंकि वह पत्र के उत्तर की प्रतीक्षा कर रही थी। साथ ही उन्होंने यह निर्देश भी दिया था कि मैं सूचना कार ड्राईवर के हाथों से भेज दूँ जो प्रतिदिन शाम को मेहेराज़ाद जाता था और मेहेराज़ाद की सभी डाक भी ले जाता था।

अगले दिन, मैं उम्मीद कर रहा था कि मुझे पुनः याद दिलाने के लिये कोई आयेगा, पर मुझे आश्चर्य तब हुआ जब पूरे दिन एक व्यक्ति द्वारा नहीं बल्कि पांच, छः भिन्न–भिन्न व्यक्तियों द्वारा सन्देश प्राप्त हुए। मैंने अनुभव किया कि डा० गौहर ने, दूसरे मण्डली जनों की तरह, अपनी चिन्ता उन कई तीर्थयात्रियों को बतलाई होगी जिनको वह अच्छी तरह जानती होगी और उनसे मुझे सन्देश देने के लिये प्रार्थना की होगी और इसीलिये मैं अगले कुछ दिनों तक प्रतिदिन पाँच या छः सन्देश प्राप्त करता रहा। जैसा कि मैं पहले ही कह चुका हूँ कि मण्डली किसी भी व्यक्ति तक कभी भी पहुँच सकती थी और उसे परेशान कर सकती थी, भले ही वह कहीं पर भी छुपा हो। इसलिये हमेशा यही बेहतर था कि प्रक्रिया का सामना किया जाय और उनकी उपेक्षा न की जाय। वाक्पटुता और हास्य विनोद का प्रयोग करना ही परेशानी से बच निकलने का बेहतर मार्ग था।

मेरे सौभाग्य से, पत्र आखिरकार पहुँचही गया। जब मुझे विश्वास हो गया कि सभी मण्डली ने उसे पढ़ लिया होगा, मैं मेहेराज़ाद पहुँच गया। जब मैंने गौहर से पूँछा कि यदि उन्हें पत्र मिल गया था तो क्या उन्होंने उसे पढ़ा था, उन्होंने ही निराशाजनक स्वर में कहा, ''तुम पहले भी हमें पत्र की विषय वस्तु बतला चुके थें इसमें नया कुछ भी नहीं था।'' हाँ, मण्डली ऐसी ही थी। जब मैं उन्हें पत्र की विषय वस्तु बतलाता , तब वे पत्र को देखना चाहते थे। बहुधा यह

हर समय सतर्क रहना

भाऊजी के पास कई सहायक थे जिनमें से एक सहायक को उनके व्यक्तिगत सेवक की भूमिका अदा करनी पड़ती थी। वह व्यक्ति जो वह भूमिका निभाता था, उसे भाऊजी की सहायता उनकी सभी शारीरिक आवश्याकताओं में करनी पड़ती थी और उसे उनके साथ अस्पताल के साथ–साथ स्थानों पर जाना होता था। इस सेवक को भाऊजी के इशारे और पुकार पर दिन के चौबीसों घण्टे बिना अवकाश के कार्य करना पड़ता था और उसे भाऊजी के सोने के कमरे से जुड़े हुए बगल के कमरे में रहना पड़ता था।

जैसे–जैसे समय गुजरता गया और अस्वस्थता के कारण उनकी शारीरिक कमजोरी बढ़ती गई, उनको और अधिक देखभाल की आवश्यकता होने लगी जिससे सहायक सेवक पर कार्य का बोझ बढ़ता गया। फ्रीमैन ने यह भूमिका

कई वर्षो तक अदा की थी। एक अवसर पर, फ्रीमैन को अपने पिता की देखभाल करने के लिये, जो अस्पताल मे भर्ती थे, पश्चिम को जाना पड़ा। जब फ्रीमैन चला गया तब एक नये अन्तेवासी को भाऊजी के सहायक की भूमिका अदा करने के लिये कहा गया।

नये अन्तेवासी में पुराने अन्तेवासियों सहित सभी को हमेशा यह बतलाकर सुधारने की आदत थी कि किसी परिस्थिति में क्या करना उचित था। इससे कुछ अन्तेवासियों को परेशानी होती थी लेकिन इससे मेरा मनोरंजन होता था, खासतौर पर तब जब मैं देखता था कि वह भाऊजी की बात में भी संशोधन करता था। बहुधा जब भाऊजी किसी को सलाह दे रहे होते थे, वह भाऊजी को बीच में रोक देता था और सम्बन्धित व्यक्ति को अपनी सलाह देता था। भाऊजी यह सब सहन करते थे। क्योकि वह नये अन्तेवासियों पर कभी भी प्रहार नही करते थे। वास्तव में, यदि अन्तेवासी महिला होती थी, वह कभी शब्दो से वार नही करते थे। कम से कम प्रारम्भिक वर्षो में तो बिल्कुल भी नहीं करते थे जब उनके पास कोई भी महिला सहायक नही होती थी। यदि कोई पुराना अन्तेवासी भाऊजी को बातचीत के दौरान बीच में रोक देता था या उनकी सलाह को काटते हुए (विपरीत) अपनी कोई सलाह देता था, तो भाऊजी उसे नहीं छोड़ते थे। लेकिन क्योकि यह खास अन्तेवासी नया था, भाऊजी ने उसे ऐसे कार्यो में लिप्त रहने की छूट दे रखी थी।

कभी–कभी जब अन्तेवासी पास में नहीं होता था, भाऊजी हम लोगो से शिकायत करते थे, ''वह मेरी कमियों को सुधार रहा है और मुझे मेरा कार्य सिखला रहा है। ''मै भाऊजी को बतलाता था, ''आप उसकी ठुकाई क्यो नही करते है? यह उसे सीधा कर देगी।'' भाऊजी उत्तर देते थे,'' नही कर सकता। वह अभी भी नया है। एक बार कोई व्यक्ति सही ढ़ंग से जाल में फंस जाता है, केवल तब बाबा उस व्यक्ति की गर्दन मरोड़ने का अपना असली कार्य प्रारम्भ करते है। तुम नये आने वालों के साथ ऐसा नहीं कर सकते हो।''

भाऊजी प्रत्येक वर्ष ग्रीष्म काल के आस–पास पश्चिम की ओर चले जाते थे। इस विशिष्ट अन्तेवासी को भाऊजी का सहायक होने के कारण उनका बैग लगाना और दवायें रखने के साथ–साथ उनके कार्य विशेष ध्यान और सतर्कता के साथ करने की आवश्यकता होती थी, न ही केवल प्रत्येक चीज को सतर्कता पूर्वक पैक करना होता था जिसकी आवश्यकता भाऊजी को पश्चिम में हो

सकती थी, बल्कि अन्तेवासी को यह भी याद रखना होता था कि किस सूटकेस में क्या चीज है जिससे आपात स्थिति में आवश्यकता पड़ने पर भाऊजी को तुरन्त वह वस्तु प्राप्त हो सके।

आखिरी मिनट में, भाऊजी आस्ट्रेलिया विजा के सम्बन्ध में कुछ समस्या आ गई जिसके कारण दिल्ली स्थित आस्ट्रेलिया के दूतावास में किसी व्यक्ति को जाकर सम्पर्क करना जरूरी था। क्योकि अन्तेवासी को इस प्रकार के कार्य की ज्यादा जानकारी थी, इसलिये वह दिल्ली जाने के लिये तैयार हो गया। जैसा कि माना जा रहा था कि भाऊजी कुछ ही दिनों में देश के बाहर जाने वाले थे, इस कार्य का तुरन्त किया जाना अत्यन्त आवश्यक था। मुझसे कहा गया कि मै कुछ दिनों के लिये भाऊजी के सेवक के रूप कार्य करूँ जिसके लिये मैं सहमत हो गया। मुझे भाऊजी को दी जाने वाली दवाओ का समय तथा सभी ड्यूटियों के विषय में समझा दिया गया था तथा अचानक ही चिकित्सा सम्बन्धी आपात स्तिथि आने पर औषधियों के विषय में भी मुझे बता दिया गया था कि मुझे उस स्थिति में क्या करना चाहिये था। सामान्य रूप से यह आशा की जा रही थी कि मैं उनका सेवक होने के नाते अधिकांश समय उनके पास ही रहूँगा।

इसलिये अगली सुबह मैं भाऊजी के साथ था जब वह अपने कार्यालय में आये। लगभग एक घण्टे के पश्चात् वह मेरी ओर मुड़े और कहा, ''यदि तुम मुख्य कार्यालय में कुछ कार्य करने की इच्छा रखते हो तो जाकर कर सकते हो। यदि मुझे आवश्यकता होगी तो मैं तुम्हें सन्देश भेज दूँगा।'' मैंने भाऊजी को बतलाया कि मैं अपने कमरे में जाकर काम करूँगा। वहाँ पर वह मुझे बुलाने के लिये किसी कोभी भेज सकते थे या घण्टी बजाकर मुझे बुला सकते थें। मैं बाहर जाकर कार्य नहीं करना चाहता था। उस स्थिति में मेरे चले जाने के बाद उनको मेरी आवश्यकता पड़ सकती थी।

उन दिनों भाऊजी ने सभी अन्तेवासियों के कमरों में विद्युत घण्टी लगवा दी थी जिसे बजाकर वह हममें से किसी को भी ज़रूरत पड़ने पर बुला सकते थे। मैं अपने कमरे में बैठा हुआ कुछ लिखा–पढ़ी का कार्य कर रहा था जब अचानक ही क्रैग अन्दर आया। उसने मुझसे पूँछा, ''तुम भाऊजी के साथ क्यों नहीं हो? तुम उनके सहायक (सेवक) हो ना ?'' मैंने उसे कहा, ''ठीक है। उन्होंने मुझे मेरे अपने कमरे में जाने की अनुमति दी थी।'' क्रैग ने कहा,

''विचित्र बात है लेकिन वह तुम्हारे विषय में प्रत्येक को यह बतलाकर शिकायत कर रहे हैं कि तुम्हें न तो अपनी ड्यूटियों के परवाह या चिन्ता है, न ही तुम्हें उनकी चिन्ता है।'' मैं हँसने लगा क्योंकि भाऊजी की यही खासियत थी। मैंने क्रैग से कहा, ''मैं जानता हूँ कि वह (भाऊजी) मुझे बहुत अधिक प्यार करते हैं और वह मेरी कमी महसूस कर रहे है। इसलिये बेहतर यही होगा कि मैं जाऊँ और उनसे मिलूँ।'' क्रैग भी हँसने लगा।

जब मैं भाऊजी के कमरे में गया, भाऊजी ने मुझको देखा और पूछा, ''तुम्हें कुछ चाहिये?'' मैं वहाँ पर पड़ी कुर्सियों में एक पर बैठ गया और तब मैंने उनसे कहा, ''नहीं, लेकिन मैं सोच रहा था कि क्योंकि मैं एक घण्टे से भी अधिक समय के लिये यहाँ से चला गया था, तो आपको किसी चीज़ की आवश्यकता हो सकती थी। इसलिये मैं यही जानकारी करने के लिये आया था।'' भाऊजी ने उत्तर दिया, ''नहीं, मुझे किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है। यदि मुझे आवश्यकता होगी तो मैं तुम्हें बुला लूँगा। तुम अपने कमरे में जा सकते हो।'' मैंने भाऊजी से , ''क्या यह ठीक होगा कि मैं अपने कमरे के बजाय यहीं बैठूं? इसके अतिरिक्त, कोई दूसरा महत्वपूर्ण कार्य भी नहीं है।'' भाऊजी ने मुझसे कहा कि मेरे लिये उनके पास रुकना आवश्यक नहीं था लेकिन, जब मैंने जोर दिया तो उन्होंने मुझे वहाँ बैठने की अनुमति दे दी।

इसी दौरान यह सम्भावना थी कि वह अन्तेवासी एक दिन या ज्यादा से ज्यादा दो दिन में कार्य समाप्त करके वापस लौट आयेगा, लेकिन दुर्भाग्य से कुछ अपरिहार्य कारणोंवश कार्य में देरी होती गई। अन्तेवासी ने दिल्ली से फोन करके हमें सूचना दी कि उसे दिल्ली में सप्ताह के अन्त तक ठहरना पड़ेगा क्योंकि दूतावास बन्द था और सोमवार को उसे वीज़ा प्राप्त होगा। अतः वह मंगलवार को मेहेराबाद वापिस आ जायेगा।

भाऊजी बुधवार को पश्चिम के लिये अपनी फ्लाईट पकड़ने के लिये कार द्वारा मुम्बई जाने वाले थे। इसलिये समय बहुत कम था और चीज़ें हमेशा ग़लत हो सकतीं थीं। इससे भाऊजी बहुत बेचैन और चिन्तित थे। वह असमन्जस में थे कि क्या सब कार्य सही ढंग से हो जायेगा और क्या वह नया अन्तेवासी कार्य को सफलतापूर्वक पूरा कर लेगा। जाने के प्रोग्राम का क्या होगा यदि चीजें सही ढंग से न होंगी।

इस मामले को और ख़राब करने के लिये, इस अन्तेवासी ने दिल्ली से फोन

पर सूचना दी कि वह दिल्ली का प्रदूषण सहन न कर सकने के कारण सप्ताह के अन्त तक देहरादून जा रहा था। भाऊजी को जब यह समाचार मिला, वह बहुत अधिक परेशान हो गये और इस अन्तेवासी के विषय में बार–बार शिकायत करने लगे, ''उसे किसी चीज़ की न तो कोई चिन्ता है और न ही उससे कोई वास्ता है। मैंने उसे वीज़ा के कार्य से दिल्ली भेजा था और वह वहाँ पिकनिक मना रहा है। मेरे वीज़ा का कार्य करने के बजाय वह देहरादून मौज–मस्ती के लिये जा रहा है। यदि दिल्ली में प्रदूषण है, तो उसे मुझको सूचित करना चाहिये था। मैं दिल्ली के बाहर क्षेत्र के समीप किसी बाबा प्रेमी के यहाँ उसके ठहरने की व्यवस्था करा देता। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। वह मुझे केवल यह सूचना देता है कि वह देहरादून जा रहा हैं वह न तो मुझसे पूँछता है, न ही मेरी अनुमति लेता है। वह मुझे केवल सूचना देता है। जब वह मेरे पास होता है, वह हर समय ऐसा ही करता है। वह पूरे समय मुझे सलाह देता है और मुझे बतलाता है कि क्या करना है। उसे कोई परवाह या चिन्ता नहीं है। उसे किसी बात में कोई रुचि नहीं है। वह वही करता है जो वह करना चाहता है। वह अब देहरादून पिकनिक पर जा रहा है। मुझे लगता है कि वह सोमवार को मुझे बतलायेगा कि वह नेपाल जा रहा है। उसे कार्य में कोई रुचि नहीं है। वह केवल आनन्द लेना चाहता है।''

यही कुछ था जो भाऊजी अधिकांश अन्तेवासियों के विषय में कहते थे जब वह उनसे इस बात को लेकर नाराज़ होते थे कि वे हर समय अपनी जिम्मेदारियां के प्रति सतर्क नहीं रहते। मण्डली न केवल यह आशा करती थी कि हम लोग हर समय अपना कार्य करने के लिये तैयार रहें बल्कि शाब्दिक रूप से हमें अपने पंजों पर खड़े रहना चाहिये अर्थात् तत्पर रहना चाहिये। हर समय प्रियतम की खुशी के लिये सतर्क रहना क्या था, इसी के विषय में वे (मण्डली) अन्तेवासियों को प्रशिक्षित कर रहे थे और जो कुछ उन्होंने बाबा के लिये स्वयं किया था, उस विषय में भी वे अन्तेवासियों को प्रशिक्षित कर रहे थे। उन्होंने ऐसी ज़िन्दगी बिताई थी और हमें उस क्षण के लिये प्रशिक्षित कर रहे थे वे हमें उसके लिये तैयार कर रहे थे, या कोई भी यह कह सकता है कि वे हमें उनका (बाबा का) साथी बनाने के लिये कर रहे थे। भाऊजी इस नये अन्तेवासी के विषय में इसी प्रकार की बात करते रहे और हम लोग बेचैनी से सोमवार को उसके आने की प्रतीक्षा कर रहे थें

एरच को संक्षेप में इस परिस्थिति से अवगत कराया गया और वह भी चिन्तित दिखलाई पड़े, विशेष रूप से इसलिये कि समय बहुत कम था और यदि विज़ा सोमवार को दूतावास द्वारा नहीं दिया जाता, तब चीज़ें भयानक रूप से उलझ सकती थीं। सोमवार की सुबह भाऊजी बहुत बेचैन थे और लगभग हर घण्टे वह इस विषय में पूछताछ कर रहे थे कि दिल्ली से कोई सूचना प्राप्त हुई या नहीं। जैसा मैंने पहले ही कहा कि हमारे पास कोई मोबाईल या एस०टी०डी० सुविधा नहीं थी। अब यह अन्तेवासी पर ही था कि वह हमसे सम्पर्क करे। एरच भी समय–समय पर पूछताछ कर रहे थे क्योंकि वह भी चिन्तित थें सौभाग्य से, दोपहर के करीब हमें इस अन्तेवासी की फोन काल प्राप्त हुई कि वीज़ा का कार्य हो गया था और वह अहमदनगर के लिये चलने वाला था। उसने हमें ट्रेन का नाम भी बतलाया। जब मैंने भाऊजी को इस विषय में बतलाया, वह थोड़ा शान्त हुए, लेकिन वह अभी तक इस विषय में चिन्तित थे कि क्या यह अन्तेवासी सुरक्षित वहाँ पर उनके जाने के समय तक पहुँच जायेगा।

अगले दिन, जब ट्रेन के पहुँचने के समय के बाद लगभग पन्द्रह मिनट गुज़र चुके थे, भाऊजी बेचैन हो गये क्योकि रेलवे स्टेशन से ट्रस्ट कम्पाउण्ड तक पहुँचने में कठिनाई से दस मिनट लगते थे। उन्होंने पूछताछ करना प्रारम्भ कर दिया, ''यह व्यक्ति अभी तक क्यों नहीं आया? क्या वह वास्तव में दिल्ली से नगर के लिये चल दिया था या वह मौज मस्ती करने नेपाल चला गया है?'' वह इसी प्रकार के प्रश्न निरन्तर पूँछते रहे।

मैंने भाऊजी से कहा, ''यदि आप चाहें तो मैं रेलवे को फोन करके यह जानकारी प्राप्त कर सकता हूँ कि ट्रेन समय से पहुँच गई है या नहीं। कभी–कभी ये गाड़ियाँ कई घण्टे लेट हो जाती हैं।'' भाऊजी को अपने क्रोध को अभिव्यक्त करने की आवश्यकता थी और वह मेरी ओर मेरे लाभदायक सुझाव के लिये मुड़े। उन्होंने मुझे यह कहकर फटकारा, ''फोन कॉल? हाँ, तुम सभी यही तो करते हो। ट्रस्ट का पैसा बिना सोचे समझे खर्च करते हो, हमेशा पूरे समय फोन करते रहते हो। तुम लोग यह नहीं समझते कि ट्रस्ट को पूँजी बनाने में कितनी कठिनाईयाँ होती हैं'' मैंने उनसे क्षमा याचना की ओर चुप हो गया।

जैसे–जैसे समय गुजरता गया, भाऊजी और अधिक बेचैन हो गये और

एक घण्टे के बाद वह इसे और अधिक नहीं सह सके और अन्त में उन्होंने मुझे रेलवे को फोन करके ट्रेन के सम्बन्ध में जानकारी करने के लिये कहा। जब मैंने रेलवे को फोन किया, मैं यह जानकारी प्राप्त करके आश्चर्यचकित रह गया कि ट्रेन समय पर पहुँच चुकी थी और वह लगभग एक घण्टे से भी पहले आ चुकी थी। अब मैं बहुत चिन्तित हो गया। हमें नहीं पता था कि यह अन्तेवासी कहाँ था और उससे सम्पर्क करने का हमारे पास कोई रास्ता नहीं था हमें इस अन्तेवासी का केवल धैर्यपूर्वक इन्तज़ार करना जब तक कि वह हमसे स्वयं सम्पर्क न करता।

इसी दौरान, मुझे मेहेराज़ाद से एक फोन आया। एरच स्वयं ही लाईन पर उस अन्तेवासी के पहुँचने के विषय में पूँछताँछ कर रहे थे। दिन भर वह उस अन्तेवासी की सूचना के विषय में पूँछताँछ करते रहे थे। इस अन्तेवासी ने यह नहीं सोचा कि पूरे मामले में उसका हमारे सम्पर्क में रहना महत्वपूर्ण था। उसका लापरवाही का यह एक ऐसा कार्य था जिसने मण्डली जनों की व्यग्र प्रकृति को उभार दिया था। जब मैंने वापस जाकर भाऊजी को सूचित किया, वह बहुत अधिक परेशान हो गये और इस अन्तेवासी के लापरवाही पूर्ण व्यवहार पर उसे झिड़कना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा, ''मैं जानता हूँ कि वह नेपाल मौज मस्ती के लिये भाग गया है। वह इसके लिये ही यहाँ आया हैं उसे न तो कार्य की और न ही बाबा की परवाह है और न ही चिन्ता। पहले वह देहरादून जाता है, वहाँ अच्छा समय बिताता है और अब वह नेपाल में आनन्द उठा रहा है। उसके पास मेरा वीज़ा नहीं है और वह दूतावास भी नहीं गया है। वह 'नगर' भी नहीं आया है। ट्रेन एक घण्टे पहले ही आ चुकी हैं वह कहाँ पर है?''

भाऊजी लगातार ऐसा ही कहते रहे और उन पर कोई रोक नहीं थी। इसके अतिरिक्त, मैं उन्हें शान्त करने के लिये क्या कह सकता था? मैं स्वयं चिन्तित था। मैं अन्दर ही अन्दर बाबा से सहायता के लिये प्रार्थना कर रहा था जब अनायास ही मुझे ऐसा लगा कि हो सकता है वह बाबा की समाधि पर शाम की आरती के लिये चला गया हो, क्योंकि भाऊजी के साथ पश्चिम आने के पहले मेहेराबाद में उसका यह अन्तिम दिन था। मेंने भाऊजी को यह बतलाया और भाऊजी से मेहेराबाद के कुछ अन्तेवासियों को फोन करके इस सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने की अनुमति माँगी। भाऊजी पुनः फोन कॉल पर पैसा बरबाद करने के लिये मुझे डाँटने फटकारने लगे। मैं चुप रहा। नये अन्तेवासी

को थोड़ी देर झिड़कने के बाद, भाऊजी मेरी ओर मुड़े और मुझे मेहेराबाद फोन करने और जानकारी प्राप्त करने की अनुमति दे दी।

उन दिनों, मेहेराबाद के केवल कुछ ही अन्तेवासियों के पास फोन था। इसलिये यह एक सुखद आश्चर्य था जब मेंने पहले अन्तेवासी को फोन किया और मेरे द्वारा पूरी परिस्थिति बतलाने के बाद, उसने मुझसे कहा, ''जिस अन्तेवासी के विषय में तुम बात कर रहे हो, वह शाम की आरती में था और मैंने उसे देखा था।'' मैं तनाव मुक्त हो गया और मैंने जाकर भाऊजी को सूचित किया। वह भी तनाव मुक्त हो गये थे, लेकिन अभी भी वह उस अन्तेवासी को कोई विचार, चिन्ता या परवाह न होने और मेहेराबाद जाकर आनन्द उठाने, अच्छा समय बिताने के लिये झिड़कते रहे।

अन्तेवासी ट्रस्ट कम्पाउण्ड रात्रि लगभग नौ या साढ़े नौ बजे (9.00 or 9.30pm) पहुँचा। भाऊजी के मन को शान्त करने के लिये मैंने भाऊजी को सूचना दी, उन्होंने पुनः इस अन्तेवासी के लापरवाह स्वभाव की आलोचना की। मैंने मज़ाक करते हुए उनसे कहा, ''क्या उस पर अब हथौड़ा गिरेगा या उसे ऐसे ही बचकर चले जाने देंगे?'' भाऊजी ने कहा, ''मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ? वह अभी भी नया है।'' तब वह (भाऊजी) मेरी ओर मुडे और मुझसे कहा, ''तुम उस पर हथौड़े चलाओ। तुम उसे डाटो, फटकारो और उसे बतलाओ कि वह कितना उदासीन और लापरवाह था। उससे पूँछो कि वह बाबा की सेवा करने के लिये यहाँ आया है या मौज मस्ती के लिये आया है। उससे पूँछो कि वह देहरादून क्यों गया था।'' भाऊजी निरन्तर ऐसा ही कहते रहे।

यद्यपि मैंने इस अन्तेवासी को फटकारा नही, पर मेंने उसके साथ इस विषय पर चर्चा की और उसे बतलाया कि कैसे वह पूरी परिस्थिति उत्पन्न हुई जब से वह इस स्थान को छोड़कर गया था। उसने मुझे बतलाया कि जब वह अहमदनगर स्टेशन से निकला, तब उसने ट्रस्ट कम्पाउण्ड लौटने के पहले समाधि के दर्शन करने का निश्चय किया क्योंकि पश्चिम की यात्रा पर जाने से पहले समाधि के दर्शन करने का उसके लिये यह अन्तिम अवसर था। मैंने उसे समझाया कि यदि वह हमें स्टेशन से फोन कर देता, तो मण्डली की व्यग्रता नहीं बढ़ती। मैंने उसे बतलाया कि कैसे भाऊजी ने मुझे इस सबके लिये उसको डाँटने फटकारने और शब्दों के हथौड़े से प्रहार करने को कहा था। मैंने उससे प्रार्थना की कि जब वह अगले दिन ऑफ़िस जाये, तो ऐसा दिखावा करे जैसे

मैंने उसे पिछली रात्रि कठोरतापूर्वक डाँटा–फटकारा हो क्योंकि इससे भाऊजी प्रसन्न होंगे। इस नये अन्तेवासी ने अपनी गलती का एहसास किया और उसने वैसा ही किया जैसा करने के लिये मैंने उससे कहा था और इस तरह पूरा मामला सुलझ गया।

जैसा कि मैंने पहले ही कहा था कि प्रियतम की खुशी बनाये रखने के लिये प्रत्येक को हर समय तत्पर रहना चाहिये, हमेशा सतर्क रहना चाहिये। ऐसा ही मण्डली ने किया था और इसी के लिये वह हमें प्रशिक्षित कर रहे थे।

आग से कभी न खेलो

हाल ही में, जब मैं मेहेरवान जसावाला के साथ मण्डली की महानता के विषय में बात कर रहा था, उन्होंने टिप्पणी की, ''बाबा ने कहा था कि यदि कोई व्यक्ति मुझे परेशान करता है या मेरा विरोध करता है, मैं उसे क्षमा कर सकता हूँ, लेकिन यदि वे मेरी मण्डली के सदस्यों को, जिन्हें मैं अपना मानता हूँ– परेशान करते हैं तो मैं सहन नहीं करूँगा।'' मेंने मण्डली को भी ऐसा कहते सुना था। वास्तव में, मण्डली के साथ अपनी ज़िन्दगी में मैंने काफी घटनायें देखी हैं जहाँ ऐसा हुआ था। उनमें से कुछ घटनाओं को मैं पाठकों के लाभ के लिये बतलाऊँगा।

रासायनिक कारखाने की लड़ाई के समय, बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स के एक सदस्य एक दिन अचानक ही समस्या का शान्तिपूर्ण हल निकालने के लिये मण्डली के साथ बात करने की इच्छा से चहलकदमी करते हुए मेहेराज़ाद आ गये। क्योंकि बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स में अधिकाशतः कारखाने के मालिक के मित्र ही थे, मण्डली की वास्तव में उनसे बात करने में दिलचस्पी नहीं थी। कारखाने के मालिक ने हम लोगों को केवल जाल में फंसाने के इरादे से बारम्बार बातचीत करके समस्या को सुलझाने का प्रयास करना प्रारम्भ कर दिया था।

कारखाने का मालिक यह दिखलाता था कि वह मैत्रीपूर्ण हल में दिलचस्पी रखता था, लेकिन हम उसके संकेतों का उत्तर नहीं दे रहे थे। यह वह था जिसने बातचीत द्वारा हुए समझौते को तोड़ा था और तब उसने जनता की सहानुभूति प्राप्त करने के लिये समाचार पत्रों में हमारे विरुद्ध गलत लेख छपवाये थे और स्थानीय लोगों से हमारी शत्रुता करवा दी थी। वह तो इस हद तक कर रहा था कि मण्डली को ग्रीटिंग कार्ड भेजता था और त्योहारों पर

मिठाई के डिब्बे सहित मेहेराज़ाद आता था और इस पूरी घटना को वीडियो कैमरे द्वारा रिकार्ड कर लेता था। मण्डली सोचती थी कि वह पागल था और वे नहीं समझ पाते थे कि वह क्या कर रहा था। लेकिन यह जानकर कि मालिक कितना चतुर था, मैंने यह अन्दाज़ा लगा लिया था कि वह इस सामग्री का उपयोग हमारे विरुद्ध करेगा और उसने यह अदालत में सुबूत के तौर पर प्रस्तुत भी किया।

इसीलिये मालिक के द्वारा बीते हुए समय में इन साधनों के प्रयोग किये जाने के कारण मण्डली की उसके निर्देशक, मित्र के साथ बातचीत करने में रुचि नहीं थी जब वह एक शान्तिपूर्ण हल खोजने के लिये बातचीत करने आया। निर्देशक ने तर्क प्रस्तुत किया और मण्डली से क्षमा याचना करते हुए पुनः बातचीत प्रारम्भ करने और कम से कम एक अवसर देने के लिये कहा। उसने तर्क प्रस्तुत किया कि वह ईमानदारी पूर्वक कह रहा था और यहाँ उन्हें जाल में फँसाने के लिये नहीं आया था। जब उसने यह कहा, अलोबा ने उसका हाथ पकड़ा और उसे मण्डली हाल में ले गये। उन्होंने (अलोबाने) उसे बाबा की कुर्सी के सामने खड़ा कर दिया और तब उससे कहा, ''बाबा ईश्वर हैं और वह तुम्हारी सहायता करेंगे यदि तुम यहाँ सच्चे हृदय से आये हो। लेकिन यदि तुम हम सबको परेशान करने के इरादे से आये हो, तब याद रखना कि बाबा आग हैं। यदि तुम उनके साथ खेलोगे, तो तुम बुरी तरह जल जाओगे।'' अलोबा ने तब निर्देशक से कह कर उससे श्रद्धापूर्वक बाबा को प्रणाम करवाया। निर्देशक लगातार अपने इरादों में विश्वासनीय और ईमानदार होने का दिखावा करता रहा। लेकिन कुछ दिनों बाद, जैसा कि स्वाभाविक था, हमारे विरुद्ध समाचार पत्रों में हमें बदनाम करनेवाले लेख दिखलाई पड़े। ऐसा ही कुछ था जिसका हमें पहले से ही अनुमान था।

समाचार पत्रों में लेख छपने के एक सप्ताह पश्चात् ऐसा हुआ कि रासायनिक कारखाने में एक दुर्घटना घटी जब वह निर्देशक स्वयं वहाँ पर था। किसी प्रकार की रासायनिक अभिक्रिया हो रही थी और निर्देशक एक रासायनिक अभियन्ता (केमिकल इंजिनियर) होने के नाते उसे देख रहा था। तभी रसायन से भरे हुए बीकरों में से एक बीकर में विस्फोट हो गया। यद्यपि यह एक छोटी सी दुर्घटना थी, पर रसायन उसके पूरे चेहरे पर फुहार के रूप में पड़ गया। उसका पूरा चेहरा जल गया लेकिन,उसके सौभाग्य से, उसकी आँखें बच

गई क्योंकि वह चश्मा पहने हुए था। यहाँ तक कि उसका चश्मा भी पूर्णतया पिघल गया था। निर्देशक बहुत अधिक भयभीत हो गया और उसके बाद उसने मेहेराज़ाद में रासायनिक कारखाने के पास भी आनेसे इन्कार कर दिया। उसे अलोबा की चेतावनी याद आई कि, ''बाबा आग हैं। यदि उनके साथ खेलोगे, वह तुम्हें जला देंगे।'' वह बार–बार किसी न किसी के द्वारा सन्देश भेजकर सूचित करता था कि उसने कारखाने के मालिक से सम्बन्ध तोड़ लिये थे और उसकी योजना औद्योगिक क्षेत्र में अपना कोई कार्य प्रारम्भ करने की थी। उसे अपनी ग़ल्ती का एहसास हो गया था और उसने हमसे पुनः कभी भी हमें परेशान न करने का वादा करते हुए क्षमा माँगी थी।

दूसरी ऐसी ही घटना इस प्रकार हैं। एरच की आदत प्रातः काल मेहेराज़ाद जाने वाली सड़क पर टहलने की थी। क्योंकि वह रासायनिक कारखाना सडक के समीप ही था, हमें टहलने के समय इसके पास से गुजरना होता था। क्योंकि मेरा शरीर जहरीली गैसों से शीघ्र ही प्रभावित था, मैं बहुत अधिक दुर्गन्ध का अनुभव करता था। इसलिये उसके पास से गुज़रते समय मैं अपने चेहरे को रूमाल से ढककर साँस को रोकने का प्रयास करता था। कई अवसरों पर हम कारखाने के परिसर (Premises)में गतिविधियाँ होते हुए पाते थे और कभी–कभी उसका मालिक भी वहाँ उपस्थित रहता था।

एक अवसर पर, संयोगवश मालिक वहाँ पर था और उसने, विशेष रूप से मण्डली सदस्यों को लक्ष्य बनाते हुए, एक बहुत ही अश्लील टिप्पणी की। कर्मचारियों को जोर से सम्बोधित करते हुए जिसे हम सुन सकें, उसने (मालिक ने) उन लोगों से कहा, ''बूढ़े और कमजोर कुत्ते क्या कर सकते हैं, विशेष रूप से यदि उनके कोई भी दाँत न हो। वे केवल भौंक सकते हैं यदि वे काटना चाहें, तो भी वे काट नहीं सकते।'' यह सुनकर मुझे क्रोध आ गया, लेकिन एरच पूर्णतया शान्त और इस सबसे अप्रभावित थे। वह (एरच) पड़ोस के किसानों के छोटे–छोटे बच्चों को प्रसाद वितरित करने के अपने दैनिक कार्य में व्यस्त हो गये जो कि उनके द्वारा दिये जाने वाले इस प्रेम प्रसाद में हिस्सा लेने के लिये उनके पास पहुँच जाते थे।

कुछ दिनों बाद, संयोगवश ऐसा हुआ कि रसायन कारखाने का मालिक अपनी मोटर साईकिल चला रहा था जब, पता नहीं कहाँ से, एक भटकता हुआ कुत्ता भागते हुए उसके रास्ते में आ गया। क्योंकि सड़क पूर्णतया साफ थी और

वह तीव्र गति से मोटर साईकिल चला रहा था, कुत्ते के अचानक दिखने से वह घबरा गया। कुत्ते को बचाने के प्रयास में, उसकी बाईक फिसल गई और वह गिरकर बुरी तरह घायल हो गया। उसके टाँके लगे और हल्का सा फ्रैक्चर भी हो गया। कितनी विचित्र बात थी कि वह एक कुत्ता था जिसने बिना भौंके या उस पर आक्रमण किये बग़ैर ही उसे बुरी तरह घायल कर दिया था।

वास्तव में यह बाबा ही थे जो उनको नहीं सह सकते थे जो उनकी मण्डली का विरोध करते थे या उन्हें परेशान करते थे।

बाबा ने इस सम्भव बनाया

मैं बहुत अधिक निराशा का अनुभव कर रहा था जब, लगभग छः माह के बाद, हमें रासायनिक कारखाने से सम्बन्धित अवैधता (गैर कानूनी) के विषय में सरकार से कोई भी सुबूत प्राप्त नहीं हो सके। सरकार के पास ये सभी दस्तावेज़ फाईलों में थे, लेकिन इन्हें हमें देने से उन्होंने इन्कार कर दिया था । यही वह स्थिति थी जब हम लोगों के लिये एक सुखद आश्चर्य के रूप में आ जब एक सबसे अधिक महत्वपूर्ण (निर्णायक) गवाह को बाबा ने हमारी चौखट पर भेज दिया।

ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ हो गई थी और मेहेराजाद सभी तीर्थयात्रियों लिये बन्द कर दिया गया था, यद्यपि मेहेराबाद में बाबा की समाधि दर्शन के लिये खुली हुई थी। कभी–कभी बाहर के नये बाबा–प्रेमी, जो मेहेराज़ाद के बन्द होने से अनभिज्ञ होते थे, यहाँ दर्शन के लिये आ जाते थें ऐसे बाबा–प्रेमियों को मण्डली हाल में बाबा की कुर्सी का दर्शन करने की अनुमति मण्डली द्वारा दी जाती थी जिसके पश्चात् उन्हें वहाँ से तुरन्त जाने के लिये कह दिया जाता था। तीर्थ यात्रियों के आने की सामान्य ऋतु के दौरान, तीर्थ यात्रियों को बाबा कार्य से जुड़े कई महत्वपूर्ण स्थानों पर, जैसे मण्डली हाल, ब्लू बस, बाबा के सोने का कमरा या मेहेराज़ाद में समय बिताने की अनुमति होती थी।

गर्मियों के महीनों का समय ऐसा होता था जिसमें हर जगह रख–रखाव का कार्य होता था। फिर भी, मण्डली को अपने लिये खाली समय मिल जाता था क्योंकि उन्हें तीर्थ यात्रियों के लिये वहाँ उपस्थित नहीं रहना पड़ता था। यह एक ऐसा समय है जब मण्डली बहुत अधिक तनाव मुक्त होती थी। एरच बहुधा खाली होने पर बाहर आ जाते थे और ब्लू बस के पास रखी हुई अपनी आराम कुर्सी पर बैठ जाते थें उनको वहाँ देखकर मैं सब काम छोड देता था

जो मैं कर रहा होता था और जाकर उनके पास बैठ जाता था। यदि गौहर खाली होती थीं, तो वह भी अपनी मोटर से चलने वाली कुर्सी को चलाते हुए एरच से बातचीत करने के लिये वहाँ पहुँच जाती थीं। मनु और मेहेरवान ऐसे अवसरों पर अधिकतर आसपास होते थे और इसी प्रकार अलोबा और बाल नातू भी वहाँ होते थे। कभी–कभी मनी, मेहरू, अरनवाज़ और केटी भी वहाँ होती थीं। यह अनौपचारिक सभा होती थी जिसमें समाचार और छोटी–छोटी सूचनाओं पर एक दूसरे से विचार विमर्श होता था जिसके उपरान्त हर कोई वहाँ से चला जाता था। डा० शैली हमेशा डा० गौहर के पास और दवाना एरच के पास होती थी। कभी–कभी केसी, फालू और वहाँ रहने या कार्य करने वाले दूसरे अन्तेवासी भी हमारे साथ शामिल हो जाते थे।

ऐसी ही एक अनौपचारिक सभा के दौरान, जो संयोगवश सुबह ही हुई थी, नौकरों ने आकर यह सूचना दी कि कुछ तीर्थ यात्री मिलने के लिये आये हैं। अधिकतर अलोबा ही गर्मियों के समय इन तीर्थयात्रियों का ध्यान रखते थे जो कि भूले भटके मेहेराज़ाद पहुँच जाते थे। वह मुलाकात के लिये आने वालों को (दर्शकों को) मण्डली हाल में ले गये। उन लोगों को बाबा की कुर्सी के सामने झुककर प्रणाम कर लेने के पश्चात्, अलोबा ने उनको बाबा की कुछ कहानियाँ सुनाई। जब वे हाल से बाहर आये, अलोबा ने उस ओर इशारा किया जहाँ तीर्थयात्रियों के पीने के लिये पानी से भरे हुए बर्तन गिलास सहित रखे हुए थे। उन्होंने (अलोबा ने) उनसे कहा, ''यदि आपको प्यास लगी हो तो पानी वहाँ पर है। पानी पीने के बाद आप यहाँ से चले जायँ और यहाँ वहाँ न घूमें।'' पानी के बर्तन बरामदे के छोर पर, एरच की आराम कुर्सी के बहुत पास रखे हैं। एक बार आने वाले दर्शकों ने पानी पीना समाप्त कर लिया, एरच उनकी ओर मुड़े और उनसे पूँछा कि वह कहाँ से आये थें एरच की यह आदत थी कि वे सभी नये तीर्थ यात्रियों से यह सब पूँछते थे और साथ ही यह भी पूँछते थे कि वे बाबा के सम्पर्क में कैसे आये।

दर्शनार्थियों ने, जो एक अधेड़ उम्र के दम्पत्ति थे, उत्तर दिया कि वे अहमदनगर से आये थे। जब एरच ने उनसे अगला प्रश्न यह किया कि बाबा विषय में उन्होंने कैसे जाना, उनके उत्तर ने हमे आश्चर्य चकित कर दिया। उन्होंने कहा कि इस क्षण तक बाबा के विषय में कुछ भी नहीं जानते थें । इससे एरच की उत्सुकता बढ़ गई और उन्होंने (एरच ने) उनसे पूँछा,''क्या चीज

आपको यहाँ पर लेकर आई है?'' उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, ''हम सड़क के पास रासायनिक कारखाने को देखने आये थे।''

उनका उत्तर सुनकर मेरी उत्सुकता बढ़ गई। मैं उनसे उस छोटी से छोटी सूचना को भी प्राप्त कर लेने के लिये उत्सुक था जो मैं प्राप्त कर सकता था। उन्होंने बतलाया कि वह एम०आइ०डी०सी० (MIDC) में रह रहे थे जो कि एक औद्योगिक क्षेत्र है जहाँ वह अपना रासायनिक कारखाना चला रहे थे। मेहेराज़ाद की सड़क के पास स्थित रासायनिक कारखाने का मालिक उनसे मिलने के लिये गया और उसने (मालिक ने) उस व्यक्ति से उसके रासायनिक कारखाने में पूँजी लगाने के लिये कहा था। दर्शनार्थी ने आगे बतलाया कि उन्होंने समाचार पत्रों में इसके विरुध्द बहुत से लेख पढ़े थे और इसीलिये उसने मालिक से इस बात पर ज़ोर दिया कि वे स्थल को देखना पसन्द करेंगे और स्थल का निरीक्षण करने के पश्चात ही निश्चय करेंगे कि उसमें पूँजी लगाना उचित हैं या नहीं। कारखाने के मालिक ने उनसे एक निश्चित समय पर मेहेराज़ाद की सड़क पर कारखाने के परिसर के समीप मुलाकात करने को कहा था। आधे घण्टे से भी अधिक समय तक वे उसकी प्रतीक्षा करते रहे। क्योंकि कारखाने का मालिक आता नहीं दिखलाई पड़ा और रासायनिक कारखाने से निकलने वाली गैसों की दुर्गन्ध से वे परेशान थे, उन्होंने मेहेराज़ाद आश्रम की ओर आने वाली सड़क पर चलने का निश्चय किया क्योंकि मेहेराज़ाद जाने वाली सड़क पर प्रवेश करते ही उन्होंने उसका बोर्ड पढ़ लिया था और इसलिये वे जानते थे कि वहाँ एक आश्रम था। इस तरह संयोगवश वे बाबा के स्थान पर थे।

जब मैंने उनसे पूँछा कि रासायनिक कारखाने के विषय में उनके क्या विचार थे उस व्यक्ति ने, जो एक उद्योगपति थे, कहा, ''वह एक भयावह स्थिति में है, और एक उद्योगपति के रूप में मैं आपको आश्वासन दे सकता हूँ कि वह कोई भी सुरक्षा साधन का प्रयोग नहीं कर रहे हैं न ही उस स्थान में प्रदूषण को नियन्त्रित करने के लिये उनके पास कोई साधन हैं | मैं भी ऐसी एक इकाई MIDC में चलाता हूँ जिससे बिल्कुल भी दुर्गन्ध नहीं निकलती।'' उसने आगे कहा, ''मैं नहीं समझ सकता कि सरकारने उसे कारखाना चलाने की अनुमति कैसे दे दी है। इससे न केवल स्वास्थ्य के लिये खतरा है, बल्कि ज़िन्दगी के लिये भी संकट है।'' उसने तब हम लोगों से पूछा, ''आप लोगों ने

विभिन्न सरकारी संस्थाओं में इस विषय में शिकायत क्यों नहीं की? उसे इस तरह की खतरनाक इकाई चलाने की अनुमति नही दी जानी चाहिए। जब उस व्यक्ति ने बोलना समाप्त किया, तब हमने उसे वह सब बतलाया जो कुछ हमने किया था और प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड और ज़िलाधिकारी कार्यालय की कारखाने के विरुद्ध कोई भी कार्यवाही करने की अनिच्छा के विषय में भी बतलाया क्योंकि कारखाने के मालिक के राजनैतिक सम्बन्ध थे।

उद्योगपति ने तब हमसे कहा, ''क्या तुमने कोई शिकायत कारखाने के इन्सपेक्टर के पास दर्ज करवाई है जो सभी औद्योगिक को प्रत्यक्षरूप से देखते हैं? उनके कानून दूसरी सरकारी संस्थाओं के नियमों से ज्यादा सख्त हें। पूरे महाराष्ट्र राज्य में सभी उद्योगों को उन सभी सुरक्षा नियमों का पालन करना होता है जो कि उनके द्वारा बनाये गये हें। मैं आप लोगों को विश्वास दिलाता हूँ कि बहुत से सुरक्षा नियमों का यहाँ उल्लंघन हो रहा है जिस कारण से यह उद्योग कारखाने के मालिक द्वारा ऐसे दूरवर्ती स्थान पर प्रारम्भ किया गया है।'' उस व्यक्ति ने मुझे कारखाने के इन्सपेक्टर कार्यालय का पता दिया और इन्चार्ज अधिकारी का नाम भी बतलाया जिससे मुझे सम्पर्क करना था।

हम सभी ने उसकी सलाह के लिये उस व्यक्ति को धन्यवाद दिया और वह वहाँ से अपनी पत्नी के साथ चला गया। उसके चले जाने के पश्चात्, मण्डली के सदस्यों सहित हम में से इस नई प्रगति पर अचम्भित थे। हम सब निश्चित रूप से जानते थे कि इस मीटिंग की व्यवस्था बाबा ने ही हमारे फायदे के लिये की थी। अरनवाज़ दादाचॉजी ठहाका लगाकर हस पडे और कहा, ''विडम्बना देखो। मालिक ने खुद ही, जिससे हम लड़ रहे हैं, इस उद्योगपति को आमन्त्रित किया, जो बुनियादी तौर पर हमारी चौखट पर आता है और मालिक के विरुद्ध हमारी लड़ाई में हमारा मार्गदर्शन करता है। केवल बाबा ही ऐसा कर सकते हैं केवल ईश्वर ही इस तरह से ऐसी व्यवस्था कर सकता है। मालिक स्वयं ही किसी को अपना अन्त करने के लिये हमारे पास भेजकर हमारी सहायता करता है। बाबा क्या खेल खेलते हैं।'' सच में बाबा की उपस्थिति उस दिन सभी के द्वारा महसूस की गई और इसने मुझे नई शक्ति के साथ लड़ने के लिये प्रोत्साहित किया।

अगले दिन मैं प्रार्थना पत्र लेकर कारखाना इंस्पेक्टर के कार्यालय में गया। जब मैंने प्रार्थनापत्र कारखान इंस्पेक्टर के समक्ष प्रस्तुत किया, उसने इसे पढ़ा और अविश्वासपूर्वक मुझे देखा। ''क्या आपको निश्चित रूप से पता है कि ऐसे

दूरवर्ती स्थान पर कोई रासायनिक कारखाना है?'' जब मैंने उसे बतलाया कि यह कई वर्षो से चल रहा है, वह और भी अधिक आश्चर्य में पड़ गया और उसने मुझसे कहा, ''कोई भी व्यक्ति, एक छोटा सा भी उद्योग हमारी अनुमति के बिना शुरू नहीं करता है। खतरनाक रसायन बनाने वाले रासायनिक उद्योग के विषय में, हमारी अनुमति लेने के पश्चात, उन्हें उस स्थान पर सभी सुरक्षा साधनों को लगवाना होता है और हमारे द्वारा वहाँ का निरीक्षण करलेने और सुरक्षा साधनों से पूर्णतया संतुष्ट हो जाने के उपरान्त ही, हम उन्हें उत्पादन की अनुमति देते हैं। इस व्यक्ति ने हम से सम्पर्क करने का भी कष्ट नहीं किया और वह ठीक हमारी नाक के नीचे कारखाना चला रहा है। मैं इस पर विश्वास नहीं कर सकता। मुझे तुरन्त ही अचानक वहाँ का निरीक्षण करना है। वह ऐसे दूरवर्ती स्थान पर कारखाना चला रहा है, पता लगने से बचने का अर्थात् अज्ञात रहने का प्रयत्न कर रहा है, ये ऐसे तथ्य हैं जिनका अर्थ है कि वह सुरक्षा साधनों का उल्लंघन कर रहा है।

कारखाना इन्सपेक्टर ने तब मुझे एक सप्ताह बाद आने के लिये कहा और साथ ही यह भी कहा कि वह इस मामले की जाँच–पड़ताल करके अपनी रिपोर्ट देगा और मुझे भी उसकी एक प्रति देगा। जब उससे एक सप्ताह बाद मिला और उससे उसके द्वारा किये जाने वाले निरीक्षण के विषय में पूँछा, तो उसने इधर–उधर सिर हिलाया और कहा, ''तुम इस पर विश्वास नहीं करोगे। एक भी सुरक्षा नियम का अनुपालन नहीं किया गया है और न ही उन्हें लगाया गया है। महाराष्ट्र के इतिहास में ऐसा पहली बार है कि किसी उद्योग पर हमारे कार्यालय द्वारा तेरह नियमों का उल्लंघन करने का आरोप लगाया जायेगा।'' उसने मुझे बतलाया कि ज़िला अदालत में उद्योग के विरुद्ध केस दर्ज करवाने के लिये वह सुबूत तैयार कर रहा है। अपने सीनियर अधिकारियों की अनुमति मिलने के पश्चात, वह उद्योग पर मुकदमा चलायेगा और इसमें अधिक से अधिक दो या तीन सप्ताह लगेंगे। जब मैंने उससे उसके मुम्बई के उच्च अधिकारी का पता देने की प्रार्थना की, तो उसने स्वेच्छा से उनका पता देकर मुझ पर यह एहसान कर दिया।

उसके उच्च अधिकारी, जो डायरेक्टर थे, एक बहुत ही सज्जन व्यक्ति थे और उस समय तक जब मैं उनसे मिला, उसके पहले ही वह रासायनिक कारखाने और मेहेराज़ाद का निरीक्षण कर चुके थे। उन्होंने मुझे सहयोग करने

का आश्वासन दिया और हमसे प्रार्थना की कि कुछ समय के लिये हम इस सूचना को सार्वजनिक न करें क्योंकि इससे कारखाने का मालिक का ध्यान इस ओर आकर्षित हो जायेगा। मालिक अपने राजनैतिक सम्बन्धों का प्रयोग करके कारखाना निरीक्षण कार्यालय पर राजनैतिक दबाव भी डलवा सकता था कि उसके विरुद्ध कोई भी कार्यवाही न की जाय। डायरेक्टर ने फिर मुझसे कहा, ''एक बार मामला अदालत में पहुँच जाय, तो राजनीतिज्ञ भी हमारा कुछ नहीं कर सकते। इसका निर्णय करना अदालत पर होगा और राजनीतिज्ञ अदालत पर दबाव डालने का प्रयास करने का साहस नहीं करेंगे।

चार सप्ताह की अवधि के पश्चात्, जब मैं कारखाने के इन्सपेक्टर के पास पुनः पहुँचा तब उसके चेहरे पर मुस्कुराहट थी और उसने मुझसे कहा, ''हमने अदालत में मुकदमा दर्ज कर दिया है। जब सरकारी मशीनरी कार्यवाही शुरू करेगी, उसकी गति धीमी हो सकती है लेकिन तुम यह निश्चित रूप से जान लो कि मालिक को इसके लिये दण्ड भुगतान पड़ेगा।'' उसने तब मुझे अदालत में फौजदारी के मुकदमों की नकल प्राप्त करने की प्रक्रिया के सम्बन्ध में भी निर्देशित किया। मेहेरनाथ की सहायता से, जो एडवोकेट हैं, मैंने मालिक के विरुद्ध लगाये गये फौजदारी के तेरह मुकदमों की नकल प्राप्त करने की व्यवस्था कर ली।

जब मैंने इन सभी दस्तावेज़ों के विषय में मण्डली के सभी सदस्यों को बतलाया, सभी अत्यधिक प्रसन्न हुए। इन दस्तावेज़ों को जब हमने अपने अधिवक्ता (एडवोकेट) को दिया, उसने उन्हें देखा और कहा, ''इसके द्वारा उसका हम अन्त कर सकते हैं उसके गॉड–फादर (राजनैतिक नेता) भी उसे नहीं बचा सकते। उसके राजनैतिक मालिक भी उसे खाई में ढकेल देंगे।'' उसने आगे कहा, ''यह सच में ईश्वर द्वारा भेजा गया था और हमें उसकी आवश्यकता थी,'' अधिवक्ता को अपने कहे शब्दों के महत्व का थोड़ा सा ही अनुभव था। हम सभी ने देखा और अनुभव किया था कि ईश्वर ने किस प्रकार इसकी व्यवस्था की थी। किस प्रकार इसको बाबा ने सम्भव किया था।

प्रेम और आग

आध्यात्मिक प्रशिक्षण का हिस्सा होने के कारण, मण्डली हमें तंग करती थी जो कि एक पूर्णतया परेशान करने वाला अनुभव था। इतना ही नहीं, जब कोई अन्तेवासी जीवन में उतार चढ़ाव का सामना कर रहा होता था, वह

प्रेम करने वाले माता–पिता के समान उस पर अपने अत्यधिक प्रेम की बौछार करते थे जैसे कि माता–पिता अपने उस बच्चे पर करते हें जो खो जाने का अनुभव कर रहा हो और परेशान हो। उन क्षणों में मण्डली उसके साथ बहुत प्रेमपूर्वक व्यवहार करती थी और किसी भी हद तक उसका साथ देती थी, उसी प्रेम और चिन्ता के साथ कई सप्ताह तक उसकी जाँच पड़ताल करते थे, उसे संभालते थे जब तक वह सामान्य नहीं हो जाता था, उसके बाद उसे पुनः रगड़ने (तंग करने) लगते थे। मुझे ऐसे ही एक अवसर की याद है जब मैं एक घटना पर एरच और बाद में भाऊजी के सामने बिफर गया था क्योंकि उस घटना से मुझे बहुत अधिक परेशानी हुई थी। जिस तरह उनहोंने मुझे संभाला और मुझे बुरा–भला कहने के बजाय मुझपर प्रेम की बौछार की, उसने मेरे हृदय को प्रभावित किया और उसे हमेशा के लिये जीत लिया। घटना आगे दि गई है।

रासायनिक कारखाने की लड़ाई के दौरान, में बहुत अधिक परेशान था। मालिक न केवल राजनीति से जुड़ा था बल्कि अहमदनगर का एक प्रतिष्ठित स्थानीय व्यक्ति भी था। इसी कारण सरकारी कार्यालय किसी भी प्रकार की कार्यवाही करने के लिये अनिच्छुक थे, यद्यपि कारखाना गैरकानूनी था। वास्तव में, राजनैतिक दबाव के कारण, वे उसके अवैधानिक ढाँचे को नियमित करने में सहायता कर रहे थे। इसके साथ ही स्थानीय समाचार पत्रों ने उसके विरुद्ध कोई भी लेख छापने से इन्कार कर दिया था। वास्तव में वे ट्रस्ट के विरुद्ध कारखाने के मालिक द्वारा दी गई गलत सूचनाओं के आधार पर लेख छापते थे। जैसे यह परेशानी काफी नही थी, मेरे लिये मण्डली और कुछ अन्तेवासियों, द्वारा बहुधा बाधा उत्पन्न की जाती थीं। मैंने पर्यावरण संगठनों की सहायता से जो हमारा मार्गदर्शन कर रहे थे, मुम्बई के कुछ समाचार पत्रों से सम्पर्क करने का प्रयास किया। दि टाइम्स आफ़ इण्डिया, जो एक प्रमुख समाचार पत्र है, मालिक के राजनैतिक सम्पर्कों और कार्यवाही करने के प्रति सरकारी शिथिलता का पर्दाफाश करने के लिये कहानी लिखने को सहमत हो गये थे। फिर भी, स्थिती को प्रमाणित करने और कारखानों के स्थल के फोटोग्राफ लेने के लिये उन्हें अपने संवाददाता को वहाँ भेजना था।

उस समय, नगर में ट्रस्ट और उसकी गतिविधियों के विरुद्ध पूर्णतया विरोधी वातावरण था। स्थानीय लोगों के मध्य यह एक मिथ्या धारणा थी कि ट्रस्ट उन सबके लिये नहीं खुला था, बल्कि ट्रस्ट केवल बाबा प्रेमियों के लिये

और वह भी अधिकतर पाश्चात्य लोगों के लिये था। उन दिनों पाश्चात्य प्रेमी पूरे वर्ष भारतीयों की तुलना में एक बड़ी संख्या में वहाँ दिखलाई पड़ते थे और वे बहुधा शहर में सामान खरीदते भी देखे जा सकते थे। शायद यही कारण था जिससे स्थानीय लोगों के मध्य फैली इस मिथ्या धारणा को प्रोत्साहन मिला था और रासायनिक कारखाने के मालिक द्वारा इस परिस्थिति को और अधिक बिगाड़ने के लिये किया जा रहा प्रचार इसे और संगीन बना रहा था।

वह यह धारणा करने का प्रयास कर रहा था कि ट्रस्ट का नियन्त्रण पाश्चात्य लोगों के हाथों में था और वे इसमें अपनी पूँजी लगा रहे थे जिस कारण हम लोग (ट्रस्ट के लोग) स्थानीय भारतीय लोगों को भूमि पर आधिपत्य करने के लिये उन्हें वहाँ से दूर कर रहे थे। ऐसी जातिगत टिप्पणियों द्वारा वह स्थानीय लोगों में आक्रोश उत्पन्न कर रहा था। मैं बहुत अधिक मानसिक दबाव में था क्योंकि जिस तरह से चीज़ें बढ़ रही थी, उसके लिये मैं जिम्मेदारी अनुभव करता था। यह हमारे लिये हितकर नहीं था।

उस समय हम पूर्णतया शक्तिशाली विरोधियों से घिरे हुए थे और मुझे भय था कि परिस्थिति नियन्त्रण से बाहर हो सकती थी और शहर में कुछ बाबा प्रेमियों पर आक्रमण भी हो सकता था। मैं मुम्बई में भिन्न–भिन्न सरकारी कार्यालयों में जा रहा था और मैंने एक समाचार पत्र के संवाददाता को नगर आकर हमारे पक्ष की कहानी को बतलाने के लिये व्यवस्था भी कर ली थी। मुझे इससे बहुत सान्त्वना मिली कि वह एक निश्चित दिन पर आने को सहमत हो गई थी। इसलिये मैंने निर्धारित दिन से एक दिन पूर्व इस इरादे से नगर जाने का निश्चय किया मैं उसके मेहेर पिल्ग्रिम सेण्टर (MPC) में ठहरने की व्यवस्था कर सकूँ, जिससे उसे हमारी गतिविधियाँ कुछ समझ में आ सकें। मेरा विचार था कि संवाददाता के परिसर में रहने से उसे ट्रस्ट की एकरूपता का प्रारम्भिक अनुभव हो जायेगा–इसके साथ ही साथ इसकी व्यापक प्रकृति का अनुभव भी हो जायेगा जो सभी जाति, पंथ, धर्म और राष्ट्रीयता के लोगों को बिना किसी भेदभाव या रुकावट के स्वीकार करती थी। केवल ''ईश्वर के प्रति प्रेम'' का महत्व था। इससे कारखाने के मालिक द्वारा स्थानीय लोगों के मध्य जातिगत घृणा को उत्पन्न करने के प्रयास के फलस्वरूप उन लोगों के बीच फैली मिथ्या धारणा को भी दूर करने में सहायता मिलेगी।

मैंने मेहेराज़ाद फोन किया और मामले की प्रगति के विषय में सूचना दी जो कि एक अच्छी खबर थी। यह वर्ष का कम भीड़ वाला समय था और MPC में

संवाददाता को ठहराने की व्यवस्था की जाय। मुझे याद नहीं है कि फोन पर किसने बात की थी, लेकिन आधे घण्टे बाद मुझे मेहेराज़ाद के अन्तेवासियों में से एक अन्तेवासी की फोन काल प्राप्त हुई और मुझे बतलाया गया कि यह निश्चय किया गया है कि संवाददाता को MPC में ठहराने की अनुमति नहीं दी जायेगी क्योंकि वह बाबा प्रेमी नहीं थी। MPC की सुविधायें केवल बाबा प्रेमियों के लिये थीं।

मेरे मन में कुछ टूट गया जब मैंने यह सुना। ऐसा लगा जैसे किसी ने गलत बटन दबा दिया था और मेरे अन्दर एक बिस्फोट हो गया था। मेरे अन्दर जो आक्रोश था उसे निकलने का मार्ग मिल गया था और यह मेरी आवाज़ में प्रतिध्वनित हो रहा था जब मैंने अन्तेवासी से प्रश्न किया, ''और कौन यह निर्णय करता है कि कौन बाबा प्रेमी है ? क्या हमने पहले से ही अपनी गतिविधियों के चारों ओर एक धर्म उत्पन्न कर दिया है जहाँ हम बाबा प्रेमी और गैर बाबा प्रेमियों के बीच भेद करते हैं ? क्या हमने पहले ही बाबा की मानवजाति के बन्धुत्व की सीख को भुला दिया है और एक पारम्परिक धर्म पैदा कर लिया है जो लोगों के बीच, जो धर्म के अन्दर है और जो बाहर हैं अन्तर करता है? मैं हमेशा से ही धर्म से घृणा करता हूँ । क्योंकि वो दुनिया में भेदभाव उत्पन्न करता है और अब ऐसा लगता है कि हमारी गतिविधियों में भी भेदभाव और बाधाएँ हैं, मैं समझ सकता हूँ कि स्थानीय लोग क्यों ट्रस्ट के विरुद्ध जातीयता का आरोप लगाते हैं।''

''मैंने दूसरे व्यक्ति को कुछ भी कहने का अवसर नहीं दिया। मैंने फोन रख दिया क्योंकि मुझे नगर के लिये बस पकड़नी थी और मैं जानता था कि ट्रस्ट कम्पाउण्ड में पहुँचने मैं एक तूफ़ान खड़ा करने वाला था। मैं अन्दर से बहुत बुरी तरह घायल था, शंकाओं से घिरा भुलावे में होने का अनुभव कर रहा था, विश्वासघात होने का अनुभव कर रहा था और मैं बहुत अधिक क्रोध में था। यदि मुझे उस विषय में उत्तर नहीं मिलता था जो मैं चाहता था तब मैं उपद्रव करता और इस समय मैं पीछे हटने वाला नहीं था। मुझे मेरी सीमाओं से परे धकेल दिया गया था। मैंने अपने सिर में रक्त के दबाव का अनुभव किया जब मैं अहमदनगर की ओर चला। मेंने अपने क्रोध पर पूरा नियन्त्रण खो दिया था और ऐसी स्थिति में, मैं अपने क्रियाकलापों के परिणाम के विषय में कोई भी विचार नहीं करता था। वास्तव में, मेरा क्रियाकलापों पर कोई नियन्त्रण नहीं था, मेरी आक्रामक प्रवृत्ति का मेरे ऊपर पूरा नियन्त्रण था।

जैसे ही मैं ट्रस्ट ऑफ़िस पहुँचा, मैं सीधे एरच के पास गया। क्योंकि मैं जल्दी पहुँच गया था, एरच अभी तक आफ़िस में ही थे और मेहेराज़ाद नहीं गये थे। वे उस तूफ़ान के विषय में निश्चित रूप से समझ गये होंगे जो मेरे ह्रदय में उठ रहा था, क्योंकि वह बहुत सज्जनतापूर्वक और प्रेम से मुझसे मिले। जो कुछ हुआ था वह सब मैं बिना सोचे समझे कहता चला गया। मेरी आवाज स्वाभाविक रूप से तेज है और जब मैं उत्तेजित हो जाता हूँ तो यह और भी तेज हो जाती है और दूसरों को ऐसा लगता है कि मैं चिल्ला रहा हूँ। इसलिये आफिस के कर्मचारियों ने सोचा कि मैं एरच पर चिल्ला रहा था जबकि मैं चिल्ला नहीं रहा था बल्कि अपना ह्रदय टूटने की कहानी केवल उनको सुना रहा था। एरच ने, अन्त में, नम्रतापूर्वक और बड़े प्रेम से मुझसे कहा, ''लेकिन मुझे इसकी कोई जानकारी नहीं है। मैं अभी—अभी तुमसे यह सुन रहा हूँ। जब मैं मेहेराज़ाद जाऊँगा, तब मैं इस परिस्थिति के विषय में पूँछताँछ करूँगा और जानकारी प्राप्त करूँगा।''

एरच की नीति लगभग किसी भी मामले में सम्मिलित न होने की थी। उनके उत्तर से उनका व्यवहार मेरी समझ में आ गया था। मैं इससे संतुष्ट नहीं था। मैं चाहता था कि कुछ कार्यवाही हो, मण्डली से थोड़ा आश्वासन चाहता था कि संवाददाता को, जो रासायनिक कारखाने की लड़ाई में हमारी सहायत करने के लिये सहमत हो गई थी, MPC में ठहराया जायेगा और उसके साथ बाहरी व्यक्ति जैसा व्यवहार नहीं किया जायेगा। जब एरच से ऐसा कोई आश्वासन नहीं मिला और बार—बार यही कहते रहे कि उनको इसकी कोई जानकारी नहीं थी और वह इस विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे, मैंने अत्यधिक क्रोध का अनुभव किया और जिस पीड़ा का अनुभव मैं अपने ह्रदय में कर रहा था, वह और बढ़ गई थी। अब मैं क्रोधित था।

मैं जानता था कि एरच को परिस्थिति के बारे में पूरी जानकारी होती थी और फिर भी, यदि वहाँ का कोई अन्तेवासी उस बारे में पूँछता था, तो वह उसकी जानकारी होने से इन्कार कर देते थे और उससे उस विषय में विस्तारपूर्वक बतलाने को कहते थे। यह भी उनका किसी भी मामले में लिप्त न होने का एक तरीका था क्योंकि वह अन्तेवासी आखिरकार दूसरे मण्डली जन के पास चला जाता था। एरच मेरे साथ वैसा ही कर रहे थे या नहीं, मेरे लिये यह कहना कठिन था, लेकिन उस समय मैंने अनुभव किया कि वह ऐसा ही कर रहे थे। इसको अनुभव करके मैंने उनसे अनायास ही बिफरकर कहा, ''मुझे आप

पर विश्वास नहीं है। आप लिप्त होने से बचने के लिये हमेशा ऐसा ही कहते हैं। मुझे यह बेहतर जान लेना चाहिये था कि मैं आपके साथ अपना समय बर्बाद कर रहा था।''

मैं गुस्से में उठा और, अपने घायल हृदय के साथ, वहाँ से चला गया। एरच मुझे पुकार रहे थे, लेकिन मैंने उसको अनसुना कर दिया और सीधे अपने कमरे में चला गया। दवाना मेरे पीछे भागकर यह बतलाने के लिये आई कि एरच मुझे बुला रहे थे। मैंने उससे कहा, ''मैं चाहता हूँ कि मुझे अकेला छोड़ दिया जाय और किसी से भी मिलने या बात करने की मेरी इच्छा नहीं है।'' अपने अशान्त मन और हृदय की पीड़ा को शान्त करने का प्रयास करते हुए मै बिस्तर पर लेट गया। क्रोध के ये भावनात्मक विस्फोट बहुधा मुझे बर्बाद कर देते थें इसके बाद मैं बहुत भयावह स्थिति का अनुभव करता था। मेरा पूरा शरीर काँपने लगता था और मेरे हृदय की पीड़ा कई गुना बढ़ जाती थी और इसके कारण मैं रोने लगता था।

जब मैं थोड़ा संभल गया, आफिस के कर्मचारियों में से एक कर्मचारी ने यह सूचना देने के लिये मेरा दरवाजा खटखटाया कि भाऊजी मुझसे मिलना चाहते थें क्योंकि मैं अकेले रहना चाहता था, मेंने उस व्यक्ति से कहा, ''भाऊजी को बतला देना कि मैं अच्छा अनुभव नहीं कर रहा हूँ। जब मैं बेहतर अनुभव करूँगा मैं आकर उनसे मिलूँगा।'' मैं अगले दस या पन्द्रह मिनट तक बिस्तर पर लेटा रहा और फिर निश्चय किया कि इस असह्य वेदना को दूसरे दिन के लिये स्थगित करने की अपेक्षा बेहतर होगा कि मैं इस समस्या को निपटा दूँ। इसलिये मैं भाऊजी के कमरे की ओर चल दिया। कमरे में प्रवेश करने पर, भाऊजी ने मेरे स्वास्थ्य के विषय में पूँछताँछ की, एक ऐसी चीज़ जो वह बहुत कम करते थे। वह भी बहुत विनम्रता और प्रेम से मिले। यह एक ऐसा पहलू था जो कम से कम उन दिनों सहायकों को बहुत कम देखने या अनुभव करने को मिलता था। उन्होंने मेरी मुम्बई यात्रा और वहाँ क्या हुआ था, के विषय में पूँछताँछ की।

जब मैं बीते हुए समय की कोई घटना बतलाता हूँ। मैं केवल उसे याद नहीं करता हूँ बल्कि उसमें पुनः जीता हूँ। मैं फिर से उन परिस्थितियों से जुड़ी हुई सभी पीड़ा और खुशियों का पूरी तरह अनुभव करता हूँ। इसलिये जब मैं यह घटना भाऊजी को दूसरी बार बतला रहा था, मैं निराशा, क्रोध भावनात्मक

विस्फोट और उस कटु अनुभव को फिर जी रहा था जिसको मैंने झेला था। उस क्षण मैं यह पहचानने में असफल रहा कि स्वयं बाबा ही मुझे इन परिस्थितियों में रखकर मेरे अन्दर एकत्रित कचरे को साफ करने के लिये सतह पर ला रहे थे।

इसलिये अपने विवरण और भावनाओं में जकड़े होने के कारण, अन्त में, वही प्रश्न मैंने भाऊजी के सामने रखा जो मैंने फोन पर उस अन्तेवासी से और एरच से भी पूँछा था। मैंने उनसे पूँछा, ''कृपया सही–सही बतलाईये कि कौन बाबा प्रेमी है और कौन नहीं? यह भी बतलाईये कि हमारी इकाई में इसका निश्चय कौन करता है?'' मैं अभी भी गुस्से में था।

भाऊजी ने बहुत विनम्रतापूर्वक मुझसे कहा, ''मैं यह सब तुम्हारे लिये कुछ ही मिनटों में स्पष्ट कर दूँगा। बैठ जाओ।'' उन्होंने फोन उठाया और वहाँ रहने वाली उस महिला अन्तेवासी को बुलाया जो MPC में बुकिंग करने की इन्चार्ज थी। उस अन्तेवासी को परिस्थिति समझाते हुए, उन्होंने MPC में ठहरने की उपलब्धता के विषय में पूँछताँछ की। उस इन्चार्ज महिला ने बतलाया कि वहाँ रहने के लिये बहुत जगह उपलब्ध थी और वह सहायता करने के लिए सहमत हो गई। उसने पूरी परिस्थिति को जानकर आश्चर्य भी व्यक्त किया और उसे आश्चर्य हो रहा था कि ऐसा क्यों हुआ। जब यह सब हो गया, भाऊजी मेरी ओर मुड़े ओर बोले, ''क्या तुम अब खुश हो?'' मैंने उत्तर दिया, ''हाँ, इससे अभी के लिये परिस्थिति सुलझ गई है।'' उन्होंने तब मुझसे कहा, ''क्या और भी कुछ ऐसा हा '' जो तुम मुझसे चाहते हो ?''

जैसे ही मैं जाने के लिये उठा, भाऊजी खड़े हो गये और उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया। मैं उनके पास यह आश्चर्य करते हुए पहुँचा कि क्या होने वाला था। भाऊजी ने अपने हाथ फैलाये और मुझे बाबा का आलिंगन दिया। कम से कम उन दिनों में भाऊजी का इस तरह व्यवहार करना एक दुर्लभ चीज़ थी, क्योंकि वह कठिनाई से ही सहायकों को आलिंगन करते थे। कम से कम मैं नहीं जानता था कि इन वर्षों में जब मैंने उनके साथ कार्य किया था, उन्होंने बाबा के जन्मदिन के अवसर पर या दूसरे विशेष अवसर पर जैसे मेरा स्वयं के जन्मदिन के अतिरिक्त कभी मेरा आलिंगन किया था। जब वह मुझे आलिंगन दे रहे थे, उन्होंने कहा, ''वह (बाबा) तुम्हारे हृदय को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटते हैं और यह उनकी अधिकतम दयालुता है। इसे मत भूलना।'' मेरी आँखों में आँसू आ गये उन्होंने यह कहा और मैं अपने कमरे की ओर चल दिया। मण्डली ऐसी

ही थी, शेर की तरह क्रुद्ध और मेमने की तरह विनम्र मेहेर बाबा का असली प्रतिबिम्ब। विनम्रता, प्रेम और आग का वैसा ही सम्मिश्रण–जैसा कि हर कोई बाबा में देखता है– मैंने मण्डली में अनुभव किया था।

बाबा का छूपा हुआ हाथ

लोगों ने बहुधा मुझसे कुछ उन घटनाओं को बतलाने के लिये कहा है जिसमें मण्डली का कोई नकारात्मक कार्य बाद के दिनों में सहायक बन गया। कई घटनाओं में से यह एक ऐसी ही घटना हैं जिसका अनुभव मैंने किया था।

रासायनिक कारखाने की लड़ाई के समय, क्योंकि उसका मालिक राजनीति से जुड़ा हुआ था, सरकारी पदाधिकारी उसके खिलाफ़ कोई भी कार्यवाही नहीं करना चाहते थें हम लोगों को वकीलों द्वारा यह सलाह दी गई कि सरकार पर दबाव डालने के लिये हमें पत्र लिखने का अभियान शुरू कर देना चाहिये। राजनीतिज्ञों पर भी दबाव पड़ेगा कि वे इस अवैधानिक और प्रदूषण फैलाने वाले रासायनिक कारखाने के मालिक का साथ देना बन्द कर दें। हमने पूरी दुनिया के बाबा प्रेमियों को इस प्रार्थना के साथ गश्ती पत्र (Circulars) भेजे कि वे विभिन्न सरकारी विभागों को, जिनकी सूची हमने दी थी, यह विवरण देते हुए पत्र लिखें कि ऐसे पवित्र स्थान के पास एक रासायनिक कारखाना किस प्रकार परेशानी का कारण बना हुआ था।

जब पत्र लिख गया और भाऊजी को दिखलाया गया, तो उन्होंने उस पत्र में एक और बिन्दु का समावेश करने का निश्चय किया। यह मालिक को आर्थिक रूप से मुआवजा देने के सम्बन्ध में था यदि वह इस कारखाने को यहाँ से हटाकर दूसरे किसी स्थान पर लगाने और इस भूमि को बेचने के लिये सहमत हो जाता था। भाऊजी अनुभव कर रहे थे कि यदि ऐसा कोइ अवसर आता है, तब हमें समझौता कर लेना चाहिये। उस स्थिति में हमें बाबा–प्रेमियों से पूँजी की आवश्यकता होगी और इसलिये वह चाहते थे कि इस बिन्दु को पत्र में सम्मिलित कर लिया जाय। भाऊजी नहीं चाहते थे कि ट्रस्ट किसी भी स्तर पर इस लड़ाई में शामिल हो। जहाँ तक ट्रस्ट की पूँजी का सम्बन्ध था, वे केवल उन्हीं विशिष्ट उद्देश्यों में लगाई जा सकती थी जिसका उल्लेख दस्तावेजों में किया गया था।

रासायनिक कारखाने की लड़ाई एक व्यक्तिगत लड़ाई थी, यद्यपि मण्डली

भी इसमें सम्मिलित थी। कारखाने के मालिक और शेष सरकारी इकाइयों के विरुद्ध मेहेर फ्री डिस्पेन्सरी की डा० गौहर मुख्य वादी थीं, पर्यावरण संगठन वादी नं० २ और मैं वादी नं० ३ था। क्योंकि वह लड़ाई एक व्यक्तिगत लड़ाई थी, इसलिए यह निश्चय किया गया कि समझौते के विषय में भी व्यक्तिगत स्तर पर वार्तालाप किया जाना चाहिये। स्थानीय बाबा प्रेमी सहायता करने के लिये सहमत हो गये थे।

अभी तक भाऊजी का यह निर्णय विवादास्पद था और उस समय हममें से अधिकतर लोग यह कर रहे थे कि एक बहुत बड़ी ग़ल्ती थी, लेकिन हम इस विषय पर भाऊजी से बात नहीं कर सकते थे। इस जगह यह आवश्यक है कि पाठकों को वैधानिक पहलू के बारे में बतलाया जाय। हमने जनता के हित में यह मुकदमा किया था क्योंकि स्थानीय निवासियों के लिये इससे जान माल का खतरा था। साधारणतया, अदालत पर बचे हुए काम का बोझ होता है और एक सामान्य दीवानी वाद में उच्चतम न्यायालय में सुनवाई के लिये दस वर्ष तक लग सकते है। दूसरी ओर जनता के हित में जो मुकदमें होते हैं, उन्हें प्राथमिकता दी जाती है और तुरन्त सुना जाता है क्योंकि नागरिकों की ज़िन्दगी दाँव पर लगी होती है।

फिर भी, न्यायाधीशों के समक्ष किसी को भी यह प्रमाणित करना पड़ता है कि समस्या को सुलझाने के लिये कानून के अन्तर्गत सभी उपाय असफल हो गये हैं, इसी कारण से हम लोग मालिक के साथ–साथ सरकारी इकाइयों को भी अदालत में घसीटने के लिये बाध्य हुए हैं। इसी कारण से हमारे अधिवक्ताओं ने हमें सख्ती से चेतावनी दी थी कि हम समझौते के इस दृष्टिकोण को न अपनायें, क्योंकि रासायनिक कारखाने का मालिक इसे हमारे विरुद्ध प्रयोग कर सकता था और न्यायाधीशों को सन्तुष्ट कर सकता था कि अदालत के बाहर समझौता (मुआवजा) होना अभी तक सम्भव था और तब मुकदमा खारिज हो जाता। क्योंकि यदि दूसरे हल उपलब्ध थे, न्यायाधीश स्वाभाविकरूप से वादियों से कहते थे कि पहले समाधान के उन उपायों को अपनायें और अदालत को पहले से ही रुके हुए मुकदमों की संख्या को बढ़ाकर परेशान न करें।

इसलिये, यद्यपि भाऊजी यह प्रस्ताव नहीं रख रहे थे कि ट्रस्ट से मालिक को मुआवजा दिया जाय, फिर भी एक सार्वजनिक पत्र में मुआवजे का ज़िक्र

करके मुक़दमें को खारिज़ करवाने का दरवाजा खोलते हुए प्रतीत होते थे। वास्तव में, एक बार अदालत में मुकदमा पहुँचने के बाद, कारखाने के मालिक और उसके कुछ डायरेक्टर्स ने अनौपचारिक रूप से समझौते से समाधान हेतु हमसे सम्पर्क किया था (असली वादी इस वार्तालाप में शामिल नहीं होते थे क्योंकि इससे तुरन्त ही मुकदमा खतरे में पड़ा जाता)। लेकिन हर बार यह लगता था कि एक मैत्रीपूर्ण हल निकलने वाला था, और क्योंकि बाहर की पार्टियाँ उसे मुआवजा दे सकती थीं यदि वह कारखाना वहाँ से हटा लेता, तो मालिक अपने शब्दों से मुकर जाता था और समाचार पत्रों में हमारे विरुद्ध लेख छपवाना प्रारम्भ कर देता था। स्पष्ट रूप से, हमारी अदालत की लड़ाई को पटरी से उतारने के इरादे से उसकी तरफ से किया गया यह एक छल भरे प्रयत्न के समान दिख रहा था। क्योंकि बाबा प्रेमी समुदाय की ओर से भाऊजी के द्वारा भेजे गये गश्तीपत्र के जवाब में पत्र पूरी दुनियां से आने प्रारम्भ हो गये थे, सरकार सचेत हो गई थी ओर एक अधिसूचना सरकार द्वारा जारी की गई थी कि मेहेराबाद और मेहेराज़ाद जैसे पवित्र स्थल के पास पड़ोस में किसी भी नये उद्योग को प्रारम्भ करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिये। फिर भी, इस कारखाने के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की गई।

जब हम उच्च न्यायालय मुकदमा हार गये, तो मालिक ने समझौते के लिये सभी बातचीत बन्द कर दी क्योंकि उसे विश्वास था कि वह उच्चतम न्यायालय में भी मुकदमा जीत जायगा। जब उच्चतम न्यायालय में मुकदमा शुरू हो गया, तब न्यायाधीशों ने याचिका को पढ़ने के बाद मालिक से पूँछा कि कारखाना शुरू करने के पहले क्या उसने उचित तरीके से अनुमति ली थी। मालिक के अधिवक्ता ने उत्तर दिया कि ऐसा नहीं किया गया था परन्तु कारखाने को नियमित करने का प्रार्थनापत्र प्रक्रिया में था। न्यायाधीशों ने मालिक से दूसरा प्रश्न किया कि क्या उस क्षेत्र में क्लोरीन गैस का रिसाव होता था। मालिक के अधिवक्ता ने इसे स्वीकार किया कि क्लोरीन गैस का रिसाव होता था। जब न्यायाधीशों ने अवैधानिकता और प्रदूषण के साक्ष्यों और सरकारी कारखाने के निरीक्षण कार्यालय द्वारा पेश किये गये तेरह औद्योगिक नियमों के उल्लंघन के तथ्यों की ओर संकेत करना प्रारम्भ किया, तब मालिक का वकील चिन्तित दिखलाई पड़ा।

अवैधानिकता और प्रदूषण के लाभ के दृष्टिकोण से मुकदमें में बहस करने

से बचने के लिये, मालिक के वकील ने न्यायाधीशों को बतलाया कि वे कारखाने को वहाँ से दूसरी जगह हटाने के लिये तैयार था और ट्रस्ट उनको मुआवजा देने के लिये सहमत हो गया था। उन्होंने हमारे गश्तीपत्र की नकल भी प्रस्तुत की और मुआवजे के विषय में भाऊजी द्वारा शामिल की गई उस पंक्ति की ओर संकेत किया। इस प्रकार, ऐसा लग रहा था जैसे कि अदालत का अपने पक्ष में प्रश्न पूँछना और हमारे पक्ष में एक सशक्त की सम्भावना के बावजूद मुकदमा अब खारिज हो जायगा। हमारे अधिवक्ता, यह समझते हुए, घटनाओं के इस मोड़ से निराश हो गये थे।

हमें आश्चर्य था और हम यह समझ नहीं पा रहे थे कि कारखाने के मालिक को हमारे गश्तीपत्र की नक़ल कैसे प्राप्त हो गई थी क्योंकि वह केवल बाबा प्रेमियों को भेजी गई थी। लेकिन तभी हमें नागपुर के एक बाबा प्रेमी से जानकारी मिली जिसने हमें लिखा था कि उसने अहमदनगर के जिलाधिकारी से कारखाने के विरुद्ध कार्यवाही करने की प्रार्थना करते हुए अपने पत्र के साथ गश्तीपत्र भी भेजा था। हमने गश्तीपत्र उदाहरण के तौर पर बाबा प्रेमियों को भेजा था कि वे अपने पत्र में क्या लिख सकते थे, बल्कि हमने यह भी स्पष्ट कर दिया था कि वे अपने शब्दों में इसका सार अपने पत्र में लिखें। अब इस अच्छे आशय के, लेकिन एक बाबा प्रेमी द्वारा किये गये इस मूर्खतापूर्ण कार्य ने हमारे लिये एक भारी समस्या उत्पन्न कर दी थी। कारखाने के मालिक के पास समाचार पत्रों में इस विषय में प्रकाशित लेख भी थे कि किस तरह बाबा समुदाय स्थानीय उद्योगों को वहाँ से हटाने का प्रयास कर रहा था। इससे हमारे विरुद्ध और अधिक प्रचार हुआ, लेकिन इससे भी बुरा तथ्य यह था कि अदालत में जो मुकदमा हमारे पक्ष में जा रहा था, अब ऐसा लगता था कि हमें उसमें सफलता नहीं मिलेगी।

न्यायाधीश ने अपने प्रश्नों की दिशा पर रोक लगाकर उसके बजाय, ट्रस्ट से अगली सुनवाई पर उत्तर देने के लिये कहा कि क्या वह मुआवजा देने के लिये सहमत था। इसलिये अब अगली सुनवाई आई, हमारे वकील श्री एम०सी० मेहता ने जो कि एक जाने माने पर्यावरण विशेषज्ञ थे, मुझे अलग बुलाया और मुझे सतर्क किया (चेतावनी दी), ''सामान्यरूप से न्यायाधीश अन्तिम साधन के रूप में उद्योग को बन्द करने का आदेश देते हैं। मैं अपना पूरा प्रयास करूँगा लेकिन यदि न्यायाधीश इससे सहमत नहीं होते तो, न्याधधीशों से हमारी दूसरी प्रार्थना क्या होगी जो कि तुम्हारे क्षेत्र में इस समस्या को कम करने में सहायता

करें?''

मैंने उससे कहा, ''हमारी समस्या को हल करने का केवल यही एक रास्ता हो सकता है कि कारखाने को स्थायी रूप से बन्द कर दिया जाय। आप समझ नहीं रहे हैं कि समस्या इस व्यक्ति की वजह से है। यह व्यक्ति एक पागल है और कोई भी तर्क नहीं सुनता है। यह कानून की भी परवाह नहीं करता क्योंकि स्थानीय सरकार और राजनीतिज्ञ उसकी जेब में हैं। उसे किसी भी क़ीमत पर रोका जाना चाहिये।''

मिस्टर मेहता ने पुनः मुझसे कहा, ''मैं वादा करता हूँ कि मैं पूरा प्रयास करूँगा लेकिन मुझे बतलाओ कि तुम्हारा दूसरा विकल्प क्या है?'' अनिच्छापूर्वक मैंने उत्तर दिया, ''सभी जहरीले पदार्थों का उत्पादन हमेशा के लिये बन्द कर दें।'' फिर मैंने आगे कहा, ''मैंने सुना है कि आप अपने क्षेत्र में सबसे सर्वश्रेष्ठ हो। जो लोग सर्वश्रेष्ठ होते हैं, वे कभी भी दूसरे विकल्प के बारे में नहीं सोचते हैं। वे हमेशा पहले को ही प्राप्त करते हैं।'' मिस्टर मेहता जोश में भर गये और उन्होंने मुझसे कहा, ''क्यों नहीं? यदि आपके बाबा ऐसा चाहते हैं, तो हम इसे प्राप्त कर सकते हैं।''

अभी तक ऐसा लग रहा था कि भाऊजी के द्वारा मुआवजे का उल्लेख करना ही मुकदमें की गाड़ी को पटरी से उतारने के लिये काफी था। जब सुनवाई प्रारम्भ हुई, हमारे वकील ने न्यायाधीशों से ट्रस्ट का उत्तर यह कहकर दिया कि मुआवजा देने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि ट्रस्ट इसमें शामिल नहीं है और न ही उसका मुकदमें से कोई लेना देना है। मिस्टर मेहता ने न्यायाधीशों को बतलाया कि वादी प्रदूषण के आधार पर मुकदमा लड़ रहे थे और वह पीड़ित था और उन्हें ही क्षेत्र में हुई हानि के लिये मुआवजा दिया जाना चाहिये। मालिक को मुआवजा देने का कोई प्रश्न ही नहीं था।

इस बिन्दु पर, न्यायाधीश मालिक के अधिवक्ता की ओर मुड़े और बोले, ''तुमने मुआवजे के विषय में उनका उत्तर सुना और यह बहुत स्पष्ट है। अब हमें यह देखना है कि तुमने अपने लिये जो जाल बुना है, उससे बाहर कैसे निकलोगे। अदालत इस बार तुम्हें आसानी से नहीं छोड़ेगी। इस प्रकरण का इस बार के लिये निपटारा कर देना चाहते है। यदि तुमे जानते हो कि तुम्हारे लिये अच्छा क्या है, तो उद्योग को दूसरी जगह हटाने का प्रबन्ध करना प्रारम्भ कर दो।''

न्यायाधीश ने रासायनिक कारखाने के मालिक से यह इस कारण से कहा कि उसने अपने लिये एक जाल बुन लिया है क्योंकि वह भाऊजी का गश्तीपत्र और मुआवजे की सम्भावना को सामने लाया था। उसने जो यह किया, तो इसका अर्थ था कि उसने मुकदमें में अपने लाभ–हानि के लिये तर्क करना छोड़ दिया था। इस प्रकार वह अप्रत्यक्ष रूप से अपना अपराध स्वीकार कर रहा था। जब न्यायाधीश ने हमारे वकील के तर्क को स्वीकार कर लिया कि ट्रस्ट इसमें शामिल नहीं था और ना हीं उसने मुआवजा देने की कोई भी पेशकश की थी, तो इस बात के लिये अब काफी देर हो चुकी थी कि कारखाने का मालिक अपने बचाव के लिये कोई दूसरा तरीका अपनाये।

न्यायाधीश ने सरकारी इकाइयों को एक प्रारम्भिक आदेश दिया कि उद्योग को वहा से हटाने के लिये एक अन्य स्थल को चुनें और मालिक को भी निर्देश दिया कि वह वहाँ से कारखाने को हटाकर नये स्थान पर लगाये। यह एक पूर्णतया हक्का–बक्का कर देने वाला फैसला था। जब हम अदालत से बाहर आये, तब मिस्टर मेहता पूर्णरूपेण आश्चर्यचकित थे और उन्होंने मुझसे कहा, ''तुम्हारे मेहेर बाबा ने सच में एक चमत्कार कर दिया हैं। मैं फैसले को सुनकर खुद ही आश्चर्यचकित हूँ, लेकिन लड़ाई अभी तक समाप्त नहीं हुई है। वह कारखाने को वहाँ से हटाने के लिये इन्कार कर सकता है, इसलिये सतर्क रहो। कुछ ओछे नये साक्ष बनाकर मुकदमें की गाड़ी को पटरी से हटाने के इरादे से वह अभी भी तुम्हें जाल में फँसाने का प्रयत्न कर सकता है। अन्तिम आदेश का हमें अभी भी इन्तज़ार करना है।''

जब अगली सुनवाई का समय आया, जैसी कि उम्मीद थी, मालिक के अधिवक्ता ने तर्क दिया कि मालिक के पास कारखाना दूसरी जगह लगाने के लिये कोई पूँजी नहीं थी और क्योंकि इकाई से कोई प्रदूषण नहीं फैल रहा था, इसलिये उसको वहाँ से हटाने का कोई कारण नहीं था। अब वह मुकदमे को लाभ हानि के आधार पर लड़ना चाहता था। इसने न्यायाधीशों को इस हद तक क्रोधित कर दिया कि पीठासीन (Presiding) न्यायाधीश ने वकील से क्रोधपूर्वक कहा, ''एक वर्ष हो गया जब से तुम हमारे साथ चूहे बिल्ली का खेल खेल रहे हो और हमारा समय बर्बाद कर रहे हो। हम तुम्हें कारखाना वहाँ से हटाकर दूसरी जगह लगाने का विकल्प दे रहे थे लेकिन अब हम इसका निश्चय कर लेना चाहते हैं कि तुम इन निर्देष का निश्चित रूप से पालन करोगे। हम यह निश्चय

करने जा रहे हैं कि तुम हमें परेशान करने के लिये फिर से वापस नहीं आओगे।'' न्यायाधीश ने अन्तिम आदेश दिये कि उद्योग को हटाकर दूसरी जगह लगाने के लिये डेढ़ माह का समय दिया जा रहा है, ऐसा न करने पर उसे स्थायी रूप से बन्द कर दिया जायेगा।

अदालत से बाहर आते हुए, मिस्टर मेहता ने कहा, ''बाबा ने चमत्कार किया है। उसने मुआवजे के वाक्यांश (Clause) का प्रयोग करके बच निकलने का प्रयत्न किया था। लेकिन इसी कारण वह जाल में फँस गया। सच में तुम्हारे बाबा ने ही ऐसा किया।'' पीछे की ओर देखने पर मैंने देखा कि भाऊजी द्वारा मुआवजे का वाक्यांश गश्तीपत्र में शामिल करने पर हम लोगों का उस समय कितना अधिक दिल जला था, लेकिन बाद में यह वास्तव में मालिक की गर्दन के चारों ओर एक फन्दा बन गया।

मिस्टर मेहता ने जो कहा था, उस पर विचार करने पर, मैंने सच में ही यह महसूस किया था कि मालिक अपने ही बनाये खुद के जाल में फँस गया था या वह उस जाल में फँस गया था जो बाबा ने खुद ही अपने औजार और अपनी मण्डली के उस सदस्य के द्वारा बिछाया था जिन्हें हम भाऊजी के रूप में जानते हैं।

प्रत्येक परिस्थिती में मेहेर बाबा को जिम्मेदार बनाओ

जब रासायनिक कारखाने की लड़ाई का मामला उच्चतम न्यायालय में था, बाबा की बहिन मनी ने मेहेराज़ाद में मुझे एक बार अलग एक तरफ बुलाया क्योंकि वह मुझसे कुछ बात करना चाहती थी। मैं बाबा के कमरे के बाहर खड़ा था जब वह मुझे एक तरफ ले गई और कहा, ''हम मण्डली के सभी सदस्य बहुत सीधे सादे और छल रहित हैं। बाबा के पास हमारा उपयोग छोटे–छोटे कार्य करने के लिये किया जाता था– जैसे घरेलू प्रबन्ध के विषय में बातचीत करना या किसी पत्र के विषय में जो सही नहीं लिखा गया था और कभी–कभी वाक्य में एक विशेष स्थान पर कौन से उचित शब्दों का प्रयोग करना चाहिये। हमारी यही ज़िन्दगी थी। हमारी प्रतिदिन की ज़िन्दगी में हम छोटी से छोटी चीज़ में सादगी का प्रयोग करते थे। बाबा शेष सभी समस्याओं की, कम से कम महिला मण्डली के लिये, देखभाल करते थे। हमें कभी भी इन दूसरी समस्याओं के

विषय में चिन्ता नहीं करनी पड़ती थी। हमारे मन बाबा पर एकाग्र करने के लिये स्वतन्त्र थे और हम यही करते थे।

इसलिये जब रासायनिक कारखाने जैसी कोई बड़ी चीज़ हमारी चौखट पर आई, हम यह समझ ही नहीं पाये कि हमें क्या करना चाहिये, क्या नहीं। यह कुछ ऐसा था जैसा हमने पहले कभी नहीं किया था। हमने बहुत ही प्रेमपूर्ण ढंग से मालिक के पीछे लगकर प्रयास किया कि वह कारखाना अन्य कहीं लगाले, लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ। लेकिन तब, देखो बाबा कैसे अभी भी हमारी देखभाल करते हैं। मैंने ऐसा होते हुए कई बार देखा हैं जब हम किसी परिस्थिति में चारों ओर से घिर जाते हैं और हम इसे पूर्णतया उन पर (बाबा पर) छोड़ देते हैं, तो वह किसी व्यक्ति को भेज देते हैं जो इसको निपटाने में सक्षम होता है, जैसे कि उन्होंने (बाबा ने) तुम्हे इस खतरे से लड़ने के लिये यहा भेज दिया है।

''तुम सोच रहे हो कि यह तुम कर रहे हो, लेकिन यह बाबा हैं जो तुम्हारे मन में इसको सर्वप्रथम करने का विचार डालते हैं। वह विचार जिसने तुम्हें इस लड़ाई को लड़ने के लिये प्रेरित किया, तुम्हारा नहीं था, बल्कि उन्होंने (बाबा ने) इसे तुम्हारे मन में रोपित किया था। वह ब्रम्हाण्ड के मालिक हैं और सृष्टि में सब कुछ उनके आदेश से होता है। सभी सद्‌गुरु, संत, मस्त और उनके प्रतिनिधि यहाँ उनके आदेश का पालन करने के लिये हैं। वह (बाबा) किसी भी आध्यात्मिक रूप से उन्नत आत्मा का प्रयोग इस विचार को तुम्हारे मन में रोपने के लिये करते हैं जिसने तुम्हें उनके लिये तुरन्त सब कुछ छोड़ने और उनकी ओरसे इस लड़ाई को लड़ने के लिये प्रोत्साहित किया। इसी कारण तुम यहाँ हो और जो तुम्हें करना है, वह कर रहे हो, अन्यथा यह सम्भव न होता।

''कारखाने का मालिक एक बहुत ही चालाक और खतरनाक व्यक्ति है। यह बतलाना आवश्यक नहीं है कि वह अस्थिर मन का व्यक्ति भी है। उसके व्यक्तित्व के समकक्ष बाबा तुम्हारे जैसे एक उग्र व्यक्ति को उससे निपटने के लिये लाये हैं क्योंकि वह कोई तर्क नहीं सुनता।'' मनी ने मुझे पुनः चेतावनी दी, ''सावधान रहना। वह खतरनाक है।''

उन्होंने तब आगे कहा, ''हिन्दी में एक कहावत है जो कहती है 'चक्रम दोस्त से सयाना दुश्मन अच्छा होता है।'' इसका मूल अर्थ है, 'अस्थिर मन का दोस्त एक बुद्धिमान दुश्मन से ज़्यादा खतरनाक होता है।' मनी ने फिर कहा, ''ध्यान रहे, कारखाने का मालिक एक अस्थिर मन वाला दुश्मन है और यह उसे दुगना

खतरनाक बना देता है। इसलिये मेरे बच्चे सावधान रहना और जो भी लड़ाई लड़ो उसमें हर जगह बाबा को अपने साथ ले जाने की याद रखना।''

काफ़ी हद तक, कारखाने का मालिक इतना साधन सम्पन्न व्यक्ति था कि अपने आक्रामक स्वभाव और उस पृष्ठभूमि के बावजूद जिससे मैं आया था, मैं बहुधा उसकी वार करने की क्षमता से घिर जाता था। उसने ट्रस्ट की अनुदान एकत्र करने, भूमि लेने इत्यादि कार्यवाही के सम्बन्ध में सरकारी अधिकारियों के पास गलत शिकायतें लिखकर पत्र भेजे और ट्रस्ट को प्रत्येक स्तर पर हानि पहुँचाने का प्रयत्न किया। उसने स्थानीय जनता को भी भड़काने का प्रयास किया और उसने शहर में एक छोटे प्रदर्शन का आयोजन भी सफलतापूर्वक किया जिसके बारे में समाचार पत्रों में प्रकाशित किया गया था।

कुछ शिखर के राजनीतिज्ञों के करीबी होने से, सरकारी पदाधिकारी उसकी जेब में थे और वह खुले तौर पर किसानों को धमका रहा था। उससे लड़ने में, मैं ऐसा अनुभव कर रहा था जैसे कि मे खुद से लड़ रहा था। मेरी मूल प्रकृति ऐसी थी कि जब मैं लड़ता था, मेरा व्यवहार, लड़ने या मरने का होता था क्योंकि मैं मृत्यु से नहीं डरता था। वास्तव में; हमेशा ऐसा लगता था जैसे मृत्यु मुझे अपनी ओर खींच रही थी और मैं इसकी ओर खिंचा चला जा रहा था। शायद मृत्यु के प्रति मेरे दृष्टिकोण ने मुझे ज़्यादा आक्रामक बना दिया था, विशेष रूप से लड़ाई में, क्योंकि मैं जानता था कि अधिकांश विरोधियों को मृत्यु का भय होता था और वे पूर्ण विनाश का सामना करने के लिये अनिच्छुक होते थे। कोई भी व्यक्ति जो विनाश का सामना करने से डरता है, वह समझौता करना चाहता है। किसी लड़ाई को जीतने के लिए व्यक्ति का 'करो या मरो' का दृष्टिकोण होना चाहिए। यह मेरी जिन्दगी में पहली बार था कि मैं किसी ऐसे व्यक्ति का सामना कर रहा था जिसका किसी हद तक यही दृष्टिकोण था, यद्यपि ऐसा शत प्रतिशत नहीं था। शायद इसी कारण मैं उससे थोड़ा आगे था, यह बतलाने की जरूरत नहीं है कि बाबा हमारे साथ थे।

जैसे–जैसे लड़ाई आगे बढ़ती गई, मेरा आक्रामक स्वभाव देखकर, मण्डली और वहाँ के निवासियों ने मुझे प्यार से कुछ नाम दिये। पुरुष मण्डली मुझे योद्धा या शेर कहकर बुलाती थी। महिला मण्डली प्रारम्भ में मुझे देवदूत कहना पसन्द करती थी लेकिन बाद में मेरा नाम बदलकर उन्होंने लुटेरा या डाकू कर दिया। वहाँ के अन्तेवासी मुझे बुलडॉग यह पर्यावरण आतंकवादी कहकर पुकारते थे। मैं महाभारत रुस्तम या महाप्रलय रुस्तम के नाम से भी पुकारा जाता था। मुझे

प्यार से दिये गये ये नाम मेरी आक्रामक प्रकृति को व्यक्त करते थे। क्योंकि मैं प्रत्येक को मजाकिया ढंग से बतलाता था, ''आक्रमण हमेशा से ही मेरा पहला प्यार रहा है क्योंकि इससे तुम अपने कार्यों को शीघ्रतापूर्वक कर सकते हो।''

जब अदालत का फैसला पक्ष में हुआ और न्यायाधीश ने घोषित किया कि उद्योग को डेढ़ माह की अवधि के अन्दर या तो वहाँ से दूसरी जगह हटा दिया जाय नहीं तो बन्द कर दिया जाय। मैंने कारखाने के मालिक को अदालत के कमरे से जाते हुए देखा। अदालत के कमरे के ठीक बाहर वह अपने घुटनों पर झुका और अपनी अधिकतम आवाज़ में ज़ोर से चिल्लाने लगा। वह न्यायाधीशों का ध्यान अपने पक्ष में आकर्षित करने के लिये जान बूझकर ऐसा कर रहा था क्योंकि वह इसी तरह के बहुत से नाटक अतीत में भी कर चुका था। यद्यपि मैं जानता था कि वह ढोंग कर रहा था, फिर भी इस विचार से मैंने अपने हृदय में पछतावे का अनुभव किया कि मैंने किसी व्यक्ति को आर्थिक रूप से नष्ट कर दिया था। यद्यपि मैं चिन्तामुक्त हो गया था कि लड़ाई समाप्त हो गई थी, मैंने अपने हृदय में कोई भी खुशी महसूस नहीं की। इस स्थिति में मैं वास्तव में हृदय से चाहता था कि मैं अपने आक्रामक तरीकों को छोड़ दूँ और शान्तिपूर्ण हल के लिये देखूँ। मैं सोच में पड़ गया था कि क्या मालिक को क्षति पहुँचाये बिना इस रासायनिक कारखाने की समस्या को हल करना सम्भव था, क्योंकि मण्डली ने अपना पूरा प्रयास किया था और असफल रही थी।

जब मैं वापस अहमदनगर गया और निश्चिन्त होकर अपनी दिनचर्या में लग गया, मनी, मेरी आन्तरिक स्थिति को समझकर, एक दिन मेरे पास आई और उन्होंने मुझसे कहा, ''तुमने जो किया है, उसे करने के लिये अपने हृदय में कोई अपराध भावना को न आने देना। तुम नहीं थे, यह बाबा थे जिन्होंने ऐसा किया। यह वह (बाबा) थे जिन्होंने उन विचारों को तुम्हारे मन में डाला जिनसे प्रेरित होकर तुमने ऐसा किया। इसलिये जिम्मेदारी उनकी (बाबा की) है। तुम्हारी नहीं। बाबा ने तुम्हारी आक्रामक प्रवृत्ति का उपयोग इस पागल आदमी को नष्ट करने के लिये किया क्योंकि और किस तरह एक पागल व्यक्ति को कोई रोक सकता है ?''

मनी ने तब पहली बार मुझ पर प्रगट किया कि वह स्वयं मालिक से मिलीं थी और उद्योग को वहाँ से हटाने की प्रार्थना की थी। उन्होंने मुझसे कहा, ''मैंने उसे प्यार से जीतने का प्रयास किया था। हम सभी ने उसे तर्क देते हुए समझाने

का प्रयास किया कि वह औद्योगिक क्षेत्र में कारखाने को हटाने के बारे में सोचे और हटाने में समझदारी है। मैंने उससे कहा था, ''लोग व्यवसाय करने से पहले सन्तों का आशीर्वाद लेते हैं। तुम इसको यहाँ से हटाकर कहीं और स्थापित क्यों नहीं करते और तुम्हे खुद अवतार का आशीर्वाद प्राप्त होगा। ईश्वर का आशीर्वाद लो और अपना व्यवसाय कहीं दूसरी जगह प्रारम्भ करो और तुम सफलता प्राप्त करोगे।''

मनी ने तब मुझसे कहा, ''उसने अपने चेहरे पर अवमानना और घृणा के भाव के साथ मुझसे (मनी से) कहा, 'मेरे अपने पारिवारिक सम्बन्ध एक सशक्त राजनैतिक समुदाय से होने से, पहले से ही मुझे आशीर्वाद प्राप्त है। मुझे किसी दूसरे के आशीर्वाद की आवश्यकता नहीं है। इस पर मैंने (मनी ने) उससे कहा, 'तुम्हारा विनाश निश्चित है।' यह कहते हुए मैं मुड़ी और वहाँ से चली आई इसीलिए मेरे बच्चे, याद रखो, यह सब होना ही था और यह वह (बाबा) थे जिन्होंने ऐसा किया। अपने कन्धों पर वह जिम्मेदारी मत लो क्योंकि तब तुम अपराध के बोझ के नीचे दब जाओगे। अपनी ज़िन्दगी में प्रत्येक परिस्थिति के लिये उनको (बाबा को) जिम्मेदार बनाओ। इस तरीके से तुम्हारा हृदय किसी भी बोझ से मुक्त रहेगा। अपना पूरा प्रयास करो लेकिन उनको जिम्मेदार होने दो।''

मनी की बातचीत ने मेरे हृदय के अनावश्यक बोझ को कम कर दिया जो कि मैं ढो रहा था। इतने पर भी, उस समय, मैंने अब भी अपने आक्रामण तरीकों को छोड़ने की आवश्यकता को अनुभव किया। मैंने यह जिम्मेदारी भी बाबा को सौंप दी और उनकी कृपा से, जैसे–जैसे समय गुज़रता गया, मैं काफ़ी हद तक आक्रामकता को छोड़ने में समर्थ रहा और मैं जानता हूँ कि उनकी (बाबा की) कृपा के द्वारा, किसी दिन यह पूर्णरूपेण समाप्त हो जायगा।

परिवर्तन के लिये समय

एक खास अन्तेवासी निरन्तर वहाँ एरच के पास आता था और मेहेराबाद के कुछ मामलों की शिकायत उनसे करता था जो उसे पसन्द नहीं थे। वह एरच को सुझाव देता था कि किसी कार्य को किस समय और उस स्थान के सुगमतापूर्वक चलने और बाबा की खुशी के अनुसार पुनः किस प्रकार किया जाना चाहिये। इसने एरच को एक बार उस व्यक्ति पर टिप्पणी करने के लिये उकसाया। वह (एरच) मन ही मन हँसे और बोले, ''तुम युवा लोग यह जानने का दावा कैसे करते हो कि बाबा को किससे खुशी होती है जबकि हम,

जो बाबा के साथ रहते थे, ऐसा कभी नहीं कर सकते? कोई भी कभी भी निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि बाबा को किससे खुशी होगी। जब हम ऐसा सोचकर कोई निश्चित चीज़ करते थे कि बाबा उससे खुश होंगे, हम बहुधा विपरीत परिणाम पाते थे जहाँ बाबा हमसे क्षुब्ध हो जाते थे और हमें फटकारते थे और, जब हमें विश्वास होता था कि बाबा किसी चीज़ को नापसन्द करेंगे, तो बाबा उसके विषय में रुचि लेकर अपनी तरफ से पूंछताछ करते थे और बारम्बार मण्डली को याद दिलाते थे कि उनको वह ख़ास चीज़ पसन्द थी। ऐसा ही होता था। जब तुम यह दावा करते हो कि तुम जानते हो, तुम मिथ्यापन का दावा करते हो। जब तुम मिथ्यापन का दावा करते हो, तो तुम अभी भी अज्ञानता में जकड़े हुए हो। कोई भी जो अज्ञानता में जकड़ा हुआ है, उसे कैसे वास्तविक ज्ञान हो सकता है? वह कैसे जान सकता है कि बाबा की खुशी क्या है?''

एरच ने यह इतनी विनम्रतापूर्वक कहा कि अन्तेवासी ने इसके को न समझने के कारण उपेक्षित कर दिया और शिकायतें करना जारी रखा। होकर एरच ने उससे कहा, ''तुम जो करना चाहते हो, करने के लिये स्वतन्त्र हो!'' उस अन्तेवासी ने सोचा कि एरच ने उन परिवर्तनों को करने के लिये उचित ठहराया था जिसका उसने सुझाव दिया था और इसलिये उसने एरच से कहा, ''क्या मैं मेहेराबाद के निवासियों को बतला सकता हूँ कि उन परिवर्तनों को करने के लिये मुझे आपकी अनुमति प्राप्त हो गई है?'' एरच ने कहा, ''नहीं, अभी नहीं, बाद में, काफी बाद में।'' अन्तेवासी ने एरच से पूँछा, ''ऐसा मैं कब करूँ?'' एरच ने उत्तर दिया, ''हमारे जाने के बाद करना।'' अन्तेवासी ने टिप्पणी की, ''ठीक है, आपका यह न कहने का तरीका है। आप कम से कम दस से बारह वर्षों के बाद जायंगे।'' एरच ने बहुत धीरे से अपनी गम्भीर आवाज में कहा, ''जितने समय की तुम आशा करते हो उससे भी कम समय में ऐसा होगा। हमारे यहाँ से जाने का समय नज़दीक आ गया है।'' अन्तेवासी ने उनसे पूँछा, ''आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि आपका समय नज़दीक है?''

एरच ने उत्तर दिया, ''हम अब इस दुनियाँ के लिये अनुपयुक्त हैं और इसलिये हमें जाना है। जब युवा लोग जो बाबा के पास आते हैं, हमें यह सिखलाने का प्रयास करते हैं कि बाबा को कैसे प्यार किया जाय, हमें हमारे प्रियतम की खुशी के विषय में सिखलाने का प्रयास करते हैं, तब हम जान जाते हैं कि यह हमारे लिये जाने का समय हैं उन लोगों को बागडोर सौंपने का हमारा समय आ गया है जो सोचते हैं कि वे बाबा को मण्डली की अपेक्षा बेहतर जानते

हैं।''

एरच ने जब बोलना समाप्त किया, वहाँ पर तब पूर्ण मौन और गहन शान्ति थी। वह शक्ति जिससे एरच ने कहा था, उससे अन्तेवासी को यह बात समझ में आ गई और वह उसके बाद चुप हो गया। यद्यपि एरच ने विनम्रतापूर्वक, कोमलता से और धीरे से यह कहा था, बाबा की शक्ति उन शब्दों के द्वारा प्रवाहित हो रही थी जिसने उन सभी लोगों के हृदयों और मनों को प्रभावित किया जिन्होंने उसे सुना था।''

एक अन्य अवसर पर, मेहेराज़ाद से तीर्थयात्रियों की बस चले जाने के बाद शाम को मैं एरच के पास बैठा हुआ था। क्रैग भी संयोगवश पास ही था और हम छोटी–छोटी बातें कर रहे थे। क्रैग ने एरच से निम्न प्रश्न पूँछा, ''एरच हमें बतलाईये कि आपके अनुसार एक बाबा–प्रेमी के क्या आन्तरिक गुण हैं? आपके अनुसार एक बाबा प्रेमी और एक सांसारिक व्यक्ति के गुणों के बीच मुख्य अन्तर क्या है?''

मैं बीच में कूद पड़ा और बोला, ''ठीक है, मैं तुम्हें वह बतला सकता हूँ। यह बहुत आसान है। किसी व्यक्ति के साथ बातचीत करने का प्रयास करो। यदि वह समझदार न हो और तुम उसके साथ आगे न बढ़ सको, तो निश्चित रूप से जान लेना कि वह एक बाबा–प्रेमी है।'' क्रैग और एरच दोनों ही हँसने लगे। एरच जानते थे कि मैं किसके सम्बन्ध में कह रहा था। बहुधा, मेहेराबाद में हम जो कार्य करते रहने वाले बाबा प्रेमी एक दूसरे के लिये सभी प्रकार की रुकावटें पैदा करते थे। मण्डली लगातार हमारा ध्यान इस ओर आकर्षित करती थी कि सामन्जस्य के साथ किया गया कार्य बाबा का कार्य था और जो ऐसा करता है और बाबा की खुशी का ध्यान रखता है, वही बाबा–प्रेमी है।

एरच ने स्वयं ही एक बार मण्डली हाल में कहा था कि वह बाबा प्रेमी नहीं थे। उन्होंने कहा था कि बाबा को प्रेम करना इतना कठिन था, कुछ जो वह नहीं कर सकते थे। ''सबसे अच्छा यह है कि कोई भी मुझे बाबा का अनुयायी कहकर पुकारे क्योंकि मैं आदेशों का पालन करने और उनका अनुसरण करने का प्रयत्न करता हूँ।'' ऐसा ही एरच अपने विषय में कहते थे। इस पर क्रैग ने मुझसे सीधे पूँछा, ''और तुम्हारे अनुसार मण्डली और शेष बाबा समुदाय के बीच क्या अन्तर है?''

मैंने उससे कहा, ''यह बहुत आसान है और हर व्यक्ति यह देख सकता है। मण्डली हमेशा बाबा को आगे रखती है और कभी भी मिथ्या अहम् को आगे

नहीं रखती। अपनी कहानियों में भी, वे कभी भी यह कहकर दावा नहीं करते कि क्या सही है और क्या गलत है? वे बाबा को यह कहकर हमेशा आगे रखते हैं कि बाबा यह चाहते थे, यह वह बात है जिसे मैं सोचता हूँ कि उससे बाबा खुश होंगे, जब कि दूसरे कुछ बाबा–प्रेमी अपने संजोये दृष्टिकोण के लिये मृत्यु तक लड़ने के लिये तैयार रहते हैं। मण्डली का अपना कोई दृष्टिकोण नहीं है। वे केवल बाबा को आगे रखते हैं। वे (मण्डली) बाबा की याद को संजोये रखते हैं, अपनी मिथ्या खुदी को नहीं। इसलिये वे ऐसा कोई भी दावा नहीं करते।''

जब मैंने बोलना समाप्त किया, एरच ने अपनी राय प्रगट की कि मैं अपनी जगह सही था। क्रैग ने तब दूसरा प्रश्न पूँछा, ''और तुम क्या सोचते हो कि वे (मण्डली) हर समय इसको कैसे कर सकते थे ?'' मैंने कहा, ''मण्डली में, खुदी नहीं है। केवल वहाँ बाबा हैं और इसीलिये वे उन्हें आगे रखते हैं।''

एरच ने यह कहकर मेरी कही हुई बात में सुधार किया, ''तुमने एक गलती की। मण्डली में भी, अहम् (खुदी) है। यदि अहम् (खुदी) पूरी तरह समाप्त हो जाता, तो वे बाबा में समा जाते। वहाँ पर खुदी है, लेकिन मिथ्यापन के साथ अपनी खुदी की पहचान वहाँ नहीं है। उनकी खुदी बाबा में है और उनके साथ ही उनकी पूर्ण पहचान है। यह ऐसा ही है।''

प्रेम के घाव

मण्डली के साथ अपनी जिन्दगी में, मैंने उन्हें अन्तेवासियों के लिये वही भूमिका अदा करते देखा है जैसी कि बाबा ने उनके लिये अदा की थी। अन्तर केवल इतना था कि उन्होंने अपनी महानता के विषय में कभी भी कोई दावा नहीं किया, जब कि बाबा ने बार–बार ज़ोर देकर कहा कि वह ईश्वर थे। क्योंकि मण्डली ने कभी भी अपने अधिकार का दावा नहीं किया, हम बहुधा यह सोचकर उनकी विनम्र सलाह की उपेक्षा कर देते थे कि हम बाबा के तौर–तरीकों को बेहतर जानते थे।

मण्डली के कुछ कार्यों को, जो सांसारिक दृष्टिकोण से नकारात्मक प्रतीत होते थे, समझ पाना उन लोगों के लिये भी कठिन था जो उनके बहुत नज़दीक कार्य करते थे क्योंकि उससे हमारे सीमित मन बहुधा उलझन में पड़ जाते थे और उनके कार्यों के विषय में भ्रम उत्पन्न हो जाता था। इसके बावजूद भी जो लोग बाबा से जुड़े रहते थे, उनका भ्रम अन्त में दूर हो जाता था और वे चीजों

को बेहतर ढंग से देख सकते थे जो मण्डली की महानता को समझने में उनकी सहायता करता था। मैं कह सकता हूँ कि बाबा की कृपा से उनसे जुड़े रहने में मुझे मदद मिली और इसने मेरे प्रत्यक्ष ज्ञान में परिवर्तन कर दिया जिससे मुझे चीजों को बेहतर ढंग से देखने, समझने में सहायता मिली। मण्डली के नकारात्मक और निर्दयी कार्य भी मेरे नये सापेक्ष में मुझे दयालुतापूर्ण प्रतीत होते थे।

पाठकों के लिये मैं निम्न उदाहरण दूँगा। एक चिकित्सक को कभी व्यक्ति के हृदय को काटकर खोलते हुए देखकर किसी को वह कत्ल प्रतीत हो सकता है और भयभीत होकर वे वहाँ से दुनियाँ को यह बतलाने के लिये दौड़ पड़ते हैं कि उन्होंने क्या देखा था। फिर भी, चिकित्सक के साथ काम करने वाली नज़दीकी टीम इस प्रत्यक्ष निर्दयतापूर्ण कार्य के पीछे के कारण को जानती है। चिकित्सक रोगी के हृदय का छोटा सा आपरेशन करके उसकी ज़िन्दगी को बचाने का प्रयास कर रहा होता है जिसके न करने पर वह रोगी मर जाता। वह कार्य, जो किसी को क्रूरतापूर्ण प्रतीत होता है, वास्तव में एक दयालुतापूर्ण कार्य था जिसको कुछ थोड़े से ही लोग जानते थे। यह चिकित्सक का प्रेम ही है जो उसे अपनी दक्षता और प्रयासों का उपयोग करके इस नाजुक कार्य को करने का प्रयास करने के लिये प्रेरित करता है जिसके परिणामस्वरूप उस रोगी व्यक्ति की वेदना दूर हो जाती।

मण्डली जन ऐसे ही चिकित्सक थे। वे उन लोगों का हृदय खोलते थे जो बाबा की खोज में, ईश्वर की खोज में आते थे जिससे कि उन लोगों को अपने अन्दर की बदसूरती को देखने में सहायता मिल सकती थी। वार और आघात जो वे (मण्डली जन) करते थे, वे चिकित्सक द्वारा किये गये उपचार के सदृश हमारे हृदयों को चारों ओर से घेरे हुए गन्दगी को हटाने के इरादे से थे जिससे कि हमारे हृदय इसके द्वारा ईश्वर के प्रेम के प्रवाह को अब स्वतन्त्रतापूर्वक अनुभव कर सकें और इसके द्वारा पुनर्जीवित हो जायं। सच में, वे (मण्डलीजन) हृदय के चिकित्सक थे।

यही है जो मैंने देखा और समझा था। मण्डली का कोई भी कार्य किसी को चोट या नुकसान कैसे पहुँचा सकता है जो पूर्णरूपेण उनके (बाबा के) हैं? यदि बाबा वह हैं जो वह स्वयं को घोषित करते हैं, तब मण्डली वैसी ही है जैसा कि उनके विषय में बाबा ऐलान करते हैं, उस स्थिति में वे (मण्डली जन) अपने कार्यों

निषेधात्मक या सकारात्मक से किसी को कैसे चोट या नुकसान पहुँचा सकते हैं। ऐसी स्थिति होने पर, जैसा कि हम जानते हैं कि निश्चित रूप से ऐसा ही है, तब हम सभी सुरक्षित हैं। न केवल हम सुरक्षित हैं, बल्कि बहुत भाग्यशाली आत्मायें हैं जिनके हृदयों का इलाज शल्य चिकित्सा विशेषज्ञों के हाथों से हुआ है।

अपनी बात की और अधिक स्पष्ट करने के लिये मैं एक कहानी सुनाना पसन्द करूँगा जिसे एक बार मेरे मित्र ने मुझे सुनाया था। "किसी गाँव में एक माँ और उसका बच्चा रहता था। माँ पूरे दिन खेत पर काम करने में व्यस्त होने के कारण अपने बच्चे को भी अपने साथ ले जाती थी जो कि कुछ ही साल का था। कार्य करते समय वह हमेशा अपने बच्चे पर नज़र रखती थी, किन्तु संयोगवश ऐसा हुआ कि एक बार बच्चा भटक कर खेत से जंगल के पेड़ों की ओर चला गया जो कि खेत की सीमा पर थे।

अचानक ही, एक बाघ जंगल से आया और उसने बच्चे पर आक्रमण कर दिया। बच्चे की चिल्लाने की आवाज़ सुनकर माँ अपनी ज़िन्दगी की परवाह न करते हुए अपने बच्चे को बचाने की सहायता के लिये चिल्लाते हुए बाघ की ओर दौड़ पड़ी। बाघ ने बच्चे को अपने जबड़ों में दबोच लिया था और वह उसे (बच्चे को) वहाँ से दूर ले जाने वाला था जब माँ उस जगह पहुँच गई और उसने दुस्साहसपूर्वक और अभी भी सहायता के लिये चिल्लाते हुए झपटकर बच्चे का पैर पकड़ लिया जो कि बाहरकी ओर निकला हुआ था।

बाघ ने बच्चे को खींचकर ले जाने का प्रयास किया, लेकिन माँ ने उसे बचाने का प्रयास किया क्योंकि वह भी उतनी ही दृढ़ निश्चयी थी। वह अपनी पूरी ताकत से उसे अपनी ओर खींच रही थी और ऐसा करने में उसके नाखून बच्चे के माँस में उस जगह घाव करते हुए घुस गये, लेकिन इससे उसकी पकड़ बच्चे पर और अधिक मजबूत हो गई। इसी दौरान, गाँव वासी डंडे और तलवार लेकर वहाँ आ गये और वे बाघ पर आक्रमण करने लगे। बाघ बच्चे को छोड़कर वहाँ से भाग गया। बच्चे को अस्पताल ले जाया गया जहाँ पर उसकी गम्भीर चोटों का उपचार किया गया जो उसे बाघ के द्वारा लगीं थीं।

अगले कुछ दिन बाद, जबकि बच्चे की हालत सुधर चुकी थी, इस आक्रमण की खबर आसपास के गाँवों और कस्बों तक फैल गई। समाचार पत्रों के संबाददाता इस कहानी को छापने और बच्चे का फोटो ग्राफ लेने के लिये इस

छोटे अनजान गाँव में आने लगे। जब संवाददाताओं में से एक ने बच्चे से घाव के निशानों का फोटो ग्राफ लेने के लिये उन्हें कपड़े हटाकर दिखलाने के लिये कहा, तो वह प्रसन्नतापूर्वक ऐसा करने के लिये राजी हो गया। अपनी शर्ट हटाने के बाद उसने अपनी छाती और पेट के घावों के चिन्हों की ओर इशारा किया जहाँ पर बाघ ने उसे पकड़ा था।

उसके पैरों पर घाव के कुछ निशान देखकर, संवाददाता ने उस विषय में पूँछा। बच्चे ने उत्तर दिया, ''अरे यह चिन्ह, ये मेरी माँ के मेरे प्रति गहरे प्रेम के कारण उनके द्वारा लगें हैं। मुझे बचाने की खातिर, मेरी माँ ने मेरे पैरों को झपट्टा मारकर पकड़ा और अपने नाखूनों को मेरे माँस में गड़ा दिया। उनकी मजबूत पकड़ के कारण, बाघ मुझे खींचकर ले जाने में असफल हो गया। मेरी जिन्दगी को बचाने की खातिर, मेरी माँ को ऐसा करना पड़ा। मुझे बाघ के जबड़ों से बचाने के लिये उसे ये छोटे–छोटे घाव लगाने पड़े। नहीं तो, मैं मर गया होता। ये घाव के चिन्ह मेरी माँ के मेरे प्रति प्रेम के प्रतिबिम्ब हैं।

उसी तरीके से मण्डली जन अन्तेवासियों को माया के जबड़ों से बचाने की खातिर सच्चाई के मार्ग पर अपनी पूरी शक्ति से पकड़े हुए थे। ऐसा करने में उन्हें (मण्डली जनों को) अपनी पकड़ मजबूत बनाने के इरादे से बहुधा अपने नाखूनों को गड़ाना पड़ता था। यद्यपि उस समय यह बहुत कष्टदायी था, लेकिन उनके (मण्डली जनों के) इरादे पवित्र और नेक थे। वे यह सब अन्तेवासियों के प्रति अपने प्रेम के कारण करते थे। नहीं तो, हम नष्ट हो गये होते। पीछे मुड़कर घावों के दागों को देखने पर, जिन्हें मैं अपने लिये मण्डली का सच्चा उपहार मानता हूँ मेरा हृदय उनके प्रयासों और प्रेम में अपने को घिरा हुआ अनुभव करता है जिसका ये घाव प्रतिनिधित्व करते हैं। ये उनके (मण्डली के) सच्चे प्रेम की याद दिलाते हैं जिसके बिना हम नष्ट हो गये होते।

अच्छाई एक रूकावट हो सकती है

प्रारम्भिक वर्षों में जब मैं मण्डली के साथ कार्य कर रहा था तब मैंने देखा कि वे नहीं चाहते थे कि हम लोग ''अच्छे कार्य या परोपकार के कार्य में लिप्त हों। यदि हम ऐसा करने का सुझाव देते थे, तो वे बहुधा क्षुब्ध हो जाते थे और यह कहते हुए हमें फटकारते थे ''तुम यहाँ क्या इसके लिये आये हो या यहाँ बाबा के लिये आये हो।'' मैं मण्डली के इस पहलू को कभी समझ नहीं

पाता था क्योंकि मैं हमेशा सोचता था कि बाबा हमसे चाहते थे कि हम परोपकार करे, दूसरों की भलाई के लिये कुछ करें लेकिन मैं वैसा ही करता रहा जैसा कि मण्डली चाहती थी कि मैं करूँ। इस तरीके से मैंने अपने मानसिक सन्तुलन और अपनी सही निर्णय लेने की क्षमता को बनाये रखा जो कि उनको अन्तेवासियों के तथाकथित अच्छे कार्य करने के प्रयास को तोड़ते हुए देखकर भंग हो रही थी।

जैसे–जैसे समय गुजरता गया और मेरा मन उनके (मण्डली के) कार्यों के विषय में प्रश्न करने लगा, मैं अब खुद को और नहीं रोक सका और मैंने भाऊजी और एरच के साथ इस विषय पर चर्चा की। उन दोनों के ही उत्तर आश्चर्यजनक रूप से एक जैसे थे और उससे मेरे कुछ सन्देह दूर हो गये। उनके अनुसार, अच्छे कार्य या परोपकारी कार्य, जैसे कि दुनियाँ में बहुधा किया जाते हैं, गर्व उत्पन्न करते हैं और आत्मा को आगे चलकर भ्रम में फँसा देते हैं। बहुधा ऐसी आत्मायें इन अच्छे कार्यो को करने के लिये और बंध जाती हैं जो कि वे कर रही होती हैं क्योंकि वे यह नहीं समझ पाती कि अच्छे कहे जाने वाले वे कार्य उनके मिथ्या अहम् को बढ़ा रहे है और उन्हें आध्यात्मिकरूप से बन्धन में डाल रहे हैं। ऐसा इस कारण से है क्योंकि अधिकांश लोग अच्छे या परोपकारी कार्यों को आध्यात्मिक सेवा या निस्वार्थ सेवा के रूप में पहचानते हैं। बहुधा ऐसे कार्यों को करने में स्वार्थ पूर्ण उद्देश होता है और, तब भी जब इन कार्यो को ईमानदारीपूर्वक निःस्वार्थ उद्देश से किया जाता है तो भी ये समय गुजरने के साथ–साथ गर्व उत्पन्न करते हैं, क्योंकि कोई भी जो ऐसे कार्यो को कर रहा होता है, वह यह अनुभव करने लगता है कि वह कितना आध्यात्मिक है।

दूसरी ओर, असली आध्यात्मिक सेवा वह सेवा है जो प्रभु की करते हैं या उन लोगों की सेवा करते हैं जो चेतनतया उनके साथ एक हैं जैसे सद्गुरु या ईश्वर साक्षात्कार प्राप्त आत्मायें। अध्यात्मिक सेवा एक बहुत कष्टकारी अनुभव हो सकती है।

और केवल वे लोग ही इसे कर सकते हैं जो महान साहसी हैं क्योंकि इसमें महान परीक्षायें और संकट निहित होते हैं। सद्गुरु के हाथों निरन्तर अपमान को सहते हुए किसी भी व्यक्ति को अहम् के पूर्ण विनाश के लिये तैयार रहना पड़ता है और यह याद रखते हुए कि सद्गुरु कभी भी गलत नहीं होते हर समय उनकी सेवा मुस्कुराते हुए करते रहना पड़ता है। केवल वे व्यक्ति ही ऐसी सेवा कर सकते हैं जो उनका बनने का निश्चय कर लेते हैं ये तथा कथित

आध्यात्मिक सेवा उन परोपकार के कार्यों से जैसे अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम या निःशुल्क चिकित्सालय चलाने से पूर्णतया भिन्न है।

यद्यपि मैं उस अन्तर को समझ गया था जैसा कि मण्डली ने बतलाया, मैं अपनी निःस्वार्थ सेवा की धारणा को छोड़ने में असमर्थ था जिसके साथ मैं पला था। अपने हृदय से अन्तिमरूप से इसे समझने में मुझे वर्षों लग गये कि मण्डली क्या समझाने का प्रयत्न कर रही थी या वे हमें ऐसे अच्छे कार्यो को करने से क्यों रोकती थी। जब मैं इसे अन्तिमरूप से समझ गया, मैंने अनुभव किया कि मण्डली अपने कार्यों के द्वारा असली लक्ष्य की ओर जाने का हमें निर्देशन देने का प्रयत्न कर रही थी।

अधोलिखित कहानी ने भी मुझे यह समझने में सहायता की कि कैसे अच्छाई बहुधा एक बाधा बन जाती है। किसी नगर में एक पुजारी रहता था जो पूर्णतया प्रभु के प्रति समर्पित था और अपने पुजारी के कर्तव्यों का पूर्ण समर्पण और एकाग्रता से पालन करता था। अपने पास मार्गदर्शन के लिये आने वाली भीड़ से मिलने की अपनी दिनचर्या प्रारम्भ करने के पहले प्रभु को प्रार्थनायें अर्पित करने के लिये वह प्रातः चार बजे जग जाता था। कोई भी यह कह सकता था कि वह एक आदर्श व्यक्ति था जो सबकुछ अच्छी तरह करता था। वह इसे न केवल पूर्ण पराकाष्ठा के साथ करता था, बल्कि उसके कार्यों में उसका गर्व भी झलकता था जिसको वह प्रभु के लिये अपने कार्य करने में अनुभव करता था।

संयोगवश ऐसा हुआ कि यह पुजारी जो अपनी दैनिक दिनचर्या का आनन्द लेता था, काफी समय तक इसकी अच्छाई से जुड़ा रहा। अपनी प्रातः काल की चार बजे की प्रार्थनाओं के लिये जागने के लिये, वह साढ़े तीन बजे सुबह का अलार्म लगा देता था। एक बार वह अलार्म लगाना भूल गया और देर तक सोता रहा। सुबह के लगभग पौने चार बजे थे और ऐसा लग रहा था कि पुजारी अपनी सुबह की प्रार्थनायें न कर सकेगा जब शैतान ने पुजारी को जगाकर हस्तक्षेप किया और उसे उसकी दिनचर्या को उपेक्षित करने के लिये बुरा भला कहा। इससे अनजान होने के कारण कि किसने उसे जगाया था, पुजारी ने शैतान को धन्यवाद दिया और वह प्रातः काल की अपनी दिनचर्या में व्यस्त हो गया। इस तरह शैतान ने प्रभु के साथ उसके चार बजे प्रातः काल के समय के वादे को पूरा करने में पुजारी की सहायता की। शैतान के इस कार्य से उलझन में पड़कर, ईश्वर ने उसे आमने–सामने बुलाया और उससे पूँछा, ''तुम्हारा कार्य लोगों को मुझसे दूर ले जाने के लिये प्रलोभित करना है, लेकिन तुमने आज पुजारी को

प्रातः काल की प्रार्थनाओं के लिये समय पर उठने में सहायता की। तुमने ऐसा क्यों किया ?''

शैतान मुस्कुराया और उसने कहा, ''मैं अपना कार्य पूरी तरह ठीक से कर रहा हूँ। यदि मैंने पुजारी को समय पर सुबह की प्रार्थनाओं के लिये न जगाया होता तो, वह अपने हृदय में सुबह की दिनचर्या को खो देने पर इतना पछतावा अनुभव करता कि वह आपकी याद में सोना भी छोड़ देता। केवल इतना ही नहीं, उसके हृदय का पछतावा आपके प्रेम की खातिर सबकुछ छोड़ देने में सहायता करता। मैंने प्रार्थनाओं के लिये उसे समय पर जगाकर ऐसा होने से रोक दिया। जो कार्य वह कर रहा था, उसकी अच्छाई में वह इतना फँस चुका था कि यह नहीं देख सका कि वह अपने गर्व की सेवा कर रहा था और आपकी सेवा नहीं कर रहा था। उसे यह अनुभव करने में बहुत समय लगेगा। मुझे अब उसकी चिन्ता नहीं करना है क्योंकि वह अभी भी मेरा है और ईश्वर की ओर मुड़ने के पहले, वास्तव में उसे एक लम्बा समय लगेगा।''

इस कहानी ने न केवल मण्डली के कार्यों को समझने में मेरी सहायता की बल्कि मैंने अनुभव किया कि आध्यात्मिक सेवा क्या हे। इसे समझने में मुझे निश्चित रूप से लम्बा समय लगा।

ईश्वर को गम्भीरता से और जिन्दगी को हल्के ढंग से लो

वर्ष २००० में, जब मेरा स्वास्थ्य अचानक ही खराब हो गया, मैं कुछ मामलों के विषय में बहुत उलझन में था। इन मामलों में से एक मामला मेरे इलाज की रूपरेखा के सम्बन्ध में था कि मुझे किस प्रकार के उपचार को करना चाहिये। क्योंकि पारम्परिक चिकित्सीय इलाज जैसे ऐलोपैथीक, होम्योपैथिक और आयुर्वेदिक इलाज से मेरा स्वास्थ्य गिरता जा रहा था, मैं अधिक और अधिक उलझन का अनुभव कर रहा था और इसलिये मैंने दूसरे प्रकार के स्वास्थ्य लाभ करने वाले इलाजों का सहारा लिया। मैं यह नहीं कहता कि मैंने जो किया वह सही था, लेकिन उस क्षण मण्डली, मुख्य रूप से एरच ने मुझे जो कुछ बतलाया था उसके आधार पर मुझे वह सही प्रतीत हुआ।

मैं जानता था कि महिला मण्डली हमेशा किसी दूसरे प्रकार के विश्वास द्वारा, मन के उपचार द्वारा और रेकी या प्राणिक हीलिंग का प्रयोग करके या ऊर्जा द्वारा इलाज से स्वास्थ्य लाभ के लिये बाबा–प्रेमियों को हतोत्साहित

करती थी। इस प्रकार के सभी स्वास्थ्य लाभ के इलाजों को वे (महिला मण्डली) तन्त्र मन्त्र के क्षेत्र से सम्बन्धित मानती थीं और सब बाबा प्रेमियों को ऐसे इलाज में लिप्त होने के लिये हतोत्साहित करतीं थीं क्योंकि बाबा ने अपने प्रेमियों के लिये तन्त्र मन्त्र में न डूबने के लिये चेतावनी दी थी। उनकी (महिला मण्डली) प्रत्येक के लिये सलाह बहुत सरल थी–अपनी दवायें लेते रहो और बाबा का नाम लो। इसको शत प्रतिशत उन पर (बाबा पर) छोड़ दो और, जो भी होता है, निश्चित रूप से यह जान लो कि वह (बाबा) कर रहे हैं और यह तुम्हारी भलाई के लिये है। अपने स्वास्थ्य के मामलों सहित प्रत्येक चीज में उन पर (बाबा पर) विश्वास रखो।

मैंने यदि महिला मण्डली की सीधी सलाह को मान लिया होता, तो मैं अत्यधिक कष्टों से अपने आप को बचा लेता। यह मेरा मन था जिसे बौद्धिक व्यायाम करने से प्रेम था, जिसने मेरे लिये एक ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी जहाँ मैं विश्वास करने लगा कि यह उचित था और कम से कम कुछ समय के लिये मैंने वे चीजें की जिनके लिये मैं बाद में पछताता रहा क्यों कि इसने मेरे कष्ट, उलझन और आन्तरिक द्वन्द्व को बढ़ा दिया था।

एक बार मैं एरच के साथ था और संयोगवश उनसे ऊर्जा द्वारा स्वास्थ्य लाभ के विषय पर बातचीत कर रहा था कि कैसे ये पारम्परिक चिकित्सा पद्धति की प्रैक्टिस करने वाले चिकित्सक ऊर्जा द्वारा स्वास्थ्य लाभ की धारणा को अपना रहे थे। तन्त्र मन्त्र की अपेक्षा इसे विज्ञान से सम्बन्धित ज्यादा माना जा रहा था। इसलिये मैंने एरच से पूँछा कि इस पद्धति से स्वास्थ्य लाभ पहुँचाने वाले लोगों के पास जाने के लिये बाबा ने अपने प्रेमियों पर रोक क्यों लगाई थी। एरच के उत्तर ने मुझे चौंका दिया। उन्होंने कहा, ''मैं नहीं जानता कि बाबा ने ऐसी रोक लगाई थी।'' आश्चर्यचकित होकर, मैंने उनसे पूँछा, लेकिन महिला मण्डली हमेशा बाबा–प्रेमियों को ऐसे उपचार में लिप्त न होने के लिये कहती है। क्या ऐसा कुछ हुआ था जिससे उन्हें ऐसा कहना पड़ता है?''

एरच काफी लम्बे समय तक चुप रहे और तब उन्होंने कहा, ''मुझे सभी बातें नहीं मालूम हैं जो महिलाओं और बाबा के बीच में घटित हुई थीं। फिर भी, ऐसी एक घटना है जो मुझे याद आ रही है जिसके लिये मैं अनुभव करता हूँ कि ऐसे विवादास्पद विषयों पर उससे कुछ प्रकाश पड़ सकता है। एक दर्शन प्रोग्राम के पश्चात्, एक बाबा प्रेमी ने बाबा से पूछा था कि एक खास स्थान पर रहने वाले एक खास योगी के पास जाना और उससे मिलना क्या उसके लिये उचित था।

बाबा ने उस व्यक्ति से कहा, ''मैं हर समय के लिये और हर समय तुम्हारी आध्यात्मिक आवश्यकताओं की चिन्ता करने के लिये यहाँ पर हूँ और इस कारण के लिये तुम्हें दूसरे आध्यात्मिक गुरु के पास नहीं जाना चाहिये। फिर भी, यदि तुम किसी अन्य कारण से वहाँ जाना चाहते हो तब यह ठीक है।''

इस पर उस समय, एरच ने अनुभव किया कि दूसरे कारणों का अर्थ स्वास्थ्य सम्बन्धित कारणों के लिये हो सकता था, जैसे स्वास्थ्य के लिये एक योगी से योग सीखना। मैंने उसको गलत समझा था और उसकी गलत व्याख्या की थी जो एरच ने कहा था और उसे तन्त्र मन्त्र द्वारा उपचार हेतु लाइसेन्स के रूप में मान लिया। पीछे की ओर देखने पर मैंने अनुभव किया कि एरच ने कभी भी ऐसी चीज़ों को सही नहीं ठहराया था। फिर भी, उन्होंने जोर देकर यह नहीं कहा, '' नहीं किसी को इसमें लिप्त नहीं होना चाहिये।'' उन्होंने इसका निर्णय उस व्यक्ति पर छोड़ दिया कि वह क्या करना चाहता था।उन्होंने केवल वे तथ्य बतलाये जो कि बाबा के आस–पास हुए थे।

इस सन्दर्भ में, मैं यह अनुभव करता हूँ कि बाबा का कथन '' मैं हर समय के लिये हर समय पर तुम्हारी आध्यात्मिक आवश्यकताओं की चिन्ता करने के लिये यहाँ मौजूद हूँ' अपने आप में पूर्ण है। वह (बाबा) एक असली जिज्ञासु की पूरी जिम्मेदारी लेते हैं और उसकी सब आवश्यकताओं की चिन्ता करते हैं। इस कथन की प्रथम पंक्ति की गहराई की उपेक्षा करके, मेरा मन दूसरे कथन पर अटक गया जो कहता है कि, ''दूसरे कारणों से यह उचित है।''

यदि इस बिन्दु पर मैं केवल यह समझ गया होता कि मैं यह भौतिक शरीर नही हूँ, कि मैं ईश्वर की ओर अपनी यात्रा का एक आध्यात्मिक पथिक हूँ, तब ये सब दूसरे कारण अस्तित्वहीन हो जाते। मेरा एकमात्र कारण दैवीय प्रियतम के साथ एकरूपता पाने की कोशिश, होना चाहिये था। एक बूँद के रूप में सागर में विलीन हो जाने की खोज में, मुझे सभी विपरीत परिस्थितियों की परवाह न करते हुए अपना ध्यान अपनी यात्रा और अपने लक्ष्य पर केन्द्रित करना चाहिये था। यह अपनी असमर्थता, पूर्णरूपेण असहाय होकर किसी दूसरे व्यक्ति पर निर्भर होने का भय था जिसने मुझे घेर रखा था और मैं इनमें से कुछ उपचार कर्त्ताओं के पास पहुँचकर इसमें लिप्त हो गया जिसने केवल मेरे कष्ट को बढ़ा दिया।

एरच की बारम्बार दी गई चेतावनियों ने ''अपनी एकाग्रता भंग न होने दो। याद रखो कि यह सब एक स्वप्न है, स्वप्न को अपने ऊपर हावी न होने दो,''

आखिरकार मुझे बचा ही लिया और मुझे इस भय से मुक्त कर दिया। प्रारम्भ में उनकी चेतावनी की उपेक्षा करने का मुझे पछतावा है और जैसा कि एरच मुझे कहते थे, ''मैं ज़िन्दगी को गम्भीरता से और ईश्वर को हल्के ढंग से लेता था इसी कारण से मैंने कष्ट पाया। वह हमें बतलाते थे, ''सभी कष्टों का अन्त करना बहुत आसान है। ''ईश्वर को गम्भीरता से और ज़िन्दगी को हल्के ढंग से लो।''

मुझे याद है कि कई बाबा प्रेमियों से सम्पर्क होने पर जो कई बार तन्त्र मन्त्र द्वारा उपचार में डूबे थे, ज्ञात हुआ कि यद्यपि प्रारम्भ में उन्हें ऐसा लगा कि इसे सहायता मिल रही थी, जैसे–जैसे वे ज़्यादा बाबा के सम्पर्क में आते गये इस उपचार के तरीकों का प्रभाव उन पर स्पष्ट रूपसे समाप्त होता गया था। वास्तव में, कुछ बाबा प्रेमियों में स्वयं ही ऐसे उपचार की कुछ शक्ति थी जिसमें वे दूसरों की सहायता कर सकते थे और वे दावा करते थे कि बाबा के सम्पर्क में एक बार आने के बाद उनकी वह शक्ति समाप्त हो गई थी।

अपने खुद के अनुभव को नकारात्मक मानते हुए, मैंने एक बार इसी प्रकरण में एरच से पूँछा, ''एरच, बहुत से बाबा प्रेमी विभिन्न आस्था चिकित्सकों या ऊर्जा चिकित्सकों के पास गये हैं जो कि इस पद्धति से उपचार करते हैं। इन चिकित्सकों में से अधिकांश का कम से कम सांसारिक लोगों पर उपचार सम्बन्धी अच्छा रिकार्ड है। लेकिन यदि कोई बाबा प्रेमी ऐसे किसी व्यक्ति के पास पहुँचता है, तो ऐसा प्रतीत होता है कि चिकित्सक उसका उपचार करने में असमर्थ रहता है, विशेषरूप से यदि बाबा प्रेमी काफी लम्बे समय से बाबा के सम्पर्क में हो। तब भी यह प्रारम्भ में कुछ समय तक सहायक होता है, लेकिन जैसे–जैसे व्यक्ति का सम्बन्ध बाबा के साथ गहरा होता जाता है, ऐसा प्रतीत होता है कि ये सब चीज़ें उस पर कार्य करना बन्द कर देती हे।। ऐसा क्यों होता है? क्या बाबा अपने खुद के प्रेमियों को इस उपचार से स्वस्थ होने से रोक देते हैं? इन उपचारकों की शक्तियाँ कैसे एक बाबा प्रेमी पर प्रभाव डालने में असफल हो जाती हैं? क्या बाबा इसका रास्ता जाम कर देते हैं?''

एरच ने निम्न उत्तर दिया ''जब तुम एक कमरे में हो जहाँ पर पूर्ण अन्धकार है, क्या होता है यदि तुम एक मोमबत्ती वहाँ जलाते हो ? यद्यपि मोमबत्ती में ज्यादा शक्ति नहीं होती, फिर भी इससे उत्पन्न होने वाला प्रकाश एक अन्धकारमय कमरे में प्रकाश कर सकता है क्योंकि कमरे में अन्धेरा हैं मोमबत्ती की धुँधली लौ कमरे मे उजाला करने के लिये पर्याप्त है। लेकिन तब क्या जब कमरे में ट्यूब जला दी गई हो ? मोमबत्ती का क्या प्रभाव होगा ? ऐसा प्रतीत

होगा कि मोमबत्ती प्रभावहीन है। मोमबत्ती की रोशनी और उसकी शक्ति वहाँ पर है, लेकिन ट्यूब लाईट की रोशनी और उसकी शक्ति जयादा प्रभावशाली है और इसीलिये वह मोमबत्ती को प्रभावहीन कर देती है।

''क्या होगा यदि इस ट्यूब लाईट को खुले स्थान पर चमकदार सूर्य के प्रकाश में रख दिया जाय? क्या इससे कोई अन्तर पड़ेगा ? नहीं। यह शक्तिशाली ट्यूब लाईट बेकार और प्रभावहीन हो जाती है जब यह सूर्य के प्रकाश में रखी जाती है क्योंकि सूर्य के प्रकाश की शक्ति और प्रभाव, ट्यूब लाईट की अपेक्षा कई हज़ारगुना अधिक है।ऐसा ही होता है। ऐसे सभी तथाकथित चिकित्सक, उनकी शक्तियाँ कुछ भी हो, मोमबन्ती या ट्यूब लाईट के प्रकाश के समान हैं, जब कि बाबा सूर्य का प्रकाश हैं। उनके सभी प्रेमियों के ऊपर सूर्य की प्रकाश की सीधी किरणें हैं। इसलिये प्रकाश के ये छोटे–छोटे स्रोत व्यर्थ हैं जिस कारण से उन्हें (प्रेमियों को) उन पर (बाबा पर) ध्यान पूर्णतया केन्द्रित करना चाहिये और यहाँ वहाँ नहीं जाना चाहिये। वह (बाबा) सभी प्रकाशों का उद्गम हैं। वह प्रत्येक चीज का उद्गम हैं। इसलिये केवल उन पर (बाबा पर) ध्यान केन्द्रित करो। उनको पकड़े रहो। उनसे अलग किसी चीज़ का अस्तित्व नहीं है। इसे मत भूलो।''

जब एरच ने यह वार्तालाप समाप्त किया, मेरी इच्छा थी कि ऐसा उन्होंने काफी समय पहले मुझसे कह दिया होता क्योंकि यह मुझे इतने अधिक कष्टों से बचा लेता। इस सबक को प्राप्त करने से पहले कष्ट पाना शायद मेरा भाग्य था।

बाबा के आदेशों का उल्लंघन करना

भारत सांस्कृतिक रूप से बहुत घनी है और उसमें विविधतायें भी हैं। फिर भी, इसकी युगों पुरानी परम्परा, विचार धारा और मतों के रूप में बहुत बड़ी कमियाँ हैं। यह न केवल ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित हैं, बल्कि शहरों में भी फैली हुई है। मैंने बाबा–प्रेमियों को भी इन मृतप्राय परम्पराओं और विचार धाराओं का पालन करते हुए पाया है जिनका कोई अर्थ ही नहीं है। अधिकांश बाबा प्रेमी बाबा के इस सन्देश को जानते हैं जिसमें उन्होंने कहा है कि वह विश्व में सभी कृत्रिम रीति रिवाज और अनुष्ठानों को समाप्त करने आये हैं।

यह जानने के बावजूद, कई बाबा प्रेमी अभी भी समाज या समुदाय द्वारा परम्परागत न होने के कारण छोड़ दिये जाने के भय से उन पुरानी परम्पराओं

से अभी भी चिपके हुए हैं। भारत की ऐसी ही एक परम्परा जो अधिकांश हिन्दुओं द्वारा मानी जाती है, सम्मान के प्रतीक के रूप में बड़ों के सामने झुकना है। बाबा का अपने प्रेमियों को किसी भी रूप में किसी को भी अपने सामने झुककर सम्मान देने के विषय में दी गई चेतावनी शायद कई बाबा के हिन्दू अनुयायियों में सन्देह उत्पन्न करती थी। कई बाबा प्रेमी विभिन्न अवसरों पर एरच के सामने इन संदेहों को प्रगट करते थे।

एरच के अनुसार, यह तब तक ठीक था जब तक कि उसमें पूजा का कोई तत्व शामिल नहीं था। हिन्दुओं की पुरानी विचार धाराओं में यह केवल सम्मान का एक प्रतीक था। परिवार के बड़े और बच्चों के बीच संस्कारों का लेन–देन स्वाभाविक रूप से होता है। जब बाबा ने अपने प्रेमियों को, लोगों को, स्वयं के सामने झुकने की अनुमति देने के विरुद्ध सलाह दी थी, वह ऐसे कार्य में पूजा के तत्व के निहित होने के सन्दर्भ में था। जब कार्य इस इरादे से किया जाता है तो उसको स्वीकार करना उचित नहीं है क्योंकि वह व्यक्ति जो इसकी अनुमति देता है, वह उस व्यक्ति के संस्कार अपने ऊपर ले लेता है जो झुक रहा है। पूरी गम्भीरता और ईमानदारी पूर्वक, एरच ऐसे कार्यों से बाबा प्रेमियों को पूरी तरह दूर रहने के लिये चेतावनी देते थे क्योंकि केवल यही एक कार्य था जिसे बाबा क्षमा नहीं करते थे। इस विषय पर सभी मण्डली जन ऐसा ही कहते थे। वे (मण्डली जन) प्रत्येक को बाबा की वह चेतावनी पहुँचाते थे जिसमें उन्होंने (बाबा ने) कहा था कि वह पाखण्ड के अतिरिक्त कुछ भी क्षमा कर सकते थे।

बहुत से नजदीकी बाबा–प्रेमियों ने जो बाबा के ही समय मार्ग से भटक गये थे, बाबा की नाराजगी को आमन्त्रित कर लिया था। इनमें से कुछ बाबा–प्रेमियों ने वास्तव में बाबा के प्रेम प्रचार के इरादे से बाबा के विषय में बातचीत करना और उपदेश देना प्रारम्भ किया था। फिर भी, जैसे ही लोगों ने बाबा को अपना सम्मान अर्पित करने के बजाय उनको सम्मान देना प्रारम्भ कर दिया, इस सम्मान को लेने वाला व्यक्ति इसका आनन्द लेने लगा और आखिरकार वह इसका अभ्यस्त होता गया। इसको बन्द करने की बाबा की बारम्बार चेतावनी के बजाय, वे इसको बन्द नहीं कर सके और इसे उन्होंने जारी रखा। परिणाम स्वरूप, बाबा ने ऐसे प्रेमियों के साथ सभी सम्बन्ध तोड़ लिये।

उन प्रेमियों में से, जो ऐसे कार्य में लिप्त थे, मुख्य मानिक मेहता, बाबा दास और विभूति थे। उनकी कहानियाँ छप चुकी हैं। प्रारम्भ में उन्होंने बाबा के लिये

जो कार्य किया था, उसके कारण ये तीनों अधिकांशतः मण्डली के समान बाबा के नजदीकी माने जाते थे। लेकिन तब, जैसा की एरच ने बतलाया, ''बाबा–प्रेमियों से सम्मान लेने के द्वारा वे अफीम की लत के समान इसके आदी होते गये और जैसे कि अफीम का आदी व्यक्ति उसके बिना नहीं रह सकता, उसी तरह सम्मान को पाने वाला व्यक्ति उसके बिना बेचैनी का अनुभव करने लगता है। यह उसे आध्यत्मिक पतन की ओर ले जाता है क्योंकि वह उन लोगों के अत्यधिक संस्कार अपने ऊपर लेकर इकट्ठा कर लेता है जो उसे सम्मान देते हैं। ऐसा ही बाबा ने इस विषय में कहा था।''

बहुधा विभिन्न केन्द्रों के बाबा प्रेमी नाटक के प्रदर्शन के समय उचित व्यवहार के विषय में पूँछते थे जिसमें कोई कलाकार बाबा की भूमिका अदा कर रहा होता था। एरच, और मण्डली के सभी सदस्य, सभी बाबा–प्रेमियों को बहुत सावधान रहने के लिये चेतावनी देते थे कि जब वे नाटक का संचालन कर रहे हों तो वे इसका ध्यान रखें कि श्रोतागण कलाकारों को किसी भी रूप में सम्मान न दें, भले ही वह झुकने के द्वारा, आलिंगन देने या केवल पूजा के रूप में दोनों हाथ जोड़कर हो। इस बात का निश्चय करने की जिम्मेदारी कलाकारों और उन लोगों की थी जो नाटक का संचालन कर रहे होते थे। कलाकारों द्वारा कोई भी छूट या अधिकार का कार्य जो कि किसी भी रूप में श्रोताओं को उन्हें (कलाकारों को) किसी भी रूप में सम्मान देने के लिये उकसाती है, बाबा की चेतावनी को बहुत हल्केपन से लेने के तुल्य होगा। कलाकार, उस समय उस स्थल पर, इसके विषय में अच्छा अनुभव कर सकते और यह भी सोच सकते हैं कि यह सब बाबा ही कर रहे हैं लेकिन अनजाने में वे उन सबके संस्कार अपने ऊपर ले रहे होते हैं जो उनके सामने सिर झुकाते हैं।

एक अवसर पर, एक बाबा प्रेमी एरच से इस बिन्दु पर बहस करने लगा। वह एरच को अपना दृष्टिकोण बतला रहा था कि नाटक करने वाला व्यक्ति बाबा के साकार रूप का केवल एक माध्यम था और लोग उस समय वास्तव में अपनी स्वाभाविक भक्ति को प्रगट करने के लिये उसके समक्ष सिर झुका रहे थे। बाबा प्रेमी एरच से सहमत नहीं था कि ऐसा कार्य बाबा के आदेश को तोड़ने के बराबर था क्योंकि यह बाबा को याद करने की भावना से किया गया था।

एरच ने उत्तर दिया, ''मन के छलावे से सतर्क रहो। इससे तुम सभी प्रकार की चीजों पर विश्वास करने लगोंगे। ऐसी सभी आवेगपूर्ण भावनायें जो कि

नाटक के दौरान मन में उत्पन्न होती हैं, तुम्हें बाबा के जरा सा भी करीब नहीं ले जाती, विशेष रूप से यदि तुम उनका आदेश तोड़ रहे हो। हृदय की अभिव्यक्ति केवल ईश्वर के लिये उनकी खुशी और उनकी इच्छा को मन में रखते हुए सही ढंग से होनी चाहिये। अन्यथा ऐसा करने पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इसमें लिप्त होने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिये खतरा है।''

एरच ने तब उन लोगों के लिये जो ऐसे नाटक खेलते हैं या उनमें भाग लेते हैं, निम्न लिखित निर्देशन दिया। ''नाटक में भाग लेने वाले कलाकारों को हमेशा यह अपने दिमाग में रखना चाहिये कि यह केवल एक नाटक है और नाटक समाप्त होने के बाद इस अभिनय को जारी न रखें। वे बाबा की इच्छा और उनके आदेशों के प्रति जागरूक रहें और जिम्मेदारी से कार्य करें। श्रोताओं और कलाकारों के बीच कोई बातचीत नहीं होना चाहिये, विशेष रूप से नाटक के समय या उसके बाद उस कलाकार से बातचीत नहीं होनी चाहिये जो कि बाबा की भूमिका अदा कर रहा हो। बहुधा ऐसी तालमेल श्रोताओं में एक स्वाभाविक भावनात्मक पक्ष पैदा कर सकती है जो ऐसी स्थिति उत्पन्न कर देगा जहाँ वे कलाकारों को सम्मान देकर इसे समाप्त करेंगे।

''यह कलाकारों का और उनका जो नाटक का संचालन कर रहे है, कर्त्तव्य है कि वह इसका इंतेज़ाम कर लें कि ऐसी घटना न होगी। उन्हें नाटक खेलने के पहले या बाद में श्रोताओं को चेतावनी देने के लिये बाबा के आदेशों के विषय में घोषणायें करनी चाहिये। श्रोताओं को यह याद दिलाने की आवश्यकता है कि बाबा शाश्वतरूप से हर समय मौजूद हैं। उनको अपने प्रेमियों के प्रेम को प्राप्त करने के लिये किसी साकार माध्यम की आवश्यकता नहीं है। बाबा वह शाश्वत पूर्ण पुरूष हैं जो किसी को भी हर समय उपलब्ध हैं जो उन तक पहुँचना चाहते हैं। यह भी आवश्यक है कि जब नाटक समाप्त हो जाय, तब कलाकार श्रोताओं के सम्मोहन को दूर करने के लिये स्वयं बाबा के चित्र के सामने सिर झुकायें। वे बाबा की आरती कर सकते हैं और श्रोताओं को भी उसमें शामिल करें। इस तरीके से श्रोताओं और कलाकारों में जागृत स्वाभाविक भक्तिपूर्ण उत्साह प्रत्यक्ष रूपसे प्रभु को ही अर्पित होगा। यह बाबा को बहुत अधिक प्रसन्नता देगा क्योंकि तब तुमने उनके आदेश को नहीं तोड़ा होगा और उनकी इच्छा का ध्यान रखा है जब तुम अपना प्रेम उन्हें अर्पित कर रहे थे। इसे ऐसे ही करना चाहिये।

''विशेष सतर्कता के लिये, जो व्यक्ति बाबा या उनके किसी सद्गुरू की

भूमिका निभा रहा होता है, उसे किसी भी स्तर पर श्रोताओं में घुलने–मिलने से पहले स्टेज के पीछे जाकर वस्त्र बदल लेने चाहिये। यह भी आवश्यक है कि बाबा का अभिनय करने वाला व्यक्ति बाबा के चित्र के आगे सिर झुकाये और समूह के साथ आरती करे। इस तरीके से वह श्रोताओं की भावनाओं और ध्यान को अपनी ओर से हटाकर बाबा की ओर मोड़ने में उनकी सहायता करता है। इन सावधानियों को रखने में लापरवाही न करें और अपने प्रियतम की नाराजगी न लें। ऐसी घटना में जब कोई श्रोता भी कलाकारों में से किसी के सामने सिर झुकाता है, तब उस कलाकार को भी वैसे ही हाव भाव के साथ उस सम्मान को लौटा देना चाहिये। मण्डली सहित सभी के लिये बाबा का यह आदेश था जिसका पालन वे (मण्डली जन) आज तक करते हैं।''

एरच का अन्तिम कथन कुछ ऐसा है जिसे कि तीर्थयात्रियों ने वर्षों तक ध्यानपूर्वक देखा है। जैसे–जैसे मण्डली जन वृद्ध होते गये और उन्हें स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें होनी प्रारम्भ हो गई जिससे कि वे कमजोर होते गये, तो भी वे अन्त तक निष्ठापूर्वक बाबा के आदेशों का पालन करते रहे। यदि कोई बाबा प्रेमी अचानक उनके सामने सिर झुकाता था, वे भी उसी हावभाव के द्वारा सम्मान को वापस करने हेतु उस बाबा प्रेमी के सामने सिर झुकाते थे जैसा कि बाबा चाहते थे।

एक अन्य अवसर पर, किसी ने एरच को अपनी राय दी कि प्रायश्चित प्रार्थना में पाखण्ड के लिये क्षमायाचना भी हैं। एरच ने उत्तर दिया, ''हाँ बाबा इस कार्य को क्षमा करते हैं बशर्ते ऐसा करने वाला व्यक्ति अपने गलत तरीकों को जाने और क्षमायाचना करे। प्रायश्चित प्रार्थना का अर्थ है कि व्यक्ति को अपने कार्य पर पश्चाताप होना चाहिये और उसे फिर से न दोहराने के लिये प्रयत्न करना चाहिये। उसे अपने कार्यों पर पछतावा और अपराध बोध का अनुभव होना चाहिये और उसे यह निश्चय करना चाहिये कि वह भविष्य में इसे फिर से न दोहराये।

''फिर भी यदि कोई पाखण्डी अपने कार्यों का बचाव करना जारी रखता है और इसमें लिप्त रहता है, तो वह विनाश के मार्ग पर चल रहा है और अत्यधिक कष्ट पायेगा। उनके (बाबा के) शब्दों को हल्के ढंग से लेकर आग से न खेलो। बाबा के शब्दों के सार को अपने हृदय से ग्रहण करने का प्रयास करो। अपने मन में इनसे मत खेलो, क्योंकि मन तुम्हें धोखा देगा । बाबा सद्गुरूओं को अपने समीप नहीं चाहते हैं। वह (बाबा) उन लोगों को अपने समीप चाहते हैं जो उनके

पूर्ण दास बनने के इच्छुक हैं। वह उनको नहीं चाहते जो दावा करते हैं कि वे भी कुछ हैं वह उनको चाहते हैं जो उनके चरणों की धूल बनने या कुछ भी नहीं बनने के इच्छुक होते हैं।''

एरच ने जो कुछ पहले कहा था उसे स्पष्ट करने के लिये बाबादास विभूति और मानिक मेहता की कहानी को उन्होंने आगे बतलाया। ''मानिक मेहता और बाबादास बाबा प्रेमियों को भ्रमित करके उनसे सम्मान प्राप्त करने में लिप्त थे। इस सबको बन्द करने के लिये बाबा की बारम्बार चेतावनी के बावजूद उन्होंने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। आखिरकार बाबा ने उनके साथ सभी सम्बन्ध तोड़ लिये और सभी बाबा प्रेमियों को भी इस विषय में सूचना देते हुए पत्र भेज दिये। उन्होंने ऐसे लोगों के साथ, वे कोई भी हों, कोई सम्बन्ध न रखने की भी चेतावनी दी। बाबा ने अपने प्रेमियों को ऐसे लोगों के साथ बात भी करने के लिये हतोत्साहित (मना) किया। संक्षेप में बाबा चाहते थे कि उनके प्रेमी ऐसे लोगों से बचें।

''दूसरी ओर, विभूति ने अपनी गलती का एहसास किया और बाबा के पास क्षमा मांगने आया। ऐसा हुआ कि विभूति जो एक आध्यात्मिक गुरु होने का दिखावा कर रहा था, अपनी महिला शिष्याओं में से एक शिष्या को गर्भवती कर देने से पुलिस की परेशानी में पड़ गया था। वह बाबा के पास सहायता मांगने आया। बाबा ने उसे अपनी आज्ञा का उल्लंघन करने के कारण सहायता देने से इन्कार कर दिया लेकिन, जब उसने क्षमा माँगी, अपने जुर्म को माना, बाबा ने दया की। केवल इसी शर्त पर बाबा उसकी सहायता करने के लिये सहमत हुए कि भविष्य में वह ऐसी चीजों में लिप्त न होगा और सम्मान लेकर उसने जो संस्कारों को इकट्ठा कर लिया है, उन्हें दूर करने के लिये उसे कई वर्षों तक भयंकर शारीरिक रोग से होकर गुजरना होगा। बाबा ने फिर भी, विभूति से वादा किया कि इस सब के दौरान वह उसकी सहायता करेंगे और शारीरिक रोग भी दूर हो जायगा बशर्ते वह पूर्ण विश्वास के साथ बाबा की आज्ञा का पालन करे। विभूति को कोढ़ हो गया जिससे उसने कई वर्षों तक कष्ट पाया लेकिन, अन्त में, वह पूरी तरह से ठीक हो गया और वह बाबा के प्रति समर्पित रहा।''

एरच ने तब बहुत विनम्रतापूर्वक और धीरे–धीरे अपने सन्देश का निर्णयात्मक भाग दिया जिससे कि उसका वांछित प्रभाव हो सके। ''यदि बाबा के क्षमा करने के बाद विभूति ने इतना कष्ट उठाया, तो सोचों कि उन बेचारी आत्माओं को कितना कष्ट उठाना पड़ेगा जो कि अन्त तक ऐसे कार्यों में अभी भी लिप्त हैं।''

वे मेरे है

मण्डली के साथ बिताई अपनी जिन्दगी में मैंने बहुधा देखा है कि कई पुराने समय के बाबा प्रेमी, जिन्हें गुरुप्रसाद और दूसरे सार्वजनिक दर्शन प्रोग्रामों के दौरान बाबा का साथ प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, बाबा के शरीर छोड़ने के उपरान्त मण्डली के साथ उनका झगड़ा हो गया। मुझे यह विचित्र लगा क्योंकि मेरे जैसे व्यक्ति, जिसने कभी बाबा को नहीं देखा है, वे सभी गुण मण्डली में पाये जो बाबा के विषय में पुस्तकों में पढ़े थे। वास्तव में, मेरे लिये वे (मण्डली जन) क्रियाकलापों में बाबा के असली प्रतिबिम्ब थे, कुछ ऐसे साकार रूप थे जिन्हें बाबा ने हमारे लिये अपने पीछे छोड़ा था। यह सच है कि उनके साथ रहना और कार्य करना बहुत कठिन था, लेकिन बाबा के साथ भी ऐसा ही था।

फिर भी, बाबा के समय के कुछ पुराने बाबा प्रेमी ऐसे भी थे जिनके मन में मण्डली के लिये बहुत अधिक प्रेम और सम्मान था। मेहेरवान जसावाला ऐसे ही एक बाबा प्रेमी थे जो हमेशा बाबा की मण्डली के लिये बहुत अच्छा बोलते थे और पूरे समय उनके प्रति सम्मान और श्रद्धा प्रगट करते थे। वर्षों से मैं उन्हें जानता हूँ और एक अवसर पर मैंने संयोगवश उनसे पूँछा, ''ऐसा क्यों है कि बाबा के समय के कुछ बाबा–प्रेमियों की मण्डली के साथ नहीं बनती है और वे बहुधा उनकी आलोचना करते हैं? एक आप हैं जो हमेशा मण्डली का सम्मान करते हैं, लेकिन वे ऐसे क्यों हैं ?

मेहेरवान ने उत्तर दिया, ''अधिकांश बाबा–प्रेमियों के जो बाबा से मिले थे, बाबा के साथ उनके सीधे व्यक्तित्व सम्बन्ध बन गये थे। इनमें से कुछ बाबा प्रेमियों ने बहुत कम समय व्यतीत किया था और बहुधा वे इस बात का पूरा चित्रण प्राप्त नहीं कर सके कि बाबा के मण्डली जन कौन थे। बाबा बहुधा अपने मण्डली जनों को अपने आध्यात्मिक प्रशिक्षण के रूप में सार्वजनिक सभाओं में अपमानित करते रहते थे। वह उन्हें किसी नये बाबा प्रेमी को सुधारने के इरादे से भी डाँटते फटकारते थे और उन्हें सताते थे जबकि उनकी कोई ग़लती भी नहीं होती थी। लोगों ने इसे देखा था और उन्होंने अपने मन में मण्डली के प्रति एक पक्षीय दृष्टिकोण बना लिया था।

''लेकिन हममें से कुछ ने, जिनका बाबा के साथ बार–बार मिलना जुलना

था और जिन्हें मण्डली के साथ बातचीत करने का भी अवसर प्राप्त था, न केवल मण्डली की महानता देखी थी, बल्कि उनके लिये बाबा का प्रेम भी देखा था। मण्डली की ज़िन्दगी जो उन्होंने बाबा के साथ बिताई थी, कोई मज़ाक न थी और बहुत ही कम लोग उन कष्टों को सहन कर सकते थे जिसमें उन्होंने (बाबा ने) उनको रखा था। केवल उनके मण्डल के सदस्य–मण्डली जन ही उन कठिनाइयों, अपमान और अभावों का सामना कर सकते थे और अभी भी वे (मण्डली जन) अपनी ज़िन्दगी उनके (बाबा के) प्रेम और सेवा में अर्पित कर रहे हैं।

''मण्डली के सार्वजनिक अपमान से अलग, जिसे सभी ने देखा था, हममें से कुछ ने वह भी देखा था कि बाबा ने कैसे मण्डली की प्रशंसा की थी और उनकी महानता पर ज़ोर दिया था। वह हमेशा ज़ोर देकर कहते थे, ''ये वे आत्मायें हैं जिन्होंने उनके (बाबा के) मण्डल में शामिल किये जाने के योग्य बनने के लिये कई जन्मों तक तपस्या की है। किसी को भी उनसे खुद की तुलना करने का प्रयास नहीं करना चाहिये जो उनके मण्डल के सदस्य हैं। न तो उनको परखा जा सकता है और न ही उनकी आलोचना की जा सकती है क्योंकि वे (मण्डली जन) पूर्णरूपेण उनके (बाबा के) हैं।''

मेहेरवान ने आगे कहा, ''यह सच है कि बाबा ने मण्डली को सार्वजनिक रूप से अपमानित किया था, लेकिन यदि जनता में से कोई व्यक्ति या कोई बाबा प्रेमी उनकी मण्डली के विषय में उनसे शिकायत करते थे, तो बाबा उस बाबा प्रेमी से बहुधा बहुत नाराज़ हो जाते थे और उसे डाँटते फटकारते थे, ''तुम मेरी मण्डली के सदस्यों की आलोचना करने का साहस मत करो। वे सभी रत्न हैं, उनमें से प्रत्येक जन रत्न हैं।''

मेहेरवान ने जो कहा उसे सुनकर मैंने अपने आपको बहुत अधिक धन्य अनुभव किया कि बाबा ने मेरे जैसी भटकी हुई आत्मा के लिये ऐसे रत्न छोड़े थे।

देखना और महसूस करना

एरच की ज़िन्दगी के अन्तिम दिनों में उन्हें थोड़ी दूर भी चलने में कष्ट होता था और उनको सहारे की आवश्यकता होती थी। इस सबके बावजूद, वह दिन प्रतिदिन के दैनिक कार्यों को करने के लिये ट्रस्ट ऑफ़िस जाना पसन्द करते थे। इस समय के आस–पास, उनकी दृष्टि इस हद तक कम हो गई थी कि उन्हें पत्रों को पढ़ने के लिये अपने सहायकों में से एक सहायक की

आवश्यकता होती थी। एक अवसर पर ऑफ़िस का एक कर्मचारी एरच के देखने के लिये आफ़िस सम्बन्धी कार्य के कुछ प्रार्थना पत्र लेकर आया। सहायकों ने उन पत्रों को पढ़ा और जब एरच थोड़े खाली हुए तब सहायकों में से एक ने एरच को पत्र पढ़कर सुनाया।

जब सहायक ने पत्र पढ़ना समाप्त किया, एरच ने पूंछा कि क्या पत्र में सबकुछ सही था या सुधार की कुछ आवश्यकता थी। एरच के प्रश्न ने सहायकों को उत्साहित किया कि वे पत्र पर पुनः एक दृष्टि डालें और प्रत्येक ने अनुभव किया कि पत्र सही था। एरच ने दूसरी बार पूँछा, ''क्या तुम्हें पूरा विश्वास है?'' जब प्रत्येक ने कहा कि वह सही था, एरच ने बहुत कोमलता से कहा, ''पत्र की तारीख चेक करो और देखो कि क्या यह सही है।'' आश्चर्यजनक रूप से, दिनांक में एक त्रुटि थी जिस पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया था और उससे भी ज़्यादा आश्चर्यजनक यह तथ्य था कि एरच पढ़ नहीं सकते थे, लेकिन वह जानते थे कि वहाँ गल्ती थी।

उसी दिन लगभग शाम के समय, जब एरच वहाँ से जाने वाले थे, ऐसी ही दूसरी घटना हुई। मेहेराज़ाद के लिये जाने से पहले दवाना एरच की सभी चीजें ड्राईवर की सहायता से कार में रखतीं थीं। उसने आज भी ऐसा ही किया, लेकिन उसे छाता नहीं मिल सका जो वे । वह सभी जगह व्यग्रता से उसे देख रही थी। जब एरच ने उससे पूँछा कि क्या मामला था, उसने (दवाना ने) उनसे (एरच से) कहा कि छाता नहीं मिल रहा था। एरच ने अनायास अपनी राय प्रगट की, ''दरवाजे के पीछे चेक करो और देखो कि क्या यह वहाँ है।''

दवाना ने वहाँ देखा और जैसा कि निश्चित था, वह वहाँ पर दरवाजे और दीवार के बीच की दरार में था। सभी लोग हँसने लगें और दवाना ने एरच से कहा, ''आप कहते हैं कि आप देख नहीं सकते हैं लेकिन मज़ाक देखिये। हम सभी ने जो देख सकते हैं, प्रातःकाल पत्र को पढ़ा था लेकिन ये आप थे जिन्होंने गलती पर ध्यान दिया। हमने छाते को ढूँढ़ा लेकिन यह आप थे जिन्होंने उसे खोजा। आप यह सब कैसे कर सकते हैं जबकि आप देख नहीं सकते हैं?''

एरच ने बहुत विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया, ''यद्यपि मैं देख नहीं सकता, **मैं महसूस कर लेता हूँ** ।'' मण्डली के सदस्यों की चीज़ों को समझने की नैसर्गिक योग्यता मुझे बहुधा अचम्भे में डाल देती थी।

अनुभव से कहना

भाऊ जी की आदत एक ही बात को बार–बार दोहराने की थीं ऐसा नहीं था कि वह इसे केवल एक या दो दिन ही करते थे। वह उसी प्रकरण पर कई दिनों तक और कभी–कभी महीनों तक कहते रहते थे। यद्यपि भाऊजी के इस पहलू के हम अभ्यस्त हो गये थे, लेकिन जब उन्होंने कार्य के सम्बन्ध में भी यही करना, शुरू कर दिया, जहाँ वह कई दिनों तक बार–बार उसी बिन्दु को संक्षेप में लिखवाते रहते थे, तो इसने मुझे पागल कर दिया। मेरे जैसे व्यक्ति को जिसने अधिकतर बाहर का कार्य किया था, प्रतिदिन विभिन्न परिस्थितियों को संभाला था, उसे भाऊजी की यह आदत अत्यधिक नीरस लगी और मेरी सहनशक्ति की सबसे अधिक परीक्षा ली। अधोलिखित कहानी यह बतलाती है कि मैं क्या कहना चाहता हूँ।

एक किसान जिसकी जमीन ट्रस्ट ने खरीदी थी, कई वर्षो के बाद उसने ट्रस्ट से मांग करना शुरू कर दिया। वह ज़िला अदालत में पहुँच गया और उसने फैसला अपने पक्ष में करवा लिया। हम उच्च न्यायालय में पहुँचे जिसने हमारे पक्ष में प्रारम्भिक आदेश दिया। मुकदमा दर्ज हो गया और अन्तिम सुनवाई के लिये इसे शायद लगभग दस वर्ष लगते क्योंकि अदालत दीवानी के ऐसे ही मुकदमों के बोझ तले पहले से ही दबी हुई थी। क्योंकि इस सुनवाई का दस वर्ष से पहले होने का कोई अवसर ही नहीं था, मुझे यह विचित्र लगा कि भाऊजी मुझे प्रतिदिन बुलाते थे और केस से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बिन्दुओं को लिखवाते थे जिनकी मुझे न्यायाधीशों की जानकारी में लाने की आवश्यकता थी। वह प्रतिदिन वही बिन्दु लिखवाते थे और कई दिनों तक ऐसा करने के पश्चात् उन्होंने जोर दिया कि मैं जाकर मेहेरनाथ को बुलाकर लाऊँ क्योंकि वह चाहते थे कि मेहेरनाथ जी मुकदमें को समझ लें।

मेहेरनाथ एक ऐडवोकेट हैं और उन दिनों, वह निचली अदालतों में वकालत कर रहे थे। इस जमीन के मुकदमें को ज़िला अदालत में दाखिल किया गया था जिसे हमारी तरफ से एक वरिष्ठ स्तर के ऐडवोकेट लड़ रहे थे और मेहेरनाथ बारीकी से केस की गतिविधियों पर निगाह रखे हुए थे। मैं मेहेरनाथ के साथ जाता था जब मुकदमा उच्च न्यायालय में पहुंचा। इसी कारण से भाऊजी चाहते थे कि मेहेरनाथ वहाँ उपस्थित रहें और एक सुबह

मुझसे उनको (मेहेरनाथ को) बुलाने के लिये कहा। जब मैं मेहेर नाथ से मिला और उनको सूचना दी कि भाऊजी उनको जमीन के मुकदमें के मामले में बुला रहे थे, मेहेरनाथ ने केवल इतना कहा कि वह थोड़ी देर में आ रहे हैं। फिर भी, वह आते नहीं दिखलाई पड़े।

अगले दिन भी ऐसा ही हुआ। भाऊजी ने मुझसे मेहेरनाथ को बुलाने के लिये कहा जो कि मैंने किया और यद्यपि मेहेरनाथ ने बाद में आने का वादा किया, लेकिन वह नहीं आये। जब काफी समय बीत गया, भाऊजी ने मुझसे पूँछा, ''मेहेरनाथ क्यों नहीं आ रहा है? क्या तुमने उसे बतलाया कि मैं उसे बुला रहा हूँ?'' मैंने उत्तर दिया, ''हाँ भाऊजी। मुझे जाने दीजिये और देखने दीजिये कि क्या हुआ है।'' मैं मेहेरनाथ के पास पहुँचा कि वह क्यों नहीं आया था और भाऊजी से क्यों नहीं मिला था यद्यपि उसने आने का वायदा किया था। उसने कल भी ऐसा ही किया था। मैंने उससे पूंछा कि वह किस कारण से भाऊजी से मिलने से बच रहा था।

मेहेरनाथ मुस्कुराया और उसने कहा, ''जमीन के मुकदमें के विषय में मैंने उन बिन्दुओं को लिखने में कई महीने लगाये हैं और मैं पहले से ही मुकदमें के खास तथ्यों को जानता हूँ। यह कहकर मेहेरनाथ गये और उन्होंने अपनी फाईलों की अलमारी खोली। उन्होंने दो या तीन फाईलें निकालीं और मुझे दिखलाईं। फाईलें उन्हीं मुख्य बिन्दुओं से भरी हुईं थीं जो कि भाऊजी ने मेहेरनाथ को लिखवाये थे। मैं इस पर विश्वास नहीं कर सका। मेहेरनाथ को न केवल वही चीजों को सुनकर बल्कि उन्हें टाईप करने और दाखिल करने में कितनी वेदना सहनी पड़ी होगी।

मुझे अब वापस जाना था और भाऊजी को कारण बतलाना था कि मेहेरनाथ उनसे मिलने क्यों नहीं आ रहे थे। यदि मैं उन्हें सच्चाई बतला देता, वह इससे दुखी हो जाते क्योंकि आखिरकार मेहेरनाथ उनके पुत्र थे और अब मैं समझ सकता था कि मेहेरनाथ कम से कम इस मामले में उनसे (भाऊजी से) मिलने से क्यों बच रहे थे। मैं दुविधा में था कि एरच और मनी की सलाह ने आकर मुझे उससे बचा लिया। उन्होंने कहा था, ''बाबा ने कहा था कि तुम्हें सच बोलना चाहिये लेकिन तुम्हें प्रत्येक चीज नहीं बतलानी है।'' इसीलिये मैं अन्दर गया और मैंने भाऊजी से कहा, ''ट्रस्ट के कार्य से मेहेरनाथ जल्दी ही जिलाधिकारी कार्यालय जाने वाले हैं और आपसे दिन में बाद में मिलेंगे।'' मैंने तब विनम्रतापूर्वक भाऊजी को सलाह दी, ''आप मुझे सारी सूचनायें क्यों नहीं,

दे देते और दिन में बाद में जब मेहेरनाथ खाली हो जायंगे, मैं उनको बतला दूँगा।'' भाऊजी इससे सहमत हो गये और मैंने सोचा कि समस्या समाप्त हो गई थी।

लेकिन अगले दिन, भाऊजी ने पुनः मुझे मेहेरनाथ के पास जाने और उसे बुलाने के लिये कहा। मैंने अनुभव किया कि मैं फिर से जाल में फंस गया था। मैं गया और मैंने मेहेरनाथ पूरी परिस्थिति के विषय में सूचित किया और उन्हें यह भी बतलाया कि मैं उन्हें कैसे बचा रहा था, लेकिन भाऊजी ने आज फिर से उनको बुलाने के लिये कहा और यदि वह प्रतिदिन ऐसा करते रहेंगे तो यही अच्छा होगा कि वह (मेहेरनाथ) आये और कम से कम एक बार भाऊजी से थोड़ी देर के लिये मिल लें। मेहेरनाथ मेरी सलाह को मानने के अनिच्छुक थे और उन्होंने मुझसे कहा कि मैं अलग–अलग बहाने बनाता रहूँ।

क्योंकि मेहेरनाथ विभिन्न सरकारी विभागों में उन कई विकास योजनाओं के सम्बन्ध में कार्य करते थे जिनको ट्रस्ट ने लिया था, मैं मूलरूप में भाऊजी से वही बहाने बनाता था लेकिन हर बार एक अलग सरकारी विभाग का उल्लेख करता था और उन्हें आश्वासन देता था कि जब मेहेरनाथ वापस आयंगे, मैं उन्हें सूचनायें बतला दूँगा। इसलिये यदि एक दिन मैं उनको (भाऊजी को) यह बतलाता था कि मेहेरनाथ को पी डब्लू डी (सार्वजनिक निर्माण विभाग) सड़कों के सम्बन्ध में जाना था, तो दूसरे अवसर पर मैं उनसे कहता था कि उसको (मेहेरनाथ को) जमीन सम्बन्धी कुछ कार्य के लिये तहसीलदार के कार्यालय जाना था।

जैसे–जैसे समय गुजरता गया और भाऊजी ने इस तरीके से करना जारी रखा और उनके रूकने के कोई चिन्ह भी नहीं दिखलाई पड़ रहे थे, बहाने बनाते–बनाते थक गया था। मैं नहीं जानता था कि उनको (भाऊजी को) क्या बतलाऊँ। इसलिये एक दिन जब भाऊजी ने मुझसे मेहेरनाथ को बुलाने के लिये कहा, मैंने उनसे बहाना किया, ''भाऊजी, ट्रस्ट का इतना अधिक कार्य है जिसके लिये विभिन्न सरकारी इकाईयों में अनुमति लेने के लिये किसी न किसी को मिलना पड़ता है और जैसा कि आप जानते हैं कि आपको भी कई बार जाना पड़ता था जब कि केवल एक अनुमति प्राप्त करने में कभी–कभी महीनों लग जाते थे, इसलिये मेहेरनाथ को प्रतिदिन किसी न किसी पदाधिकारी से मिलने जाना होता है। यदि वह ऐसा नहीं करते, तो कार्य पूरा न होगा। इसके अतिरिक्त मैं उन्हें सूचनायें बतलाता रहता हूँ।''

भाऊजी ने उत्तर दिया, ''उसे तब भी आने का प्रयत्न करना चाहिये, क्योंकि मैं केवल उसे सूचनायें ही न दूँगा बल्कि वह जो कुछ भी मुझसे प्राप्त करेगा वह पूर्णतया अलग होगा। कोई भी व्यक्ति तुम्हें कानूनी सलाह दे सकता है। यहाँ तक कि कोई तुम्हें आध्यात्मिक वक्तव्य भी दे सकता हैं। कोई भी व्यक्ति पुस्तकें पढ़ सकता है और तब तुम्हें आध्यात्मिक विषयों पर सूचनायें दे सकता है। लेकिन क्या उस व्यक्ति को सत्य का अनुभव हैं? तुलनात्मक दृष्टि से यह पूर्णतया उस बात से भिन्न है जो कि तुम किसी संसारिक व्यक्ति से सुनते हो और वही बात तुम उन व्यक्तियों से सुनते हों जिन्होंने सत्य के साथ जिन्दगी बिताई है और उसका प्रत्यक्ष अनुभव किया हैं।'' इसके साथ ही भाऊजी ने इस मामले को बन्द कर दिया और मुझसे फिर कभी भी मेहेरनाथ को बुलाने के लिये नहीं कहा।

मैंने भाऊजी के शब्दों पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया और स्पष्ट कहूँ तो वह (भाऊजी) जो कुछ कहने का प्रयास कर रहे थे, उसे न तो मैं समझ सका और न ही उसके महत्व को ग्रहण कर सका। मैंने वर्षों तक भाऊजी को बारम्बार इसे कहते हुए सुना है,''किसी सांसारिक व्यक्ति द्वारा सुनी हुई वही बात उन लोगों के शब्दों में सुनी हुई बात से पूर्णतया भिन्न होती है जिन्होंने सत्य का अनुभव किया है।''

वर्षों बाद मुझे समझ आया जो भाऊजी कहने का प्रयत्न कर रहे थे जब मैंने 'मेहेर प्रभु' (Lord Meher) नामक पुस्तक पढ़ी और जब मैंने बाबा के उन शब्दों को पढ़ा जहाँ वह कहते हैं, ''मेरे शब्द और सन्देश एक आध्यात्मिक शक्ति ले जाते हैं जिसे मैं पाठक तक पहुँचाता हूँ भले ही वह उन्हें न समझता हो।'' बाबा अपने नजदीकी प्रेमियों से भी ईश्वर वाणी पुस्तक पढ़ने के लिये कहते थे भले ही वे इसे न समझें और उन लोगों को भी जो अशिक्षित हैं और पढ़ नहीं सकते, उन्होंने (बाबा ने) उनको भी कहा है कि वे दूसरों से इसे अपने लिये पढ़वाकर सुनें। तब देखने पर मैंने थोड़ा अनुभव किया कि बाबा अपने औजारों के द्वारा, अपनी मण्डली के रूप में, अब वर्तमान क्षण में भी वही कर रहे थे जैसा कि उन्होंने (बाबा ने) तब किया था जब वह भौतिक शरीर में थे।

मुझे याद है कि कई अवसरों पर मैं उन पाश्चात्य प्रेमियों से मिलता था जो कि भाऊजी के भाषण में उपस्थित रहते थे जबकि वह भारतीयों के लाभ के लिये हिन्दी में बोल रहे होते थे। जब मैंने उनसे पूँछा कि वे क्यों उनके भाषण में उपस्थित रहते थे जब वे भाषा को समझ नहीं सकते थे, उन्होंने उत्तर दिया,

''हम उनसे (भाऊजी से) जो प्राप्त करते हैं वह शब्दों के द्वारा नहीं है। यह उनके (भाऊजी के) अस्तित्व से बाहर प्रवाहित होता है और हमारे हृदयों में भर जाता है। इसका ही हम सबसे अधिक आनन्द लेते हैं। मेरे लिये यह उस बात का पुष्टीकरण था जो मेरा हृदय हमेशा से जानता था कि बाबा अभी भी अपनी मण्डली के द्वारा उसी तरह अपना कार्य कर रहे हैं जैसे वह भौतिक शरीर में हों।

चाहना और उनका होना

मण्डली हाल में, तीर्थयात्री बहुधा अपने अनुभव बतलाते थे कि वे कैसे बाबा के सम्पर्क में आये थे। एरच उन्हें ऐसा करने के लिये प्रोत्साहित करते थे। कई तीर्थयात्री बहुधा अपने अनुभव बतलाते थे कि कैसे उन्होंने कल्पना में बाबा को देखा जहाँ बाबा उनको ईश्वर के विभिन्न रूपों में जिनकी वे पूजा करते थे, दिखलाई दिये। एक अवसर पर, जब एक तीर्थयात्री ने अपना अनुभव बतलाना समाप्त किया, एरच ने कहा, ''ऐसा कैसे होता है कि तुम लोगों को ये सब अनुभव होते हैं जबकि हम मण्डली जनों को कोई भी ऐसे अनुभव नहीं होते हैं?'' जब एरच ने यह पूँछा तो दूसरे तीर्थयात्री ने उनसे पूँछा, ''क्या आप हमें इस प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं?''

एरच ने बहुत धीरे से उत्तर दिया, ''यह तुम्हारे हृदय की चाह (लालसा) है जो तुम्हारी जिन्दगी में उनकी उपस्थिति को आमन्त्रित करती है। उन लोगों को जिनको ऐसे अनुभव हुए हैं, उन्हें इसकी चाह थी और इसी कारण से उन्हें ये अनुभव हुए। हम कैसे उनकी (बाबा की) चाह कर सकते थे क्योंकि वह हमेशा से हमारे पास थे? वह हमारी जिन्दगी में कभी भी अनुपस्थित नहीं थे। तुम केवल उस एक लक्ष्य या एक व्यक्ति की चाह करते हो जब वह तुम्हारी जिन्दगी में न हो। हम बाबा के साथ रहते थे और उनकी उपस्थिति का हमारी जिन्दगी पर आधिपत्य था। बाबा के शरीर छोड़ने के बाद भी, उनकी जबरदस्त उपस्थिति हमारे द्वारा निरन्तर अनुभव की जाती थी। हमने कभी एक क्षण के लिये भी उनको अनुपस्थित नहीं पाया। क्योंकि वहाँ कोई पृथकता नहीं थी, वहाँ कोई चाह नहीं थी। इसलिये हमें उनको देखने के कोई अनुभव नहीं होते जैसे बाबा प्रेमियों को होते हैं। तीर्थयात्रियों को उसकी चाह होती है और यह उनका सौभाग्य है कि वे इसे देखते हैं। यह हमारे भाग्य में नहीं था क्योंकि ऐसी कोई चाह न होने से हमें इन अनुभवों को प्राप्त करने का कोई अवसर ही नहीं था।

एरच काफी समय तक चुप रहे और फिर उन्होंने कहा, ''लेकिन यह हमारे

भाग्य में था कि यद्यपि हमें बाबा की (उनकी) चाह नहीं थी, हम उनके थे। तीर्थयात्रियों ने चाह की लेकिन हम उनके थे और यही हमारा सौभाग्य था क्योंकि हम पहले से ही उनके थे और उनसे जुड़े थे। हमारी जिन्दगी अभावों और परेशानी की जिन्दगी थी। उन्होंने हमको असली अनुभव दिया जिसे वह केवल कुछ चुने हुए लोगों को देते हैं। यह परेशानी और कष्ट हमारा भाग्य था क्योंकि हम उनके थे। मण्डली पहले से ही उनकी थी।''

प्रेम की शक्ति

एक अवसर पर, मैं एक अन्तेवासी से परेशान था जो निरन्तर मेरे कार्य में बाधायें उत्पन्न कर रहा था। मैंने उसे समझाने का प्रयत्न किया लेकिन क्योंकि उसने इस पर ध्यान नहीं दिया, मैं अपने आपे से बाहर हो गया और उस पर फट पड़ा। एरच संयोगवश इसे दूर से देख रहे थे लेकिन उन्होंने कुछ नहीं कहा। दिन में बाद में, जब मैं ट्रस्ट कार्यालय में उनके साथ चाय पी रहा था, उन्होंने मुझसे इस विषय में पूँछा, ''तुम इतने क्रोधित क्यों हो जाते हो ? जब तुम क्रोधित होते हो तुम रूखाई से बोलते हो और अप्रिय बातें कहते हो। तुम इस तरीके से क्यों बोलते हो? तुम वही बातें प्रेम से क्यों नहीं बोलते? तुम रूखेपन से व्यवहार क्यों करते हो ?''

मैंने यह कहकर अपने कार्यों की सफाई दी, ''मैंने उसे चेतवानी दी थी; मैंने प्रेमपूर्ण और तर्क संगत होने का प्रयास किया था लेकिन उसने नहीं सुना, इसलिये मैंने वही किया जो मुझे करना था। नहीं तो वह मेरे कार्यो में सभी प्रकार की रूकावटें डाल रहा था।''

एरच थोड़ी देर चुप रहे और तब उन्होंने विनम्रता पूर्वक कहा, ''एक चीज याद रखो, अशिष्टता के लिये कोई क्षमा नहीं है। इसकी सफाई देने का प्रयत्न मत करो।'' मैंने यह कहते हुए ऐतराज करना शुरू किया, ''ऐसी स्थिति में मैं और क्या कर सकता था ?'' एरच ने उत्तर दिया, ''समाधान खोजो और तुम्हें हजारों मिलेंगे; बहाने खोजो, तुम्हें वह भी हजारों मिलेंगे। पसन्द पूर्णतया तुम्हारी है कि तुम क्या खोजते हो।'' न जाने क्यों एरच ने उस क्षण जो कहा, वह इतना शक्तिशाली था कि वह मेरे मन और हृदय में प्रवेश कर गया।

यद्यपि मैं अभी भी अपना आपा खो देता था और अभद्रता से बात करता था, मैं तत्काल एरच के कथन के प्रति सचेत हो जाता था, ''अशिष्टता के लिये कोई

क्षमा नहीं है।'' जैसे ही मैं इन शब्दों को याद करता था, मैं सचेत होकर दूसरे व्यक्ति से क्षमा माँगने का प्रयास करता था। यदि मैं सही भी होता था, तो मैं यह कहकर क्षमा याचना करता था, ''कृपया मुझे क्षमा कर दें क्योंकि मैंने रूखेपन से बात की।'' मैंने देखा कि इस सरल कार्य ने मेरी चिढ़ को (क्रोध को) न केवल मेरे हृदय से बल्कि दूसरे व्यक्ति के हृदय से भी दूर कर दिया। इन छोटी–छोटी जीत से प्रोत्साहित होकर, मैं एरच को ऐसे मामलों में और अधिक मार्गदर्शन देने के लिये परेशान करने लगा जिससे मैं अपने आन्तरिक उग्र अस्तित्व को बदलने के लिये व्यावहारिक स्तर पर उन्हे अपना सकूँ।

एक दिन, जब एरच थोड़े खाली थे, उन्होंने मुझसे कहा, ''प्रत्येक के अन्दर बाबा को देखने का प्रयास करो। वह सृजनकर्त्ता हैं, जिसका अर्थ है कि प्रत्येक अस्तित्व, प्रत्येक व्यक्तित्व के केन्द्र में तुम उन्हें पाओगे। यह बाबा है जो उन संस्कारों के गढ़े हुए आकार में, जो कि बूँद को पैदा करते हैं, घिरे हुए और जकड़े हुए हैं जिन्हें हम उस व्यक्ति के व्यक्तित्व के रूप में पहचानते हैं। ये व्यक्तित्व व्यक्तिगत रूप से वही करते हैं जैसा कि उन संस्कारों के गढ़े हुए आकार उन्हें करने के लिये बाध्य करते हैं। यदि तुम उस व्यक्तित्व को देखो और केवल उस स्तर पर उससे बातचीत करो, तो वहाँ भिन्नता उत्पन्न होगी और ऐसे अवसर आयेंगे कि तुम चिढ़ जाओगे और क्रोधित हो जाओगे। इस संस्कारों द्वारा गढ़े हुए आकार को अनदेखा करने का प्रयास करो जिसका आयोजन एक निश्चित तरीके से कार्य करने के लिये किया गया है और बाबा को देखो जो उस गढ़े हुए आकार के अन्दर जाल में फंसे हुए हैं।

''वास्तव में, यह बाबा हैं जो संस्कारों के प्रभाव से गढ़े हुए प्रत्येक आकार के अन्दर जाल में जकड़े हुए हैं और उसे तोड़कर मुक्त होने का प्रयास कर रहे हैं। इसे देखने का प्रयास करो। अपने व्यवहार और मन के ढाँचे को विकसित करो जो इसे पहचाने और इसे याद रखे। एक समय ऐसा आयेगा जब तुम इसे महसूस करने लगोगे। जब तुम इसे महसूस करना प्रारम्भ कर दोगे, तुम्हारी सभी अप्रसन्नता दूर हो जायगी। केवल यही समझ तुम्हें उस व्यक्तित्व को अनदेखा करने में और प्रत्येक हृदय के अन्दर बाबा से प्रेम करने में तुम्हारी सहायता करेगी।

''इसलिये, जब तुम क्रोधित होते हो, इस जानकारी से अपने को शान्त करो। उस व्यक्तित्व के अन्दर बाबा को देखने का प्रयास करो जिस पर तुमने क्रोध का

अनुभव किया था। यह न केवल क्रोध से तुम्हें छुटकारा दिलाने में तुम्हारी सहायता करेगा बल्कि तुम क्षमा करने में, भूलने में और तब उस व्यक्ति का प्रेमपूर्ण आलिंगन करने में समर्थ होगे; क्योंकि वास्तव में यह बाबा हैं जिनका तुम उस क्षण आलिंगन कर रहे हो। इस पर कार्य करते रहो। यह ठीक है कि तुम्हें क्रोध आता है, लेकिन उसमें सुधार हेतु कार्य करो जिससे कि तुम बाद में क्षमा करना, भूलना और उस दूसरे व्यक्ति में बाबा के प्रति प्रेम करना सीख सको। अपने हृदय में अप्रसन्नता और क्रोध को लेकर दूर मत चले जाओ क्योंकि ये परिस्थितियाँ आने वाली तारीख में तुम्हारा पीछा करेंगी और तुम्हें जकड़ लेंगी।

एरच का दिया हुआ यह समाधान बहुत सरल था, लेकिन फिर भी मेरे मन और हृदय और मेरी अपनी उग्रता के सांसारिक रूपरेखा की आन्तरिक बाधायें मुझे अपने विभिन्न मित्रों, परिवार जन और अन्तेवासियों के प्रति अपने सम्बन्धों के मामले को सुलझाने से मुझे रोक रहीं थीं। जैसा एरच ने कहा था, ''जब तक तुम उसे क्षमा न करोगे और भूलोगे नहीं, तुम उस व्यक्ति के प्रति प्रेम पैदा नहीं कर सकते।'' सभी आघात जो कि वर्षों से मेरे दुख का कारण थे, मेरी स्मृतियों में संचित थे। मैं उनको नहीं भूला था क्योंकि मैंने उनको अपने हृदय से क्षमा नहीं किया था, और इतने वर्षों तक मेहेराबाद में रहने के बाद भी मेरे परिवार के साथ मेरे सम्बन्ध उतने ही खराब थे जैसे कि हमेशा से थे। यदि मैं कुछ शान्ति पाना चाहता था, तो एरच की सलाह पर कार्य करके उस पथ पर चलने का मेरे लिये यही समय था।

काफी विचित्ररूप से, मैंने इसका प्रयोग अपने मित्रों पर नहीं किया, इसके स्थान पर मैंने इसे कुत्तों पर प्रयोग करने का प्रयास किया जिनसे मैं प्यार करता था। बच्चे के रूप में, मैं कुत्तों से न केवल खेलता था, बल्कि उनसे लड़ता भी था। यदि कुत्ते के साथ खेलते समय वह क्रोधित हो जाता था और मुझ पर आक्रमण करने का प्रयास करता था, तो जैसे ही कुत्ता काटने के लिये अपना जबड़ा खोलता था, मैं अपना दाहिना हाथ सीधे उसके मुँह में डालकर झपटकर उसका ऊपरी जबड़ा पकड लेता था और अपने बायें हाथ से ऊपर से उसे शिकन्जे में कस लेता था। अपनी पूरी ताकत लगाकर मैं जितनी कठोरता से दबाव डाल सकता था, डालता था। यह कुत्ते की ताकत को नष्ट कर देता था और बहुधा वह जोर–जोर से चिल्लाने लगता था। मैं अपनी पकड़ को तब तक रखता था जब तक कि उसकी उग्रता रहती थी। यदि कुत्ता शक्तिशाली और

प्रतिरोध करने वाला होता था, तो मैं उसको फर्श पर पटक देता था और अभी भी उसके ऊपर के जबड़े को कसकर पकड़े हुए ही उसे अपने शरीर के बोझ के तले दबा लेता था। कुछ ही मिनटों में, कुत्ता हार मान लेता था और चीखने—चिल्लाने लगता था। जब मैं उसे छोड़ता था तो वह भाग जाता था। उसके बाद वह मुझ पर पुनः आक्रमण नहीं करता था।

मेरा विश्वास था कि उग्रता को उससे अधिक उग्रता के साथ दबाया जा सकता था और जब जिन्दगी में बाधायें प्रेम और समझाने से दूर न की जा सकती हों तो केवल विकल्प आक्रमण ही था। वास्तव में, इससे कार्य हमेशा और शीघ्रता से भी हो जाता था। से लड़ने की प्रक्रिया में बहुधा वे मुझे काट भी लेते थे लेकिन मुझे कभी भी इसका भय न था।

मैंने देखा था कि 'तुम्हारी भावनाओं को समझते थे। यदि कोई व्यक्ति से डरता था, वे इसे समझ जाते थे और उस व्यक्ति पर आक्रमण कर देते थे। मैंने बहुधा देखा था कि जब कोई सड़क पर भटकता हुआ भौंकते हुए मेरी ओर आता था, तो यदि मैं खड़ा रहता था और कुत्ते का सामना करता था, उससे लड़ने को तैयार रहता था, किसी तरह मेरे आक्रमण को समझ जाता था और अपने रास्ते में ही रूककर वापस चला जाता था। मैं समझ गया कि यदि भय और आक्रमण को समझ सकता था, तब वह प्रेम को भी समझ सकता था यदि मैं उस क्षण उसे उत्पन्न करता।

मैंने एरच की सलाह को सबसे पहले कुत्तों पर ही प्रयोग करने का निश्चय किया। मेहेराबाद की सड़क पर स्थानीय व्यक्तियों में से किसी का एक डरावना कुत्ता था। जब कोई साईकिल या मोटर साईकिल वहाँसे गुजरती थी, वह झपटता हुआ आकर धावा बोल देता था। बहुधा लोग उससे डरकर गिर पड़ते थे या वह उनको काट लेता था। दूसरे लोग किसी तरह वाहन को तेजी से दौड़ा लेते थे। मैं अपनी मोटर साईकिल रोक देता था, उससे उतरता था और कुत्ते का सामना करता था। कुत्ता रास्ते में रूककर दूर से ही भौंकता था और फिर भाग जाता था। यह याद करके कि एरच ने परिवर्तनों पर जोर देते हुए कहा था कि यदि कोई अपने अस्तित्व में ऐसी भावनायें पैदा करेगा तो कोई भी व्यक्ति अपने हृदय, शरीर और मन पर उसका अनुभव करेगा, मैंने निश्चय किया कि मैं अपना तरीका बदलूँगा और कुत्तों के लिये अपने हृदय में प्रेम पैदा करूँगा।

वह कहते थे, ''प्रेम बिना शर्त के, दूसरे के व्यक्तित्व की परवाह किये बिना होना चाहिये। तुम उससे प्रेम करते रहो, कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह क्या करता है। उससे तब भी प्रेम करो जब वह उस क्षण तुम्हें पीड़ा दे रहा हो। इसी तरह से उससे प्रेम करते रहो और भय के साथ उस व्यक्ति के आक्रमण पर प्रतिक्रिया मत दो। यदि तुम ऐसा कर लेते हो, तब तुम आक्रमण को प्रेमपूर्वक पराजित कर दोगे और तुम दूसरे व्यक्ति पर विजय प्राप्त कर लोगे।

''यह भी याद रखो कि यदि तुम ऐसा प्रेम अपने हृदय में उत्पन्न कर लेते हो, यदि तुम्हारी भावना सच्ची है, तुम्हारा मन प्रसन्नता का अनुभव करेगा, तुम्हारा चेहरा एक आनन्ददायी मुस्कुराहट के साथ प्रसन्नता को प्रतिबिम्बित करेगा और तुम्हारा पूरा अस्तित्व तनावरहित होगा। यह भावना पैदा करो और, इसे आक्रमण के समय बनाये रखो और तुम इसे पराजित कर दोगे।''

इसलिये अगली बार जब कुत्ता मुझ पर धावा बोलने के लिये आया, मैं उसके स्वागत में दोनों बाहें फैलाकर उसका सामना करता हुआ खड़ा रहा। अपने हृदय, शरीर और पूरे अस्तित्व में मैंने कुत्ते के लिये प्रेम उत्पन्न किया। मैं बारम्बार कहता रहा, ''आज मैं तुम्हें प्यार करने जा रहा हूँ चाहे तुम कुछ भी करो। यदि तुम मुझे काट भी लेते हो, तो भी मैं तुमसे प्रेम करता रहूँगा। कुत्ता मेरे पर धावा बोलने के लिये आया। उसने अपने जबड़े खोले और वह मेरे हाथों पर शिकन्जा कसने के लिये तैयार था। मैंने उस पर प्रेम की बौछार करना जारी रखा। आगे जो कुछ हुआ वह अविश्वसनीय रूप से विचित्र लगभग एक चमत्कार ही था और वह प्रेम की शक्ति को प्रगट करता है।

कुत्ते ने अपना जबड़ा नीचे कर लिया और कोमलतापूर्वक मेरे हाथों को जकड़ लिया; पर उसने मुझे काटा नहीं। वह पीछे हट गया और तब मेरे हाथों को चाटने लगा (यह सबसे अधिक डरावना कुत्ता था जिससे प्रत्येक व्यक्ति डरता था। पूरे अनुभव से मैं अभिभूत हो गया।

मैंने इस सम्बन्ध में अपने मित्रों को बतलाया और जब मैं सड़क पर चलता था या टहल रहा होता था यदि कोई कुत्ता भौंकते हुए या धावा बोलने के लिये भटकता हुआ आ जाता था, मैं उनको प्रेम की शक्ति का प्रदर्शन करके दिखलाता था। मैंने इसको अन्तेवासियों के साथ आजमाने का प्रयत्न किया जिनसे मैं चिढ़ता था और मैंने पाया कि इसने वहाँ पर भी असर किया। वे लोग जो मेरी आलोचना करते थे और मेरे लिये बाधायें उत्पन्न करते थे, मेरे सबसे

अच्छे दोस्त बन गये।

यद्यपि अपने प्रारम्भिक प्रयोगों में मुझे सफलता मिली, फिर भी मैं अपने परिवार के साथ अपने सम्बन्धों के मामले को सुलझाने में असमर्थ रहा। क्षमा कर देना और भूल जाना आसान होता, लेकिन वे अभी भी वही चीजें कर रहे थे जिनसे मुझे आघात पहुँचता था और दुख होता था। वे अभी भी मुझ पर दबाव डाल रहे थे कि मैं मण्डली के साथ रहना, उनके साथ अपनी जिन्दगी को छोड़ दूँ और बहुधा वे इस विषय पर मुझे ताने मारते रहते थे। मैंने उनके साथ बातचीत कम से कम रखी। वैसे भी मण्डली के साथ मेरी व्यस्त जिन्दगी मुझे इस बात की अनुमति नहीं देती थी कि मैं अपने परिवार के साथ आराम से बात कर सकूँ। मैंने अपनी एकाग्रता मेहेर बाबा पर और मण्डली के साथ जिन्दगी जीने में बनाये रखी, दूसरे मामलों को इस आशा से अलग रख दिया कि वे निपट जायेंगे। पर ऐसा नहीं होना था।

सच में एरच के शब्दों में, अनसुलझे मामलों ने वर्ष २००० में मुझे जकड़ लिया जब मैं अपने खराब स्वास्थ्य के कारण अपने परिवार की गोद में वापस फेंक दिया गया। मैं उन पर पूरी तरह निर्भर हो गया था क्योंकि मैं सरल से सरल शारीरिक कार्य को भी बिना सहायता के नहीं कर सकता था। प्रतिदिन मित्रों और अपने परिवार से जो ताने मुझे सुनने पड़ते थे, जो मेरे स्वास्थ्य के खराब होने के लिये मेहेराबाद में रहने के मेरे निर्णय को दोष देते थे, उनसे अत्यधिक मानसिक कष्ट होता था। मैंने मण्डली के साथ अपनी जिन्दगी में वापस लौटने का प्रयास अपने ऐसे खराब स्वास्थ्य में भी किया, लेकिन उससे कोई लाभ नहीं हुआ। चीजें मेरे लिये खराब, केवल और खराब होती गई।

मैंने यह आशा करते हुए कि शायद कोई बाबा प्रेमी साथी इस बुरे पहलू में मेरी सहायता कर सके, विवाह करने का निर्णय लिया। लेकिन विवाह के बाद भी ऐसा नहीं हुआ। जब मेरे सीमित विकल्पों के सभी दरवाजे बन्द हो गये, तब मेरे पास केवल एक ही विकल्प बचा था और वह उनको (बाबा की) याद करने के मार्ग पर चलना था। चिन्ता और उदासी से पीड़ित, मैं सन्देहों से भरा हुआ था कि इससे इन सभी मामलों को सुलझाने में वास्तव में सहायता मिलेगी। स्थिति भले ही बेहतर हो या अधिक खराब हो जाये, मेरे पास केवल यही एक विकल्प था, क्योंकि अन्य सभी विकल्प खतम हो चुके थे।

एरच के शब्द मेरे मन में आये, ''उनकी (बाबा की) ओर जाने वाली

पगडण्डी संकीर्ण पगडण्डी कहलाती है। इस मार्ग पर उनके अलावा तुम्हारा कोई साथी नहीं हो सकता। तुम्हें सारा सामान पीछे छोड़ना होगा यदि तुम इस पगडण्डी में प्रवेश करना चाहते हो। यह तुम्हारी यात्रा है और तुम्हारे प्रियतम की ओर केवल तुम्हारी यात्रा है। तुम्हारे साथ अन्य कोई नहीं हो सकता। प्रत्येक आत्मा को यह यात्रा व्यक्तिगतरूप से करनी होती है।'' उनकी याद और सन्देशों की ओर जो मण्डली ने हमें वर्षों तक दिये थे, अधिक से अधिक भड़कर देखने पर, मैंने पाया कि एक निश्चित आन्तरिक परिवर्तन मेरे अन्दर हो रहा था जिसने उन परिस्थितियों के द्वारा पराजित न होकर उनको संभालने में मेरी सहायता की। वास्तव में, जैसे–जैसे समय बीतता गया, चीजें मेरे लिये वदतर होती गई, लेकिन तब बाबा की उपस्तिथि भी मेरी जिन्दगी में कई गुना बढ़ गई थी और इनको संभालने में मेरी सहायता की।

मैं अपने दिन का अधिकांश भाग बाबा को याद करने में, अपने हृदय में उनसे बातचीत करके व्यतीत करता था और मैंने पाया कि उत्तर मेरे अस्तित्व के अन्दर से आते थे। मैं अभी भी अपने परिवार के साथ अपने मामलों को सुलझाने में असमर्थ था और निराश होकर मार्गदर्शन के लिये मैं अपनी इस आन्तरिक बातचीत की ओर मुड़ गया। ऐसे अवसरों पर मेरे हृदय द्वारा हमेशा दो सन्देश मिलते थे। एक बाबा का था जिसमें वह कहते हैं, ''दुनियाँ को बदलने का प्रयत्न मत करो। स्वयं को बदलो और पूरी दुनियां तुम्हारे साथ बदल जायगी।'' दूसरा एक सन्देश एरच का था, ''बिना शर्त प्रेम करने का अर्थ किसी व्यक्ति को, इसके बावजूद कि तुम्हारे साथ क्या करता है, प्रेम करना हैं। यह तुम्हारे भयंकर से भयंकर दुश्मन पर विजय पा सकता है।''

इसलिये अपने दुख आघात और अपने मिथ्या अहम् को अलग रखकर मैं एक सुबह उठा और अपने हृदय में बिना शर्त प्रेम उत्पन्न करके, अपने हृदय और मन में बारम्बार यह कहते हुए कि मैं आज उन लोगों को प्यार करूँगा, चाहे वे कुछ भी करे या कहें, अपने परिवार के सभी सदस्यों के पास जाकर मैंने उनका आलिंगन किया। मैंने ऐसा ही हर सुबह किया और कुछ ही दिनों में मुझे अन्तर दिखलाई देना प्रारम्भ हो गया। मेरा हृदय अन्त में निरोग होने लगा। सभी तथा कथित मामले धीरे–धीरे सुलझने लगे।

कभी–कभी क्रोध की ज्वाला उठने लगती थी लेकिन मण्डली के दिये गये सलाह पर चलकर तुरन्त ही मैं उसमें सुधार कर लेता था। मैंने पाया कि हर बार

इसने असर दिखाया जब भी मैंने इसे भावनात्मक रूप से किया। प्रेम की ऐसी ही शक्ति थी। इसने मेरे लिये कार्य किया। ऐसी मेरी धारणा और विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति जो इस मार्ग पर चलता है, वह पायेगा कि यह हमेशा अपना कार्य करता है।

मण्डली बेकार शब्द नहीं कह रही थी वह हमें सलाह देती थी जैसा कि हम सोचते एवं मानते हैं। उन्होंने बाबा के शब्दों की सत्यता को जिया था और अनुभव किया था। मैंने अपने कुछ बाबा प्रेमी मित्रों को इस सूचना में सहभागी बनाया जिनके काफी समय से सम्बन्धों के मामले थे। उन्होंने कुछ दिनों में ही मुझे यह कहने के लिये फोन किया कि यह जादू के समान कार्य करता था। मुझे आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि इसे कार्य करना ही था। यह आखिरकार ईश्वर के शब्द थे और यह उनका अपने उन बच्चों से वादा था जो उस मार्ग पर चलते थे।

जिम्मेदारी का अर्थ

एक तीर्थयात्री ने एक बार एरच से जिम्मेदारी और सांसारिक कर्त्तव्यों के बीच अन्तर समझाने के लिये कहा। ''बाबा की इच्छा '' के प्रथम दो बिन्दुओं के सन्दर्भ में जहाँ बाबा पहले बिन्दु में अपनी जिम्मेदारियों से जी मत चुराओ और दूसरे बिन्दु में कहते हैं, ''अपने सांसारिक कर्त्तव्यों का ईमानदारी से पालन करो।'' तीर्थयात्री अन्तर जानना चाहता था।

एरच ने उत्तर दिया, ''दोनों में जमीन–आसामान का अन्तर है। सांसारिक कर्त्तव्य से तात्पर्य निश्चित कार्यों से है जिन्हें प्रत्येक को दुनिया में अपने कर्त्तव्य के एक भाग के रूप में करना चाहिये। इसमें नियुक्ति कर्त्ता, कर्मचारी, परिवार के कर्त्तव्य शामिल हैं जब कि जिम्मेदारी व्यवहार या मन का ढांचा (रूपरेखा) है जिनके साथ कार्य किया जाता है।''

एरच थोड़ी देर रुके और तब यह कहते हुए आगे बढ़े, ''शब्द जिम्मेदारी में एक विशालता और गहराई है जो कि, कुछ मायने में, अपने लक्ष्य में अनन्त है। यह प्रत्येक चीज पर लागू होता है जिसे तुम पूरे दिन में करते हो। जिम्मेदारी से किसी कार्य को करना उस कार्य से पूर्णतया भिन्न है जिसे हम अपना वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिये करते हैं। इसलिये किसी को भी बाबा की इच्छा के अनुसार जिम्मेदार तरीके से किसी खास कार्य को करने के लिये क्या करना

चाहिये? यह बहुत आसान है। इसको इस तरीके से करो जैसे तुम इसे बाबा के लिये कर रहे हो। पूरे दिन तुम वह सब कुछ करो जो करते हो, पर इस तरह करो जैसे कि तुम बाबा के लिये कर रहे हो।

''वहाँ जागरूकता होनी चाहिये कि यह उनके लिये किया जा रहा है और तुम स्वयंचलित ढंग से इसमें अपनी पूर्ण क्षमता लगा दोगे क्योंकि तुम इसे अब अपने प्रियतम को प्रसन्न करने के लिये कर रहे हो। कार्य छोटा हो या बड़ा, यह महत्वपूर्ण नहीं है। यहाँ तक कि जब तुम फर्श पर झाडू लगाते हो, अपने प्रियतम की खुशी के प्रति सचेत रहो। वह कार्य उनके लिये करने का प्रयत्न करो। तुम्हारे प्रत्येक कार्य में, यह प्रेम की वृद्धि, सामन्जस्य और अहम् के मिथ्या दावों के प्रति जागरूकता प्रतिबिम्बित होना चाहिये। एक जिम्मेदार व्यक्ति वह है जो प्रत्येक कार्य को ऐसे करता है जैसे कि वह उसे ईश्वर के लिये कर रहा हो। यह प्रत्येक की जिम्मेदारी है कि वह यह दृष्टिकोण और मन का ढाँचा ऐसा बनाये जो कि किसी को एक जिम्मेदार व्यक्ति बनाते हैं।''

एक बार जब मैं बम्बई सेण्टर पर था और उपस्थित प्रेमियों का समूह 'बाबा की इच्छा' पर वार्तालाप कर रहा था, तब मैंने साइरस खम्बाटा को कुछ बहुत ही सुन्दर कहते हुए सुना उसने कहा, ''मेरी राय में शब्द 'जिम्मेदारी' का एक अतिरिक्त अर्थ है जिसका दिन प्रतिदिन के केवल सांसारिक कर्त्तव्यों के करने की तुलना में एक और अधिक श्रेष्ठ आध्यात्मिक महत्व का पहलू है। यह संकेत करता है कि प्रत्येक जीवात्मा बूँद की जिम्मेदारी सागर में समा जाना है–ईश्वर के साथ एकरूपता का अनुभव करना है–जो कि सम्पूर्ण सृष्टि का उद्देश्य हैं।''

उसने बाबा के कथन को उद्घृत करके कहना जारी रखा ''जिन्दगी का उद्देश्य ईश्वर से प्रेम करना है और जिन्दगी का लक्ष्य ईश्वर के साथ एक होना है।'' ऐसा ही है। अन्य सब कुछ गौण है। उसने सद्गुरू रामकृष्ण परमहंस के कथन का उदाहरण दिया जिनके लिये यह माना जाता है कि उन्होंने मेहेरबाबा के वर्तमान अवतरण की सूचना दी थी, ''उन्होंने बिना किसी उद्देश्य के जन्म लिया है जो, मनुष्य रूप में पैदा होने के दुर्लभ सौभाग्य के होते हुए भी, इस जिन्दगी में ईश्वर का अनुभव नहीं किया ।'' इन दोनों कथनों में लक्ष्य को प्राप्त करने पर जोर दिया है जो कि प्रत्येक आत्मा की एकमात्र जिम्मेदारी है।

साइरस ने तब समूह से पूँछा, ''हम आखिरकार किसके लिये जिम्मेदार हैं?'' स्वयं ही प्रश्न का उत्तर देते हुए उसने अन्त में कहा, ''प्रत्येक अपनी असली खुदी के लिये–जो कुछ नहीं है सिर्फ ईश्वर हैं– बाबा है ।''

मुझे याद है जो दूसरी चीज शब्द 'जिम्मेदारी' के विषय में साइरस ने कही थी। उसने शब्द के दो हिस्से किये–प्रत्युत्तर औरं योग्यता और कहा कि यह प्रत्येक व्यक्ति की उस क्षण उस परिस्थिति के विषय में प्रतिक्रिया देने की अपनी योग्यता है। जितना अधिक हम प्रेम से और उनकी याद करके, और ''बाबा को किससे प्रसन्नता होगी उस व्यवहार के द्वारा प्रतिक्रिया करते हैं, उतना ही हम लक्ष्य के करीब आते हैं। यह'' जिम्मेदारी'' से रहने के उस व्यावहारिक पहलू को पूरा करता है जिसका सुझाव पहले ही एरच द्वारा दिया गया था।

अपनी कमजोरियाँ उनको अर्पित करो

मुझे बहुधा आश्चर्य होता है कि असली खजाना पुस्तक मैंने ही क्यों लिखी। वहाँ ऐसे कई अन्तेवासी थे जो मेरी अपेक्षा अधिक पात्र थे, जो अधिक बुद्धि मान थे और मेरी तुलना में उनका सेवाकाल भी कई वर्ष अधिक था। मैं उन पारम्परिक जिज्ञासुओं में से भी एक नहीं था, वास्तव में, मैं किसी भी सन्त के खिलाफ एक आक्रमक विद्रोही था और उनसे घृणा करता था। मुझे धौंस दिखाने वाले लोगों से घृणा थी और मैं उनके साथ कई बार हाथापाई कर चुका था। मैं पुरानी परिपाटी के धर्मों से घृणा करता था और अपने मित्रों के साथ, जो मेरे ही समान निरंकुश विद्रोही विचार धारा के थे, मण्डराता रहता था। मुझे याद है जब मैं मण्डली से पहली बार मिला था, उन्होंने मेरे ऊपर शर्तहीन प्रेम की बौछार की थी जिसने मेरे हृदय को जीत लिया था। उन्होंने मुझसे सम्मान की माँग नहीं की थी लेकिन उनके क्रियाकलापों और सज्जनता ने मुझे उनका सम्मान करने पर मजबूर कर दिया था । वे किसी को परखते नहीं थे और प्रत्येक से प्रेम करते थे, इसका महत्व नहीं था कि वे कौन हैं।

मैं उनकी सेवा करके, अपना सर्वस्व उनको अर्पित करके प्रसन्न था क्योंकि वे बाबा के साकार औजार थे जिन्हें बाबा ने अपने पीछे हमारे लिये छोड़ा था। मैंने अपना प्रेम और सेवा, पूरी शक्ति और कमजोरियों के साथ उनके औजारों के माध्यम से बाबा को अर्पित कर दिया था। इसके बावजूद मेरे पास देने के लिये ज्यादा कुछ नहीं था। वहाँ ऐसे कई अन्तेवासी थे जिन्होंने मेरी अपेक्षा अधिक अर्पण किया था। क्योंकि बाबा ने मेरे जैसे व्यक्ति को असली खजाना पुस्तक दुनियाँ के सामने लाने के लिये माध्यम के रूप में चुना, इसने मुझे उलझन में

डाल दिया था।

हाल ही में, जब मैं फोन पर मेहेरवान जसावाला से बात कर रहा था, तब मैंने उनसे इसका उल्लेख किया और उन्होंने कहा, ''जिस तरह तुमने अपना सर्वस्व, गुणों के साथ–साथ कमजोरी भी उनकी सेवा में अर्पित की, हमेशा मार्ग से हटकर प्रत्येक की सहायता करने की कोशिश की यह गुण ऐसे थे जिसकी बाबा हमेशा प्रशंसा करते थे। तुम हमेशा सहायता करने के इच्छुक रहते थे और कभी भी पीछे नहीं हटते थे।'' मैंने मेहेरवान से कहा, ''लेकिन मैं कमजोरियों से भरा हुआ था और बाबा को अर्पित करने के लिये अच्छाई बहुत थोड़ी सी थी।'' मेहेरवान ने उत्तर दिया, ''लेकिन वह (बाबा) अधिकांशतया कमज़ोरी ही चाहते हैं और तुमने इसे पूर्णरूपेण उनके चरणों में अर्पित कर दिया था और तुम कभी भी न तो पीछे हटे, न ही तुमने बहाने बनाये।''

मेहेरवान के शब्दों ने मुझे वह याद दिला दिया जैसा कि एरच ने कई अवसरों पर कहा था। ''तुम ब्रह्माण्ड के मालिक को क्या दे सकते हो जो उनके पास पहले से नहीं है ? सब कुछ पहले से ही उनका है, इसलिये तुम उन्हें क्या दे सकते हो जो तुम्हारा है और उनके पास नहीं है ? एरच अपने शब्दों को आत्मसात करने में हमें सहायता देने के लिये कुछ देर चुप रहे और तब उन्होंने धीरे–धीरे कहा, ''केवल एक चीज है और वह तुम्हारी कमजोरियाँ हैं। इसलिये उनको अपनी कमजोरियाँ दे दो क्योंकि केवल एक वही चीज है जो उनके पास नहीं है। बाबा ने स्वयं वह बात हमसे कही थी। उन्होंने (बाबा ने) हमको बतलाया था, ''एक चीज है जिसकी मुझमें कमी है। मेरे पास कोई कमजोरी नहीं है। यह ऐसा कुछ है जो कि मेरे प्रेमियों के पास है और मैं चाहता हूँ कि वे इसे मुझको दे दें।''

इससे मुझे कुछ और भी याद आया जो कि मैंने वर्षों पहले स्टीव क्लाइंन् की पुस्तक 'हे प्रियतम' में पढ़ा था। मैं स्टीव को तब नहीं जानता था लेकिन कहानी ने मुझे प्रभावित किया था और मैंने इसे उस डायरी में लिख लिया था जो एरच ने मुझे दी थी। कहानी में जिस तरह प्रेमी ने अपना सर्वस्व अर्पित किया था, उसी तरह अपना सर्वस्व अर्पित करने के प्रयास में मैंने उसे बार–बार पढ़ा था) वर्षों बाद मैंने उसे (स्टीव को) जाना जब वह कम्पाउण्ड में रहता था। उसने मुझे सरकारी पदाधिकारिओं को पत्र टाईप करने में सहायता की थी और मुझे हमेशा और अधिक लिखने के लिये प्रोत्साहित करते हुए बाद में असली

खजाना पुस्तक का सम्पादन किया। स्टीव को इस बारे में बहुत कम जानकारी थी कि उसकी कहानी ने मुझ पर क्या प्रभाव डाला था। मुझे इस पर विश्वास था और इसीलिये मैंने अपनी कमजोरियाँ अर्पित कर दीं। आश्चर्यजनक कारणों से, इससे मेरे प्रभुको प्रसन्नता हुई और उन्होंने असली खजाने के रूप में मुझ पर अपनी कृपा की बौछार की जिसने मुझे मेरे कष्ट के समय सहारा दिया और उनके प्रेम में आगे बढ़ने में मेरी सहायता की।

कहानी निम्नलिखित हैः

जब मैं तुमसे मिलने के लिये अपने अवसर की प्रतीक्षा में एक लम्बी पंक्ति (क्यू) में खड़ा था, मैंने उन उपहारों का पुनः निरीक्षण किया जो मैं लाया था–अपनी सभी खुशियाँ, अपने अधिकांश उत्कृष्ट विचार, व्यापक प्रेम के अपने वे उल्लासित क्षण जो कभी–कभी मुझे अपने अधिपत्य में रखते थे। अपने स्वार्थ के अंधकारमय कार्य मैंने अपने ह्रदय में छुपा कर रख लिये थे। उन्हें छुपाने के लिये नहीं, क्योंकि मैं जानता था कि मैंने जो भी कभी किया था या सोचा था, तुम उस सबको जानते थे, लेकिन सामान्य रूप से मैंने यह इसलिये किया क्योंकि ऐसे कचरे को तुम्हारे चरणों पर रखना उचित नहीं प्रतीत होता था।

अरे, जो मैं लाया था उसे जब तुमने देखा तो तुम कैसे खुश हुए थे। और तब भी, मैंने सोचा कि तुम्हारी एक क्षण की हिचकिचाहट को मैंने पकड़ लिया था, जैसे कि तुम कोई और चीज का इन्तजार कर रहे थे–एक उड़ती हुई दुख की परछाई क्योंकि मेरे पास देने के लिये और कुछ भी नहीं था। मैंने शर्मिन्दगी महसूस की और रोया कि मेरे तुच्छ तरीकों ने ऐसे कुछ ही क्षण उत्पन्न किये थे जिनको मैं गर्वपूर्वक तुम्हारे प्रेम के योग्य और प्रेम के प्रतीक के रूप में तुम्हें दिया।

और जैसे–जैसे लम्बी पंक्ति चलती गई, और प्रत्येक ने अपने सबसे बहुमूल्य उपहार तुम्हें अर्पित किये, तुमने आश्चर्य कृतज्ञता और प्रसन्नता प्रगट की। लेकिन मैंने देखा कि तुम्हारी आँखों में दुख बढ़ गया था। हर समय तुम अपना सिर यहाँ वहाँ घुमा रहे थे जैसे कि तुम किसी को देख रहे हो जो तम्हारी पीड़ा को कम कर सके।

शायद उस छोटे से लड़के ने भी इसे देखा। क्योंकि वह अपना उपहार–निस्स्वार्थ भावना के साथ किया गया एक छोटा सा कार्य–तुम्हारे सामने पहले ही रख चुका था, वह आगे नहीं बढ़ा। और तभी, लगभग अनिच्छा से, अत्यधिक डरते हुए वह तुम्हें सभी झूठ और घृणा और अपने ह्रदय के स्वार्थ

पूर्ण लालसाओं को देकर खाली हो गया।

तुमने उत्सुकतापूर्वक उन्हें झपटकर उठाया जैसे कि वे वही थे जिनका इन्तजार तुम इस पूरे समय कर रहे थे। तुम्हारे चेहरे पर उस समय कैसी चमक थी जब तुम उसके गालों को छूकर दुलार कर रहे थे और यह घोषणा करते हुए उसे अपने पास बिठा लिया था कि उसके उपहार ने तुम्हारे प्रेम को सदा के लिये जीत लिया हैं।

मैं भ्रमित था और लड़का इससे अभिभूत प्रतीत हो रहा था और इस डर से कि कहीं तुम उसका मजाक तो नहीं उड़ा रहे थे, आँसुओं द्वारा बोला ''लेकिन मेरे उपहार तो सबसे कम हैं।'' तुम उसका हाथ पकड़कर उसे एक दरवाजे की ओर ले गये और उसे खोलकर बोले ''यह मेरे खजाने में सबसे कम है, तुमने घोषित किया, ''किसी उपहार की मुझे क्या आवश्यकता है ?'' ''लेकिन तब क्यों'' लड़के ने कहना शुरू किया, अर्पित किये गये उन उपहारों' में मेरे द्वारा दिये गये उपहार ही ऐसी प्रशंसा के पात्र हैं ?''

''देखो,'' तुमने संकेत किया और मैंने देखा कि एक अन्तहीन जुलूस अभी भी आगे बढ़ रहा था, लेकिन इस समय मैंने देखा कि जैसे–जैसे प्रत्येक व्यक्ति अपना उपहार रखता था और चला जाता था, उनके ह्रदयों में कम से कम कोई न कोई छोटा सा अन्धकारमय कोना था जो वे रोके हुए थे।

''मुझे किसी चीज की आवश्यकता नहीं है,'' तुमने लड़के को बतलाया, ''इसलिये मैं जो चाहता हूँ वह यह है कि तुम अपना सबकुछ मुझे दे दो। क्योंकि केवल जब तुम अपना सर्वस्व मुझे दे देते हो, मैं तुम्हें अपना सर्वस्व दे सकता हूँ।'' और इसके साथ ही तुमने लड़के के ह्रदय की गहराई में प्रेम के चुम्बन का एक पौधा रोप दिया।''

और मैं एक बार पुनः रोया। इस बार मैं इसलिये नहीं रोया था कि मैं स्वार्थी था, बल्कि इस कारण से रोया था क्योंकि मुझ में तुम्हें अपनी स्वार्थपरता देने का साहस नहीं था।

मानवता को जगाने के लिए बाबा की शीघ्रता

अभी हाल ही में, मण्डली ने बाबा कार्य के विषय में जो कहा था, उसके आधार पर मैं अपने विचार मेहेरवान जसावाला को बतला रहा था। मैंने उनसे कहा, ''मुझे ऐसा लगता है कि बाबा का मुख्य कार्य मानवता को इस मायावी स्वप्न से जगाना है और इसे पूरा करने के लिये वह कष्ट को अपने

औजार के रूप में प्रयोग करते हैं। जब वह भौतिक शरीर में थे, वह मण्डली के सदस्यों और अपने करीबी प्रेमियों को अत्यधिक कष्ट देते थे। जहाँ पर भी वह (बाबा) अपने तथाकथित आध्यात्मिक कार्य के लिये यात्रा करते थे, वे स्थान या तो युद्ध या आन्तरिक संघर्ष या वर्तमान में प्राकृतिक आपदाओं के रूप में बहुत विषम परिस्थितियों का सामना कर रहे होते थे। यह सब मैं विश्वास करता हूँ कि उस कार्य का परिणाम हैं जो बाबा ने किया था। उनका उद्देश्य मानवजाति के लिये स्वप्न को वास्तव में इतना दुखद बनाना था जिससे कि हम पूरी तत्परता से उनकी ओर मुड़े और इन मायावी कष्टों से शीघ्रता से जाग जायें जो और कुछ नहीं, केवल एक स्वप्न हैं। मुझे आश्चर्य है कि यद्यपि पूरे हृदय से याद करते हुए उनकी ओर मुड़ना जागने की कुंजी है, तब कष्ट को औजार के रूप में प्रयोग करने की क्या आवश्यकता है ? लक्ष्य तक पहुँचने के लिये पूरे हृदय से याद करने के लिये ध्यान की तकनीकियों सहित विभिन्न साधनों और उनके पास पहुँचने के विभिन्न मार्गों पर जोर क्यों नही दिया गया?

मेहेरवान ने निम्नलिखित उत्तर दिया, ''कष्ट युगों पुराने संस्कारों को बहुत शीघ्रता से साफ कर सकते हैं जो कि केवल उनकी याद करने से प्राप्त नहीं की जा सकती है। साथ में, कष्ट स्वचालित ढंग से मन को ईश्वर की ओर मोड़ देता है। इस तरह, कष्ट तुम्हारी उनको याद करने की शक्ति को भी मजबूत करते हैं और एक साथ वे दोनों शीघ्रतापूर्वक लक्ष्य तक पहुँचने में तुम्हारी सहायता करते हैं। केवल उनकी याद करने और ध्यान की तकनीकों का प्रयोग करके लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयास करने पर इसमें पतन के गड्ढे हैं। मार्ग में कई खतरे हैं क्योंकि इससे साधक में गर्व आ सकता है। यह भी खतरा है क्योंकि कोई भी व्यक्ति जो इस मार्ग का अनुसरण कर रहा है, यह विश्वास करके बहक जाये कि वह लक्ष्य तक पहुँच गया है और शिष्यों को तैयार करने में ध्यान देने लगे, जबकि कष्ट के मार्ग पर यश के अभिलाषी व्यक्ति के लिये ऐसे पतन के गड्ढों का खतरा नहीं होता।

''कष्ट गर्व को दूर करता है और प्रत्येक को विनम्रता सिखलाता है। ये गुण हैं जो कि उस मार्ग पर चलने वाले इच्छुक व्यक्ति में होना चाहिये और कष्ट प्रत्येक को जल्द से जल्द सम्भावित समय में इन्हें विकसित करने में सहायता करता है। बाबा प्रत्येक को जगाने के लिये जल्दी में हैं। बाबा की फिल्मों में भी, तुम देखते हो कि बाबा हमेशा कितनी जल्दी में रहते थे। वह चाहते थे कि चीजें

बहुत जल्दी में की जायें। वह अपने प्रेमियों को उपस्थित होने के लिये एक निश्चित समय देते थे, लेकिन समय से बहुत पहले वह वहाँ आ जाते थे और निराश हो जाते थे जब वह (बाबा) पाते थे कि उनके प्रेमी वहाँ उपस्थित नहीं थे। जहाँ तक उनके कार्य का सम्बन्ध था, वह समय बरबाद करना पसन्द नहीं करते थे और चाहते थे कि उनके सभी करीबी प्रेमी पूरी गम्भीरता के साथ इसमें भाग लें। आतंकवाद, युद्ध और प्राकृतिक आपदाओं सहित जो कुछ तुम वर्तमान में दुनियाँ में होते हुए देख रहे हो, यह सब जितनी जल्दी सम्भव हो सके, उतनी जल्दी मानवता को जगाने के लिये बाबा की योजना का एक हिस्सा है।''

मेहेरवान के कथन ने मुझे खुर्शीद द्वारा कही हुई वैसी ही बात की याद दिला दी थी। खुर्शीद में जिन्दगी के लिये अत्यधिक उत्साह था और उन्हें अच्छा भोजन पसन्द था। एक बार वह किसी को बतला रही थीं कि पारसियों का विशेष मांसाहारी भोजन कैसे बनाया जाता था। जब उन्होंने भोजन के बारे मे बतलाना बन्द किया, वह मेरी ओर मुड़ी और मुझसे पूँछा कि क्या मैं मांसाहारी भोजन खाता था। मैंने उन्हें बतलाया कि यद्यपि मैंने बीते हुए समय में इसे खाया था, मैं अब अपनी पुरानी पाचन समस्या के कारण नहीं खा सकता।

मैंने उनका ध्यान इस तथ्य की ओर खींचा कि बीते हुए दिनों की अपेक्षा जबकि जानवरों का पालन पोषण प्राकृतिक रूप से होता था, आधुनिक टेकनोलोजी का प्रयोग जानवरों को फार्म में बहुत हानिकारक और अस्वास्थ्यकर तरीके से जानवरों के पालन पोषण में किया जाता है । उन्हें बहुत से वैक्सीन,एंटीबायोटिक्स और विकसित करने वाले हारमोन्स के इन्जेक्शन भी दिये जाते थे जिससे कि वे तेजी से बढ़कर बड़े हो जायं। इस प्रक्रिया में जिनका पालन पोषण किया जाता था उनको निर्दयता का शिकार होना पड़ता था। उनको पालन पोषण में कष्ट का शिकार होना पड़ता था जिससे उन लोगों को ज्यादा लाभ हो सके जो उनका पालन पोषण करते थे। न केवल जानवर कष्ट पाते है, बल्कि कृत्रिमरूप से पालन पोषण किये जाने वाले जानवरों को जो खाते हैं, उन्हें भी आगे आने वाले समय में विभिन्न रोगों का सामना करना पड़ता है।

पहले जानवरों को खुले स्थानों पर छोड़ दिया जाता था जहाँ किसान झुण्ड की निगरानी रखते थे, इसलिये वे स्वाभाविक रूप से बड़े होते थे और शक्तिशाली होते थे जबकि आधुनिक समय में उन्हें पिंजड़े में बन्द रखा जाता है और उन्हें ऐसी कोई स्वतन्त्रता नहीं होती। मैंने खुर्शीद से कहा कि इस सबकी

जानकारी होने से, मैं कोई भी मांसाहारी भोजन खाने की अनिच्छा अनुभव करता था जो कि इन जानवरों के कष्ट को बढ़ा देता।

इस पर, खुर्शीद ने अपनी राय दी, ''लेकिन तब जानवर कैसे प्रगति करेंगे । यह भी बाबा की योजना के अन्तर्गत हो रहा है जिससे उनको आगे की यात्रा में बढ़ने में सहायता मिले। न केवल जानवरों के कष्ट की गति को बाबा के द्वारा उनके इस अवतरण काल के दौरान बढ़ा दिया गया है, बल्कि पौधों भूमि, जल और वायु के कष्टों की गति भी बढ़ा दी गई है। प्रत्येक चीज प्रदूषण के कारण कष्ट पा रही है। जब बाबा ने कहा कि वह पूरी सृष्टि को आध्यात्मिक ठेल (Push) देने के लिये आये हैं, तो उनका वैसा कहने का क्या अर्थ था ? वह सृष्टि में प्रत्येक के कष्टों को बढ़ा रहे हैं। यह कष्ट ही है जिसके द्वारा संस्कार शीघ्रता से कटते हैं और आत्मा लक्ष्य की ओर अग्रसर होती है। इस तरीके से बाबा सम्पूर्ण सृष्टि को अपनी आध्यात्मिक ठेल देते हैं।''

बाबा के अन्तिम दिन

एरच मण्डली हाल में बैठे हुए थे जब केनिया के एक बाबा प्रेमी दम्पत्ति ने उनसे बाबा के अन्तिम दिनों के बारे में बतलाने के लिये कहा। एरच ने बीते दिनों में इसे कई अवसरों पर बतलाया था और इस समय भी बतलाया। फिर भी, जब उन्होंने इस विषय में बतलाना समाप्त किया, तब उनके छोटे भाई मेहेरवान जसावाला ने जो हाल ही में मेहेराजाद में रहने के लिये आये थे, एरच से गुजराती में कहा कि वह एक महत्वपूर्ण बात बतलाना भूल गये थे। उन्होंने एरच को याद दिलाया कि कैसे, बाबा के शरीर छोड़ने के कुछ दिन पहले वह बाबा के पास पहरा दे रहे थे जब बाबा ने एक तेज आवाज की जैसे कि वह अपना गला साफ कर रहे थे। इसकी सही तारीख २३ जनवरी १९६९ थी जब यह घटना हुई। क्योंकि एरच ने इसके विषय में मेहेरवान को लिखा था, मेहेरवान ने मान लिया कि एरच यह सूचना सभी के साथ बाँट रहे थे और शायद उस दिन इसे बतलाना भूल गये थे। एरच ने वापस स्थानीय भाषा में मेहेरवान को बतलाते हुए उत्तर दिया कि यह बात गोपनीय थी जिसको उन्होंने किसी को नहीं बतलाया था और उनकी इच्छा थी कि इस बात को गोपनीय ही रखा जाय।

एरच बहुधा स्थानीय भाषा का प्रयोग करते थे यदि वह कोई गोपनीय बात, हाल में बैठे हुए मण्डली के किसी सदस्य से कहना चाहते थे, क्योंकि

पाश्चात्य तीर्थयात्रियों में से कोई भी गुजराती नहीं समझता था। एरच के दुर्भाग्य से, केनिया के दम्पत्ति धारा प्रवाह गुजराती बोलते थे क्योंकि वे गुजराती थे जो केनिया में रह रहे थे। वे एरच की ओर मुड़े और कहा, ''कृपया कुछ भी गोपनीय न रखिये, हम सबकुछ जानना चाहते हैं।'' एरच चौंक गये क्योंकि वह अनजाने में ही पकड़े गये थे। आखिरकार वह उस गोपनीय बात को बतलाने के लिये सहमत हो गये जिसको उन्होंने बाबा के शरीर छोड़ने के बीस वर्षों से भी अधिक समय तक किसी भी अन्तेवासी या तीर्थयात्री पर प्रगट नहीं किया था।

एरच ने कहा कि बाबा के शरीर छोड़ने से कुछ दिन पहले जब वह बाबा के पास पहरा दे रहे थे, उन्होंने एक तेज आवाज सुनी और वह बाबा को देखने के लिये मुड़े। बाबा ने अपना गला साफ करने के कार्य में यह आवाज की थी। यह पहली बार था कि उन्होंने (एरच ने) बाबा को आवाज करते सुना था। उन्होंने हमेशा बाबा को चुपचाप कोई भी आवाज उत्पन्न किये बिना हँसते या खासते हुए देखा था। इसकी ध्वनि 'ओम' के समान थी क्योंकि कोई भी मुँह बन्द करके निकलने वाली आवाज इसी तरह की ध्वनि करेगी। एरच ने बाबा से पूँछा कि क्या कोई बात थी; क्या उन्हें किसी चीज की आवश्यकता थी। बाबा ने संकेतों द्वारा एरच को बतलाया कि सबकुछ ठीक था।

इसके बाद एरच ने मेहेरवान को इस घटना का वर्णन करते हुए एक पत्र लिखा जिसे उनके द्वारा सुरक्षित रख लिया गया है। जब तीर्थयात्रियों में से एक ने एरच से पूँछा कि क्या वह सोचते थे कि बाबा ने अपना मौन तोड़ दिया था, एरच ने सर्तक शब्दों में उत्तर दिया, जोकि उनकों कहना था, ''मैं सोचता हूँ कि यह उनके मौन टूटने की शुरुआत होने की सूचना थी।'' एरच ने इसके पहले इसे प्रगट नहीं किया था क्योंकि वे अनुभव करते थे कि इसको प्रगट करने से मेहेरबाबा के मौन के विषय में बाबा समुदाय में मतभेद उत्पन्न हो जायँगे जो कि पहले से ही एक विवादास्पद विषय था। यद्यपि एरच उस घटना पर अपनी राय देने के विषय में सतर्क थे, फिर भी मतभेद उत्पन्न हो गये क्योंकि कुछ बाबा प्रेमियों ने गलती से यह समझ लिया कि एरच ने कहा था कि बाबा ने अपना मौन तोड़ दिया था। यह एक छोटा सा मतभेद था जो शीघ्र ही समाप्त हो गया।

जब वाद विवाद चल रहा था, मैंने एरच से उस पूरी महत्वपूर्ण घटना को फिर से मेरे अपने लाभ के लिये सुनाने को कहा, क्योंकि मैं जानना चाहता था कि एरच ने यथार्थ में क्या कहा था। मैंने उनसे अकेले में पूँछा क्योंकि वह

अपनी राय सार्वजनिक रूप से तीर्थयात्रियों को सम्बोधित करने के समय के बजाय अकेले में ज्यादा प्रगट करते थे। जब एरच ने बतलाना समाप्त किया, क्यों कि मैंने उनके शब्दों पर सतर्कतापूर्वक ध्यान नहीं दिया था, मैंने भी अनुभव किया कि एरच ने कहा था कि बाबा ने अपना मौन तोड़ दिया था। जब मैंने एरच से इसका उल्लेख किया, तो उन्होंने मुझसे कहा, ''तुम एकाग्रता पूर्वक ध्यान नहीं दे रहे हो मैंने ऐसा नहीं कहा था।''

एरच ने तब मेरे लाभ के लिये जो उन्होंने पहले कहा था, उसे पुनः दोहराया, ''मैंने तुमसे कहा था कि 'मैं सोचता हूँ कि इसने शुरूआत की सूचना दी थी।' एरच प्रथम कुछ शब्दों को आत्मसात् करने में मुझे सहायता देने के लिये थोड़ी देर चुप रहे और तब उन्होंने आगे कहा, ''मैंने यह नहीं कहा था कि यह उनके मौन का टूटना था। मैंने केवल यह कहा था कि यह प्रारम्भ की सूचना थी।'' एरच रूके और एक लम्बी चुप्पी के बाद उन्होंने आगे कहा, ''इसका अर्थ यह है कि मुख्य घटना भविष्य में अभी भी घटित होनी है और केवल बाबा जानते हैं कि यह कब होगा।''

मतभेदों के विषय में , जो बाबा ने उत्पन्न किये थे, एरच ने बाद में अपना जो मत प्रगट किया वह मुझे, 'बहुत पसन्द आया। वह बोले बाबा हमारे लाभ के लिये ऐसे मतभेद उत्पन्न करते हैं जिससे कम से कम ऐसे मतभेदों के द्वारा हम उनको याद करें। यदि इस विषय में राय और तर्कों में भिन्नता भी है, तो हम कम से कम उनको याद कर रहे हैं और उनकी याद करना ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि केवल वही तुम्हें लक्ष्य की ओर ले जा सकती हैं।''

बाबा वे अज्ञानी हैं जो आलोचना करते हैं

कई वर्षों तक इसे गोपनीय रखने के बाद, भाऊजी ने अन्त में प्रगट किया कि बाबा ने उनसे मौखिकरूप से दो शब्द कहे थे ''याद रख''। यह घटना बाबा के शरीर छोड़ने के कुछ दिन पहले ही घटित हुई थी। उपरोक्त घटना को बतलाते हुए, भाऊजी ने कहा, ''बाबा ने तीन बार 'याद रख' कहा था, दो बार संकेतों के द्वारा और तीसरी बार उन्होंने मौखिक रूप से कहा था।'' जब उनसे पूँछा गया कि क्या बाबा ने अपना मौन तोड़ दिया था, भाऊजी ने बतलाया कि ऐसा नहीं था। यद्यपि बाबा बोले थे, उन्होंने वास्तव में अपना आन्तरिक मौन नहीं तोड़ा था।

भाऊजी ने यह अनुभव किया था कि बाबा यह जताने के इरादे से बोले थे कि उनके वाक्तन्तु (स्वर रज्जु,Vocal chords) निष्क्रिय नहीं थे और वह बोल सकते थे। यह क्रिया एक सन्देह के निवारण हेतु प्रत्युन्तर में की गई थी जो किसी के द्वारा उत्पन्न किया गया था, जिसको लगा था कि कहीं बाबा के स्वर रज्जु क्षीण तो नहीं हो गये थे और वे बाबा के मौन के कारण काफी लम्बे समय से प्रयोग में न आने के कारण पुनः कभी कार्य नहीं करेंगे। इस व्यक्ति के अनुसार, जो एक विज्ञान का व्यक्ति था, बाबा फिर कभी नहीं बोलेंगे। भाऊजी ने अनुभव किया था कि इस वैज्ञानिक दावे को गलत सिद्ध करने के इरादे से बाबा ने इस पूरी घटना को प्रदर्शित किया था और इससे यह नहीं सिद्ध होता कि उनका मौन टूट गया था।

बाबा के शरीर छोड़ने के पश्चात् तीस वर्षों से भी अधिक समय तक भाऊजी ने इसे गोपनीय रखा था ताकि मतभेद उत्पन्न न हों। जब उनसे पूँछा गया कि उन्होंने इसे तीस वर्षों बाद क्यों प्रगट किया था, तो भाऊजी ने कहाकि उन्होंने एक दृश्य देखा था जिसमें बाबा ने उन्हें ऐसा करने का आदेश दिया था और इसको प्रगट करने के अतिरिक्त उनके पास कोई विकल्प नहीं था। भाऊजी के इसे प्रगट करने के बाद बहुत से मतभेद उत्पन्न हो गये थे। कई बाबा प्रेमियों को भाऊजी के कथन की विश्वसनीयता पर सन्देह था। लोगों ने प्रश्न किया कि भाऊजी ने इसे पहले क्यों नहीं प्रगट किया था जब मनी और एरच जीवित थे। क्योंकि भाऊजी द्वारा इस तथ्य को एरच की मृत्यु के कुछ ही समय बाद प्रगट किया गया था, कई लोगों ने यह एहसास किया कि उन्होंने ध्यान और महत्व पाने के लिये यह पूरी कहानी बनाई थी।

संयोगवश एक बार मैं बम्बई सेन्टर में गया और दुर्भाग्यवश, उस दिन किसी ने भाऊजी की नियत पर अपना सन्देह व्यक्त करते हुए इस प्रकरण को उठाया। उस व्यक्ति के बोलना बन्द करने के बाद, मैंने बतलाया कि इस विषय पर भाऊजी ने क्या कहा था और उन मतभेदों के विषय में भी बतलाया जो कि एरच के अपनी गोपनीयता के प्रगट करने पर उत्पन्न हुए थे। वहाँ कुछ लोग थे जिन्होंने मेरी उस बात को स्वीकार किया जो मैंने कही थी और दूसरों ने इसे स्वीकार नहीं किया। अन्त में, यह निश्चय किया गया कि ऐसे मतभेद सेण्टर में नहीं उठाने चाहिये और यह याद करते हुए कि बाबा की मण्डली उनके लिये बहुत खास थी और उनको परखा नहीं जाना चाहिये, प्रत्येक को अपना ध्यान बाबा के प्रेम पर केन्द्रित करना चाहिये।

जब मैं मेहेरबाद वापस गया, भाऊ जी ने मुझसे पूँछा कि क्या मैं सेन्टर पर गया था। वह हमेशा ऐसा ही करते थे और विभिन्न बाबा प्रेमियों की कुशल क्षेम के विषय में भी पूछते थे जो कि बम्बई सेन्टर का एक हिस्सा थे। यह सेन्टर में होने वाली गतिविधियों में भी रुचि दिखलाते थे। अचानक उन्होंने मुझसे पूछा, ''क्या उन्होंने मेरे बारे में कुछ कहा?'' जो घटित हुआ था, उसे बतलाने से बचने का मैं प्रयास कर रहा था क्योंकि में जानता था कि इससे उन्हें चोट पहुँचेगी। लेकिन जब उन्होंने मुझ पर दबाव डाला, मैंने उस मतभेद के विषय में प्रगट किया जो उनके कथन से उत्पन्न हुआ था।

भाऊजी बहुत दुखी दिखलाई दिये और एक दुख की अभिव्यक्ति के साथ उन्होंने मुझसे कहा, ''लोग क्या सोचते हैं? बाबा के साथ इतने वर्षों तक रहने के बाद, मैं इस विषय में नहीं जानता कि आध्यात्मिक जिन्दगी कैसे बिताई जाय? वे ऐसा क्यों अनुभव करते हैं कि मैं उस मार्ग के विषय में नहीं जानता जिसे अनुसरण करने के लिये बाबा हमसे चाहते हैं? इस विषय पर बाबा की निगरानी में इतनी पुस्तकें लिखने के बाद, क्या लोग अभी भी सोचते हैं कि मै नहीं जानता कि बाबा किस चीज़ से प्रसन्न होते हैं, किससे अप्रसन्न? क्या वे सोचते हैं कि मैं बाबा के आदेशका पालन न करने या मिथ्यापन में लिप्त होने का परिणाम नहीं जानता? वे मुझे क्या समझते हैं? वे सोचते हैं कि मैं अपने प्रियतम की खुशी को बनाये रखने के विषय में कुछ नहीं जानता और वे मेरी अपेक्षा इसे बेहतर जानते हैं। जब वे ऐसी चीज़ें करते हैं तब क्या वह अपने व्यवहार की अज्ञानता का अनुभव करते हैं। क्योंकि यह केवल मेहेर बाबा और उनके कार्य के विषय में उनकी अज्ञानता को प्रगट करता है? जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, उनके औजार के रूप में, मुझे अपने प्रियतम की खुशी को किसी भी कीमत पर बनाये रखना है। मेरे कार्यों के लिये दुनिया चाहे मेरी प्रशंसा करे या मुझे शूली पर चढ़ा दे, मुझे अपने प्रियतम की खुशी बनाये रखना है।''

उपहार तुम्हे देने वाले की याद दिलाते हैं

मैं बहुधा एरच को बाबा के सन्देशों के विषय में अपने कुछ विचारों को बतलाता था। ऐसी एक घटना, जो उन्हें बहुत अधिक पसन्द आई और जिसे उन्होंने वहाँ के दूसरे निवासियों और बाबा प्रेमियों को बतलाने के लिये कह, निम्नलिखित हैं।

मैं अपने कमरे में बाबा को उस एक चित्र को एकटक देखते हुए बिस्तरपर लेटा हुआ आराम कर रहा था जो कि मेरे मित्र द्वारा मुझे दिया गया था। बाबा की फोटो देखते हुए और उसको देने वाले की याद करते हुए मैंने संयोगवश ऐलन कोहन द्वारा लिखित ''चेतना की प्रभुताई'' नामक पुस्तक बाबा के किसी सन्देश के लिये खोली। यह विशिष्ट पुस्तक मेरी प्रिय पुस्तक है क्योंकि इसमें बाबा के ऐसे बहुत से कथन हैं जिनमें मेरी व्यक्तिगत रुचि है। कथन जो खुला वह भी उपहारों के विषय में था– ''कष्ट ईश्वर के दिये गये उपहार हैं''

मैं इस संयोग पर विचार कर रहा था कि कैसे मैं अपने मित्र के विषय में सोच रहा था जब मैं उसके दिये उपहार को देख रहा था और अब मेरे लिये बाबा का सन्देश कष्ट के एक उपहार होने के विषय में था। अचानक ही मैंने अनुभव किया जैसे मेरे अस्तित्व में बिजली का करेण्ट प्रवाहित हो रहा था और मैं उठकर बैठ गया। उपहार हमेशा हमें देने वाले की याद दिलाती हैं और कष्ट हमेशा हमें ईश्वर की याद दिलाती हैं। यह कि कष्ट हमें ईश्वर की याद दिलाती हैं, स्पष्ट रूप से हमें दिखलाता है कि तब इस उपहार को देने वाले निश्चित रूप से वह ईश्वर हैं।

जब मैंने यह एरच को बतलाया तो उपहार और उपहार देने वाले के बीच उन्हें यह धारणा और सम्बन्ध पसन्द आया और उन्होंने मुझसे दूसरों को भी इसे बतलाने के लिये कहा।

धर्म वहाँ से प्रारम्भ होता है जहाँ से प्रेम का अन्त होता है

दूसरा विचार, जो मैंने एरच को बतलाया, वह मेहेराबाद में हुई एक घटना के परिणामस्वरूप मेरे मन में आया था जिसमें एरच भी शामिल थे। ऐसा हुआ कि पोलियो के कारण अपने पैरों में अपक्षय से पीड़ित एक तीर्थयात्री बाबा के दर्शन के लिए आया। वह ऊपर कमर तक जाने वाले धातु के सहारे वाले विशेष प्रकार के जूते पहने हुआ था। मूलभूत रूप से वह अपने शरीर का पूरा भार हाथों पर डालकर बैसाखी के सहारे चल रहा था। कोई भी कह सकता था कि वह अपने हाथों पर चल रहा था क्योंकि उसके पैर बेकार थे।

एरच संयोग से इस खास अवसर पर वहाँ थे और दूर से इस व्यक्ति को देख रहे थे। अधिकांश लोग बराम्दे के किनारे पर दर्शन के पहले अपने जूते या सैण्डिल उतार देते हैं। उन लोगों के लिये जिन्होंने समाधि को नहीं देखा है, बाबा की गुम्बदनुमा समाधि के बाहर ऊपर छायादार एक छोटा बरामदा है। और जिसमें बाहर की ओर बगल में टट्टा की बनी शेड हैं, जहाँ तीर्थ यात्रियों के बैठने के लिये बेन्चें रखी हुई हैं। यह खास आदमी बरामदे से होकर गया और समाधि के प्रवेश द्वार तक पहुँच गया। जब वह समाधि में प्रवेश करने ही वाला था, समाधि की डॅयूटी पर उपस्थित कर्मचारी ने, जो समाधि के प्रवेश द्वार के पास प्रसाद वितरित कर रहा था, विकलांग व्यक्ति को विशेष प्रकार के जूते पहने हुए देखा और उसने इसका विरोध किया। समाधि की ड्यूटी करने वाले वहाँ उपस्थित कर्मचारी ने उसके जूतों की ओर इशारा किया और उसे प्रवेश करने से रोक दिया।

क्योंकि वह व्यक्ति वहाँ ड्यूटी पर उपस्थित कर्मचारी को सफाई देने लगा, तो वहाँ पर बाद में हलचल शुरू हो गई और एरच, जो उस स्थिति को देख रहे थे, ड्यूटी पर उपस्थित सेवक के पास गये और समस्या के बारे में पूछतांछ की। एरच स्पष्ट रूप से नाराज दिखलाई पड़े और उन्होंने समाधिकी ड्यूटी पर उपस्थित सेवक से कहा, ''उसे जूते पहने हुए अन्दर जाने दो। यही उचित है। ''ड्यूटी पर उपस्थित सेवक विरोध करने लगा।

एरच ने इस पर अपनी नाराजगी व्यक्त की और उन्होंने (एरच ने) जोर देकर उससे कहा, ''ऐसे मामलों में छूट देनी चाहिये। क्या तुम्हें कुछ भी समझ नहीं है? क्या तुम यह नहीं देख सकते कि ये विशेष प्रकार के जूते हैं जो उसके पैरों को सहारा देते हैं और वह उन्हें उतार नहीं सकता ? क्या इस तरीके से तुम एक पीड़ित व्यक्ति के साथ व्यवहार करते हो? तुम उसे उसके प्रियतम का आलिंगन करने और दर्शन करने से रोक रहे हो? क्या इससे बाबा प्रसन्न होंगे? क्या बाबा की खुशी से ज़्यादा नियम महत्वपूर्ण हैं? यहाँ तुम नियम का पालन करने और पूजा करने के लिये हो या तुम यहाँ पर बाबा का अनुसरण करने और उनको खुश करने के लिये हो?'' समाधि की ड्यूटी पर उपस्थिति सेवक ने अपने कृत्य पर पछताते हुए शर्मिन्दगी के साथ अपना सिर झुका लिया और उस परिस्थिति के लिये क्षमा याचना की। एरच शान्त प्रतीत हुए।

बाद में, एरच ने इस प्रकरण की विभिन्न स्तरों पर वहाँ के अन्तेवासियों

और तीर्थयात्रियों के साथ चर्चा की, एक बार, जब हम मण्डली हाल में बैठे हुए थे, उन्होंने तीर्थयात्रियों से कहा, ''बाबा के प्रति प्रेम के साथ–साथ आन्तरिक अनुशासन की भावना विकसित करो। बाबा के प्रेम के नाम पर कोई भी ऐसा काम मत करो जिससे दूसरो को तकलीफ हो वह प्रेम नहीं है। प्रेम का अर्थ है प्रियतम की खुशी को बनाये रखना जिसके लिये तुम्हें चाहिये कि त्याग करो। यदि तीर्थयात्री इस आन्तरिक अनुशासन की भावना को अपने अन्दर पैदा कर लें जबकि वह बाबा के लिये अपने प्रेम को व्यक्त कर रहे हों तब नियम और आदेश की कोई आवश्यकता नहीं है। उनकी आवश्यकता केवल तब होती है जब चीजें नियन्त्रण के बाहर हों। जब नियंत्रण अन्दर से हो और प्रत्येक उसको अपनाता हो, तो नियमों की कहाँ आवश्यकता है?''

एरच ने आगे कहा, ''बाबा के शरीर छोड़ने के तुरन्त बाद, जब लोग बाबा के दर्शन के लिये आते थे, वहाँ पर लगभग कोई नियम लागू नहीं थे। फिर भी, जैसे–जैसे समय गुजरता गया और भीड़ बढ़ने लगी, समाधि पर अव्यवस्था होने लगी और बहुत अनिच्छा से हमें तीर्थयात्रियों के लाभ के लिये कुछ मूलभूत सामान्य ज्ञान के नियमों को लागू करना पड़ा। यदि तीर्थयात्री स्वेच्छा से इन नियमों को मान लेते हैं तो इससे समाधि के आसपास सामन्जस्य और शान्तिपूर्ण वातावरण बनाये रखने में सहायता मिलती है। ऐसा होता है कि जब ऐसे नियमों की उपेक्षा और उलंघन किया जाता है तब अधिक नियम बनाये जाते हैं और अनुशासन को प्रभावशाली बनाया जाता है।''

एरच तब थोड़ी देर चुप रहे और फिर उन्होंने सीधे अन्तेवासियों से अपने ये शब्द कहे, ''लेकिन हम क्या कर सकते हैं। यहाँ के अन्तेवासी भी तीर्थ यात्रियों को संभालने में कठिनाई पाते हैं और इसी लिये नियम आवश्यक हैं। फिर भी, यहाँ के अन्तेवासियों को भी याद रखना चाहिये कि नियमों को सर्व प्रथम क्यों बनाया गया था। उनका क्रियान्वन (पालन) अत्यधिक कठोरता के साथ नहीं होना चाहिये। उन्हें यह ध्यान में रखकर कि नियम सामान्जस्य बनाये रखने के लिये बनाये गये थे, प्रेमपूर्वक इनका क्रियान्वन करना चाहिये। वे एक लक्ष्य का साधन हैं और उन्हें स्वयं लक्ष्य नहीं माना जाना चाहिये। जब किसी नियम का उस समय की परिस्थिति को न देखते हुए कठोरतापूर्वक क्रियान्वन किया जाता है तब तुम उसके अन्तिम परिणाम पर अपना ध्यान केन्द्रित नहीं करते हो जो कि माना जाता है कि नियम उत्पन्न करेगा–वह सामान्जस्य है।

''प्रेम सामन्जस्य उत्पन्न करता है। अपने हृदय में प्रेम उत्पन्न होने दो और इन नियमों को विनम्रतापूर्वक तीर्थयात्रियों की सहायता करने के लिये क्रियान्वन करने का प्रयास करो। अशिष्ट होने के लिये कोई बहाना नहीं दिया जा सकता। जब नियमों का क्रियान्वन करो, तब अनुशासन के नाम पर अशिष्टता को उचित मत ठहराओ। हर समय प्रेममय बनो, विनम्र बनो और सतर्क रहो। इससे तुम्हारे प्रियतम को खुशी होगी। इस सबके लिये बाबा के प्रति परिपक्व प्रेम की आवश्यकता है जो कि अन्तेवासियों के साथ–साथ तीर्थयात्रियों के लिये भी आन्तरिक अनुशासन प्रस्तुत करता है। यह एक कठिन और पीड़ादायक अनुभव है, लेकिन हमें यह सब अपने प्रियतम के लिये करना चाहिये।

एरच ने आगे कहा, ''क्या होता है जब अधिक और अधिक नियमों को बनाया जाता है। स्थान और अधिक संगठित और प्रभावी हो जाता है और शीघ्र ही वह एक संगठन बन जाता है। प्रेम गायब होने लगता है जो अब तक स्वतन्त्रतापूर्वक प्रवाहित हो रहा था। प्रेम के स्थान पर जो कि प्रारम्भ में बाबा की समाधि के आसपास फैला रहता था, व्यवस्था की नीरसता धीरे–धीरे रेंगते हुए बढ़ने लगती है क्योंकि स्थान अधिक और अधिक कानून कायदे और नियमों के द्वारा संचालित होने लगता है। यह धर्म की शुरूआत है जहाँ पर आखिरकार स्थान 'यह करो और यह न करों के द्वारा संचालित होता है और प्रेम सूख जाता है। ऐसा ही हर बार होता है।'' जिस गम्भीरता के साथ एरच ने बात समाप्त की, उसने प्रत्येक हृदय को मौन कर दिया। हमने एरच के शब्दों की सच्चाई को पहचाना और उम्मीद की कि जिस विषय में एरच ने कहा था, वह अनिवार्य रूप से आगे लम्बे समय तक के लिये टल जायगा।

कुछ दिनों बाद इस पूरी परिस्थिति के विषय में एक विचार मेरे मन में आया कि कैसे यह प्रेम से शुरू होती है और धर्म पर समाप्त होती है। और मैंने एरच को इस विचार को बतलाया जो उन्हें पसन्द आया। खाली समय में उनको पाकर मैंने उन्हें वह याद दिलाया जो उन्होंने मण्डली हाल में प्रेम का अन्त धर्म में होने के विषय में कहा था और मैंने उन्हें बतलाया, ''यह कैसे होता है, मुझे इसका अनुभव है । बाबा ने प्रेम के बीज का रोपण मण्डली के हृदयों में किया। आप लोगों द्वारा की गई उसकी देखभाल और ईमानदार प्रयत्नों से ये बीज विकसित हुए और बढ़कर पूर्ण वृक्ष बन गये। फिर भी, इस प्रेम के पेड़ ने

अन्तेवासियों के मनों में भ्रम के बीजों का रोपण किया या उन्हें उत्पन्न किया। अन्तेवासियों ने जो भी प्रयत्न किये, उसने भ्रम के बीजों को भ्रम के एक वृक्ष के रूप में बढ़ने में सहायता की। इस भ्रम के पेड़ ने संगठन के बीज उत्पन्न किये। समय गुजरने के साथ–साथ और इसके संचालित करने वालों के प्रयासों से, यह संगठन, संगठन के बीज को पूर्ण विकसित वृक्ष के रूप में विकसित करेगा और यह वृक्ष अब धर्म के बीजों का रोपण करेगा।'' मैंने जिस तरह से इसे प्रस्तुत किया था, उससे एरच खुश थे और उन्होंने टिप्पणी की, ''हाँ, हर बार ऐसा ही होता है। धर्म की शुरूआत वहाँ से होती है जहाँ प्रेम का अन्त होता है।''

यह पागलपन क्यों ?

कई अवसरों पर तीर्थयात्री मण्डली से पूँछते थे कि बाबा प्रतिदिन मण्डली को क्यों तंग करते थे जो कि सांसारिक दृष्टिकोण से पागलपन दिखता था और जिसका कोई अर्थ नहीं था। यदि वह ईश्वर थे तो यह सब पागलपन क्यों ?

मनी, एरच और भाऊजी तीनों ने ही एक जैसा उत्तर दिया। अधिकांश तीर्थयात्री जो नियमित रूप से मेहेराबाद दर्शनार्थ आते थे, एरच के उत्तर से परिचित थे। वह उनके उस समय के अनुभवों और सन्देहों पर आधारित था जब वह बाबा के साथ रहते थे। वह कहते थे, ''यद्यपि मैं उनके (बाबा के) साथ रहता था और उनके संकेतों की व्याख्या करता था, मेरा मन निरन्तर उनके कार्यों के विषय में प्रश्न पूँछता रहता था। बाबा सांकेतिक भाषा का प्रयोग करते थे जिसकी मैं व्याख्या करता था और उसे वैसी ही शक्ति और भावना के साथ मुझे बोलना पड़ता था जैसी कि वह व्यक्त करते थे। इसलिये जब बाबा खुशी व्यक्त करते थे, मुझे खुशी व्यक्त करनी पड़ती थी। जब वह परेशान और क्रोध में होते थे, मुझे वह भावना भी व्यक्त करनी पड़ती थी। परन्तु मेरा मन उस समय कार्य कर रहा होता था। इसलिये जब बाबा कहते 'मैं मानवरूप में ईश्वर हूँ। इस पर कोई सन्देह मत करो।' यद्यपि मैं इसे बलपूर्वक बोलता था, मेरा मन कहता था, क्या ऐसा है ? मुझे इस पर सन्देह था–क्यों? क्योंकि मन निरन्तर उनके (बाबा के) तथाकथित अनियमित कार्यों से भ्रमित था जिसका उस समय कोई अर्थ नहीं होता था और जो हमें पागल किये दे रहे थे। रोज ही ऐसा होने से हमें तीव्र

मानसिक पीड़ा होती थी। हम बहुधा इससे मुक्त होने की इच्छा करते थे, इस हद तक भी हम उम्मीद करते थे कि हमें इस शरीर और इस वेदना से जो हम सह रहे थे, मुक्त करने के लिये कोई साँप काट ले या कोई दुर्घटना हो जाय......... ऐसा कई वर्षों तक होता रहा।

''लेकिन तब एक ऐसा समय आया जब सन्देह दूर होने लगे। तथाकथित अनियमित कार्यों के पीछे एक उद्देश्य था जो हम पर वर्षों बाद तब प्रगट हुआ जब उन कार्यों पर आधारित कुछ घटनायें घटित हुई जो अनियमित प्रतीत होते थे। यह स्पष्ट हो गया कि सद्गुरू के कार्य अनियमित नहीं थे एक निश्चित उद्देश्य के लिये किये गये थे जिसका परिणाम भविष्य में आया था। इसने मन को सन्तुष्ट किया और आखिरकार इसे शान्त कर दिया जिससे हमने उनके कार्यों या पागलपन पर प्रश्न करना बन्द कर दिया। इससे हमें उनको स्वेच्छापूर्वक समर्पण करने में सहायता मिली और आखिरकार हमने बिना शर्त आज्ञा पालन करना सीख लिया।

''पीछे देखने पर मैं कह सकता हूँ कि पागलपन हमारे लिये उनका वास्तविक उपहार था। मन को स्थायी रूप से शान्त करने के लिये उन्होंने मन में उथल पुथल करके भ्रम पैदा किया। केवल जब मन शान्त हो जाता है, तभी हृदय जागता है और नेतृत्व की भूमिका निभाता है। मन अभी भी वहाँ है, लेकिन अब यह हृदय के अधीन है। क्यों कि हृदय ज्ञान की गद्दी है, सभी भ्रम समाप्त हो जाते हैं। मन, जो कि भ्रम की गद्दी है, अब हृदय का मौन दास होता है। इसका परिणाम हृदय और मन के बीच पूर्ण सामन्जस्य है जहाँ हृदय सच्चाई जानता है और मन इनको क्रियान्वित करने के तरीके और साधन खोजता है। लक्ष्य की ओर और अधिक तीव्रता से तुम्हें ले जाने में पागलपन एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अहमदनगर में ईश्वर के अलावा कुछ भी कार्य नहीं करता

मण्डली हाल में तीर्थयात्रियों की एक भीड़ को सम्बोधित करते हुए मनी ने कहा, ''अहमदनगर में ईश्वर के अलावा कुछ भी कार्य नहीं करता। तुम किसी चीज पर या उस विषय के लिये किसी व्यक्ति पर निर्भर नहीं हो सकते हो। वर्षा का कोई भरोसा नहीं होता और यहाँ पानी की हमेशा कमी रहती है। तुम अपने

नल वाले, बढ़ई, दर्जी आदि पर भरोसा नहीं कर सकते कि वह निश्चित दिन पर आयेगा और समस्या को दूर करेगा। स्थान ग्रामीण होने के कारण, बहुत कम सुविधायें प्रदान करता है। लगभग किसी पर भी तुम निर्भर नहीं हो सकते हो। यदि तुम यहाँ रहते हो, तो तुम्हें बाध्य होकर केवल ईश्वर पर निर्भर होना होगा। यह आश्चर्यजनक है कि हर चीज अविश्वसनीय होने के बावजूद चीजें कितनी सुगमता से होती हैं। ऐसा इसलिये है क्योंकि इसे वह (ईश्वर) चलाता है।

''प्रारम्भिक वर्षों में, हमें बहुधा आश्चर्य होता था कि बाबा ने इतने दूरवर्ती और बंजर स्थान को अपना हेडक्वार्टर क्यों चुना। यह रहने के स्थानों में सबसे अच्छा नहीं है। वास्तव में, मैं कहूँगी कि यह शायद सबसे खराब स्थानों में से एक है। वह (बाबा) एक ऐसा स्थान चुन सकते थे जहाँ हरियाली होती पर्याप्त बारिश और जलपूर्ति होती, और लोग अधिक मैत्रीपूर्ण होते। वह एक ऐसा स्थान चुन सकते थे जो आने वाली भावी पीढ़ियों को बेहतर सुविधायें दे सकता। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने ऐसा स्थान चुना जिसकी जलवायु दुखदायी है और उतनी ही दुखदायी सुविधायें हैं। इसका उल्लेख करना आवश्यक नहीं है कि मजदूर सबसे ज्यादा परेशान करने वालों में से हैं।

''मैं अब समझ सकती हूँ कि उन्होंने (बाबा ने) यह स्थान क्यों चुना, इसलिये कि यहाँ रहने वाला कोई भी व्यक्ति केवल उन पर निर्भर रहे। अन्य कुछ भी यहाँ कार्य नहीं करता। अपनी छोटी से छोटी आवश्यकताओं के लिये भी तुम्हें उनकी ओर मुड़ना होगा। इस तरीके से तुम असम्भव बाहरी परिस्थितियों के कारण उनकी इच्छा पर निर्भर होने के लिये बाध्य होते हो। यदि तुम स्थान के वातावरण को बदलने का प्रयास करके परिस्थिति को बदलने का प्रयास करते हो, तुम पागल हो जाओगे। बेहतर है कि तुम स्वयं को बदलो, बाबा पर निर्भर होना सीखकर अपना दृष्टिकोण बदलो। वह यह सब तुम्हारी भलाई के लिये कर रहे हैं। उन्होंने प्रत्येक के आध्यात्मिक विकास के लिये सबसे आदर्श स्थान भी चुना है। इस स्थान द्वारा प्रदत कठिनाईयों और परेशानियों की वर्तमान प्रवृत्ति उनकी ओर मुड़ने और उन पर अपना ध्यान एकाग्र करने में तुम्हारी सहायता करते हैं।

''क्या हुआ होता अगर वातावरण सुखद होता और हमें सभी आधुनिक आराम और सुख साधन देता ? तब हमारी उन पर निर्भरता या उनका स्मरण

करना इतना शक्तिशाली नहीं होता। उनकी ओर मुड़ने की बजाय हम अपनी प्रतिदिन की आवश्यकताओं के लिये उस स्थान द्वारा दिये गये आराम और सुख सुविधाओं की ओर मुड़ते। कठोर वातावरण हमें उनकी ओर मुड़ने के लिये बाध्य करता हैं। सुखद वातावरण में हम आत्मसन्तुष्ट होते हैं और हमारे लिये उनकी याद करना कम हो जाता हैं। रचयिता को याद करने की बजाय हम सृष्टि और उनके सुख साधनों को याद करते। इसी कारण से मैं तुमसे और सभी से कहता हूँ कि जब तक तुम यहाँ हो, कृतज्ञता पूर्ण व्यवहार रखो। अपने हृदय में इस आश्चर्यजनक अवसर के लिये कृतज्ञ बनो जो अवसर उन्होंने (बाबा ने) अपनी उपस्थिति में तुम्हें दिया है। उनकी उपस्थिति का आनन्द लो। जब तुम ऐसा करोगे, तुम स्थान की असुविधाओं पर ध्यान नहीं दोगे।

''तीर्थयात्री बहुधा आते हैं और सुविधाओं की कमी या किसी दुखद स्थिति के विषय में शिकायत करते हैं जो उनके मानसिक तनाव का कारण थी। मुझे उनकी असमर्थता पर दुख का अनुभव होता है कि वे उनकी (बाबा की) भौतिक उपस्थिति का आनन्द नहीं ले पाते जो कि इस स्थान पर व्याप्त है। वे उस सौभाग्य को भूल जाते हैं जो उनके लिये बाबा के द्वारा उनकी उपस्थिति में होने पर प्राप्त हुआ है। अपने सांसारिक आराम और खुशियों से आसक्ति के कारण वे इस सौभाग्य का लाभ उठाने में असमर्थ रहते हैं। वे इस अवसर को गंवा देते हैं।

''इनमें से कुछ तीर्थयात्री मण्डली की उस जिन्दगी से ईर्ष्या रखते हैं जो उन्होंने बाबा के साथ बिताई थी और वे इसकी कामना करते हैं। पर वे कैसे उन असहनीय कष्टों को सहन कर पाते जो कि मण्डली को बाबा के साथ अपनी जिन्दगी में सहन करना पड़ा था ? जब वे छोटी से छोटी चीजों के लिये बच्चों के समान चीखते चिल्लाते और शिकायत करते हैं तो वे इसे कैसे सहन करते ? यदि तुम उनके साथ रहना चाहते हो, तुम्हें आग से होकर चलने के लिये तैयार रहना पड़ेगा और केवल तुम्हारा उनके लिये सम्पूर्ण प्रेम और उन पर ध्यान की एकाग्रता ही तुम्हें उससे होकर ले जा सकती है। यदि तुम्हारे हृदय में थोड़ी सी भी इच्छा उनके अलावा किसी और चीज के लिये उत्पन्न होती है, तब ऐसे प्रेमी के लिये उनके पास रहना असम्भव हो जाता हे।''

जब वह (बाबा) भौतिक शरीर में थे, तब भी कई व्यक्ति उनके साथ रहने के इरादे से आये। यह उनके इरादे की दुर्बलता थी जो वे किसी छोटी सी

महत्व हीन इच्छा के कारण उनसे दूर चले गये। इस विषय में सतर्क रहो। एक ऐसे हृदय के साथ आओ जो कृतज्ञ हो। याद रखो कि यह एक सौभाग्य और सम्मान है जिसको तुम्हें दिया गया है, इसलिये इसका लाभ उठाओ।''

इस विषय में ऐसा ही कुछ एरच भी कहते थे। जब तीर्थयात्री सुविधाओं की कमी के विषय में शिकायत करते थे और ट्रस्ट से और अधिक सुविधायें उपलब्ध कराने के लिये प्रार्थना करते थे। तब एरच इस पर अपनी झल्लाहट प्रगट करते थे। यदि बाबा प्रेमियों का कोई समूह या कोई सेन्टर पत्र भेजकर इसके लिये प्रार्थना करता था, तब एरच इस मामले को सम्बोधित करने के लिए बिन्दु रखते थे जब मण्डली हाल में वही ग्रुप उपस्थित होता था। यद्यपि उनका निशाना वही लोग होते थे, लेकिन वह वहाँ एकत्रित प्रत्येक व्यक्ति को सम्बोधित कर रहे होते थे।

एक सादगीपूर्ण शुरूआत करते हुए, वह कहते, ''भारत अपने तीर्थस्थलों के लिये प्रसिद्ध है। मृत्यु के पहले कम से कम एक बार इन पवित्र स्थलों पर जाना लोग अपनी जिन्दगी का एक पवित्र उद्‌देश्य मानते हैं। तीर्थ में यदि उनकी मृत्यु भी हो जाती है, तो वे वास्तव में भाग्यशाली माने जाते हैं। इनमें से कुछ स्थल तो अत्यधिक कठिन स्थानों पर स्थित हैं। उन तक पहुँचने के लिये मार्ग पर किसी को भी जान का खतरा होता है और फिर भी, हजारों की संख्या में जनसमूह उन स्थानों पर जाता है। क्योंकि ये स्थान परम्परानुसार तीर्थ माने जाते हैं, इसलिये जो कोई भी इस यात्रा पर जाता है वह लक्ष्य तक पहुँचने में शामिल कठिनाईयों के कारण निरन्तर प्रभु की याद करता रहता है। अपनी मृत्यु की सम्भावना से अवगत होने पर भी, वह खुशी–खुशी और स्वेच्छा पूर्वक इस विश्वास के साथ यात्रा पर जाते हैं कि ऐसी यात्रा में मृत्यु हो जाने से उनको मुक्ति मिलेगी। उनका ऐसा प्रेम और विश्वास है कि अपने लक्ष्य तक पहुँचने के अतिरिक्त वे किसी भी चीज की परवाह नहीं करते।

''तीर्थ स्थल परेशानियों और कठिनाइयों से समबद्ध हैं और तीर्थयात्रियों से बलिदान माँगते हैं जिसके लिये वे तैयार रहते हैं। उनकी तुलना में, बाबा ने हमारे लिये इसे इतना सरल बना दिया है। समाधि पर पहुँचने के लिये न तो तुम्हें पहाड़ों पर चढ़ना है और न ही दुर्गम स्थानों से होकर यात्रा करनी है। कमजोर से कमजोर व्यक्ति भी थोड़ा सा प्रयत्न करके मार्ग पर चलकर वहाँ पहुँच सकता है जिसकी किसी भी तीर्थयात्री से आशा की जाती है। बाबा ने वास्तव में इस बार अपने प्रेमियों को जरूरत से ज्यादा प्यार

देकर न केवल उन्हें वह दिया है जिसकी उन्हें आवश्यकता है, बल्कि ट्रस्ट द्वारा दी गई सुविधाओं के रूप में उन्हें सुख सुविधायें भी दी हैं। बाबा के समय मण्डली को दी गई साधारण सुविधाओं की तुलना में, वर्तमान सुविधायें विलासितापूर्ण हैं।

''फिर भी, बाबा प्रेमी सन्तुष्ट नहीं हैं। हमें बहुधा अधिक सुविधाओं की माँग करते हुए पत्र प्राप्त होते हैं। हम इससे अधिक और कितना दे सकते हैं ? हम भी वृद्ध और कमजोर होते जा रहे हैं। हम, तुम सभी के लिये इससे अधिक और कितना कर सकते हैं ? तुम सभी केवल उनकी भौतिक उपस्थिति से संतुष्ट क्यों नहीं हो सकते हो? तुम सभी इससे अधिक सुविधायें क्यों चाहते हो, विशेष रूप से तब जब तुम सभी लोग केवल कुछ दिनों के लिये दर्शन करने आते हो ? क्या तुम उनकी खातिर थोड़ी सी परेशानी में नहीं रह सकते ? हमारे लिये वह कितना कष्ट उठाते हैं ? क्या तुम उनकी खातिर थोड़े से कष्ट में नहीं रह सकते ? तुम अपनी चाहों से बाबा पर और मण्डली के सदस्यों पर बोझ क्यों डालना चाहते हो ? तुम न केवल प्रत्येक पर अपनी चाहों का बोझ डाल रहे हो, बल्कि स्वयं को भी बन्धन में डाल रहे हो।

''ट्रस्ट तुम सभी के लिये जितनी अधिक सुविधायें देता है, तुम्हारे सहित सभी के लिये और अधिक समस्यायें उत्पन्न होती है। इन सुविधाओं को बनाये रखने की व्यवस्था अब कौन करेगा ? ट्रस्ट को इन सुविधाओं को कायम रखने के लिये अतिरिक्त नौकरों और अन्तेवासी कर्मचारियों का प्रबन्ध करना पड़ेगा। अन्तेवासियों के रहने के लिये और अधिक स्टाफ क्वार्टर्स बनाने पड़ेंगे और तीर्थयात्रियों द्वारा इन सुविधाओं का उचित प्रयोग हो, इसके लिये अधिक नियम बनाने पड़ेंगे। एक ओर तीर्थयात्री नियमों की शिकायत करते हैं और दूसरी ओर वे और अधिक सुविधायें चाहते हैं जो उन्हें और अधिक नियमों से बाँध देंगी। तुम सभी वैसी ही साधारण जिन्दगी क्यों नहीं जीते जैसी कि बाबा ने स्वयं मण्डली सदस्यों के साथ प्रत्येक के लिये उदाहरण के रूप में बिताई थी ?

''लोग ये सभी चीजें क्यों माँगते हैं ? यह सांसारिक सुख सुविधाओं की इच्छा उनके हृदय की इच्छाओं के कारण है यदि उनकी लालसा केवल बाबा के लिये होती, यदि वे यह याद करके की वह एक तीर्थस्थल पर हैं, अपना ध्यान शत् प्रतिशत उन पर (बाबा पर) केन्द्रित करते, तब उनका हृदय सभी इच्छाओं

से मुक्त होता और वे उनकी उपस्थिति में होने के अतिरिक्त किसी और चीज की चाह नहीं करते। बाबा के लिये तुम्हारी लालसा और इच्छा कमजोर होने के कारण, दूसरी इच्छायें तुम्हारे हृदय में धीरे–धीरे पनपती रहती हैं और इसी कारण से तुम सभी असुविधाओं पर ध्यान देते हो और अधिक सुख सुविधायें चाहते हो। कोई भी व्यक्ति जो कि वास्तव में अपने प्रियतम की चाह में खोया होता है, अन्य किसी भी चीज पर ध्यान नहीं देता। और अधिक सुविधाओं की चाह करने के बजाय, अपने हृदय को बाबा की और अधिक चाह करने दो। वह ही इकलौती चीज हों जिसकी तुम्हारा हृदय चाह करें, तुम्हारे हृदय की इकलौती इच्छा वही हों। जब तुम ऐसी चाह अपने हृदय में उत्पन्न करने में सफल होते हो, तब वह तुम्हारी सभी आवश्यकताओं की चिन्ता करते हैं।

''ये ही वे युगों पुरानी लालसायें और इच्छायें हैं जिन्होंने हमारी जिन्दगी में कष्ट उत्पन्न किये हैं। वह (बाबा) हमें इन सभी इच्छाओं से मुक्त करने के लिये आये हैं जिससे कि हम शाश्वतरूप से मुक्त हो सकें। जैसे–जैसे अधिक और अधिक सुविधायें उत्पन्न की जाती हैं जो कि तीर्थयात्रियों के सामूहिक इच्छाओं का परिणाम होती हैं, स्थान अधिक व्यवस्थित होता जाता है और पहले से अधिक कानून कायदे बनाये जाते हैं। जो सहज और स्वतंत्र प्रेम वातावरण में व्याप्त होता है, अदृश्य होने लगता है। इस तरह से लालसा, न केवल व्यक्तिगतरूप से बल्कि प्रत्येक के लिये सामूहिकरूप से भी कष्ट उत्पन्न करती है। कम से कम जब तुम यहाँ हो, अपनी समस्त चाहों का त्याग करने के द्वारा बाबा को अपनी चिन्ता करने दो और तुम केवल उनकी चाह करो।''

जहाँ तक भाऊजी का सम्बन्ध है, यद्यपि वह भी इस विषय पर एरच और मनी के जैसा दृष्टिकोण रखते थे, वह ही एक हैं जो इन सभी सुख सुविधाओं को देने के साधन थे जो, एरच के अनुसार, तीर्थयात्रियों को लाड़ प्यार देकर बिगाड़ते थे। भाऊजी बहुधा इस स्थान के भविष्य के सम्बन्ध में बाबा की भविष्यवाणी के विषय में बात करते थे। वह दूसरे मण्डली सदस्यों को याद दिलाते थे कि निकट भविष्य में यह स्थान विश्व तीर्थ केन्द्र बनेगा और जब लोग यहाँ आना शुरू करें, तो उसके लिये ट्रस्ट को अधिक संख्या में लोगों को ठहराने और उनकी भोजन व्यवस्था की सुविधाओं की तैयारी शुरु कर देनी चाहिये।

भाऊजी ने कल्पना शील होने के कारण, उस लक्ष्य को प्राप्त करने की ओर दृढतापूर्वक अकेले ही काम करना शुरू कर दिया जिसे उन्होंने विभिन्न

बाधाओं और विरोध के बावजूद किया। यह व्यक्तिगत रूप से किसानों से भूमि लेने की बातचीत करने लगे अपने कानूनी अनुभव के आधार पर इसकी जानकारी लेकर कार्यवाही करने लगे। इसके अलावा वह व्यक्तिगत रूप से तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिये भवन निर्माण के लिये विभिन्न सरकारी कार्यालयों से अनुमति भी लेने लगे। इन सुविधाओं को बनाने के लिये कृषिविहीन स्तर की भूमि, जल और बिजली के कनेक्शन की अनुमति लेना भी किसी व्यक्ति के लिये वास्तव में एक कमर तोड़ प्रक्रिया थी। प्रत्येक अनुमति के लिये सरकारी कार्यालयों के असीमित दौरे करने पड़ते थे। जब स्थानीय स्तर पर सरकारी अनुमति नहीं मिलती थी, तो भाऊजी कार्य को पूरा करने के लिये सम्बन्धित वरिष्ठ अधिकारियों से मिलने मुम्बई, पूना या दिल्ली की भी यात्रा करते थे। वह (भाऊजी) मण्डली में सबसे कम उम्र के थे और उनमें इतने विशाल और मन को भयभीत करने वाले कार्य को पूरा करने का जोश था जोकि बहुधा मुझे आश्चर्य में डाल देता था कि वह कैसे इसकी व्यवस्था करते थे।

सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिये, उन्होंने लगभग अकेले ही अपनी कल्पना और जोश के साथ मेहेराबाद को बनाया। उनमें यह समझने की बुद्धि भी थी कि मेहेराबाद का विस्तार एक दिशा में ही हो सकता था और पूरा विकास ऊपरी मेहेराबाद में होना था, क्योंकि उसी दिशा में विस्तार के लिये खुला मैदान उपलब्ध था। निचले मेहेराबाद में विकास की कोई संभावना नहीं थी क्योंकि हम पीछे चारों ओर से वि आर डी ई भूमि से घिरे हुए थे जो कि मूलरूप से सैनिक संस्था थी और केन्द्रीय सरकार से सम्बन्धित थी। इसके साथ ही साथ सरकारी पदाधिकारियों ने निचले मेहेराबाद में और अधिक विकास की अनुमति देने से इन्कार कर दिया था क्योंकि सैन्य जमाव की सीमा पर था और एक सुरक्षा नज़रिए से भी खतरा माना जाता था। उन्होंने हमें यह भी संकेत दिया कि निचले मेहेराबाद में बाबा प्रेमियों के लिये ऐतिहासिक रूप से समृद्ध कई स्थल थे, इसलिये आगे कोई भी विकास या विस्तार की वहाँ अनुमति नहीं दी जानी चाहिये। ये स्थल भावी पीढ़ी के लिये आरक्षित होने चाहिये और सभी तीर्थयात्रियों को दी जाने वाली सुविधायें कहीं अन्य स्थानान्तरित कर देनी चाहिये।

भाऊजी ने ट्रस्ट के विस्तार पर लगाये गये प्रतिबन्धों का अनुसरण

करते हुए इस दिशा में कार्य किया और इस पर भी भविष्य में आने वाले तीर्थयात्रियों की बड़ी संख्या के लिये स्थान तैयार करने का कार्य भी प्राप्त कर लिया। क्या विडम्बना थी कि उनकी आलोचना और बहुधा अपमान भी उन्हीं बाबा प्रेमियों में से कुछ प्रेमियों के द्वारा होता था जिनके लिये उन्होंने ये सभी सुविधायें उपलब्ध की थीं। इस कार्य में भाऊजी की भूमिका और उन्होंने जो कठिन परिश्रम किया था, उससे अनभिज्ञ होने के कारण लोगों ने छोटी और महत्वहीन कारणों के लिये भी उन्हें ही दोषारोपण हेतु चुना। भाऊजी ऐसे नहीं थे अपनी बुराई सुनकर काम करना बन्द कर देते थे। उन्होंने (भाऊजी ने) उन्हीं लोगों की सहायता और कार्य करना जारी रखा जो उनका विरोध करते थे। जब वह ऐसा करते थे तो बहुधा टिप्पणी करते थे, ''यही बाबा भी इन परिस्थितियों में करते और वह हमसे भी वैसा ही करने की आशा रखते हैं। मैं यहाँ अपने प्रियतम को प्रसन्न करने के लिये हूँ और मुझे उनकी भी सहायता करना है जो मेरा विरोध करते हैं और मेरी आलोचना करते हैं।''

हाल ही में, सन् २०१० में पश्चिम की यात्रा से भाऊजी के लौंटने के बाद, मैंने संयोगवश उन्हें फोन किया। उन्होंने पश्चिम के अपने अनुभवों के बारे में मेरे साथ बातचीत की जब वह अस्पताल में भर्ती थे और अपनी जिन्दगी के लिये संघर्ष कर रहे थे। उन्हें शरीर के परे जाने का अनुभव हुआ और उन्होंने उसका विवरण बतलाया जिसे वह शूली पर चढ़ना कह रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था जैसे वह भयानक कष्ट में हों जब उन्होंने मुझसे कहा, ''मुझे शूली पर चढ़ा दिया गया था और पहली बार मैं समझा कि शूली पर चढ़ने पर कैसा अनुभव होता है। इससे मुझे बाबा के शूली पर चढ़ने को समझने में सहायता मिली।''

मेरा हृदय रो रहा था जब उन्होंने अपने कष्ट के विषय में बतलाया और मैंने उनसे कहा, ''मैं नहीं समझ पाता कि यह नया कष्ट क्या है जो बाबा ने आपको दिया है, लेकिन अपनी प्रतिदिन की जिन्दगी में मैंने आपको उन लोगों के द्वारा शूली पर चढ़ाये जाते देखा है जिनकी सहायता करने का आपने प्रयास किया है। आपके कार्यों को न समझ कर, उन्होंने आपको शूली पर चढ़ाकर कीलें ठोंक दी और तब भी आप उनके लिये कार्य करते रहे। केवल आप और मण्डली के अन्य सदस्य इसे कर सकते हैं। ऐसे लोगों के लिये कार्य करते रहना जिन्होंने आपको रोजमर्रा की जिन्दगी में शूली पर लटकाया हो, कुछ ऐसा

है जिसे कोई भी साधारण मनुष्य नहीं कर सकता और मैं उसके लिये आपके सम्मुख नत मस्तक हूँ।

"मैं बाबा को और आपको, एरच मनी और दूसरे मण्डली के सदस्यों को अपने विवादास्पद कार्यों के पीछे छुपे हुए कारणों को मुझ पर प्रगट करने के लिये धन्यवाद देता हूँ वे कार्य जो दुनियाँ की दृष्टि में अर्थहीन प्रतीत होते थे, परन्तु बाबा की दृष्टि में पूरी तरह सही थे। बाबा की कृपा और मण्डली की सहायता से अपने हृदय में मैं देख और समझ सकता था कि बाबा हमें अपनी उस भौतिक उपस्थिति का स्वाद चखाने के लिये, जिसे मण्डली ने सहा था, आप सभी को अपनी चाभी के उपकरण के रूप में प्रयोग कर रहे थे। यह उनकी भौतिक उपस्थिति के कष्ट का थोड़ा सा स्वाद बहुधा मेरे लिये इतना अधिक होता था कि मेरे लिये उसे उस समय सहना कठिन होता था और मण्डली के विशाल हृदयों की प्रशंसा करने के लिये बाध्य करता था कि वह उनके (बाबा के) कष्टों में भाग लेते थे, जो कि बहुत कठोर थे और कई वर्षों के बाद भी, उन सभी को एक क्षण का विराम (Break) दिये बिना चलता रहा।"

मैं थोड़ी देर चुप रहा और तब मैंने भाऊजी से कहा, "जहाँ तक आपका सम्बन्ध है, सभी मण्डली सदस्यों में से बाबा ने आपके लिये सबसे अधिक कष्टप्रद भाग लिखा था। उन्होंने आपको एक ज़्यादा बड़े आकार का क्रॉस ले जाने को दिया था जिससे मुझे यह एहसास होता है कि वह (बाबा) आपको सबसे अधिक प्यार करते होंगे जो उन्होंने आपके लिये ऐसा भाग लिखा। आपको इतनी कठिन भूमिका देने के लिये आप उनके हृदय के नजदीक के कोई व्यक्ति होंगे। आप सच में ही उनके नजदीकी लोगों में से एक हैं।"

बाबा प्रत्येक चीज का उद्‌गम हैं

मण्डली के सहायकों को मुख्य बाबा उत्सवों, जैसे मौन दिवस, बाबा का जन्म दिन, अमर तिथि और क्रिसमस के अलावा दूसरे बाबा उत्सवों में जाने का अवसर नहीं मिलता था क्योंकि उन्हें मण्डली के समीप रहना पड़ता था। जब कभी मण्डली ऐसे उत्सवों में शामिल होती थी, सहायकों को भी उसमें जाने का अवसर मिल जाता था। अन्यथा उनका मुख्य कर्त्तव्य मण्डली की ओर था और वही उनका मुख्य बाबा प्रोग्राम माना जाता था।

एक अवसर पर, मेहेराबाद में किसी कार्यक्रम का आयोजन किया गया और उसमें सभी आमन्त्रित थे। भाऊजी अच्छी मुद्रा में थे और उन्होंने अपने

सहायकों की ओर मुड़कर कहा, "आज मुझे अपने पास किसी की भी आवश्यकता नहीं है। तुम लोग जा सकते हो और यदि चाहों तो प्रोग्राम में शामिल हो सकते हो।" उनके एक या दो सहायक चले गये लेकिन शेष सहायक वहीं रूके रहे। भाऊजी ने मुझसे पूँछा कि मैं प्रोग्राम में शामिल क्यों नहीं हो रहा था। सामान्यरूप से मुझे प्रोग्रामों में शामिल होना पसन्द नहीं था क्योंकि उनमें से अधिकांश प्रोग्राम मेहेराबाद या मेहेराजाद में होते थे और अहमदनगर की धूल भरी सड़कों पर मोटर साईकिल से यात्रा करना मेरे स्वास्थ्य के लिये हानिकारक था। इसके अतिरिक्त मैं मण्डली के साथ का आनन्द लेता था जिसे हम ट्रस्ट कम्पाउण्ड के अन्तेवासी होने के कारण, बहुत मात्रा में प्राप्त करते थे। मैंने भाऊजी को प्रोग्राम में न जाने के अपने कारण बतलाये।

उन्होंने मुझसे कहा, "लेकिन तुम्हें कभी—कभी अवश्य जाना चाहिये। यह एक अच्छी चीज है और बाबा—प्रेमियों की ऐसी प्रेममय सभा के दौरान उनकी (बाबा की) उपस्थिति का अनुभव होता है।" मैंने भाऊजी को बतलाया कि मुझे उनकी (बाबा की) उपस्थिति का अत्यधिक अनुभव तब होता था जब मैं मण्डली के सदस्यों के समीप होता था या जब मैं बाबा की समाधि पर या बाबा से सम्बन्धित किसी दूसरे स्थान पर मौन बैठता था। सार्वजनिक प्रोग्रामों में, कई बाबा प्रेमियों का ध्यान बहुधा बाबा पर कम, एक दूसरे से मिलने या अभिवादन करने में ज्यादा होता था। यह मिलना या अभिवादन करना बहुधा बाबा समुदाय में विवादास्पद घटनाओं की गपशप करने में समाप्त होता था। ऐसी घटनायें बहुधा मेरा ध्यान बाबा के प्रोग्राम का आनन्द लेने और उनकी उपस्थिति की ओर से हटा देतीं थी। मैंने उनको (भाऊजी को) यह भी बतलाया कि मैं बाबा की उपस्थिति सबसे अधिक उनकी मण्डली के समीप और उन स्थानों पर जो उनके कार्य से जुड़े हुए हैं, अनुभव करता था। इसलिये मैंने अपना समय वहाँ व्यतीत करने के लिये चुना जहाँ मेरा हृदय उनकी उपस्थिति ज्यादा अनुभव था।

मुझे तब एक कविता याद आई जिसे मेरे कालेज के मित्र ने मुझे सुनाई थी और जो सही सही मेरे हृदय की स्थिति का वर्णन करती है। मैंने इस कविता को भाऊजी को सुनाया और वह निम्न है। "माना कि ताज खूबसूरत है, फिर भी वह पत्थर की एक मूरत है, अगर सामने मुमताज महल बैठी हों, तो आगरा जाने की

क्या जरूरत है।'' अनुवाद करने पर, इसका अर्थ है, ''इससे सहमत हूँ कि ताज महल सुन्दर है, लेकिन यह फिर भी पत्थर का एक मकबरा है। यदि मुमताज महल (सम्राट शाहजहाँ ने अपनी सुन्दर पत्नी की याद में ताज महल बनवाया था) तुम्हारे सामने बैठी होती तो आगरा जाने की क्या आवश्यकता हैं?''

भाऊजी ने इस कविता का आनन्द लिया और एक मुस्कुराहट के साथ उन्होंने मुझसे कहा, ''यह अच्छी है और यह हमें बतलाती हैं कि बाबा हमें क्या बतलाते थे। वह (बाबा) जब शरीर में थे हमें निरन्तर याद दिलाते थे कि हमें यहाँ वहाँ जाने की कोई आवश्यकता नहीं थी। हमें प्रेम से उनकी आज्ञा का पालन करने और उनकी सेवा करने के अलावा कुछ नहीं करना होता था। वह प्रत्येक चीज का उद्‌गम हैं और उन पर अपनी पकड़ बनाये रखने के लिये उनका प्रेमपूर्ण स्मरण ही पर्याप्त था।''

मेरा नाम लोगों के कान तक ले जाओ

मण्डली हाल में बैठे हुए एक तीर्थयात्री ने एक बार एरच से दूसरे लोगों के साथ बाबा के विषय में बातचीत करने की अपनी अनिच्छा को व्यक्त किया। उसने अतीत में ऐसा किया था और यह पाया था कि अधिकांश लोगों को इसमें रूचि नहीं थी और कुछ ने उसका मजाक भी बनाया था। उसने अनुभव किया कि उन लोगों के हाथों जो अज्ञानी थे, अपमान सहने की अपेक्षा चुप रहना बेहतर था। उसने तब एरच से प्रार्थना की कि वह अपनी राय और अन्तर्ज्ञान से हमको बतलायें कि ऐसी परिस्थिति में किसी का बर्ताव कैसा होना चाहिये।

एरच ने अपने शब्दों पर अत्यधिक जोर देते हुए धीरे से उत्तर दिया, ''यह बहुत आसान है क्योंकि बाबा ने खुद हमें बतलाया है कि ऐसी परिस्थितियों में क्या करना चाहिये। बाबा ने कहा है, 'तुम्हारा काम मेरा नाम किसी व्यक्ति के कान तक ले जाना है। कान से हृदय तक उसे ले जाना मेरा काम है।' बाबा ने स्पष्ट रूप से अपने सभी प्रेमियों के लिये यह कार्य बतलाया है कि वे लोगों की प्रतिक्रिया पर ध्यान न देकर सभी लोगों के पास उनका नाम पहुँचायें लेकिन यह स्वाभाविक है कि उनके हृदय, जो उनके (बाबा के) प्रेम के लिये जागरूक नहीं हैं, मेहेर बाबा के शब्दों के महत्व को पकड़ने में असफल होंगे क्योंकि वे उनकी (बाबा की) स्थिति से अनभिज्ञ हैं जो लोग तुम्हारा मजाक

बनाते हैं, वे ऐसा अपनी अज्ञानता के कारण करते हैं और ऐसे लोगों को बाबा के प्रेम के प्रभाव के द्वारा दूसरे लोगों की अपेक्षा ज्यादा जागरूक करने की आवश्यकता है। वे उन लोगों में से एक हैं जिन्हें दूसरे लोगों की अपेक्षा उनका नाम सुनने की ज्यादा आवश्यकता है क्योंकि केवल जब प्रेम जागेगा और अज्ञानता जायेगी, तभी वे उनकी ओर मुड़ेंगे।

''हम सभी इस अज्ञानता के पहलू से होकर गुजरे हैं और इसलिये अपनी जिम्मेदारी से भाग कर, और वह काम करना जिसकी बाबा तुमसे उम्मीद करते हैं, तुम उस स्त्री या पुरूष को बाबा के प्रेम के प्रति जागरूक करने का अवसर देने से इन्कार कर रहे हो। अपने दृष्टि कोण उस पर मत लादो। उसके साथ बहस भी मत करों। केवल देखो कि वह बाबा का नाम सुन रहा है। यदि वह खुले विचारों का है, तुम इस विषय पर और अधिक बातचीत कर सकते हो, नहीं तो रहने दो, उसे सन्तुष्ट करना बाबा का काम है जिसे वह (बाबा) व्यक्ति के हृदय को स्पर्श करने के द्वारा करते हैं। जब तक बाबा ऐसा नहीं करते, तुम्हारे द्वारा कितने भी तर्क वितर्क उसे सन्तुष्ट नहीं करेंगे।

''केवल इस कारण से कि तुम्हारा मजाक उड़ाया जाता है या तुम्हारा अपमान होता है, तुम उनके नाम का प्रचार करने में अपनी भूमिका अदा करने से मत डरो। यह अपमान ही है जिसके द्वारा प्रेमी उनकी ओर बढ़ते हैं और उनके लिये प्रत्येक को इसे स्वेच्छा से सहन करना चाहिये। उन्होंने तुम्हें अपना प्रेम देकर तुम्हारे हृदय को जागृत कर दिया है। तुम सभी के लिये यह समय है कि उस प्रेम को बनाये रखो और उनके लिये खड़े रहो। किसी परिस्थिति से इसलिये मत भागो क्योंकि उससे तुम्हारा अपमान हो रहा है। इस तरह तुम बाबा के प्रेम और तुम पर उनके विश्वास को धोखा दे रहे होगें। खड़े रहना और उस प्रेम को संभालना सीखों।''

एरच ने तब दक्षिण भारत के एक बाबा प्रेमी की कहानी सुनाई जिसने शब्दिक रूप से अपने लिये इस कार्य को करना–बाबा के आदेश के रूप में लिया और उसने इसे पूरी ईमानदारी से किया। बाबा–प्रेमी हमें कहानियाँ सुनाया करता था कि इस कार्य को करने में उसे क्या सहना पड़ा था और हम सभी उन हास्यास्पद परिस्थितियों पर हँसते थे जिनका उसे सामना करना पड़ा था। वह भरी हुई बस में चढ़ जाता था और जोर–जोर से बाबा का नाम चिल्लाता था जिससे प्रत्येक व्यक्ति इसे सुनले। यदि वह किसी सार्वजनिक

स्थान में या किसी शॉपिंग मॉल या पिक्चर हॉल में होता था, तब भी वह ऐसा ही करता था। यदि वह किसी अस्पताल में होता था जहाँ उसे जोर जोर से चिल्लाने की अनुमति नहीं होती थी, वह बाबा का चित्र लेकर प्रत्येक रोगी के पास जाता था और उन्हें बाबा का चेहरा दिखलाकर उनसे पूँछता था कि क्या वे जानते थे कि चित्र में कौन मनुष्य था। जब वे न कहते थे, वह उन्हें बतलाता था कि वह मनुष्य अवतार मेहेरबाबा थे और वहाँ से चला जाता था। लोग सोचते थे कि वह पागल था और कुछ लोग उस पर हँसते भी थे लेकिन वह ऐसा करता रहा।

इस विषय में एरच ने कहा, ''उसके कार्य जो सरल ह्रदय से उत्पन्न होते थे, बाबा को बहुत अधिक खुशी देती क्योंकि बाबा को ऐसे भोलेपन से बहुत प्रेम था। वह बहुत अधिक प्रसन्न होते थे यदि कोई एक बच्चे जैसे विश्वास और भोलेपन के साथ उनके आदेश का शतप्रतिशत पालन करता था जैसे कि एक बच्चा अपनी माँ के शब्दों पर श् प्रतिशत विश्वास करता है। उस व्यक्ति ने परिणाम की परवाह नहीं की। वास्तव में, वह जानता भी नहीं था कि अपने भोलेपन और बाबा के प्रति अपने बच्चे जैसे प्रेम के कारण उसका मजाक उड़ाया जा रहा था। ऐसे बच्चे जैसे भोलेपन से उनको प्रेम करो और वह तुम्हारे हो जायँगे।''

एरच के कथन, ''अपमान का सामना करते समय बाबा को पकड़े रहना'' ने मुझे वह याद दिला दिया जो मनी ने मण्डली हाल में इस विषय पर कहा था। उन्होंने (मनी ने) बाबा के अपने नजदीकी प्रेमियों के साथ कार्य करने के तरीके की तुलना उस भारतीय धोबिन से की थी जो कपड़े घोती थी। उन्होंने कहा था, ''क्या तुमने कभी किसी भारतीय धोबिन को कपड़े घोते हुए देखा है ? घूल को हटाने के लिये कपड़ो को साबुन के पानी में कुछ देर तक भिगोने के बाद वह तब कपड़े के एक टुकड़े को इसके छोर पर अपने दोनों हाथों से पकड़ती है और सिर के एक तरफ की ओर अपने कन्धों से ऊपर ले जाती है और तब अपनी पूरी ताकत से इसे नीचे की ओर लाती है और इसे पत्थर पर पटक देती है।'' मनी जब कहानी सुना रही थीं तो धोबिन की मुखमुद्रा को भी संकेतों द्वारा करके दिखला रही थीं। उन्होंने आगे कहा, ''धोबिन इसे एक बार करने के बाद बन्द नहीं कर देती बल्कि इसे बार–बार करती रहती है। इसमें लगभग एक लय होती है और हर बार कपड़े को पटकने के बाद तुम इस

घमाकेदार शोर को सुन सकते हो। जब वह इस प्रक्रिया को समाप्त कर लेती है, तुम दागरहित, घूल से पूर्ण मुक्त स्वच्छ वस्त्र प्राप्त करते हो।

''बाबा अपने नजदीकी बाबा प्रेमियों के साथ ऐसा ही करते हैं। संस्कारों की एकत्रित घूल को साफ करने के लिये वह (बाबा) उन्हें अवसर देते हैं कि वे उनकी (बाबा की) सेवा करें। जब प्रेमी उनके दिये गये अवसर को स्वीकार कर लेता है, तब बाबा को अपने प्रेमी के मिथ्या अहम् को बारम्बार उसके अपमान के द्वारा पटकने का कार्य करने का अवसर देता है। जिस तरह धोबिन घूल को साफ करने के लिये वस्त्र को निर्दयतापूर्वक पत्थर पर पटकती है, उसी तरह बाबा भी अपने प्रेमियों के साथ करते हैं। वह निर्दयी लगते है जब वह निर्दयतापूर्वक बारम्बार अपमान के द्वारा उस मिथ्यापन को पटकते हैं जो उनकी सेवा करने को सहमत होता है।

''यदि तुम स्वेच्छा से इसके लिये समर्पण करते हो, यह बाबा के काम को आसान कर देता है। वह पहले से भी अधिक तेजी से तुम्हारे संस्कारों को साफ कर सकते हैं। तुम न केवल उनके लिये बल्कि अपने लिये भी उन चीजों को आसान बना लेते हो। प्रक्रिया बहुत कष्टदायी हो सकती है लेकिन विश्वास रखो कि तुम पर उनकी (बाबा की) पकड़ उसी तरह मजबूत है जैसी कि धोबिन की पकड कपड़ों पर होती है जब वह उन्हें पत्थर पर पटकती है। निराश मत हो और न यह सोचो कि बाबा ने तुम्हें छोड़ दिया है। वास्तव में, ऐसे क्षणों के दौरान वह (बाबा) न केवल तुम्हें दोनों हाथों से कसकर पकड़े रहते हैं बल्कि उनका पूरा ध्यान उस जबरदस्त कार्य पर होता है जिसे वह तुम पर कर रहे होते हैं। उन अत्यधिक कष्ट और अपमान के क्षणों में तुम उनके समस्त ध्यान का लक्ष्य बन जाते हो। इस पर विश्वास करो और कोई सन्देह मत करो।

शाश्वत आनन्द क्या है

एक बार एक तीर्थयात्री ने एरच से पूँछा, ''कुछ आधुनिक गुरु कहते हैं कि वासना के द्वारा कोई परमानन्द का अनुभव कर सकता है जो अन्त में शाश्वत आनन्द की ओर ले जाता है, क्या यह सम्भव है?''

एरच लम्बे समय तक चुप रहे और तब उन्होंने धीरे से कहा, ''सर्वप्रथम, हम समझे कि शाश्वत आनन्द क्या है ? यह कहाँ है ? और हम इसे कैसे प्राप्त करते हैं ? बाबा ने कहा था कि हममें से प्रत्येक वह शाश्वत आनन्द

है जिसे हम खोजते हैं। यद्यपि हम वह हैं, हम इसका अनुभव नहीं करते। क्यों ? मिथ्या अहम् के कारण जो कि भ्रम में जकड़ा हुआ है और स्वयं के सीमित शरीर होने का विश्वास करता है। इसलिये हम मानव शरीर की सीमाओं से कष्ट पाते हैं। सृष्टि में प्रत्येक आत्मा जो कि इस सीमितता से बँधी हुई है, उस अनन्त एक के साथ ईश्वर के साथ एक रूपता की खोज में अपनी सीमाओं को तोड़कर मुक्त होने का प्रयास कर रही है। प्रत्येक सीमित बूंद रूपी आत्मा ऐक्य को खोजने का प्रयत्न कर रही है या कोई कह सकता है, ईश्वर के अनन्त सागर में विलीन होने का प्रयत्न कर रही है।

''जब कोई आत्मा इस यात्रा में सफल हो जाती है वह शाश्वत आनन्द का अनुभव करती है। यह अन्तिम विलय केवल सद्गुरु की कृपा से हो सकता है जो कि शाश्वत आनन्द का अनन्त सागर हैं। यह कल्पना करना कि तुम अपने शरीर की पाँचों इन्द्रियों के साथ सम्बद्ध खुशियों में लिप्त होकर शाश्वत आनन्द की उस स्थिति को प्राप्त कर सकते हो तो यह मात्र तुम्हारी एक बेवकूफी है। वास्तव में, यह तुम्हें बाद में तुम्हारे शरीर की सीमाओं में बाँध देगी और आगे तुम्हारी यात्रा में देरी होगी । कोई कहता है कि वहाँ वासना के द्वारा पहुँचा जा सकता है, दूसरे कहते हैं कि वहाँ नशीली दवाओं के द्वारा पहुँचा जा सकता है। यह केवल स्वयं को बेवकूफ बनाना है।

एरच थोड़ी देर रूके और तब उन्होंने कहा, ''लेकिन ये सभी सांसारिक खुशियाँ, चाहे कितनी भी बड़ी हों, ईश्वर साक्षात्कार के शाश्वत आनन्द की एक अस्थायी छाया हैं। ऐसा ही बाबा ने हमसे कहा था। सीमित आत्मा की अनुभव द्वारा प्राप्त की गई सभी खुशियों जो कि उसे सृष्टि के अनुभव से होकर प्राप्त होती हैं, उसकी तुलना बाबा उस वास्तविक शाश्वत आनन्द की अल्पकालिक और केवल छाया से करते हैं। इसलिये इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम अपने सुखद अनुभवों को कितनी ऊँचाई तक ले जाते हो, यह एक छाया मात्र हैं।''

एरच थोड़ी देर रूके और तब हमें उस सच्चाई को समझने में सहायता करने हेतु एक भिन्न तरीका प्रस्तुत करना शुरू किया। ''प्रत्येक आत्मा ईश्वर के साथ मिलन चाहती है, जो कि शाश्वत आनन्द का स्रोत है। शाश्वत आनन्द के स्रोत ईश्वर तुम्हारे अन्दर है, तुम्हारे बाहर नहीं। प्रत्येक को सृष्टि में उन्हें ढूँढ़ना बन्द करना होगा। जब आन्तरिक खोज या यात्रा शुरू होती है, तब प्रत्येक

धीरे–धीरे सृष्टि की चेतना को खोने लगता है। अन्त में, जब कोई सृष्टि की पूर्ण चेतना को खो देता है, वह ईश्वर–शाश्वत आनन्द–में समा जाता है। तुम अब शाश्वत आनन्द का अनुभव करते हो जो कि तुम हमेशा से थे। आत्मा को सागर के अस्तित्व का अनुभव करने के लिये अपने बूँद के अस्तित्व को खोना होगा। तुम्हें ईश चेतना को अनुभव करने के लिये सृष्टि की चेतना को खोना होगा। केवल पाँच सद्गुरु सृष्टि में दूसरों की सहायता करने के लिये सृष्टि की चेतना के साथ–साथ ईश चेतना रखते हैं।''

एरच ने कहना जारी रखा, ''एक साधारण आत्मा जो सांसारिक खुशियों को जैसे कि अच्छी नौकरी, पत्नी, बच्चे, वासना, नशीली दवाओं या अन्य किसी भी चीज के रूप में खोजती है, वह उन्हें अपने से बाहर खोज रही है। उसकी खोज बाहरी है। उसने बाह्य लक्ष्य के रूप में एक मिथ्या प्रियतम उत्पन्न कर लिया है, जबकि वह लक्ष्य चाहे कार्य हो या नशीली दवायें हों, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। बाह्य लक्ष्य को चाहने वाला व्यक्ति लक्ष्य को अपना मिथ्या प्रियतम बना लेता है और ऐसा करने में वह प्रेमी बनजाता है।

''अब, एक प्रेमी के रूप में, वह अपने मिथ्या प्रियतम को खोजता है और इस मिथ्या प्रियतम के साथ एकीकरण का प्रयत्न करता है। जब वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो जाता है, वह कह सकता है कि उसने अपने मिथ्या प्रियतम के साथ एकीकरण प्राप्त कर लिया है। एकीकरण के इस क्षण में व्यक्ति हर्ष और प्रसन्नता का अनुभव करता है। लेकिन क्योंकि एकीकरण मिथ्या प्रियतम के साथ है, यह अनुभव अस्थायी होता है। लक्ष्य को प्राप्त करके संतुष्ट होने पर, हर्ष जिसको तुम अनुभव करते हो, तुम्हारे अस्तित्व के अन्दर से आता है जहाँ पर शाश्वत आनन्द का स्त्रोत है। लक्ष्य मिथ्या होने के कारण, आनन्द या हर्ष अस्थायी है, यद्यपि यह अन्दर से आता है। इस आनन्द की अस्थायी प्रकृति के कारण, यह शाश्वत आनन्द की छाया कहलाता है जो तुम्हारे अन्दर है। इस तरह आत्मा बाहरी विभिन्न लक्ष्यों में शाश्वत आनन्द को निरन्तर ढूँढ़ती है जो वास्तव में तुम्हारे अन्दर है। यह असफल हो जाती है क्योंकि तुम मिथ्या में सत्य को कैसे खोज सकते हो ?

''मिथ्या खोज की कई जिन्दगियों के बाद, आत्मा अपने असली प्रियतम की खोज में अन्दर की ओर मुड़ती है जो कि उसके अन्दर रहते हैं। वह, अन्त में, असल शाश्वत आनन्द के स्रोत ईश्वर की ओर मुड़ जाती है जो

स्वयं उसके अन्दर है। अन्त में, शाश्वत आनन्द की स्थिति का अनुभव करने के लिये वह असल प्रियतम ईश्वर से एकीकरण प्राप्त कर लेती है। ऐसा ही होता है। जब प्रेमी मिथ्या प्रियतम के साथ एकीकरण प्राप्त करता है, वह शाश्वत आनन्द की अस्थायी छाया का अनुभव करता है। लेकिन जब प्रेमी अपने असली प्रियतम के साथ एकीकरण प्राप्त कर लेता है, वह शाश्वत आनन्द का अनुभव

प्रभु के दाँत

समुद्री अभियन्ता के रूप में जहाज पर काम करते हुए, मेरे पास पूरी दुनियां में यात्रा करने का अवसर था। जब हमारा जहाज बन्दरगाह पर पहुँचता था, अधिकांश जहाज के कर्मचारियों को बन्दरगाह के क्षेत्र को देखने का अवसर मिल जाता था। अभियन्ताओं को यह अवसर नहीं मिलता था यदि बन्दरगाह में जहाज को एक या दो दिन के लिये ठहरना होता था; कारण यह था कि केवल बन्दरगाह में ही गतिशील मशीनों को बड़ी मरम्मत तथा नवीनी करण के लिये बन्द किया जा सकता था। जब जहाज चल रहा होता था, मुख्य इंजन और दूसरी मशीनरियों पर कुछ भी नहीं किया जा सकता था क्योंकि उन्हें गति में रखना होता था। जहाज के चलते समय कोई भी आपातकालीन समस्या उत्पन्न होने की घटना में, मरम्मत के लिये जहाज को मध्य सागर में रोकना होता था, जिस स्थिति में जहाज हवा या पानी के बहाव के साथ बहने लगता था और ऐसी स्थिति को किसी भी कीमत पर बचाना होता था। इसका अर्थ था कि अभियन्ताओं को बहुधा चीजें शीघ्रता पूर्वक करने के लिये बारह से सोलह घण्टों तक काम करना पड़ता था। ज्यादा मरम्मत की स्थिति में, घड़ी की सुई की नोक पर कार्य आगे बढ़ता था जब तक कि मशीनरियाँ गतिशील दशा में न हों और इसका अर्थ बिना रूके कार्य करना होता था, कभी–कभी चौबिस घण्टों से भी ज्यादा समय लगता था। ऐसी परिस्थितियों में, बन्दरगाह के क्षेत्रों की यात्रा करने का प्रश्न ही नहीं था।

एक अवसर पर, मेरा जहाज संयोग वश श्रीलंका में था और वहाँ पर वह लम्बे समय तक लगभग एक सप्ताह से भी अधिक रूकने वाला था। हमने शुरूआत के कुछ दिनों में इंजन का काम समाप्त कर लिया जिससे कि हम एक दिन का अवकाश ले सकें और वहाँ पर कुछ स्थलों को देख सकें। हम लोगों को स्थानीय लोगों द्वारा सलाह दी गई थी कि हम कैन्डी शहर देखें, जहाँ ''पवित्र दाँत का मन्दिर'' स्थित था। यह मन्दिर भगवान बुद्ध के पवित्र दाँत का

घर था। यह एक महत्वपूर्ण तीर्थ केन्द्र माना जाता था और यह पर्यटकों का एक प्रसिद्ध आकर्षण भी था। हमने कैंडी शहर में घूमने के लिये एक बस की व्यवस्था कर ली थी। जहाज के अधिकांश कर्मचारियों की मन्दिर को देखने में रूचि नहीं थी और कैन्डी पहुँचने पर वे प्राकृतिक दृष्य स्थलों की यात्रा पर चले गये। मैंने एक गाईड किराये पर लिया जो मुझे मन्दिर के आस–पास का स्थान दिखला सके और मुझे इसके इतिहास से परिचित करा सके।

मन्दिर बहुत विशाल था और उसमें कई कमरे थे जहाँ सभी दीवारों पर चित्रकारी थी जिसमें भगवान बुद्ध के शरीर छोड़ने से लेकर इस मन्दिर के वर्तमान क्षणों तक की पवित्र दाँत की यात्रा को चित्रित किया गया था। यह दाँत भगवान बुद्ध के करीबी शिष्यों में से एक के द्वारा श्रीलंका लाया गया था। पौराणिक कथाओं के अनुसार, जो कि दीवार पर चित्रित थी, शिष्य को यह दाँत उस समय प्राप्त हुआ था जब बुद्ध का दाह संस्कार किया गया था। चित्रकारी में यह चित्रित किया गया था कि दाँत भारत से श्रीलंका कैसे लाया गया था और विरोधी शासकों के हाथों नष्ट होने से भी यह कैसे बचा रहा जो बौद्ध धर्म को नष्ट करने का प्रयत्न कर रहे थे। जब ऐसे बिरोधी शासक सत्ता में आये, बौद्ध भिक्षु पवित्र दाँत के साथ भूमिगत हो गये थे। इसलिये जब शासक मन्दिर को नष्ट करने में सफल हो गये, जो इस पवित्र दाँत का घर था, वे पवित्र दाँत को नष्ट नहीं कर पाये और यह युगों तक बचा रहा।

मित्र शासकों के आधिपत्य में, बौद्ध भिक्षु दाँत के साथ दूसरे शहर पर प्रगट हुए और उस शहर में मन्दिर का पुनर्निर्माण किया। इस तरह दाँत ने विभिन्न स्थानों से होकर कैन्डी में अपने वर्तमान स्थल तक की यात्रा की। पौराणिक कथायें यही कहती हैं जैसा कि चित्रकारी में चित्रित किया गया था।

पर्यटक गाईड ने पवित्र दाँत की प्रमाणिकता के विषय में सन्देह व्यक्त किया। क्या यह वास्तव में विरोधी, शासकों से नष्ट होने से बचा रहा था और वास्तव में दाँत असली था, यह हमेशा सन्देह का विषय बना रहा। फिर भी, लोग विश्वास करते थे कि यह असली था और हजारों के समूह में उस स्थान पर पहुँचते थे।

जिस दिन मैं वहाँ गया, वह सप्ताह का अन्तिम दिन नहीं था लेकिन, फिर भी वहाँ भीड़ थी। गाईड तब मुझे मन्दिर के अन्दर का गर्भ दिखलाने के लिये ले गया। यह अन्दर का गर्भगृह भगवान बुद्ध के पवित्र दाँत का घर था जो कि एक सोने की मंजूषा में ताले में बन्द था। केवल मुख्य पुजारी ही सफाई

करने के लिये इस अन्दर के गर्भगृह में जा सकता था। इस मंजूषा का ताला केवल तीन चाभियों से खुल सकता था। एक चाभी मुख्य पुजारी के पास थी, दूसरी चाभी मन्दिर के ट्रस्ट के मुख्य ट्रस्टी के पास थी, और तीसरी चाभी अध्यक्ष के पास थी। वर्ष में केवल एक बार इस सोने की मंजूषा का ताला खोला जाता था और पवित्र दाँत, जो एक सोने के जार में रखा था, बाहर निकाला जाता था। यह दाँत एक हाथी पर विशाल समारोह के मध्य पूरे कैन्डी शहर में ले जाया जाता था।

विशाल भीड़ झुण्ड के रूप में जुलूस में शामिल होने के लिये इस भाग्यशाली दिन पर शहर पहुँचती थी। वास्तव में, इस मुख्य मन्दिर से जुड़ा हुआ एक दूसरे मन्दिर का निर्माण किया गया था, जो उस हाथी को समर्पित किया गया था जो पवित्र दाँत को पहली बार ले गया था और अब मर चुका था। हाथी की खाल उतारकर, उसे भरकर मन्दिर में रखा गया था जहाँ लोग इस विश्वास के साथ उसकी पूजा करते थे कि वह पवित्र था। अन्दर के गर्भगृह के चारों ओर बाह्य गर्भगृह था। केवल मन्दिर के पुजारियों को ही इस कमरे में दैनिक प्रार्थनायें करने के लिये जाने की अनुमति थी। बाहर की ओर तीसरा और अन्त में सबसे बाहरी गर्भगृह था। तीर्थयात्रियों को केवल इस क्षेत्र में जाने की अनुमति थी जहाँ से वे उस पवित्र दांत की पूजा कर सकते थे। मूलभूत रूप से, कोई भी कह सकता है कि तीन गर्भगृह तीन मन्दिर थे जो कि एक दूसरे के अन्दर बने हुए थे।

प्रभु के पवित्र दाँत के चारों ओर यह सभी गतिविधियाँ देखकर मैं प्रभावित था जो शायद प्रमाणिक भी न था। जब गाईड सबकुछ बतला चुका तो उसने बाबा के लॉकेट की ओर इशारा किया जो मैं गले में पहने हुए था और उसने यह पूँछा कि वह कौन थे। मैंने उससे कहा, ''वह मेरे आध्यात्मिक गुरु अवतार मेहेर बाबा है।'' तब उसने दूसरे चाँदी के लॉकेट के विषय में पूँछा जो उसी हार के पास बन्धा हुआ था और उसमें बाबा के बालों की एक लट थी जो कि मुझे बाबा की प्रियतमा मेहेरा द्वारा अपने हाथों से दी गई थी। मैंने उसे बतलाया कि इसमें मेरे आध्यात्मिक गुरु के बालों की एक लट थी जिसे हम पवित्र मानते थे। जब मैं उसे यह बतला रहा था, मैंने हाथ से उस लॉकेट का स्पर्श किया। उस क्षण मेरे सम्पूर्ण अस्तित्व में बिजली के जैसा एक झटका लगा। मैं इस विचार से अभिभूत हो गया कि हजारों लोग यहाँ प्रतिदिन प्रभु के दाँत को अपना सम्मान देने आते है जो कि शायद असली न हो और एक मैं हूँ जो प्रभु के

बालों को एक लॉकेट में गले में पहने हूँ। मैं कितना भाग्यशाली था इसका उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मुझे उस स्थान पर रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था जहाँ प्रभु रहते थे और उनके नजदीकी शिष्यों के साथ भी रहने का अवसर प्राप्त हुआ था।

उस क्षण मेरा हृदय लबालब भरा हुआ था और मैं बाबा की उस जबरदस्त उपस्थिति का अनुभव करते हुए मन्दिर से चल दिया जो काफी दिनों तक मेरे साथ रही।

प्रेम जो ईश्वर को भी चुनौती देता है

मेरे प्रिय कथनों में से एक बाबा का यह कथन हैं, ''मैं चाहता हूँ कि तुम जिन्दगी की धाराओं के प्रवाह से, परिस्थितियाँ कुछ भी हों वे भी मेरे अपने द्वारा उत्पन्न की गई हैं अविचलित और अप्रभावित रहो। यदि तुम अपने भाग्य को धैर्य और संतुष्टि के साथ, उनकी इच्छा के रूप में स्वीकार करके सहन करते हो तो तुम ईश्वर से प्रेम कर रहे हो।''

यह मण्डली के सदस्यों का भी, विशेषरूप से एरच का यह प्रिय विषय था। वह हमें बतलाते थे, ''प्रत्येक स्थिति को–अच्छी, बुरी, परेशानी की और सुखद क्षणों को यह मान कर स्वीकार करो कि वे उनके (बाबा के) द्वारा आ रहे हैं और प्रत्येक व्यक्ति को उन्हें (बाबा को) प्रत्येक चीज में देखना होगा। उसे प्राप्त करने के लिये, प्रत्येक को यह कल्पना करना प्रारम्भ करना होगा कि वह (बाबा) हम में से प्रत्येक में है क्योंकि, वास्तव में, वह ही हैं जो तुम्हारे लिये सबकुछ कर रहे हैं। ऐसा करते रहो और एक समय आयेगा जब तुम यह जान जाओगे कि तुम्हारी जिन्दगी में केवल वह हैं। दूसरा कोई नहीं है। केवल उनका अस्तित्व है और जो तुम अनुभव करते हो उस सबके लिये वही जिम्मेदार हैं।''

जिस सहजता के साथ एरच यह कहते थे, उससे मुझे प्रतीत होता था जैसे कि उनके लिये यही महत्वपूर्ण था। ऐसा ही था जो वह वास्तव में अनुभव करते थे। विरक्ति और सन्तुलन की ऐसी आन्तरिक स्थिति जो एरच में लोग देखते थे, जहाँ कोई भी चीज न तो उन्हें कभी विचलित करती थी और न ही उत्तेजित करती थी, यह केवल पूर्ण त्याग से ही आ सकती थी। उनका बारम्बार याद दिलाना कि यही असली लक्ष्य था जिसे प्राप्त करने के लिये प्रत्येक को प्रयास करना चाहिये, ने मुझे इस दिशा में प्रयास करने के लिये प्रेरित किया। वर्षो तक,

मैंने वह दृष्टिकोण विकसित करना सीखा जहाँ मैं बाबा की कृपा से देख सकता था कि प्रत्येक चीज जो मण्डली कर रही थी, उसके मूल में बाबा थे। उनके समीप मैं आन्तरिक सन्तुलन की भावना को अनुभव करने लगा जिसने मुझे आन्तरिक खुशी दी इसका कोई महत्व नहीं था कि उनके कार्य कितने कठोर थे।

लोग बहुधा मुझसे पूँछते थे कि मैं ऐसा कैसे करता था। मैं उनसे पूँछता था, ''तुम क्या अनुभव करते यदि बाबा तुम्हारे सामने खड़े होते और तुम पर प्रहार कर रहे होते ? क्या तुम परेशानी अनुभव करते ?'' अधिकांश बाबा प्रेमी जिन्होंने उनको न तो देखा था और न ही उनसे बातचीत की थी, उत्तर देते थे, ''नहीं। मेरा हृदय रोमांच से भर जाता।'' हाँ तो मैं भी ऐसा ही अनुभव करता था जब मण्डली मुझ पर बिना कारण के प्रहार करती थी। मेरा हृदय वास्तव में हर समय उनकी आज्ञा का पालन करने का और उनके निर्देशों को पालन करने का अपनी पूरी क्षमता से प्रयास करता था। यदि कोई उनकी आज्ञा का पालन नहीं करता था और उसके कारण उस पर प्रहार किया जाता था, तो यह अच्छी चीज नहीं थी और यह मेरा मानना था।

यद्यपि मैं मण्डली के आस पास होने पर सनतुलन बनाये रखने में सफल था, जब दूसरों की बात आती थी, मैं छोटे से छोटे मामले में भी जो मुझे परेशान करता था, मृत्युपर्यन्त लड़ने को तैयार था। यदि मैं इसे अपने मिथ्या अहम् पर खतरा समझता था, जो कि अभी भी परिस्थितियों की अच्छाई और बुराई में जकड़ा हुआ था, इसी कारण से मैं मण्डली के आस–पास रहना ज्यादा पसन्द करता था, क्योंकि उनके समीप मैं निरन्तर जागरूक रहता था कि बाबा ही प्रत्येक परिस्थिति के असली रचयिता थे। मैं बाबा से बहुधा प्रार्थना करता था कि शेष दुनियाँ के प्रति भी इस दृष्टि कोण को अपनाने में मेरी सहायता करें क्योंकि यदि मैं प्रत्येक व्यक्ति में, जो भी मुझे चोट पहुँचाता था, प्रहार करता या मुझे परेशान करता था उनका (बाबा का) हाथ देख सकता, तो मैं उस परिस्थिति को परेशानी के रूप में नहीं समझता। वास्तव में, मैं जानता था कि यदि मैं ऐसी परिस्थिति में उनकी उपस्थिति का अनुभव करता, तो मेरा हृदय रोमांच अनुभव करता। मैं शायद सन्तुलन की उस स्थिति में पहुँच जाता जहाँ कोई भी चीज मुझे विचलित नहीं करती। उस स्तर तक पहुँचने के लिये, मुझे सर्वप्रथम प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक चीज में उनका अनुभव करना था। मेरे जैसे किसी भी व्यक्ति के लिये यह एक बहुत बड़ा आदेश था, और आगे की यात्रा एक लम्बी यात्रा थी।

फिर भी, मैं इसका अभ्यास करता रहा और अपनी जिन्दगी में छोटी से छोटी स्थिति में भी इसे लागू करने का प्रयास करता रहा और ज्यादातर असफल होता रहा। सफलता के वे थोड़े से क्षण जिन्हें मैंने समय–समय पर पाया था, न केवल मेरे हृदय को रोमान्चित करते थे बल्कि मेरे अत्यधिक शारीरिक कष्टों को भुलाने में भी मेरी मदद करते थे।

इस दृष्टिकोण का अभ्यास करने में जिस कहानी ने मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित किया, वह इस प्रकार है। पार्वती एक बार शिव जी के पास पहुँचीं क्योंकि वह उनके प्रेमियों में से एक प्रेमी की दुर्दशा देखकर परेशानी अनुभव कर रहीं थीं। उस व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए उन्होंने उनसे (शिव जी से) कहा, ''उसको देखिये। उसके पास अपना कुछ भी नहीं है, न ही उसके सिर के ऊपर छत है। वह खुले स्थान में मौसम की दया पर रहता है और भोजन के लिये भीख माँगता है जिसे वह दिन में एक बार खाता है। अपने भोजन को पकाने के लिये भी, जैसा कि उसे कभी–कभी करना पड़ता है, वह इसे किसी के मृत शरीर के दाह संस्कार की चिता पर पकाता है। मैं उसकी दुर्दशा को देख नहीं सकती। आप अपने प्रेमियों के साथ ऐसा व्यवहार कैसे कर सकते हैं ? आपको उसके लिये कुछ करना चाहिये। मेरी खातिर आपको कुछ करना होगा।''

शिवजी ने अपने इस प्रेमी को देखा और उन्होंने पार्वती से कहा, ''वह एक अद्वितीय आत्मा है और उसे किसी चीज की आवश्यकता नहीं है। मेरा यह प्रेमी आन्तरिक आनन्ददायी स्थिति का आनन्द ले रहा है। यदि तुम उसे कोई चीज भी अर्पित करोगे, वह इसे स्वीकार नहीं करेगा। उसके लिये यह सब एक बोझ है। वह अपनी जिन्दगी में हर परिस्थिति को इस रूप में स्वीकार करता है जैसे कि वह ईश्वर प्रदत्त हो। कोई भी ऐसी बाह्य परिस्थिति नहीं है जो उसके आन्तरिक आनन्द को विचलित कर सके। उसका प्रेम देवताओं को भी चुनौती देता है।'' पार्वती ने कोई भी बहाना नहीं सुना और उन्होंने जोर दिया कि शिवजी कुछ करें। केवल तब वह खुश होंगी।

पार्वती को खुश करने के लिये, शिवजी अपने प्रेमी के सामने एक भिखारी के वेश में प्रगट हुए। प्रेमी संयोग से दाह संस्कार की चिता की आग पर भीख में मिले गेहूँ के आटे से चपाती बना रहा था। शिवजी ने उस प्रेमी से थोड़ा भोजन माँगा। प्रेमी के पास केवल एक चपाती के लिये ही पर्याप्त आटा था जो उसने बनाई थी और उसने तुरन्त ही वह चपाती शिवजी को दे दी। शिवजी उसके कार्य से प्रसन्न हुए और अपने असली रूप में प्रगट हुए।

शिवजी ने तब अपने प्रेमी को सम्बोधित करते हुए कहा, ''कोई भी वरदान माँगो जो तुम चाहते हो। मैं तुम्हें इस देश का राजा बना सकता हूँ, कितनी भी सम्पत्ति तुम्हें दे सकता हूँ जो तुम चाहो या तुम्हें आवश्यकता हो। मुझे बतलाओं कि तुम वास्तव में क्या चाहते हो।''

प्रेमी ने प्रभु से कहा, ''मैं चाहता हूँ कि आप मुझे अकेला छोड़ दें। आप मेरे सिर पर बोझ रखने का प्रयत्न कर रहे हैं जो कि मुझे मेरी वर्तमान स्थिति का आनन्द लेने से रोक देगा जिसे प्रभु ने स्वयं मेरे लिये उत्पन्न की है। मैं अपने लिये उनकी इच्छा को स्वीकार करके प्रत्येक क्षण अपने प्रभु की उपस्थिति का आनन्द लेता हूँ। आप मेरे सिर पर अनावश्यक बोझ रखकर उस आनन्द से मुझे वंचित करना चाहते हैं। कृपया मुझे अकेला छोड़ दें।''

शिवजी पार्वती के पास वापस लौटे जो कि प्रत्येक चीज को आश्चर्य से देख रहीं थीं। वह अभी भी उसके लिये कुछ करने को दृढ़प्रतिज्ञ थीं और उन्होंने यह निश्चय किया कि वह (पार्वती) स्वयं कुछ देने का प्रयत्न करेंगी। वह इस प्रेमी के सामने अपने दैवीय रूप में प्रगट हुई। उसके प्रेम की प्रशंसा करने के बाद उन्होंने जोर दिया कि वह प्रेमी एक वरदान माँगे। उन्होंने प्रेमी को यह भी जानकारी दी कि यदि वह वरदान स्वीकार करने से इन्कार करेगा तो वह उनकी नाराजगी को आमन्त्रित करेगा। इस पर उस प्रेमी ने हाथ जोड़कर पार्वती से कहा, ''मैं आपसे याचना करता हूँ कि आप ईश्वर के साथ मेरे सम्बन्धों में बाधा न डालें जिनकी उपस्थिति का मैं प्रत्येक क्षण आनन्द लेता हूँ। हे माँ, कृपया मुझे अकेला छोड़ दें।''

इससे पार्वती बहुत नाराज हुई और उन्होंने उससे (प्रेमी से) कहा, ''यदि तुम मुझसे वरदान नहीं माँगते, तो मैं तुम्हें श्राप दूँगी। तुम गाय बन जाओगे और एक वर्ष तक यहाँ वहाँ घूमते रहोगे।'' प्रेमी ने वरदान माँगने से इन्कार कर दिया और पार्वती ने उसे गाय में बदल दिया। एक वर्ष की अवधि के बाद,पार्वती पुनः इस प्रेमी के सामने प्रगट हुई जो एक मैदान में एक गाय के रूप में घास चर रहा था।

उनको (पार्वती को) देखकर प्रेमी ने कहा, ''हे माँ, आप पुनः मुझे परेशान करने क्यों आ गई हैं?'' पार्वती ने उससे कहा, ''तुम्हारा एक वर्ष का समय पूरा हो गया है और मैं जानना चाहती हूँ कि यह कैसे बीता।'' प्रेमी ने उत्तर दिया, ''हे माँ, मेरी वर्तमान स्थिति में प्रभु की उपस्थिति का मेरा आनन्द कई गुना बढ़ जाने से मेरा समय बहुत अच्छा बीता। यहाँ हर जगह चरने के लिये घास है। इसलिये

भोजन के लिये मुझे भीख नहीं माँगनी पड़ती। मुझे प्रकृति की पुकार पर अर्थात् मल मूत्र त्यागने के लिये निर्धारित स्थान पर भी चल कर नहीं जाना पड़ता। मेरी वर्तमान स्थिति में मैं कहीं भी यह कर सकता हूँ। प्रभु किस तरह मेरे कल्याण के लिये सोचते हैं और मेरी जिन्दगी में लाभदायक परिस्थितियाँ भेजते हैं, यह आश्चर्य जनक है।

इससे पार्वती अत्यधिक क्रोधित हो गई और उन्होंने ईश्वर के इस प्रेमी को दूसरा श्राप दे दिया। ''अगले वर्ष के लिये तुम जिराफ बनोगे और देखना है कि क्या तुम अभी भी इसका आनन्द लेते हो।'' एक वर्ष बाद, जब पार्वती पुनः उसके सन्मुख प्रगट हुई, प्रेमी ने उनसे कहा, ''हे माँ, यह पहले से भी काफी ज्यादा अच्छा था। पिछली बार, गर्मियों के मौसम के दौरान, क्योंकि घास सूख जाती थी, मुझे भोजन के खोजने में कठिनाई होती थी, लेकिन मेरी वर्तमान स्थिति में अपनी लम्बी गरदन से मैं पेड़ों की पत्तियाँ खा सकता हूँ। इस तरह मेरा मन अपने प्रभु की उपस्थिति का आनन्द लेने के लिये पूर्णतया स्वतन्त्र है। वह (ईश्वर) कितनी अच्छी तरह मेरी देखभाल करते हैं।''

हार मान कर, पार्वती ने उस प्रेमी को उसके वास्तविक रूप में वापस लौटा दिया और उससे क्षमा याचना की। उन्होंने (पार्वती ने) तब उस प्रेमी से कहा, तुम्हें सच में किसी चीज की आवश्यकता नहीं है, परन्तु कुछ ऐसा है जो मैं तुमसे चाहती हूँ। दया करके मुझे एक वरदान दो।'' जब प्रेमी ने पार्वती से पूँछा कि वास्तव में क्या चाहती थीं, उन्होंने उत्तर दिया, ''वादा करो कि तुम मेरे यहाँ पुत्र के रूप में जन्म लोगे।'' प्रेमी ने उससे वादा किया और यह वही प्रेमी था जो बाद में पार्वती के यहाँ उनके पुत्र कार्तिक के रूप में पैदा हुआ जो कार्तिक भगवान के रूप में बाद में पूजा गया।

जब पार्वती पराजित होकर लौटी और शिवजी से मिली, तो उन्होंने (शिवजी ने) उनसे (पार्वती से) कहा, ''मैंने तुमको बतलाया था। उसका प्रेम देवताओं को भी चुनौती देता हैं।''

आध्यात्मिता में सब कुछ समाविष्ट है

बाबा प्रेमी अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के विषय में उन भण्डली सदस्यों को पत्र लिखा करते थे जो कि उनके घनिष्ठ होते थे। इनमें से अधिकांश समस्यायें सम्बन्धों के विषय में या आर्थिक समस्याओं के विषय में होती थीं जिनका वे सामना कर रहे होते थे। फिर भी, इनमें से कुछ बाबा प्रेमी

अपनी सेक्स समस्याओं के विषय में भी लिखते थे। यद्यपि मण्डली लगभग प्रत्येक समस्या पर सलाह दे सकती थी जिसको दुनियाँ में कोई भी कभी भी सामना करता था, उन्हें इस विषय पर बिल्कुल भी न तो जानकारी थी, न ही उन्हें अनुभव था। मुझे यह विचित्र लगता था कि बाबा प्रेमी ऐसे मामलों के विषय में मण्डली को लिखते थे जिन्होंने ऐसी पवित्र और एकान्त जिन्दगी बिताई थी और ऐसी चीजों का उन्हें कोई ज्ञान न था। फिर भी, मण्डली जनों का प्रेम उन्हें समस्याओं को समझने का प्रयत्न करने के लिये प्रोत्साहित करता था जिससे कि वे प्रेमी के पत्र का उत्तर दे सकें और उनका मार्गदर्शन कर सकें। वे किसी मामले या प्रश्न की कभी भी उपेक्षा नहीं करते थे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि विषय क्या था।

एक बार मैं भाऊजी के साथ बैठा हुआ था और एक बाबा प्रेमी ने अप्राकृतिक सेक्स का विवरण देते हुए यह पूँछने के लिये पत्र लिखा था कि क्या यह उचित था जो कि उसकी पार्टनर चाहती थी। यद्यपि भाऊजी संयोगवश मण्डली के विवाहित जनों में से एक थे, तो भी वह समझ नहीं सके कि यह क्या था। वह मेरी ओर मुडे और मुझसे पूँछा, ''इसका क्या अर्थ है ? क्या तुम जानते हो ?'' जब मैंने भाऊजी को मामला समझाया, तब उस समय उनके चेहरे पर आश्चर्य पूर्ण सदमे की अभिव्यक्ति को देखकर, जब उन्होंने कहा, ''हे मेरे ईश्वर। वे ऐसा करते हैं ?'' हमें मजा आया। जब मैंने सिर हिलाकर हाँ कहा, उन्होंने मुझसे पूँछा, ''वे ऐसा क्यों करते है ?'' मैंने उनसे कहा, ''मेरा अनुमान है कि इससे अनुभव और आनन्ददायी बन जाता है।''

भाऊजी और भी अधिक विस्मित और स्तब्ध दिखलाई पड़े। ''लेकिन वे ऐसी किसी चीज का आनन्द कैसे ले सकते हैं ? यह बहुत कष्ट दायी होगा और यह मुझे व्यायाम के समान प्रतीत होता है।'' अचानक भाऊजी रूके और मुझसे पूँछा, ''तुम यह सब कैसे जानते हो ?'' मैंने उनसे कहा, ''भाऊजी सेक्स के विषय में अधिकांश चीजें आपको स्कूल और कालेज में सिखलाई जाती हैं यदि आप एक विज्ञान के छात्र हैं। दूसरी चीजें, जैसे किन्की (विचित्र) सेक्स, आप मित्रों, पुस्तकों, फिल्में और कम्प्यूटर से भी सीखते हैं। लगभग प्रत्येक को यह खुलेपन से बतलाया जाता है और वह इसके विषय में जानता है।''

अभी भी यह सन्देह करके कि मैंने उन्हें सभी चीजें सही ढंग से बतलाई हैं, भाऊजी ने वहाँ के दूसरे कुछ निवासियों से पूँछा कि इसका क्या अर्थ था। उनकी प्रतिक्रिया हमेशा स्तब्धता और विस्मय की थी कि ऐसी कोई चीज की

जा रही थी। वह अपना सिर हिलाते और राय प्रगट करते थे, ''मैं नहीं समझ सकता कि वे कैसे ऐसी किसी चीज का आनन्द लेते हैं।''

यद्यपि मण्डली ऐसे मामालों में छलरहित थी, और उनके हृदय वास्तव में पवित्र थे तो भी उन्होंने कभी भी ऐसे मामलों की उपेक्षा नहीं की और विनम्रतापूर्वक बहुत सूझबूझ से ऐसे मामलों में सबसे अच्छे मार्ग मेहेर बाबा के मार्ग—का अनुसरण करने के लिये बाबा प्रेमी का मार्गदर्शन करते थे। वे बहुधा यह भी सलाह देते थे कि बाबा प्रेमी प्रेम और सेक्स पर बाबा का डिस्कोर्स पढ़े और इसे अपनी जिन्दगी में अपनायें। कुछ अन्तेवासी अनुभव करते थे कि मण्डली कि तरफ से एक गश्तीपत्र भेजकर बाबा प्रेमियों को ऐसे पत्रों को भेजने से रोक देना चाहिये। मण्डली ने ऐसा नहीं किया। उन्होंने प्रेमियों की सबसे अधिक महत्वहीन समस्या पर ध्यान देकर इसे प्रेम और सूझबूझ से संभालने को पसन्द किया जैसा बाबा करते थे।

एक अवसर पर मैंने संयोगवश इस सूचना को महिला अन्तेवासियों में से एक महिला को बतलाया जो महिला मण्डली के साथ काम करती थी। मुझे जिज्ञासा थी कि महिला मण्डली को क्या कभी ऐसे पत्र प्राप्त हुए थे। जब उस महिला अन्तेवासी ने उत्तर दिया कि ऐसे पत्र महिला मण्डली को मिले थे, मुझे आश्चर्य हुआ और मैंने उससे पूँछा, ''मैं नहीं समझ सकता कि बाबा प्रेमी उन्हें ऐसे मामलों में पत्र क्यों लिखते हैं। वे इन पत्रों के उत्तर में क्या आशा रखते हैं ? मण्डली को इन मामलों में कोई अनुभव नहीं है।'' महिला अन्तेवासी मुझसे सहमत थी, लेकिन उसने मुझे यह भी सूचना दी कि महिला मण्डली ने कुछ उन महिला अन्तेवासियों को बुलाया था जो उनके करीब थीं और उनसे इन चीजों का अर्थ पूँछा था। महिला अन्तेवासी ने यह भी बतलाया कि मनी ने उस व्यक्ति के लिये कितनी चिन्ता और प्रेम व्यक्त किया था जो इस समस्या का सामना कर रहा था। उसने मुझसे कहा, ''मनी कहतीं थीं कि आध्यात्मिकता में हर चीज सम्मिलित है। यह जिन्दगी का एक तरीका है। यह मूलरूप से तुम्हें दिखलाती है कि जिन्दगी में प्रत्येक परिस्थिति में किसी व्यक्ति का सही दृष्टि कोण क्या

भ्रष्टाचार

विभिन्न अवसरों पर ट्रस्ट के विरुद्ध भ्रष्टाचार के आरोप लगाये गये हैं। जब भी दुनियाँ में रहने वाले बाबा प्रेमियों के द्वारा ये आरोप लगाये गये, वे इस बात पर आधारित थे कि वे सोचते थे कि ट्रस्ट द्वारा किये गये कार्य भ्रष्ट कार्य

थे। मालूम नहीं कि वे इस बात का अनुभव करते थे या नहीं कि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्षरूप से वे भाऊजी की ओर इशारा कर रहे होते थे, क्योंकि वे ट्रस्ट चेयरमैन थे और परिणाम स्वरूप ट्रस्ट के सभी ट्रस्टी और अन्तेवासी जो कार्य करते थे, उस सबके लिये वे (भाऊजी) जिम्मेदार थे।

लोग बहुधा इस विषय में मेरी राय जानना चाहते थे जो कुछ निश्चित घटनाओं पर आधारित थी जिसकी रिपोर्ट की गई थी। सर्वप्रथम, हम भाऊजी से प्रारम्भ करते हैं। मैं सोचता हूँ कि वह बाबा मण्डली में से एक हैं लेकिन सभी को स्वीकार करना होगा कि कम से कम वह बाबा की मण्डली में से एक हैं जिन्होंने यहाँ आने के लिये अपनी राजसी स्थिति का त्याग किया था और अवतार के साथ अपमान और कठिनाईयों की जिन्दगी बिताने के लिये यहाँ आये थे। सुख सुविधाओं और समृद्धि की राजसी जिन्दगी छोड़कर और अभाव, भूख, अनिद्रा और निरन्तर अपमान की जिन्दगी बिताना कुछ ऐसा था जिसे कुछ ही लोग सहन कर सकते हैं। यह ऐसी जिन्दगी नहीं है जो कि सभी के लिये अर्थपूर्ण हो। यह केवल उन कुछ भाग्यशाली लोगों के लिये होती है जिन्हें प्रभु चुनते हैं। भाऊजी संयोगवश उन्हीं लोगों में से एक थे। बाबा उन्हें अपना जॉन कहकर पुकारते थे।

बाबा ने अपनी मण्डली के विषय में कहा था कि वे कोई नये संस्कार अर्जित नहीं कर सकते। वे संस्कार जो उन्होंने (बाबा ने) उनके सिर पर रखे हैं, विज्ञानी संस्कार हैं जो साधारण आत्माओं के संस्कारों से पूर्णतया भिन्न है। जब कोई साधारण आत्मा कोई कार्य करती है, वह बन्धन वाले संस्कार अर्जित करती हैं, लेकिन मण्डली जन जिनके विज्ञानी संस्कार स्वयं अवतार द्वारा सन्तुलित किये जाते हैं, जब कोई कार्य करते हैं तो वे नये संस्कार अर्जित किये बिना अपने संस्कारों को केवल खर्च करते हैं। इन संस्कारों की योजना भी बाबा द्वारा उनकी इच्छा के अनुसार बनाई जाती है। इस तरह अपनी भौतिक अनुपस्थिति में भी, बाबा अपना सार्वभौमिक कार्य इसी कारण से उनके (मण्डली के) द्वारा करते रहते हैं। इसलिये कोई किसी भी मण्डली जन के विरुद्ध आरोप कैसे लगा सकता है? क्या यह कहना समानार्थक नहीं होगा कि बाबा भ्रष्ट हैं क्योंकि उन्होंने ही उनकी योजना बनाई हैं ?

इस बात को और अधिक स्पष्ट करने के लिये मैं एक कहानी सुनाता हूँ जो एरच बहुधा मण्डली हाल में सुनाते थे।

एक अवसर पर, बाबा ने एक कहानी सुनाई थी कि कैसे एक आदमी, जिसने निन्यानबे (९९) क़त्ल किये थे और अपने हृदय में, पश्चाताप अनुभव करने पर, एक सद्‌गुरु के पास अपने पापों का निवारण करने की सलाह लेने पहुँचा। सद्गुरु ने उसे एक ही स्थान पर बैठने और बिना उस स्थान को छोड़े, चाहे जो हो जाय, निरन्तर ईश्वर का नाम जपने की सलाह दी। मनुष्य इस स्थिति में वर्षो तक जप करता रहा। एक दिन एक सिपाही ने घोड़े पर गुजरते हुए इस व्यक्ति को अपने मार्ग पर बैठे हुए देखा। उसने इस व्यक्ति को चिल्लाकर रास्ते से हटने के लिये कहा। उसे कोई उत्तर नहीं मिला क्योंकि यह व्यक्ति समाधि में लीन था। इससे सिपाही उत्तेजित हो गया और उसने व्यक्ति पर चाबुक से प्रहार किया। इससे व्यक्ति की समाधि टूट गई और समाधि से बाहर आने पर, उसकी पुरानी कातिलाना मूल प्रवृत्ति ने उस पर अधिकार कर लिया और उसने सिपाही को झपटकर पकड़ लिया और उसे मार डाला। उसी क्षण उसे ईश्वर साक्षात्कार प्राप्त हो गया। ऐसा कैसे हुआ ? सिपाही पड़ोसी राज्य के राजा के पास सन्देश लेकर जा रहा था कि जो एक सौ कैदी पकड़े गये थे, उन्हें मृत्युदण्ड दे दिया जाय। इसलिये जब उस व्यक्ति ने सौवाँ (१००वाँ) कत्ल किया तो उसने सौ जिन्दगियों की रक्षा करके अपने संस्कारों को सन्तुलित कर लिया और उसे ईश्वर साक्षात्कार प्राप्त हो गया।

यह बात ने कि कत्ल करने जैसा लज्जाजनक कार्य ईश्वर साक्षात्कार दे सकता है, मुझे उलझन में डाल दिया और मैंने इस विषय पर एक बार एरच से चर्चा की। मैंने एरच से कहा, ''कत्ल करना एक सबसे अधिक लज्जाजनक कार्य है और सबसे अधिक बन्धन वाले संस्कार अर्जित करता हैं, लेकिन इस कहानी में जिसको स्वयं बाबा ने मण्डली को सुनाई थी, उस व्यक्ति ने अधिक ईश्वर साक्षात्कार प्राप्त कर लिया जिसने सबसे जधन्य कार्य किया था।

यह कैसे सम्भव है ?'' एरच ने उत्तर दिया, ''सामान्यतया एक साधारण आत्मा द्वारा किया गया कत्ल उसे भयानकरूप से बन्धन में बाँध देता है, लेकिन जब किसी ऐसे व्यक्ति के द्वारा यह कार्य किया जाता है जो कि सद्‌गुरु के निर्देशों का पालन कर रहा होता है, तो यह आत्मा को नहीं बाँध सकता है।

जैसा कि इस कहानी में है, सद्‌गुरु इस घटना का प्रयोग ईश्वर साक्षात्कार देने के लिये कर सकता है, क्योकि इस निषेघात्मक कार्य में आत्मा की मुक्ति निहित होती है जहाँ सभी संस्कार संन्तुलित हो जाते है। इसी कारण

से उसे ईश्वर साक्षात्कार प्राप्त हुआ। तुम अपने कर्मों द्वारा उसे सन्तुलन नही कर सकते हो। केवल एक सद्गुरू ही तुम्हारे लिये ऐसा कर सकता है। इसी कारण से तुम्हें पूरे हदय से सद्गुरू को समर्पण करना चाहिये और उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिये।

संक्षेप मे, एरच ने निष्कर्ष दिया, ''जब तुम अपना सर्वस्व बाबा को समर्पित कर देते हो और तुम पूर्णतया उनके हो जाते हो, तब इन लज्जाजनक कार्यो, में से सबसे अधिक जगन्य कार्य भी तुम्हे प्रभावित नहीं कर सकते क्योकि वह उनका प्रयोग अपने सार्वभौमिक कार्य के लिये करते है, उसी समय वह उस विशिष्ट ,आत्मा को ईश्वर साक्षत्कार देने के लिये, संस्कारो को सन्तुलित करने के लिये भी इसका प्रयोग करते हैं। ''

एक अन्य अवसर पर मनी ने इस विषय पर मण्डली हाल में चर्चा की जिसकी वीडियो रिकॉर्डिग भी की गई है। उन्होंने निम्न बात कही,''उन लोगों के कार्यो को मत परखो जो उनके साथ रहते थे, जो कि पूर्णतया उनके है। उनको अपने सांसारिक मापदंडों से मत परखो। ऐसा नही है जैसा तुम्हें प्रतीत होता है। ठीक बाबा के कार्यो के समान, उन्हे समझने या उनकी गहराई नापने का प्रयत्न मत करे । केवल इतना याद रखो कि वे (मण्डली जन)उनके (बाबा के) है इसे मत भूलो। एरच और मनी के इन सन्देशों ने वर्षो तक मेरा ध्यान इस पर केन्द्रित करने में सहायता की कि बाबा कौन है। और वह कितने प्रेम से अपने मण्डल के सदस्यों की चिन्ता करते हैं जिन्होंने उनके (बाबा के) लिये अपने सर्वस्व का त्याग कर दिया है।

कोई भी दुनियाँवी स्तर पर कह सकता है कि बाबा ने अपने मण्डल के और शेष दुनियाँ के लोगों के बीच में भेदभाव किया है। जो उनके मण्डल मे थे वे एकमात्र उनके (बाबा के) थे और उनका हो जाने के द्वारा वे पूर्णतया मुक्त थे। कोई भी कार्य उन्हें बन्धन में नहीं बाँध सकते थे क्योंकि बाबा ने खुद ऐसा कहा है। उन बाबा प्रेमियों से मुझे यही कहना है जो सभी प्रकार के आरोप किसी भी मण्डलीजन पर इस आधार पर लगाते हैं जो उन्होंने देखा या सुना था। इसके अतिरिक्त कैसे थोड़ासा मूत्र सागर को प्रदूषित कर सकता है ? बाबा के अपने शब्दों में, ''मैं केवल अपनी मण्डली को मेहेरा के बाद दूसरे नम्बर पर रखता हूँ। उसके बाद प्रेमी हैं और तब दुनियाँ है। रोज निश्चित रूप से मैं स्वयं उसी क्रम में मेहेरा, मण्डली, प्रेमियों और दुनिया का आहान (स्तवन) करता हूँ।'

भ्रष्टाचार, हृदय का एक रोग

यदि भ्रष्टाचार का आरोप मेहेराबाद में रहने वाले व्यक्तिगत बाबा प्रेमियों पर लगाये जाते हैं, तब उस आधार पर जो मैंने वर्षो से देखा और सुना है, मुझे यह स्वीकार करना है कि ट्रस्ट में काम करने वाले कुछ बाबा प्रेमियों के विवादास्पद कार्यो ने इन आरोपों को आमन्त्रित किया था। इनमें सबसे अधिक विवादस्पद विषय में आगे बढ़ने से पहले, मैं थोड़ा पीछे समय की ओर जाना चाहता हूँ और उन स्थितियों का वर्णन करना पसन्द करूंगा जो अन्त में मेहेराबाद में होने वाली ऐसी विवादास्पद परिस्थितियों की ओर ले गई जिनमें कुछ बाबा प्रेमी भी शामिल थे।

बाबा के शरीर छोड़ने के बाद, जब अन्तेवासियों में सबसे पहले अन्तेवासी को मण्डली के द्वारा मेहेराबाद में रहने और सहायता करने की अनुमति दी गई थी, तब उन पर लागू की गई शर्ते बहुत कठोर और सख्त थीं। अन्तेवासियों को एक बहुत साधारण कमरा, जिसमें एक बिस्तर, मेज और कुर्सी थी रहने के लिये एक क्वार्टर के रूप में दिया जाता था। इसके अलावा, अन्तेवासियों को हर चीज की व्यवस्था अपने आर्थिक साधनों से करनी पड़ती थीं। बाबा की बहिन मनी ने प्रारम्भ में ही हम सबको यह स्पष्ट कर दिया था कि हमें इस दिये गये अवसर को अपना सौभाग्य मानना चाहिये और इस आधार पर कि हम अपनी निःशुल्क सेवायें स्वेच्छा से दे रहे हैं, ट्रस्ट से किसी भी प्रकार की माँग नहीं करना चाहिये।

उन्होंने (मनी ने) यह बहुत स्पष्ट कर दिया था कि आध्यात्मिक प्रशिक्षार्थी के रूप में हम प्रत्यक्ष रूप से बाबा (ईश्वर) की जिम्मेदारी थे और हम अपनी सभी आवश्यकताओं के लिये उन पर (बाबा पर) निर्भर थे। यदि हमारे पास धन की कमी होती यदि हमें कोई बड़ी बीमारी हो जाती, तो ट्रस्ट आर्थिक रूप से सहायता करने की जिम्मेदारी नहीं लेगा। यदि हमारी ऐसी धारणा और विश्वास है कि बाबा हर चीज की देखभाल करेंगे और यह भी याद रखेंगे कि आध्यात्मिक प्रशिक्षण के दौरान जो भी होगा, हमारे कल्याण के लिये होगा, तब हम वैसी जिन्दगी बिताने के योग्य होंगे जैसी कि बाबा हम से चाहते हैं कि हम मेहेराबाद में बितायें।

संक्षेप में, मण्डली हमसे चाहती थी कि हम उस जिन्दगी का अनुभव प्राप्त करें जो कि उन्होंने बाबा के साथ बिताई है जिससे कि हम बाबा की

उपस्थिति, कठिनाईयों और आध्यात्मिक जिन्दगी की सादगी का भी वास्ताविक अनुभव प्राप्त कर सकें। वैसे भी उन दिनों ट्रस्ट के पास पर्याप्त पूँजी नहीं थी। प्रारम्भिक अन्तेवासी अत्यधिक जोश और दृढनिश्चय के साथ वहाँ रहने और वैसी जिन्दगी बिताने के लिये आते थे। लगभग हर कोई अब याद करता है कि प्रारम्भिक वर्षो में मेहेराबाद, ट्रस्ट कम्पाउण्ड और मेहेराजाद मे बाबा की उपस्थिति काफी ज्यादा थी। मेरी राय में वातावरण में यह परिवर्तन न केवल मण्डली के सदस्यों की संख्या में कमी होने से, बल्कि अपने भविष्य के विषय में हमारी अपनी असुरक्षा की भावना के भी कारण था।

क्योंकि ट्रस्ट आर्थिकरूप से हमारी सहायता करने की स्थिति में नहीं था, कुछ अन्तेवासियों को धन के अभाव में स्थान को छोड़कर जाना पड़ा। कुछ ने धन कमाने की व्यवस्था की और वे कई वर्षो बाद वापस लौटे, लेकिन अन्य लोग वापस नहीं आये। क्योंकि ऐसी घटनायें कई अवसरों पर घटित हुई, मेरा अनुमान है कि हमारी असुरक्षा भावना और अधिक बढ़ गई थी। इसलिये हमने अपनी उस अल्प बचत को कुछ कार्य करके और छुट्टियों में पैसे कमाकर पूरा करने का प्रयत्न किया जिस पर हम गुजारा कर रहे थे। हममें से अधिकांश लोग गर्मियों के दौरान दो या तीन माह का अवकाश लेते थे और अपनी आय की पूर्ति करने के लिये कुछ धन कमाने की व्यवस्था करते थे।

कुछ अन्तेवासी मेहेराबाद में अपने परिवार, मित्रों और उदार बाबा प्रेमियों से सहारा लेकर रह रहे थे। कुछ अन्तेवासियों ने तीर्थयात्रियों की किसी प्रकार की सेवा करके या सहायता करके उनसे लेन देने के द्वारा भी अपनी आय की पूर्ति के लिये प्रयास किया। मंहगाई की मतों में वृद्धि, वृद्धावस्था में पहुँचना और एक असुरक्षित भविष्य होने से, कुछ अन्तेवासियों के मनों में और अधिक बचत करने की आवश्यकता प्रमुख थी। शायद यहाँ से ही विवाद उत्पन्न होने की शुरूआत हुई थी।

अपनी वृद्धावस्था की स्तिथि में हमारी थोड़ी सी सुरक्षा की इच्छा कुछ अन्तेवासियों को खींच कर उस स्थिति पर ले गई जहाँ पर कोई भी कह सकता है कि वे कार्य दुनियाँ में रहने वाले लोगों के लिये प्रश्न करने योग्य थे। मैं किसी को भी नहीं परखूँगा, कोई फर्क नहीं पड़ता कि किन मतभेदों में वे शामिल थे, क्योंकि मैं जानता हूँ कि वैसी ही परिस्थितियों और दबाव का

सामना यदि मुझे करना होता तो मैंने भी शायद वैसा ही या उससे भी बुरा किया होता। संयोगवश यह केवल मेरा सौभाग्य था कि मेरे कार्य ने मुझे पूरे समय मण्डली के आसपास रखा और उनके निरन्तर प्रहार और मार्गदर्शन ने मुझे फिसलने से रोका।

ऐसी ही एक घटना जिसने बाबा समुदाय में मतभेद उत्पन्न किया, निम्न है :

मेहेराबाद में रहने वाला एक बाबा प्रेमी ट्रस्ट की विभिन्न तरीकों से बहुधा सहायता किया करता था। उन चीजों में जो वह करता था, एक कार्य ट्रस्ट की योजनाओं के लिये बाबा प्रेमियों से पूँजी उठाना था। यदि कोई ट्रस्ट की योजनाओं के लिये प्रत्यक्षरूप से पूँजी उठाता था तब सामान्य नियमानुसार, यह ट्रस्ट को अनुदान के रूप में निर्देशों के साथ दिया जाता था कि यह पूँजी विशिष्ट उद्देश्यों के लिये प्रयोग की जाय। यदि ऐसे निर्देश नहीं दिये जाते थे, तब पूँजी साधारणतया ट्रस्ट के प्रतिदिन के क्रियाकलापों में प्रयुक्त की जाती थी।

इस बाबा प्रेमी ने प्रारम्भ में सभी नियमों का पालन किया लेकिन कई वर्षो बाद, ट्रस्ट के साथ उसका कुछ नीतियों के सम्बन्ध में विवाद हो गया। इससे वह क्रोधित हो गया और उसने अपने द्वारा एकत्रित की गई पूँजियों को नहीं दिया। इसके बजाय, वह सीधे इसे उन योजनाओं पर खर्च करने लगा जिनको वह मानता था कि वे बाबा कार्य हैं। ट्रस्ट, भाऊजी या मण्डली के पास उसको समझाने के लिये कुछ भी नहीं था।

जैसे–जैसे समय गुजरता गया, यह बाबा प्रेमी इन पूँजियों में से कुछ पूँजी अपने व्यक्तिगत लाभ के लिये या कोई भी कह सकता है अपने स्वार्थ के लिये लगाने लगा। बाबा प्रेमियों ने जिनसे उसने पूँजियाँ एकत्रित की थीं वे जब मेहेराबाद आते थे तो वे इसका उल्लेख ट्रस्टियों से या भाऊजी से यह पूँछकर करते थे कि क्या उन्हें पूँजी मिल गई थी और क्या उन्हें और ज्यादा पूँजी की आवश्यकता थी। इस तरीके से हमें यह जानकारी मिली कि उस व्यक्ति ने ट्रस्ट कार्य की अपेक्षा किसी अन्य कार्य में पूँजी को प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया था।

भाऊजी उसे बहुधा ऑफिस में बुलाकर याद दिलाते थे कि उसने प्रारम्भ में अच्छा कार्य किया था और उसे प्रोत्साहित करते थे कि वह बाबा पर

अपना ध्यान केन्द्रित रखे और शत प्रतिशत ईमानदारी के साथ उनके (बाबा के) लिये कार्य करता रहे। इस उद्देश्य के लिये किसी व्यक्ति को सतर्क रहना पड़ता है और एक आँख अपनी इच्छाओं पर रखनी पड़ती है क्योंकि वह फिसल सकता है और उसका पतन हो सकता है, यदि वह भूल जाता है कि वह बाबा के लिये कार्य कर रहा था। भाऊजी ने उससे नम्रतापूर्वक कहा कि वह ऐसी गतिविधियों में से किसी में भी लिप्त न हो जो ट्रस्ट के लिये मतभेदों को उत्पन्न करें और बाबा की सेवा में उसकी सच्चाई पर सन्देह उत्पन्न करे।

इस सबके बावजूद, बाबा प्रेमी ने अपने तौर तरीके जारी रखें। बहुधा उसके विषय में शिकायतें आती रहतीं थीं और एक अवसर पर ट्रस्टियों में से एक ने एक बड़ी आर्थिक अनियमितता की रिपोर्ट की। भाऊजी उस समाचार से विचलित थे और उन्होंने ट्रस्टी को आश्वासन दिया कि वह उस बाबा प्रेमी से एक बार और बात करने का प्रयास करेंगे और उन्हें (भाऊजी को) उम्मीद थी कि वह व्यक्ति सुधर जाएगा । जब ट्रस्टी ने भाऊजी से ऐसे लोगों के विरुद्ध अधिक कठोर कार्यवाही करने की माँग की, भाऊजी ने असहाय होकर दलील दी और कहा, ''ऐसे लोगों के विरुद्ध मैं क्या कार्यवाही कर सकता हूँ ? यह बाबा पर है कि वे ऐसी कार्यवाही करें। मेरी भूमिका केवल उन्हें वास्तविक सेवा की जिन्दगी बिताने में उनका मार्ग दर्शन करना है।''

भाऊजी थोड़ी देर के लिये रूके और बोले, ''भ्रष्टाचार क्या है ? यह क्यों होता है ? यह हृदय में इच्छाओं के कारण होता है। क्या यहाँ कोई ऐसा है जो सभी इच्छाओं से पूर्णतया मुक्त हो। काम वासना, लालच, घृणा और क्रोध ये निम्न स्तर की इच्छायें हैं। इन निम्न स्तर की इच्छाओं के बीज प्रत्येक के हृदय में हैं। प्रत्येक को निरन्तर सतर्क रहना चाहिये और बीज को विकसित होकर पेड़ बनने से रोकना चाहिये, इस प्रकार इच्छाओं को विकसित होने से रोकना है। कोई ऐसा कैसे कर सकता है। निरन्तर बाबा की याद करके और यह याद करके कि तुम उनके लिये कार्य कर रहे हो, ऐसा कर सकते हो। मिथ्या दावे केवल इसलिये मत करो क्योंकि तुम ट्रस्ट के लिये कुछ महत्वपूर्ण कर रहे हो। जब तुम सोचते हो कि तुम कार्य कर रहे हो, तुम महान हो, जब तुम ऐसे वक्तव्य देना प्रारम्भ कर देते हो जैसे, ''तुम कौन होते हो मुझे कुछ बतलाने वाले,'' मैं वही करूँगा जो मुझे पसन्द हैं ये सभी मिथ्या दावे हैं जो मिथ्या अहम् को मजबूत करते हैं। बदले में, तुम्हारा हृदय इन निम्न स्तर की इच्छाओं से अधिक

और अधिक भ्रष्ट होता जाता है और जब इच्छायें शक्तिशाली और प्रबल हो जाती हैं तब तुम उनके अनुसार कार्य करके और अधिक बन्धनकारी संस्कारों को अर्जित करते हो जो तुम्हें आगे बन्धनकारी कार्यो की ओर ले जाते हैं। इसे ही संसार भ्रष्टाचार समझता है और इस नाम से संसार उसे पुकारता है। हृदय नहीं समझ सकता जो कष्ट पा रहा है क्योंकि वह इन निम्न स्तर की इच्छाओं में जकड़ा हुआ है।

''मैं ऐसे लोगों के विरुद्ध कैसे कार्यवाही कर सकता हूँ और मैं क्या कार्यवाही कर सकता हूँ। यह बाबा पर है कि वह कार्यवाही करें। केवल बाबा ही इन निम्न स्तर की इच्छाओं से बीमार हृदय को पवित्र कर सकते हैं। मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ? यह केवल बाबा के हाथों में है, मेरे नहीं। इसी कारण से मैं बारम्बार सभी कर्मचारियों से कहता हूँ कि उन्हें सतर्क रहना चाहिये और हर समय याद रखना चाहिये कि वे उनके (बाबा के) लिये कार्य कर रहे हैं और इसे ईमानदारी से करें। उन्हें निरन्तर याद करें क्योंकि वही इन निकृष्ट इच्छाओं को विकसित होने से रोकेगा। स्मरण अन्त में उन्हें वास्तविक इच्छा का मार्ग देता है जो प्रियतम की सेवा करना और उन्हें खुश करना है।

''प्रियतम की सेवा करने में प्रत्येक को प्रियतम की खुशी को बनाये रखना है। यह प्रियतम के साथ एकीकरण की लालसा पैदा करेगा और अन्त में तुम लक्ष्य पर पहुँच जाओगे। अन्य किसी भी प्रकार का कार्य जैसे कि किसी कर्मचारी को हटाने से कोई फायदा नहीं होगा। यदि फिर भी मुझे किसी को हटाना है तो मैं कैसे निश्चय करूँ कि किसको हटाना है और किसे नहीं हटाना है ? क्या यहाँ कोई ऐसा है जो इच्छाओं से मुक्त है ?'' भाऊजी ने इसी के साथ बोलना समाप्त किया।

भाऊजी के इस उपसंहार के कथन को सुनकर, 'यहाँ क्या कोई ऐसा है जो इच्छाओं से मुक्त हैं मैंने एक बड़े मानसिक अवरोध को अपने मन में दूर होते हुए अनुभव किया। अपनी पूरी जिन्दगी में सही और गलत की मेरी दुनियावी धारण थी, एक धारणा कि क्या गलत है और क्या भ्रष्ट कार्य हैं। मेरी चेतना का स्तर दुनियाँ और उसके मापदण्डों के अनुसार था; मैंने यह मान लिया था कि मण्डली की चेतना भी वैसी ही है और यह समझने में मैं असमर्थ था कि क्यों वे (मण्डली जन) चीजों को शेष समुदाय से अलग हटकर देखते थे। मैं यह समझने में असमर्थ था कि उनकी चेतना को बाबा ने आकार दिया

था, क्योंकि वे केवल उनके (बाबा के) लिये रह रहे थे और दुनियाँ से उन्हें कोई मतलब नहीं था। वे (मण्डली जन) उनके हो गये थे और ऐसा करने में—उनकी (बाबा की) चेतना के भागीदार थे।

मैंने लगभग बाबा की हर पुस्तक में बाबा की राय पढ़ी थी कि उनकी मण्डली कितनी खास थी और कि ''चेतना में वे (मण्डलीजन) उनके साथ एक थे लेकिन पर्दे में थे, लेकिन इस कथन की गहराई को मैं पकड़ने में असमर्थ रहा। अब जब मैं इस कथन की गहराई को मैं पकड़ने में असमर्थ रहा। अब जब मैं इस कथन की गहराई को समझने लगा हूँ, मेरा हृदय मण्डली के हृदयो की महानता और विशालता को अनुभव करके अभिभूत है। अन्य कौन समझ सकता है कि भ्रष्ट व्यक्ति का हृदय बीमार है जो कि निम्न स्तर की इच्छाओं से कष्ट पा रहा है, उसे इलाज की आवश्यकता है और केवल बाबा ही उसका इलाज कर सकते हैं ? एरच भी इस प्रकरण पर ऐसी ही राय प्रगट करते और यह हमें हद से ज्यादा लगता । वह (एरच) कहते, ''उन्हें पहले से भी अधिक प्रेम करो उन्हें तुम्हारा लाभ उठाने दो। उन्हें मत रोको। उन्हें और भी अधिक प्रेम करो और तुम उनको (बाबा को) प्रेम कर रहे होगे और उनको खुश कर रहे होंगे।''

इस मार्ग पर चलने वालों के लिये यह एक बड़ा आदेश है। मेरा हृदय उन कष्टों के बारे में सोचकर काँप जाता है जो इस मार्ग पर चलने वाले प्रेमी का इन्तजार कर रहे होते हैं। मण्डली ने इसे सहजता से किया। दुनियाँ में रहने वाले बहुत से प्रेमियों द्वारा उनकी आलोचना की गई, उनके चरित्र पर लांछन लगाये गये उन लोगों से जो इस बात से अनभिज्ञ थे कि क्या हो रहा था। इस सबके बावजूद, वे (मण्डली जन) केवल अपने प्रियतम की खुशी पर ध्यान केन्द्रित करके ईश्वर के जैसी शान्ति बनाये रखकर, प्रशंसा और दोषारोपण से परे रहकर प्रत्येक से और सभी से प्रेम करते रहे।

हाँ, मैं प्रार्थना करता हूँ कि बाबा मुझे इतना साहस दें जिससे किसी दिन मैं भी इस मार्ग पर चल सकूँ। केवल वही व्यक्ति इस मार्ग पर चल सकता है जो निम्न स्तर की इच्छाओं जैसे काम वासना, लालच, घृणा और क्रोध से मुक्त हो। अभी मैं इस मार्ग पर चलने के लिये तैयार नहीं हूँ। इसलिये मैं स्मरण करने के मार्ग पर चल रहा हूँ जो आसान है और जब किसी दिन बाबा की कृपा से मेरा हृदय पूर्णतया सभी इच्छाओं से मुक्त हो जायगा, तो मैं अपने प्रियतम की ओर उस अन्तिम यात्रा को करने के योग्य बन जाऊँगा क्योंकि अभी मेरा हृदय

बहुत कमजोर और छोटा है और इस मार्ग पर चलने के इच्छुक व्यक्ति के लिये आगे निहित विशाल विस्तार को देखकर भय का अनुभव करता है।

एकरूपता की शक्ति

अगली कहानी एक गूढ़ अनुभव के विषय में है जो एरच को तब हुआ था जब वह अभी स्कूल के एक छात्र थे। बालक के रूप में वह ईसामसीह की जिन्दगी से प्रेरित थे और जब उनके स्कूल में पादरियों द्वारा ईसामसीह की जिन्दगी के विषय में कहानियाँ सुनाई जाती थीं वह आँसू बहाते थे। उन्हें बहुधा सन्देह होते थे और वह प्रश्न पूँछते थे और पादरी उनके प्रश्नों के उत्तर देने की अपेक्षा उन्हें यह बतला कर शांत करते थे कि किसी को भी केवल बाईबिल पर विश्वास करना चाहिये और इसके विषय में प्रश्न नहीं पूँछने चाहिये। एरच एक स्थानीय रामकृष्ण मिशन में भी जाते थे जिससे वह आकर्षित थे।

एक बार मिशन में स्वामियों द्वारा दिये गये भाषण के दौरान, एक स्वामी ने सृष्टि में सभी चीजों और अस्तित्वों की एक रूपता पर जोर दिया। स्वामी ने एक वक्तव्य दिया कि यदि कोई व्यक्ति पूरी सृष्टि के साथ एक रूपता का अनुभव करता था, तब सृष्टि में ऐसे अस्तित्व को कोई भी हानि नहीं पहुँचा सकता था। न ही मनुष्य, न ही जंगली जानवर, न ही प्रकृति उसको हानि पहुँचायेगी। स्वामी के इस कथन ने एरच के मन में एक गहरा प्रभाव डाला और वह इन शब्दों की सच्चाई से सन्तुष्ट थे।

उस भाषण के बाद, जब एरच अपनी साईकिल पर घर जाने के लिये मिशन से चलने वाले थे, भारी वर्षा होने लगी। इस क्षण एरच के मन में यह विचार आया कि यदि वह अपने हृदय में बारिश के साथ एकरूपता की भावना पैदा कर लेंगे, तब वह बारिश में नहीं भीगेंगे। हृदय और मन की इस धारण के साथ, वह साईकिल पर सवार हुए और घर पहुँच गये। जैसे ही एरच ने घर में प्रवेश किया, उनकी माँ गाई माई रेनकोट के बिना ऐसी भारी बारिश में उनको लौटते देखकर चिन्तित हो गई। एरच को डांटते हुए उन्होंने (माँ ने) उनसे (एरच) से कहा, ''तुम रेनकोट लेकर क्यों नहीं गये थे। तुम पूरी तरह भीग गये होंगे। जल्दी से जाकर कपड़े बदलों, नहीं तो तुम बीमार पड़ जाओगे।'' एरच ने उत्तर दिया, ''माँ, चिन्ता मत करो। मैं भीगा नहीं हूँ।'' गाई माई ने एरच पर

विश्वास नहीं किया और उनसे कहा, ''तुम अभी हो रही भारी बारिश में आये हो और तुम्हारी साईकल पूरी तरह भीग गई है। तुम सूखे कैसे हो सकते हो ?'' वह कहते हुए वहा आई और उन्होंने एरच के वस्त्रों को छूकर देखा। वह यह देखकर आश्चर्यचकित हो गई कि उनके कपड़े सूखे थे।

एरच प्रारम्भिक वर्षो में यह घटना मण्डली हाल में बतलाया करते थे और यह कहते हुए समाप्त करते थे, ''एकरूपता की ऐसी शक्ति है। यदि तुम किसी के लिये अपने मन में एकरूपता की अल्पकालिक भावना को भी पैदा कर सको, कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह व्यक्ति तुम्हारा कितना बड़ा दुश्मन है, वह रातोंरात तुम्हारा मित्र बन जायगा। अवतार और सद्गुरु पूरी सृष्टि के साथ एकरूपता का अनुभव करते हैं जिसके कारण सृष्टि में प्रत्येक चीज उनके लिये आकर्षण अनुभव करती है। यह ऐसे ही होता है।

जब मैं यह कहानी बाबा–प्रेमियों को बतलाता था तो वे मुझसे पूँछते थे, ''यदि सृष्टि में प्रत्येक चीज, सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही, अवतार के प्रति आकर्षित होती है, प्रत्येक अवतरण में उन्हें इतने विरोध का सामना कैसे करना पड़ता है ?'' इस प्रश्न ने मुझे एक घटना की याद दिला दी जो कि रासायनिक कारखाने के समय घटित हुई थी।

मैं केन्द्रीय प्रदूषण बोर्ड (CPCB) के संयुक्त सचिव से मिलने गया था। नियन्त्रण बोर्ड ने कारखाने की उपलब्धियों (लाभ हानि) के आधार पर इसे बन्द करने की संस्तुति दी थी और मैं उस रिपोर्ट को लेने गया था। यद्यपि केन्द्रीय प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड (CPCB) ने राज्य सरकार को उद्योग को बन्द करने की संस्तुति की थी, राज्य सरकार ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया था। इस संस्तुति की नकल प्राप्त करने के द्वारा यह सिद्ध करके कि राज्य सरकार उद्योग को बचा रही थी, हमारा मुकदमा और अधिक मजबूत हो जाता। संयुक्त सचिव बहुत सौहार्द्रपूर्ण और सहायता करने वाले थे। उन्होंने उस आवश्यक अभिलेख की एक प्रति मुझे दी और मुझसे कहा, ''तुम कहते हो कि अवतार मेहेर बाबा ईश्वर हैं। हमें दुनिया भर से बाबा प्रेमियों के हजारों शिकायती पत्र इस उद्योग के सम्बन्ध में प्राप्त हुए हैं। यदि बाबा वास्तव में ईश्वर हैं और हजारों हृदयों को अपनी ओर आकर्षित कर सकते हैं, क्यों वह (बाबा) रासायनिक कारखाने के मालिक के मन और हृदय को नहीं जीत सकते जो कि पास में ही रहता है ? एक

साधारण सा प्रेरणादायक दैवीय विचार, ईश्वर के द्वारा उसके मन और हृदय में रोपने पर, उस पर विजय प्राप्त कर लेता और सभी चीजों को बहुत आसान बना देता। तुम्हारे मेहेर बाबा ऐसा क्यों नहीं कर सकते ? इतनी अधिक कठिनाईयों से जिनसे होकर प्रत्येक व्यक्ति गुजर रहा है, बचा जा सकता था। क्या तुम्हारे पास इसका कोई उत्तर है जिससे मेरा सन्देह दूर हो सके ?

यह व्यक्ति एक श्रद्धालु हिन्दू था, इसलिये मैंने उससे कहा, ''निश्चित रूप से मैं इसका उत्तर दे सकता हूँ। लेकिन पहले आपको मेरे एक सन्देह को दूर करना होगा। प्रभु राम और कृष्ण पूरी दुनियाँ में हिन्दुओं के द्वारा अवतार के रूप में पूजे जाते हैं। प्रभु राम, यदि वह ईश्वर थे, क्यों नहीं रावण का हृदय एक दैवीय, प्रेरणादायक विचार से जीत सके ? क्यों नहीं वह अपहरण की गई अपनी पत्नी सीता को लौटाने के लिये रावण को संतुष्ट कर सके थे। ईश्वर होने से वह ऐसा कर सकते थे। क्या आवश्यकता थी उन्हें अपने अनुयायिकों उस बर्बरतापूर्ण युद्ध में लड़ाने की जिसमें इतने मर गये ?

इसी विषय पर हम प्रभु कृष्ण के विषय में बात करते हैं। वह भी कौरवों की सेना के दुर्योधन से पाण्डव भाईयों को पाँच गाँव देने की याचना करने और युद्ध को रोकने के लिये गये थे। यद्यपि वह ईश्वर थे, वह दुर्योधन को ऐसा करने के लिये सन्तुष्ट नहीं कर सके थे और आखिरकार बाद में युद्ध हुआ जिसमें दोनों तरफ की पूरी सेनायें समाप्त हो गई। इस सबकी क्या आवश्यकता थी ? कृष्ण ने, जिन्होंने इतने चमत्कार किये थे, एक और चमत्कार करके इस युद्ध को क्यों नहीं रोका जिसे वह सरलतापूर्वक कर सकते थे ?''

संयुक्त सचिव हँसे और उन्होंने कहा, ''मैं समझ सकता हूँ कि तुम क्या कह रहे हो लेकिन इससे अभी भी मेरा सन्देह दूर नहीं हुआ।'' मैंने उन्हें बतलाया कि यह प्रश्न कई लोगों द्वारा मेहेर बाबा की मण्डली के सामने रखा गया था और उनका (मण्डली जनों का) उत्तर निम्न था।

अवतारिक आगमन के दौरान, प्रकाश की शक्तियों और विरोधी अन्धकार की शक्तियों का एक दैवीय नाटक के रूप में आमना–सामना करवाया जाता है जिसका लेखक स्वयं अवतार होता है। युगों–युगों से वह अपना दैवीय खेल खेलता है। इसे दैवीय लीला कह सकते हैं जिसमें अवतार स्वयं मानवरूप लेकर हीरो होता है। वह अपनी दैवीय शक्ति या आनन्द का प्रयोग न करके

एक साधारण मनुष्य के समान अपनी भूमिका निभाता है। वह हर उस प्रत्येक परिस्थिति में कष्ट उठाता है जिसमें हम सामान्य मनुष्य कष्ट पाते हैं, प्रत्येक कठिनाई का सामना करता है जिसका हम मनुष्य सामना करते हैं और, उस पर विजय पाके, वह मानवजाति को दिखलाता है कि ऐसी स्थितियों को संभालने का उचित मार्ग क्या है। अपने अवतरण के दौरान, वह अपने पीछे, जिसे हम ''पदचिन्ह, ''कहते हैं, मानवजाति के अनुसरण के लिये छोड़ देता है। असली और दृढ़प्रतिज्ञ जिज्ञासु जो इन पदचिन्हों का अनुसरण करते हैं, आखिरकार जिन्दगी के लक्ष्य तक पहुँच जाते हैं। यह कार्य का केवल एक पहलू है जिसे वह इस दैवीय खेल द्वारा पूरा करता है।

''उसके कार्य का दूसरा पहलू उसके नजदीकी और मण्डल के अन्तरंग सदस्यों से सम्बन्धित है जो उनसे अपनी निष्ठा में अटल होने के द्वारा चिपके रहते हैं, उनके लिये अपनी जिन्दगी को भी अर्पित करने के लिये तैयार रहते हैं। उन्हें ऐसी विपरीत परिस्थितियों और विरोधों के द्वारा अत्यधिक कठिनाइयों परीक्षाओं और दुखों में रखकर वह अपने प्रति उनके प्रेम की परीक्षा लेता है। वे जो उनको पकड़े रहते हैं, इस परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाते हैं और उन्हें पुरस्कार स्वरूप न केवल उनका साथ मिलता है बल्कि ईश्वरत्व का अन्तिम उपहार भी मिलता है जिसे वह अपने मण्डल को भेंट में देता है। मूल रूप से, दैवीय नाटक के द्वारा अवतार अपने मण्डल के सदस्यों को अपनी सेवा का अवसर देता है और, बदले में, वह उनकी जिम्मेदारी लेता है और उन्हें ईश्वर साक्षात्कार देता है।

''उसके दैवीय कार्य का एक और पहलू उसके प्रेमियों से सम्बन्धित है जो दुनियाँ में रहते हैं और उसका अनुसरण करते हैं लेकिन उसके मण्डल के सदस्य नहीं हैं। विरोध के कारण जो कि अवतार स्वयं के विरुद्ध उत्पन्न करता है, पूरी दुनियाँ में उसके प्रेमी अकथनीय कठिनाईयों और उत्पीड़न उनके हाथों सहते हैं जो अनभिज्ञ हैं और अवतार के दैवीपन को समझने में असमर्थ होते हैं। इन प्रेमियों के विश्वास की परीक्षा भी कठिनाईयों और कष्टों के द्वारा होती है और जो उनको अन्त तक पकड़े रखकर परीक्षा में उत्तीर्ण होते हैं, आध्यात्मिक रूप से उन्नति करते हैं।

''उसके कार्य का अन्तिम पहलू पूरे ब्रम्हाण्ड से सम्बन्धित है। अपने मण्डल के सदस्यों को विभिन्न कठिन परिस्थितियों में रखकर, वह वास्तव में

विश्व की चेतना पर उसकी आध्यात्मिक प्रगति की गति को तीव्र करने के लिये कार्य करता है। यद्यपि वह कुछ क्रिया कलापों को स्थानीय स्तर पर प्रारम्भ करते हुए प्रतीत होते हैं, इसका प्रभाव विश्वव्यापी प्रतिक्रिया होती है।''

इसको समझने में उसकी सहायता करने के लिये मैंने उनको बतलाया कि कैसे बाबा, एक मॉडल पर कार्य करने के द्वारा जो मेहेराबाद, मेहेराजाद और ट्रस्ट कम्पाउण्ड का प्रतिनिधित्व करता था, विश्व के मंच पर नाटकीय रूप से परिस्थितियों को बदल सके थे। जो कार्य उन्होंने मेहेराबाद मेहेराजाद और ट्रस्ट कम्पाउण्ड में किया, वह विश्व का एक लघु प्रतिरूप था। उसका प्रभाव पूरी दुनियाँ में अनुभव किया गया जो एक ब्रम्हाण्ड था। मैंने उनको उदाहरण दिया कि कैसे जब हमने प्रदूषण फैलाने वाले रासायनिक कारखाने की लड़ाई प्रारम्भ की थी, पर्यावरण आन्दोलन की एक विशाल लहर भारत सहित पूरी दुनियाँ में सामने आई। आश्चर्यजनक रूप से, पहली बार भारत में विभिन्न राज्यों में हजारों प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों को बन्द कर दिया गया था। सबसे अधिक ख्याति प्राप्त ऐडवोकेट, जिन्होंने इस पर्यावरण आन्दोलन को सामने आकर आगे की ओर ले गये थे, संयोगवश वही ऐडवोकेट थे जिन्होंने हमारे मुकदमें का उच्च न्यायालय में प्रतिनिधित्व किया था। यही वह दैवीय खेल है जो वह खेलने के लिये हर बार आते हैं। लोग उनका विरोध करते हैं जब वह हमारे बीच आते हैं। जब वह चले जाते हैं, वे उनकी पूजा करना शुरू कर देते हैं और जैसे–जैसे वर्ष बीतते जाते हैं, वे उनके अवतरण की प्रतीक्षा करते हैं या कोई भी यह कह सकता है कि उनके लौटने की राह देखते हैं। इस तरह प्रभु हर बार अपना खेल खेलते हैं।

संयुक्त सचिव ने कृतज्ञ हृदय से मेरी ओर देखा और उसने कहा, ''जब तुम वापस जाओं अपने मेहेरबाबा को मेरी ओर से सम्मान देना। मैं हृदय से उनके सामने नतमस्तक हूँ।''

केटी एरच पर क्रोधित हुई

मण्डली के चारों ओर वातावरण हमेशा इतना गम्भीर नहीं होता था। वाक् पटुता और हास्य परिहास जो मण्डली के चारों ओर विद्यमान रहता था, वातावरण को हल्का कर देता था और आध्यात्मिक प्रशिक्षण की कठोरता को कम कर देता था और सहन करने योग्य बना देता था। आगे अब उन

कहानियों की एक श्रंखला है जो वाक् पटुता और हास्य परिहास को लेकर आयेंगी जो न केवल मण्डली सदस्यों के बीच में बल्कि मण्डली और अन्तेवासियों के बीच भी विद्यमान रहता था।

जब मैं मेहेराजाद में रहता था, मैं देखता था कि एरच केटी ईरानी को चिढ़ाया करते थे। यदि एरच बरांडे में खाली बैठे होते थे और किटी संयोगवश वहाँ से गुजरती थीं, वह केटी को वहाँ से होकर डिस्पेन्सरी के अपने रास्ते पर जाने देते थे। जहां वह कुछ काम से जाती थीं। जब केटी आधे रास्ते में होतीं थीं, वह (एरच) उन्हें पुकारते थे और उन्हें वापस आने के लिये कहते थे क्योंकि वह उससे कुछ महत्वपूर्ण बात करना चाहते थे। केटी अनिच्छा पूर्वक शिकायत करती हुई वापस लौटतीं थीं क्योंकि वह जानती थीं कि एरच कुछ शरारत करने वाले थे जैसी कि वह निरन्तर उन पर चाले चलते रहते थे।

हममें से उन लोगों से जो एरच के पास बैठे होते थे, वह सांस खींचकर धीरे से कटाक्ष करते थे ''केटी को देखो। वह चलती नहीं है, वह बदक की तरह डोलती है।'' केटी का शरीर भारी था और वह ऑर्थराईटिस के कारण घुटने के दर्द से पीड़ित थीं और उनकी चाल बदक की चाल के समान इधर–उधर डोलती दिख रहीं थीं। वह एरच के पास आतीं और रूखे चेहरे से कहतीं ''अब बोलो मुझे बतलाओं कि क्या बात है ? मुझे करने के लिये बहुत से काम हैं। तुम यहाँ पर पूरे दिन कहानियाँ सुनने के अलावा, जो दवाना तुम्हारे लिये पढ़ती है, कुछ नहीं करते, केवल बैठे रहते हो। मेरे पास कोई सहायक नहीं है। मुझे अपने सारे काम अकेले ही करने होते हैं। इसलिये जल्दी से मुझे बतलाओं कि क्या बात है। तुम्हारी ठिठो लियों के लिये मेरे पास कोई समय नहीं हैं।''

एरच तब उससे कुछ बहुत ही महत्वहीन बातें पूँछते थे जैसे, ''तुम्हारा स्वास्थ कैसा है केटी ? मैं उसके बारे में जानना चाहता था।'' केटी बहुत अधिक क्रोधित हो जाती और कहतीं, ''यह महत्वपूर्ण कार्य है जिसके लिये तुमने मुझे बुलाया था? तुम्हारे पास करने के लिये कुछ नहीं है और इसलिये तुम सोचते हो कि हर कोई तुम्हारे जैसा है। इसके साथ वह तूफानी गति से मेहेराजाद डिस्पेन्सरी की ओर चली जाती थीं।

एक अवसर पर केटी को चिढ़ाने के बाद जब वह जाने वाली थीं, एरच ने मुझसे कहा, ''केटी मेरा खिलौना है। मैं उसके साथ खेलता हूँ और इससे मेरा समय व्यतीत होता है। मैं क्या करूँगा जब वह मर जायगी ? मैं अकेला हो

जाऊँगा। मैं अपना समय कैसे बिताऊँगा ?'' दिन के दौरान इस तरह केटी को चिढ़ाने के साथ साथ, रात्रि के भोजन के समय जब वह पुरुषों की तरफ नौकरों के साथ भोजन लेकर आती थी, हर कोई भोजन के विषय में उसे तंग करने के इरादे से कुछ न कुछ टिप्पणी करता था जिसे केटी ने बनाया होता था।

मुझे केटी का बनाया भोजन स्वादिष्ट लगता था, लेकिन एरच, मेहेरवान, अलोबा और फालू उसे तंग करने के लिये खराब टिप्पणी करते थे। केवल बाल नातू ही एक थे जो कोई राय नहीं देते थे। एरच की राय खासतौर से यह होती थी, ''रूस्तम, यह जो स्वादिष्ट भोजन हमें मिल रहा है, वह इस कारण है कि तुम यहाँ हो। नहीं तो हमारा भोजन बहुत खराब होता। इसलिये कृपा करके हमें मत छोड़ना और न ही यहाँ से जाना।''

केटी क्रोधित होकर कहतीं, ''हाँ मैं नहीं जानती कि भोजन कैसे बनाते हैं। मैं बहुत बुरी हूँ। यही तुम पूरे साल कहते हो।'' अलोबा भी इसमें शामिल हो जाते थे और कहते थे, ''रूस्तम को यहाँ से जाने की अनुमति न देना। उसको पूरे साल यहाँ रखो जिससे केटी हमें अच्छा भोजन दे।'' एरच इसमें शामिल हो जाते और कहते थे, ''वह भोजन अच्छा बनाती है लेकिन उसे खुद खा जाती है। वह हमें केवल बचा हुआ या पिछले दिन का बासी भोजन देती है। हमें ताजा भोजन खाने के लिये नहीं मिलता, वह सब खुद खा जाती है।''

यदि केटी आगबबूला हो जाती और कुछ कहतीं, एरच और दूसरे लोग उसको तब तक तंग ही करते रहते जब तक वह उतेजित न हो जाती और वहाँ से चली नहीं जाती। इस तरह हर कोई उन पर मज़ाक का आनन्द लेता था। इस तरह की बातचीत को देखना अच्छा लगता था जो कि एक उत्तेजना भरे दिन के बाद वातावरण को हल्का कर देती थी।

संयोगवश ऐसा हुआ कि एक दिन दवाना को पेचिश हो गई। रात्रि के भोजन के समय केटी ने एरच से दवाना के स्वास्थ के बारे में पूँछ ताँछ की। एरच केटी को तंग करने के लिये इस अवसर का फायदा उठाते हुऐ बोले ''तुमने उसे सुबह नाश्ते में क्या दिया था ? उसने उसे खाया और बीमार हो गई। तुम उसे बासी भोजन क्यों देती हो ? क्या होगा यदि वह मर जायगी ? मैं अपना काम कैसे करूँगा ? वह मेरे लिये मूल्यवान है। वह मेरे हाथ और आँखें हैं। उसके बिना मैं कैसे काम करूँगा ?''

एरच ने जब यह कहा तो केटी इतना नाराज हो गई कि वह उन पर

(एरच पर) चिल्ला पड़ी और बोलीं, ''हाँ, अब तुम मुझे दोष देते हो। उसने निश्चितरूप से पिछली रात को ट्रस्ट कम्पाउण्ड में कुछ खा लिया होगा और बीमार हो गई। अब तुम मुझ पर उसको बीमार करने का दोष लगा रहे हो।'' जब एरच इस नाजुक मामले में उसे तंग करते रहे, केटी नाराज हो गई और उसने एरच से कहा, ''मैं अब तुमसे तुम्हारे द्वारा कही गई इतनी अप्रिय चीजों के कारण बात नहीं करूँगी। इतना कहकर वह झल्लाहट में वहाँ से चली गई।

केटी ने निश्चय ही यह घटना महिलाओं की तरफ बतलाई होगी क्योंकि अगली सुबह जब हम मेहेराजाद की सड़क पर टहल रहे थे, संयोगवश हम एरच की बहिन मनु से टकरा गये। उसने एरच से पूँछा, ''तुमने किटी से ऐसा क्या कहा है कि वह इतनी नाराज है जो वह उस विषय में पूरे दिन बात करती रही। जब उसे मिलो तो उससे क्षमा माँग लेना, नहीं तो वह कहती है कि तुम्हारे साथ बात नहीं करेगी।'' एरच इस पर हँसे और उन्होंने मनु से कहा, ''नहीं, नहीं। ऐसा होने दो। उसे परेशान और नाराज रहने दो। हम उसे ऐसा ही देखना पसन्द करते हैं। हम इसका बहुत आनन्द लेते हैं। इसके अतिरिक्त, यह उसके लिये अच्छा है। इससे उसके शरीर में खून का दौरान ठीक रहेगा।'' यह कहकर एरच मेहेराजाद की ओर वापस चल दिये।

उस शाम जब केटी रात्रि के भोजन के साथ आई और जैसे ही वह एरच के पास से गुजरी जो ब्लू बस के पास बरांडे में अपनी आराम कुर्सी पर बैठे हुए थे, एरच ने ''जयबाबा'' कहकर केटी का अभिवादन किया और उससे पूँछा कि वह कैसा महसूस कर रही थी। केटी ने उत्तर नहीं दिया और चली गई। एरच ने दूसरी बार पूँछा, लेकिन केटी ने उत्तर नहीं दिया। एरच ने बहुत नम्रतापूर्वक याचना की ''कृपया मुझसे बात करो। क्या तुम मुझसे किसी बात से नाराज़ हो ? कृपया मुझे क्षमा कर दो। मुझसे कुछ कहो।'' जब केटी ने फिर भी उत्तर नहीं दिया, एरच खड़े हो गये और नौकर से कहा, ''काशीनाथ, मेरा भोजन ले जाओ। मैं तब तक कोई भी भोजन नहीं करूँगा जब तक केटी मुझसे बात नहीं करेगी।'' इसके साथ ही एरच उठ गये और अपने कमरे की ओर जाने लगे।

कमरे के दूसरे छोर से केटी की तेज गरजती हुई आवाज आई, ''हाँ, अपना भोजन मत करो। तब जब तुम मर जाओगे तो सारी दुनियाँ इसके लिये मुझे दोष देगी। तुम यही सब करते हो। मुझे परेशान करते हो।'' एरच खुलकर

मुस्कुराये और उन्होंने केटी से कहा, ''केटी मुझसे बात करने के लिये धन्यवाद। अब मैं भोजन करूँगा।'' एरच खाने की मेज पर बैठ गये और उसके पहले कि भोजन उनकी प्लेट में परोसा जाता उन्होंने केटी से कहा, ''आज रात्रि का भोजन बहुत स्वादिष्ट है।'' केटी ने उनसे कहा, ''मेरी खुशामद करने का प्रयास मत करो। तुमने अभी तक भोजन चखा भी नहीं है।'' एरच ने अपनी राय प्रगट की, ''लेकिन मैं इसे सूंघ सकता हूँ और पता लगा सकता हूँ की यह विशेष रूप से स्वादिष्ट है।'' केटी ने उनसे कहा, ''मेरी इच्छा है कि तुम रोज यह याद रखो,'' और वह वहाँ से चली गई। ऐसी थी मण्डली। उनके हृदय बच्चों के समान थे और एक दूसरे के लिये उनका प्रेम भी ऐसा ही था जो बहुधा उनकी दिन प्रतिदिन की बात चीत में झलकता था जहाँ वाक्पटुता और हास्य परिहास विद्यमान होता था।

स्पष्ट दृष्टि

खुर्शीद की अंग्रेजी बहुत कमजोर थी और बहुधा जब वह बात करती थीं, मेरे लिये भी उसको समझना कठिन होता था जो वह कह रही होती थीं। मुझे बहुधा आश्चर्य होता था कि जो वह कहती थी उसे पश्चिम के प्रेमी कैसे समझ लेते थे। एक बार जब कुछ पाश्चात्य प्रेमी उनके पास थे, उनमें से एक ने एक हास्यास्पद चुटकुला खुर्शीद को सुनाया। जब चुटकुला समाप्त हो गया, हर कोई हँसने लगा। खुर्शीद भी हँसी में शामिल हो गई और दिल खोल कर हँसीं। जब पाश्चात्य प्रेमी चले गये, तब खुर्शीद मेरी ओर मुड़ी और उन्होंने कहा, ''क्या तुम गुजराती में मुझे यह चुटकुला बतला सकते हो ? मुझे इसका अर्थ समझ में नहीं आया।'' मैंने गुजराती में उन्हें चुटकुला बतलाया और जब मैंने इसे समाप्त किया, वह पुनः दिल खोलकर हँसीं।

अचानक ही मुझे ऐसा लगा और मैंने उनसे प्रश्न किया, ''खुर्शीद आप इतना दिल खोलकर हँस रहीं थीं जब पश्चिमी प्रेमी ने चुटकुला आपको सुनाया था; आप क्यों हँसी थीं?'' खुर्शीद ने मुझसे कहा, ''उनकी हँसी बहुत विचित्र थी और इसी कारण से मैं उस पर हँस रही थी। जब पूरा ग्रुप, अलग तरीके से हटकर जैसे हर कोई हँसता है, ठहाका लगाकर हँसा, तो मुझे भी उससे हँसी आ गई क्योंकि वह मुझे बहुत विचित्र लगा था, लेकिन मैं उस चुटकुले का अर्थ नहीं समझ सकी थी। मुझे चुटकुला अब समझ में आ गया है

और इसलिये मैं फिर से हँसी थी। इस तरह मैंने चुटकुले का आनन्द दो बार प्राप्त किया।'' जब खुर्शीद ने यह कहा तो मैं भी हँसा। वह इतनी बच्चों जैसी सरल पवित्र और मासूम थीं। इस कारण से मैं यह अनुभव करता हूँ कि वह न केवल बाबा की मण्डली की बल्कि मेहेरा की सबसे अच्छी मित्र होने की भूमिका निभाने के योग्य थीं।

खुर्शीद अपने दत्तक पुत्र सुदाम और पुत्रवधू आशा से बहुत प्रेम करतीं थीं। वह अपनी पुत्रवधू को सकू कहकर बुलातीं थीं जो कि भारत की एक प्रसिद्ध महिला सन्त का नाम था जो ईश्वर के प्रति अपने प्रेम के लिये जानी जातीं थीं। खुर्शीद जिन्हें ठिठोली करने में आनन्द आता था, बहुधा आशा को तंग करने का प्रयास करतीं थीं और उनकी बात चीत को देखकर मजा आता था। एक विनोदप्रिय कहानी जो मेरे दिमाग में आ रही है, कुछ ऐसी थी जो उनके अन्तिम दिनों में घटित हुई थी। क्योंकि खुर्शीद नेत्रहीन थीं, मैं उनके परदे वाले दरवाजे पर जाकर कमरे में प्रवेश करने के पहले अपनी पहचान देता था क्योंकि वह मुझे मेरी आवाज के द्वारा पहचान सकतीं थीं।

उनकी मृत्यु के कुछ माह पहले, खुर्शीद ने एक बार उस समय मुझे यह बतलाया जब मैंने कमरे में प्रवेश किया था। उन्होंने कहा, मेरी दृष्टि अचानक ही बहुत स्पष्ट हो गई है और अब मैं हर चीज देख सकती हूँ।'' यह अच्छी खबर थी और मैं यह सुनकर खुश था। मैंने अपनी खुशी उन पर भी जाहिर की। आशाने जो कमरे के दूसरे छोर पर खड़ी थी, उनकी बात सुनी, वह उनकी (खुर्शीद की) ओर मुड़ी और उसने कहा, ''आप ऐसी बात क्यों कहती हैं जब आप कुछ भी देख नहीं सकती हैं?'' खुर्शीद ने यह कहते हुए उसे डाँटा, ''तुम चुप रहो। मैं रूस्तम से बात कर रही हूँ तुमसे नहीं। मैंने तुम्हें नहीं बतलाया कि मेरी दृष्टि में केवल आज ही अभी सुधार हुआ है और मैंने ठीक अभी प्रत्येक को यह सूचना देने की सोची थी।''

आशा ने खुर्शीद को याद दिलाया कि ठीक अभी कुछ मिनट पहले वह पानी का गिलास ढूँढ़ने में असमर्थ थीं जो उसकी सीट की बगल वाली मेज पर था जहाँ वह बैठी हुई थीं। इस पर खुर्शीद ने कहा कि दृष्टि में सुधार उसके बाद हुआ था। उन्होंने कुछ मिनटों तक इस विषय पर बहस की और तब आशा ने खुर्शीद से कहा, ''यदि आपकी दृष्टि में सुधार हुआ है और आप साफ–साफ देख सकती हैं, तो मुझे बतलाईये कि रूस्तम कमरे में कहाँ बैठा हुआ है ?'' क्योंकि खुर्शीद ने अपना चेहरा आशा से बात करने के लिये घुमा लिया था जो

दूसरी ओर थी, उन्होंने थोड़ा सा दिशा भ्रम अनुभव किया। वह भूल गई थी कि मैं विपरीत दिशा में बैठा हुआ था। इसलिये उन्होंने अपना हाथ आशा की दिशा में उठाया और उस ओर इशारा किया।

आशा ने उनसे कहा, ''रूस्तम वहाँ नहीं बैठा है।'' खुर्शीद ने आशा की अधिकार पूर्वक भर्त्सना की और कहा, ''तुम चुप क्यों नहीं रहतीं ? मैंने अभी तक अपनी बात समाप्त नहीं की है। मैं धीरे–धीरे चीजें करती हूँ और मैंने ठीक अभी अपना हाथ उठाया था जब तुमने अपना मुँह खोला।'' इसके साथ ही खुर्शीद ने अपना हाथ कमरे के अर्द्ध वृन्ताकार रूप में हिलाया और रुक गई। दुर्भाग्यवश उन्होंने अपने आधे कमरे को भी पार नहीं किया था। जब खुर्शीद रूक गई तो आशा ने टिप्पणी की, ''वह वहाँ भी बैठा हुआ नहीं है।'' खुर्शीद ने आशा की पुनः यह कहते हुए भर्त्सना की, ''तुम अभी चुप क्यों नहीं रहती और थोड़ा धैर्य रखो। मैं जानती हूँ कि रूस्तम कहाँ बैठा है। मैं केवल इसलिये रूक गई थी कि मेरे हाथ की मांसपेशियों में ऐंठन महसूस हो रही थी।''

तब खुर्शीद ने अन्त में अपने हाथ को कमरे के दूसरे आधे हिस्से को भी पार करते हुए वृन्ताकार रूप में सामान्य रूप से उस दिशा की ओर हिलाया जहाँ मैं बैठा हुआ था यद्यपि उनकी ऊँगलियाँ अभी भी मेरी ओर संकेत नहीं कर रहीं थीं। जब उन्होंने ऐसा किया हम सभी हँसने लगे। इस पर आशा ने कहा, ''खुर्शीद तुमने हाथ पूरे कमरे में हिलाया था।'' खुर्शीद हँसी और बोली, ''लेकिन मैं क्या कर सकती हूँ जब वह कमरे के दूसरे छोर पर बैठा है।'' खुर्शीद ऐसी ही, बिल्कुल बच्चे के समान थीं।

मैं नहीं जानता कि वह उस सुबह किस दृष्टि के सन्दर्भ में बात कर रही थीं, लेकिन इसके बाद कई दिनों तक वह मुझे हर समय बतलाती थीं कि कैसे बाबा और मेहेरा उनसे मिलने प्रतिदिन आते थे और वह बहुधा उनके साथ टहलने जातीं थी। जब मैंने उनसे पूँछा कि क्या यह एक स्वप्न था जो वह देख रहीं थीं, उन्होंने कहा, ''नहीं, वे वास्तव में आये थे।'' जब मैंने उनसे दूसरी बार पूँछा कि क्या यह दृश्य था जिसमें उन्होंने (खुर्शीद ने) उनको (बाबा और मेहेरा को) देखा उन्होंने अधिकारपूर्वक मेरी भर्त्सना की और कहा, ''क्या तुम बहरे हो ? यह एक स्वप्न या दृश्य नहीं था। मैंने तुम्हें बतलाया था कि वे मुझसे मिलने आये थे और मैं बहुधा उनके साथ टहलने जाती थी जब वे मुझे आभन्त्रित करते थे।''

जब खुर्शीद की मृत्यु हो गई, उनकी चिता को आग लगाने से ठीक पहले

उनके चेहरे के भावों की अभिव्यक्ति को देखकर आश्चर्य हो रहा था। उनका चेहरा चमक रहा था और उनके होंठो पर मुस्कुराहट थी। मुझे यह स्पष्ट समझ में आ रहा था कि वह अपने प्रियतम बाबा और अपने बचपन की मित्र मेहेरा के साथ जा रहीं थीं। यही वह दृश्य था जो वह स्पष्ट रूप से देखती थीं और अब वह उसका एक हिस्सा बन गई थीं।

अलोबा नाटक को बीच में रोक देते है।

एक पश्चिम की तीर्थयात्री, जो काफी लम्बे समय से मेहेराबाद में आ रही थी, बहुधा विनोद पूर्ण झलकी और नाटक रविवार को मेहेराजाद में मण्डली के लिये प्रस्तुत करती थी। मण्डली जनों की व्यक्तिगत विशेषताओं का निरीक्षण करने के बाद उसने मण्डली और उनके सहायकों के विषय में विनोदपूर्ण नाटक करने का निश्चय किया। उसने एरच पर और उसके बाद भाऊजी और उनके सहायकों पर नाटक प्रस्तुत किया। वह मण्डली के सदस्य जैसी वेश भूषा धारण करती थी और उनके हाव भाव और अपने सहायकों के साथ बातचीत के उनके तरीके की नकल उतारती थी। उद्देश्य हास्यास्पदरूप से विनोदपूर्ण होता था। उसने मेरे साथ और भाऊजी के दूसरे सहायकों के साथ उनकी विभिन्न विशेषताओं के सम्बन्ध में चर्चा करके जाँच पड़ताल की, कि हम इस विषय में क्या सोचते, समझते थे। तब उसने उनकी (भाऊजी की) उन विशेषताओं को उजागर करने का प्रयास करते हुए उनकी नकल की। उसके बाद उसने अलोबा की एक झलकी प्रस्तुत करने का निर्णय किया।

अलोबा महीने में एक बार थोड़े समय के लिये मेहेराबाद आते थे जहाँ वह रात भर मेहेर पिल्ग्रिम सेन्टर में रूकते थे। अगली सुबह वह आरती के समय समाधि पर जाते थे और मेहेराबाद में कुछ समय बिताने के बाद वह मेहेराजाद लौट जाते थे। अलोबा मण्डली में सबसे अलग थे और उनका स्वभाव बिल्कुल बच्चों जैसा था। मेहेराबाद में आरती प्रतिदिन सुबह और शाम सात बजे की जाती है। MPC में सुबह की चाय प्रातः जल्दी छः बजे दी जाती है। अधिकांश तीर्थयात्री अपनी सुबह की चाय पीते थे और सुबह की आरती के लिये पहाड़ी पर चले जाते थे। फिर भी, कुछ तीर्थयात्री MPC में ही रूके रहते थे और सुबह की आरती छोड़ देते थे, शायद दिन में थोड़ी देर के बाद जाने

और समाधि पर एकान्त में कुछ समय बिताने के इरादे से ऐसा करते थे।

जब लगभग सुबह के पौने सात (6:45 AM) बजते थे, MPC में एक चेतावनी की घण्टी तीर्थयात्रियों को संकेत करने के लिये बजाई जाती थी कि आरती का समय होने वाला था। यदि अलोबा तीर्थयात्रियों को वहाँ रूके हुए देखते थे और सुबह की आरती में न जाते हुए देखते थे, वह उन्हें डाँटते थे। वह तीर्थयात्रियों को सुबह की आरती में जाने के लिये प्रोत्साहित करने के लिये यह याद दिलाते हुए कि उनके वहाँ होने का उद्देश्य क्या था, पूरे MPC में घोषणा भी करवाते थे। इसलिये जब पश्चिमी तीर्थयात्री ने अलोबा पर नाटक करने का निश्चय किया, उसने इस घटना को उजागर करने और पूरी परिस्थिति को आनन्दमय बनाने के लिये बढ़ा चढ़ा कर प्रस्तुत करने को चुना।

जब मण्डली के लिये मेहेराजाद में यह नाटक प्रस्तुत किया जा रहा था, अलोबा वहाँ बैठे थे और इसे देख भी रहे थे। तीर्थयात्री ने, अलोबा की जैसी वेशभूषा में, मण्डली हाल में प्रवेश किया और तीर्थयात्रियों को डाँटते हुए अलोबा की नकल की। उसने लगभग हूबहू वैसी ही नकल की थी। जब वह MPC की विभिन्न विंग्स में घोषणा करने के लिये अग्रसर हुई जिसमें उसने कहा, ''सभी तीर्थयात्री जो सो रहे हों, उन्हें तुरन्त उठ जाना चाहिये और समाधि पर आरती के लिये चल देना चाहिये। वे भी जो बीमार हों मर रहे हों या मरचुके हों, उन्हें भी तुरन्त उठ जाना चाहिये और समाधि की ओर चल देना चाहिये।''

जिस तरीके से उसने अलोबा की नकल की, वह बहुत आनन्ददायी था और अलोबा के अतिरिक्त मण्डली के सदस्यों सहित सभी हँस रहे थे। अलोबा जल्दी से खड़े हो गये और मण्डली हाल के केन्द्र की ओर चल दिये। उन्होंने (अलोबा ने) यह कहते हुए नाटक को रूकवा दिया, ''एक मिनट रूको। एक मिनट रूको। मैंने ऐसा नहीं कहा था।'' वह वहाँ बैठी हुई मण्डली और तीर्थयात्रियों के सामने खड़े हो गये। बाबा की बहिन मनी की ओर देखते हुए अलोबा ने कहा, ''मुझे बतलाने दो कि मैंने क्या कहा था। चाय के बाद जब तीर्थयात्री बैठ जाते हैं और बातचीत करने लगते हैं और भूल जाते हैं कि यह आरती का समय है और वहाँ जाने का प्रयास नहीं करते हैं, मैं इसे सहन नहीं कर सकता हूँ। इसलिये मैं उन्हें यह याद दिलाने के लिये घोषणा करवाता हूँ कि वे इसे गम्भीरता से लें। और हाँ, जो नाटक में कहा गया है, वह सही नहीं

है। जब मैं घोषणा करवाता हूँ तो मैं कहता हूँ कि वे जो बीमार हैं या इलाज करवा रहे हैं, सोते रहें। दूसरे लोगों को समाधि पर चलना चाहिये। मुझे यही कहना है।'' पूरा दृश्य इतना आनन्ददायक था कि मण्डली और सभी तीर्थयात्री ठहाका लगाकर हँसने लगे।

कल्पना करो दो अलोबा मण्डली हाल के केन्द्र में खड़े हुए, एक अलोबा दूसरे अलोबा को बीच में रोक रहा था और जो कुछ उसके दृष्टिकोण को प्रगट करने के लिये कहा गया था, उसे अविश्वसनीय ठहरा रहा था और नाटक अभी तक समाप्त नहीं हुआ था जब अलोबा जाकर अपनी सीट पर बैठ गये, पश्चिमी तीर्थयात्री ने, जो अलोबा की वेशभूषा में थी, श्रोताओं से कहा, ''जो आप लोगों ने अभी देखा, वह नाटक का एक हिस्सा था। हमने अलोबा को ऐसा करने के लिये प्रशिक्षित किया था।''

हर कोई पुनः ठहाका लगाकर हँसने लगा। मनी ने भी अपनी राय प्रगट की कि यह सबसे अधिक आनन्दित करने वाला नाटक था जो उन्होंने कभी देखा था, यह कुछ ऐसा था जिसका बाबा वास्तव में आनन्द लेते । स्वाभाविक रूप से अचानक होने वाली मूर्खताओं ने, जो नाटक खेलते समय हुई, बाबा को दिल खोलकर हँसाया होगा। पश्चिमी प्रेमी ने तब शेष नाटक को समाप्त करने की अनुमति माँगी और अलोबा की दूसरी कुछ विशेषताओं की नकल करने के लिये अग्रसर हुई जैसे कि किसी तीर्थयात्री के पीछे खड़े होकर एक बड़ी म्याऊँ से तीर्थयात्री को चौंकाना जिसके वह बिल्ली से बेहतर आवाज में निकालते थे। उसने तब सीटी बजाकर, जिसे अलोबा हमेशा गले में लटकाये रहते थे, और यह कहते हुए ''बस पर जाओ। अब जाने का समय हो गया है।'' नाटक समाप्त किया।

अलोबा अपने तौर तरीकों में बिल्कुल बच्चों जैसे थे जैसा कि उपर्युक्त घटना से स्पष्ट है। यदि अलोबा कुछ कहते थे और यदि तुम उनसे सहमत नहीं होते थे, अलोबा एक बच्चे की तरह तुमसे अन्त हीन बहस करते रहते थे और यदि तुम अभी भी उनसे सहमत नहीं होते थे, तो वह एक बच्चे की तरह चिढ़कर तुम्हें चुप रहने के लिये कहते थे।

इतने महान आध्यात्मिक व्यक्तित्वों में ऐसे बच्चों जैसे गुण को देखना एक आश्चर्यजनक विरोधाभास था। वे एक बच्चे के समान शिकायत करते थे, एक बच्चे के समान बहस करते थे और एक बच्चे के समान छोटी–छोटी चीजों में हर्ष प्रगट करते थे।

अलोबा के बच्चों के जैसे तौर -तरीके

अलोबा के बच्चों जैसे तौर तरीके हमारे लिये निरन्तर मनोरंजन का स्रोत थे। वह हमेशा ईरान की प्रशंसा किया करते थे, मुख्यरूप से इस लिये क्योंकि वह ईरानी मूल के थे। जब अलोबा देखते थे कि ईरानी तीर्थयात्रियों का ग्रुप आया है, वह अत्यधिक प्रसन्न होते थे और अपना अधिकांश समय उनके साथ बिताते थे। यह उन्हें अपने देशवासियों के साथ ईरान के गौरव के विषय में फारसी में बात करने का अवसर प्रदान करता था। दो पहर के भोजन के समय, अलोबा प्रायः हमारे लिये कुछ खबरें लाते थे जो वह ईरान की महानता के विषय में रेडियों पर सुनते थे। जब वह बाबा के विषय में बातचीत नहीं कर रहे होते थे, तब वह ईरान के गौरव के विषय में बातचीत कर रहे होते थे।

हम लोग अपना दोपहर का भोजन उस दो कमरों के एक छोटे से बरामदे में मेज पर करते थे जो मण्डली हाल के मुख्य बरामदे के सामने था। अलोबा प्रायः वहाँ आते थे और ईरान की संस्कृति के कुछ गुणों का गुणगान करना प्रारम्भ कर देते थे। वह कहते थे, ''क्या तुम जानते हो कि लगभग सन्तानबे प्रतिशत ईरानी कुछ ऐसी ही चीजें करते हैं।'' बाल नातू और मेहेरवान आश्चर्य व्यक्त करते और कहते, ''सच में अलोबा। आप यह कैसे जानते हैं?'' अलोबा तब गर्व पूर्वक घोषित करते थे कि उन्होंने समाचार या तो रेडियो पर सुना था या समाचार पत्र में पढ़ा था।

बाल नातू, उनको चिढ़ाने के इरादे से तब कहते, ''मुझे याद है कि ऐसा समाचार सुना था, लेकिन कोई प्रतिशत नहीं दिया गया था। आप कैसे कह सकते हैं कि यह सन्तानबे प्रतिशत (97%) है? यह छियानबे (96%) प्रतिशत या अट्ठानबे प्रतिशत (98%) हो सकता है।'' अलोबा चिढ़ जाते और बाल नातू से कहते, ''बालाजी तुम चुप रहो। यदि मैं कहता हूँ कि यह 97% है, तो यह सन्तानबे प्रतिशत (97%) है, न आधा प्रतिशत ज्यादा, न आधा प्रतिशत कम। ठीक सन्तानबे प्रतिशत (97%) । इस पर मेहेरवान भी इसमें शामिल हो जाते और कहते, ''लेकिन अलोबा, तुम इस प्रतिशत की गणना कैसे करते हो ?''अलोबा उत्तर देते, ''मेरे अन्दर एक कम्प्यूटर है जो गणना

करता है और मुझे बतलाता है।'' मेहेरवान तब आगे कहते, ''लेकिन तुम्हारा कम्प्यूटर गलत हो सकता है। कभी–कभी कम्प्यूटर ठीक से कार्य नहीं करते।''

मेहेरवान को सहारा देते हुए फालू भी उनकी राय में शामिल हो जाता था। अलोबा उनको उत्तर देते, ''कम्प्यूटर से परिणाम प्राप्त होने के बाद, मैं बाबा के साथ इसकी जाँच पड़ताल करता हूँ कि क्या यह सही है। जब बाबा मुझे बतलाते हैं कि यह सही है, केवल तब मैं यह घोषणा करता हूँ कि यह सही है। इसी कारण मैं हमेशा सही होता हूँ।'' जब भी अलोबा कुछ प्रतिशत के साथ कहते थे, बाल नातू, मेहेरवान, और फालू उन्हें इसी तरह तंग करते थे। वह (अलोबा) वहाँ प्रायः दोपहर का भोजन करने वालों के निशाने पर होते थे।

दूसरी घटना जो अलोबा के बच्चों जैसे व्यवहार को दिखलाती है, निम्न है। अलोबा को पश्चिम के बाबा प्रेमियों द्वारा विभिन्न केन्द्रों को देखने और भाषण देने के लिये आमन्त्रित किया गया था। उनकी आदत भविष्यवाणी करने की थी और वह अधिकांशतः तृतीय विश्व युद्ध के प्रारम्भ होने के चारों ओर घूमती थी। वर्षो से उन्होंने कई अवसरों पर भविष्यवाणियाँ की थी और तारीखें दी थीं जो आई और चली गई जबकि विश्व अभी भी ज्यों का त्यों था। अलोबा तब दूसरी तारीख की भविष्यवाणी करते थे। वह यह भविष्यवाणी उन सपनों के आधार पर करते थे जो वह देखते थे। जब वह स्वप्न बतलाते थे, हममें से अधिकांश उलझन में पड़ जाते थे कि कैसे वह इस तरीके से उसकी व्याख्या करते थे जिसमें घुमा फिराकर कहा जाता था कि तृतीय विश्व युद्ध प्रारम्भ होने वाला था।

इसलिये जब अलोबा पश्चिम जाने के लिये तैयार थे, मनी एक बार उन्हें एकान्त में बात करने के लिये अलग ले गई। मनी ने उन्हें नम्रतापूर्वक समझाया कि पश्चिम की यात्रा के दौरान, वहाँ कई नये चेहरे होंगे, इसलिये वह अपना ध्यान बाबा के विषय में बात चीत करने पर केन्द्रित करें और भविष्यवाणियाँ न करें। मनी ने उन्हें बतलाया कि कई पश्चिमी बाबा प्रेमी भविष्य में विश्व में घटने वाली घटनाओं के विषय में नहीं जानना चाहते थे। वे केवल बाबा के प्रेम के विषय में जानना चाहते थे। मनी ने अलोबा से वादा लेने का प्रयास किया कि वह केवल बाबा के विषय में बातचीत करेंगे। अत्यधिक अनिच्छा पूर्वक अलोबा मनी के कहे अनुसार करने के लिये सहमत हो गये।

अगले दिन जब हम चाय के समय बात कर रहे थे जो कि प्रायः तीन बजे दोपहर में होती थी, अलोबा ने हमें उनके और मनी के बीच हुई बातचीत के

रहस्य की हर बात बतलाई और आगे कहा, ''मनी से बात करने के बाद मैं, मुझ पर लगाई गई रोक के कारण, बहुत बेचैनी अनुभव कर रहा था। इसलिये मैंने बाबा से पूँछने का निश्चय किया। मैंने दो कागज की चिटें लीं। एक पर मैंने 'हाँ' और दूसरे पर 'ना' लिखा। तब मैंने उन्हें मिला दिया। मैं उनको लेकर मण्डली हाल में गया और उन्हें बाबा के सामने रख दिया और उनसे कहा, ''यदि आप चाहते हैं कि मैं स्वतन्त्रतापूर्वक भाषण दूँ तो उत्तर 'हाँ' में दें, लेकिन यदि आपकी इच्छा है कि मैं बन्धन के साथ भाषण दूँ तो उत्तर 'न' में दीजिये। मैंने तब चिट खोली और अपने लिये बाबा का निर्देश पढ़ा।'' अलोबा ने तब अपने दोनों हाथों को हवा में उठाया और कहा, ''जय बाबा। बाबा मुझे बतलाते हैं कि मैं बिना रुकावट के बोलूँ। अवतार मेहेर बाबा की जय।'' इसके बाद अलोबा ने मुर्गे की तरह बाँग दी और बाद में अपने बच्चों जैसे हर्ष को व्यक्त करने के लिये म्याऊँ' की आवाज की।

अलोबा का व्यवहार बहुधा तीर्थयात्रियों को चक्कर में डाल देता था। वह बहुधा तीर्थयात्रियों के पास पहुँच जाते थे और उनका अतीत और भविष्य बतलाते थे। जब तीर्थयात्री उनसे किसी समस्या में सहायता करने के लिये कहते थे, वह कभी–कभी तुरन्त ही सलाह दे देते थे, लेकिन अधिकांशतया वह अपनी 'हाँ' और 'न' की चिट बाबा के चित्र के सामने रखते थे और फिर एक चिट उठाते थे। कभी–कभी किसी दुर्लभ अवसर पर वह 'दीवान–ए–हाफिज' की सलाह लेते थे। यह कई लोगों की बुद्धि को चक्कर में डाल देता था जो उनसे मिलते थे लेकिन बाबा ने अलोबा की महानता को अपनी टिप्पणी से इशारे में बतलाया था, ''उसका (अलोबा का) प्रेम मुझको (बाबा को) भयभीत करता है'' और उनकी तड़प की तुलना ''पतंगा जो आग की लपट को निगलने का प्रयास कर रहा हो,'' से की थी।

भाऊजी हल्की मनोदशा में

भाऊजी, जब उग्र मूड में नहीं होते थे, बहुधा हम लोगों के साथ केवल अपना समय बिताने के लिये शरारत किया करते थे। वह बहुधा कटाक्ष करते थे, ''पूरे समय हम लोग बाबा के आसपास ऐसा ही करते थे। इसमें बहुत आनन्द आता था और हमारे लिये यह समय बिताने का साधन था क्योंकि मनोरंजन के लिये और कुछ भी वहाँ नहीं था। जब हम यात्राओं या दर्शन प्रोग्राम में व्यस्त

नहीं होते थे तब बाबा के साथ यही हमारी जिन्दगी थी।'' प्रारम्भिक वर्षो में कोई टी०वी० केबिल, वीडियोज, कम्प्यूटरर्स या मोबाइल्स नहीं थे, बाक् पटुता और हास्य परिहास अन्तेवासियों के लिये, विशेषरूप से जब मण्डली भी इसमें भाग लेती थी, मनोरंजन का एक बहुत बड़ा साधन बन गया था।

भाऊजी बहुधा मुझसे ठिठोली किया करते थे क्योंकि वह जानते थे कि मैं अपने हास्य विनोद से उन्हें मात देने का प्रयास करूँगा जिसका वह वास्तव में आनन्द लेते थे। निम्न महत्वपूर्ण घटना ऐसी ही एक घटना है जो मैं पाठकों को बतलाना चाहूँगा।

एक बार जब एक तीर्थयात्री भाऊजी के साथ कुछ व्यक्तिगत मामले में बातचीत कर रहा था, मैं संयोगवश समीप ही था। केवल ट्रस्ट के कर्मचारी और अन्तेवासी भाऊजी के पास अपने व्यक्तिगत और कार्य सम्बन्धी मामलों को लेकर पहुँचते थे बल्कि तीर्थयात्री भी उनके पास पहुँचते थे। भाऊजी कभी भी किसी को न तो इनकार करते थे, न ही किसी से मुँह मोड़ते थे, भले ही वह कितने भी व्यस्त होते थे। बहुधा हम घण्टों तक उनके पास बैठे रहते थे कि वह कब हमारे साथ ट्रस्ट के कार्य के विषय में बातचीत करने के लिये खाली होंगे। यह विशिष्ट तीर्थयात्री युवा और देखने में सुन्दर थी। उसने लम्बे समय तक भाऊजी के साथ अपनी समस्या पर बात की। भाऊजी ने उसे कुछ लाभ दायक सलाह दी और वह वहाँ से चली गई।

जब वह चली गई, भाऊजी ने मुझे देखा और कहा, ''बहुत अच्छी लड़की है। वह एक बहुत ही अच्छी लड़की है। मुझे वह पसन्द है।'' मैंने केवल चुपचाप सिर हिला दिया। जैसी कि भाऊजी की आदत थी, उन्होंने यह कथन दूसरी बार दोहराया। मैंने फिर से सिर हिला दिया क्योंकि वह मुझे देख रहे थे। तब अपनी आँखों में शरारत के साथ, भाऊजी ने मुझसे पूँछा, ''क्या तुम सोचते हो कि वह अच्छी है ?'' मैंने उनसे कहा, ''यदि आप ऐसा कहते हैं तो वह अच्छी ही होगी।'' भाऊजी ने मुझसे दूसरा प्रश्न पूँछा, ''क्या तुम्हें वह पसन्द है?'' क्योंकि भाऊजी अच्छे मूड में थे और मेरी टाँग खींचने का प्रयास कर रहे थे, मैं भी खेल में साथ हो गया और मैंने कहा, ''हाँ, भाऊजी, मुझे वह पसन्द हैं।''

भाऊजी मजाक में क्रोध का नाटक करते हुए मेरी ओर घूमे और मुझसे कहा, ''नालायक , जब तुम पहली बार यहाँ रहने के लिये आये थे, तुमने क्या

कहा था ? क्या तुम्हें याद है ? तुमने कहा था कि तुम शादी नहीं करोंगे, तुम एकाग्रह होकर बाबा की सेवा करोगे। इसलिये हमने तुम्हें यह अवसर दिया और तुम मुझे बतला रहे हो कि तुम्हें यह लड़की पसन्द है।'' मैंने भाऊजी से बहुत अनौपचारिक रूप से कहा, ''भाऊजी, मुझे सभी लड़कियाँ अच्छी लगती हैं लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि मैं उन सबसे विवाह करने जा रहा हूँ।'' भाऊजी हँसने लगे और उन्होंने कहा, ''ओह, मैं समझ गया। भाऊजी तब मेरी ओर मुड़े और बोले, ''मैं तुम्हें पसन्द करता हूँ क्योंकि तुम ईमानदार हो।'' दूसरे अन्तेवासी की ओर संकेत करते हुए उन्होंने कटाक्ष किया, ''यह व्यक्ति हमेशा लड़कियों के साथ बात करता है। मैं इसे बहुधा सुन्दर लड़कियों को घूरते हुए देखता हूँ लेकिन जब मैं इस ओर इसको संकेत करता हूँ, यह इससे इन्कार कर देता है। यह बेईमानी है। कमजोरी हरेक में है। इससे इनकार करना और इस पर पर्दा डालना बेईमानी है।''

दूसरे अवसर पर, भाऊजी ने उसी विषय पर मेरी टाँग खींचने का प्रयास किया। मैंने अनुभव किया कि भाऊजी युवा अन्तेवासियों पर निरन्तर नजर रखते हैं जिससे कि वह उनको बाबा पर ध्यान केन्द्रित करने में और दूसरी चीजों की ओर आकर्षित होने से बचने में सहायता कर सकें। मण्डली के दूसरे सदस्य भी ऐसा ही करते थे। जब यह खास घटना हुई, तब टीवी केविल अभी–अभी ही ट्रस्ट कम्पाउण्ड में पहुँची थी। भाऊजी बहुधा शाम को जल्दी ही टीवी केबिल पर अपना प्रोग्राम देखने के लिये विश्राम करने चले जाते थे। जब मुझे। उनसे कुछ कार्य होता था, मैं उनके आवास पर चला जाता था और उन्हें सूचना दे देता था, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि शाम को कितनी देर हो गई थी। यदि वह टीवी देख रहे होते थे, वह मुझे बैठने के लिये और उनके साथ प्रोग्राम देखने को कहते थे। जब प्रोग्राम समाप्त हो जाता था, तब मैं शीघ्रता पूर्वक संक्षेप में उन्हें कार्य के विषय में बतलाता था और वहाँ से चला जाता था।

एक बार, जब भाऊजी की प्रिय हीरोइन का शो था, भाऊजी बहुत ध्यान से उसे देख रहे थे और उन्होंने मुझे अपनी सीट लेने को कहा। हीरोइन का नाम माधुरी दीक्षित था और वह एक बहुत बड़ी स्टार थी। वह न केवल एक अच्छी अभिनेत्री और नर्तकी थी, बल्कि उसने अपने मासूम सौन्दर्य और बच्चों

जैसी आकर्षक मुसकुराहट से सभी भारतीयों के ह्रदय को जीत लिया था। भाऊजी उसे देखकर बहुत खुश थे और जब शो समाप्त हो गया, वह मेरी ओर मुड़े और बोले, ''वह बहुत सुन्दर है और मुझे वह पसन्द है।'' उन्होंने फिर मुझसे पूँछा, ''क्या वह तुम्हें पसन्द है?'' मैं जानता था कि भाऊजी फिर से शरारत करने पर तुले हुए थे इसलिये मैंने कहा, ''हाँ भाऊजी, वह मुझे पसंद है।'' तब भाऊजी ने मुझसे पूँछा, ''क्या तुम उससे विवाह करोगे?'' मैंने कहा, ''हाँ भाऊजी, मुझे उससे विवाह करके बहुत खुशी होगी।'' मेरे उत्तर ने भाऊजी को आश्चर्यचकित कर दिया और उन्होंने कहा, ''तुम बदमाश। तुमने कहा था कि तुम कभी शादी नहीं करोगे। क्या तुम्हें याद है ?'' मैंने उत्तर दिया, ''हाँ भाऊजी मुझे वह याद है।'' वह और अधिक आश्चर्यचकित दिखलाई पड़े और उन्होंने मुझसे पूँछा, ''तब तुम क्यों कहते हो कि तुम उससे विवाह करना चाहते हो ?''

मैंने उनसे कहा, ''भाऊजी वह एक बहुत बड़ी स्टार है। वह मेरे अस्तित्व के विषय में भी नहीं जानती। यदि वह जानती भी होती तो क्यों वह मेरे जैसे किसी व्यक्ति से विवाह करेगी जबकि उसके पास मुझसे बेहतर लाखों व्यक्ति हैं जिनमें से वह विवाह के लिये किसी को भी चुन सकती है। क्योंकि मैं जानता हूँ कि ऐसा होने वाला नहीं है इसी लिये मैंने कहा था कि मैं उससे विवाह करूँगा।' भाऊजी हँसे और बोले, ''ओह, मैं समझ गया।'' उन्होंने तब आगे कहा, ''लेकिन यदि वह तुम्हारे साथ विवाह करने को सहमत हो गई तो क्या तुम उससे विवाह करोगे ?'' मैंने उनसे कहा, ''वह विवाह करने के लिये कैसे सहमत हो सकती है जब वह मेरे विषय में कुछ भी नहीं जानती ?'' भाऊजी ने कहा, ''तुम उसे एक प्रेमपत्र लिख सकते हो। उस तरीके से वह तुम्हारे विषय में जान जायेगी। यदि उसके बाद वह विवाह के लिये सहमत हो जाती है तो क्या तुम उससे विवाह करोगे?'' भाऊजी का स्वभाव जानने के कारण मैं जानता था कि वह बिना किसी अन्त के इसको करते रहेंगे, इसलिये उनको रोकने के लिये, मैंने उनसे कहा, ''यदि वह मुझसे विवाह करने के लिये सहमत हो जाती है तब मैं निश्चित रूप से अपना वादा तोड़ दूँगा और उससे विवाह कर लूँगा। ऐसा हमेशा नहीं होता कि तुम्हें सबसे सुन्दर सुपर स्टार से रोज विवाह का प्रस्ताव आये और इसलिये मैं अपना वादा तोड़ दूँगा। भाऊजी

केवल हँसे और मैं शीघ्रतापूर्वक उनको छोड़कर चला आया। मैंने सोचा कि मामला यही पर समाप्त हो गया था लेकिन मैं गलत था।

अगले दिन जब भाऊजी फुर्सत में थे, वह मेरी ओर मुड़े और उन्होंने कहा, ''क्या तुमने वह पत्र लिखा ?'' आश्चर्य करते हुए कि वह किस विषय में बात कर रहे थे, मैंने उनसे पूँछा, ''कौन सा पत्र ?'' भाऊजी ने कहा, ''माधुरी दीक्षित को वह पत्र, प्रेम पत्र जिसे लिखने के लिये मैंने तुम्हें बतलाया था?'' मैं मन में केवल यह सोच रहा था कि मेरे पास करने के लिये इतना कार्य है और भाऊजी अब एक सुपर स्टार को एक प्रेम पत्र लिखने के कार्य का बोझ डाल रहे हैं। मैंने उनसे पूँछा, ''क्या आप वास्तव में मुझसे चाहते हैं कि मैं वह पत्र लिखूँ ?'' उन्होंने कहा, ''हाँ तुम्हें उसको पत्र लिखना चाहिये। यदि वह तुम्हें पसन्द करती है, तब तुम उससे विवाह कर सकते हो।'' मैं ऐसा पत्र लिखने के लिये सहमत हो गया। इस आशा से कि वह इसे भूल जायेंगे, मैंने इस विषय में कुछ भी नहीं लिखा, लेकिन जब भाऊजी ने इस विषय में प्रतिदिन मुझे झिड़कना जारी रखा, मैंने निश्चय किया कि उन्हें अपनी पीछे से हटाने का एक मात्र मार्ग वह पत्र लिखना था।

उन दिनों मैं रासायनिक कारखाने द्वारा प्रदूषण के विषय में लगभग रोज ही सरकारी पदाधिकारियों को शिकायती पत्र लिख रहा था और ऐसा करने में मैं निपुण हो गया था, इस लिये कोई दूसरा पत्र लिखना मेरे लिये केवल मिनटों का काम था। कम से कम मैंने ऐसी ही सोचा था। इसलिये मैं एक सुपर स्टार को प्रेम पत्र लिखने बैठ गया जो कि भारत की सबसे चहेती महिला थी और जिसे मेरे अस्तित्व की जानकारी भी नहीं थी। मेरा मन अचानक ही खाली हो गया था। मैं नहीं जानता था कि पत्र कैसे प्रारम्भ करूँ। तुम किसी को प्रेम पत्र कैसे लिख सकते हो जिसे तुम नहीं जानते और वह व्यक्ति भी तुम्हें नहीं जानता। मैं अवाक् हो गया था। मैं यह नहीं जानता था कि मैं पत्र कैसे प्रारम्भ करूँ। अन्त में मैंने पत्र लिखने का इरादा छोड़ दिया लेकिन मैं सुपर स्टार का नाम लिखा हुआ एक सादा कागज साथ में ले गया, वैसी स्थिति में यदि भाऊजी पुनः पत्र के विषय में मुझे तंग करने का प्रयास करते। मैंने भाऊजी को चतुराई से घुमाने का प्रयास किया था, पर उसके बजाय मैं ऐसी परिस्थिति में फँस गया था जहाँ भाऊजी मुझे तंग करने के लिये पूर्णतया एक बेवकूफी भरी चीज का प्रयोग कर रहे थे। हाँ, उन्होंने मुझे चतुराई

से हतप्रभ कर दिया था।

अगली बार जब मैं कार्यालय में गया। मैं प्रमाण स्वरूप वह प्रेमपत्र ले गया जिसको लिखने का मैंने प्रयत्न किया था। मैं कुछ काम के लिये उनके आफिस में जाता था और जैसे ही मेरी उस सम्बन्ध में बातचीत समाप्त हो जाती थी, मैं वहाँ से जल्दी ही चले जाने का प्रयास करता था। लेकिन जैसा स्वाभाविक है, भाऊजी मुझे पकड़ लेते थे और प्रेम पत्र की प्रगति के विषय में पूँछताँछ करते थे। इसलिये अगली बार जब भाऊजी ने मुझसे प्रेम पत्र के विषय में पूँछा, तो मैंने वह खाली पेज उनको दिखला दिया और उनको बतलाया कि मैं समझ नहीं पा रहा था कि मुझे एक अजनबी को क्या लिखना चाहिये जो मुझे नहीं जानती थी। भाऊजी ने कटाक्ष किया, ''लेकिन तुम ऐसा क्यों नहीं कर सकते हो ? यह बहुत आसान है। तुम सरकारी पदाधिकारियों को पत्र लिखने में बहुत निपुण हो, इसलिये तुम इस पत्र को क्यों नहीं लिख सकते ? '' भाऊजी सरकारी पदाधिकारियों को पत्र लिखने की मेरी निपुणता के विषय में, लेकिन एक साधारण प्रेम पत्र लिखने की मेरी अयोग्यता के विषय में मुझे निरन्तर तंग करते रहे।

वह मेरे घमण्ड पर हास्य परिहास के द्वारा कार्य कर रहे थे। मैंने अनुभव किया कि सरकारी पदाधिकारियों को पत्र लिखने में निपुण होने पर मुझे गर्व था जो कई लोगों के द्वारा अच्छे माने गये थे। भाऊजी, बाबा के औजार के रूप में, शायद इसे समझ गये थे और मुझे ऐसे क्षेत्र में मेरी अयोग्यता को मुझे दिखला रहे थे जिस पर मैं गर्व करता था। अन्त में, भाऊजी ने कहा, ''ठीक है, मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। तुम वे बिन्दु नोट करो जो मैं तुम्हें देता हूँ।'' भाऊजी ने तब कुछ पंक्तियाँ बोली जो अपनी लय में काव्यमय थीं और प्रेम की इतनी सुन्दर अभिव्यक्ति थीं कि मैं विस्मय पूर्वक सुन रहा था। मुझे ठीक–ठीक शब्द याद नहीं हैं, लेकिन उनका अर्थ कुछ ऐसा था, तुम्हारे लम्बे लहराते हुए बाल मुझे बादलों की याद दिलाते हैं। तुम्हारी सुन्दर आँखों में समुद्र की गहराई है। पृथ्वी के सभी फूलों का सौन्दर्य तुम्हारे होंठों के सौन्दर्य के सामने फीके हैं और तुम्हारी सुगन्ध मेरे अस्तित्व को स्वर्गीय अनुभव से भर देती है।

मै पूरी तरह भोचक्का था जब भाऊजी रूके। मैने उनसे कहा,'' वाह ! कोई भी महिला ऐसा प्रेमपत्र पढ़ने के बाद आपकी दीवानी हो जायेगी। मै नही जानता था कि आप प्रेमपत्र लिख सकते थे। आपने ऐसे प्रेम पत्र लिखना कहाँ से

सीखा?क्या आप किसी से प्रेम करते थे?''मैं अभी भी उनसे तत्काल कुछ इतना सुन्दर आश्चर्य से उबर नही पाया था, जो कुछ नहीं करते थे पूरे दिन हम लोगों की आलोचना करते और हम पर प्रहार करते थे। इसलिये ऐसी अवस्था मे मैने उनसे यह मूर्खतापूर्ण प्रश्न पूँछा,''क्या आप किसी से प्रेम करते थे?

भाऊजी मुस्कराये और उन्होंने उत्तर दिया, ''हाँ मैं प्रेम मे था और मैंने उस प्रियतम के लिये बहुत से प्रेम गीतो की रचना की थी। हर कोई इस विषय में जानता है और मैं तुम्हें भी बतलाऊँगा कि वह कौन है। वह मेरे प्रियतम अवतार मेहेर बाबा है।'' हाँ, मै पूर्णरूपसे भूल गया था कि इन आत्माओ के पास, जो हमें इतनी मानवीय दिखते थे और जिन्हें हम मण्डली कहते थे, हदय थे जो कि प्रेम की आग में जल रहे थे और उनमे समाकर एक हो जाने के लिये तड़प रहे थे।

इस मुख्य घटना के बाद, भाऊजी ने फिर कभी भी उस पत्र के विषय मे मुझ से नही पूँछा और इसलिये मैने इसे लिखकर भेजने का कार्य वास्तव मे पूरा नही किया। ऐसा प्रतीत होता था कि बाबा ने इस पूरी घटना का प्रयोग एक बात समझाने के लिये किया था। एक बार जैसे ही मैंने बात समझ ली , परेशानी अपने आप समाप्त हो गई।

कई वर्षो तक इस मार्ग पर चलने पर, जब मै जान गया कि मण्डली में लोगों के हदय पढ़ने का और उनके वास्तविक इरादे समझने की योग्यता थी, मुझे ऐसा लगा कि इन सभी वर्षो में जब मै भाऊजी के साथ लुका छिपी का खेल खेल रहा था और अपनी वाक्पटुता और हास्य परिहास को उनके प्रहार से बचने के लिये प्रयोग कर रहा था, वह निश्चित रूप से इसे जानते थे कि मैं क्या कर रहा था और फिर भी उन्होंने इसे मुझ पर प्रगट नहीं किया था। यह ऐसा था जैसे कि जानते हुए भी कि मैं क्या कर रहा था, उन्होंने मुझे वैसा करने की अनुमति दी। इसलिये एक दिन जब भाऊजी तुलनात्मक रूप से खाली थे, मैंने इस मामले में उनसे आमने सामने बात की और उनसे पूँछा कि क्या वह पहले से ही जानते थे कि मैं क्या चालें चल रहा था और मैं ऐसा क्यों कर रहा था। भाऊजी मुस्कुराये और उन्होंने मुझसे कहा, ''हाँ, मैं इसे पहले से जानता था।''

मुझे आश्चर्य नहीं हुआ और मैंने उनसे आगे पूँछा, ''तब आपने मुझे ऐसा क्यों करने दिया ? आप मुझे रोक सकते थे और मुझ पर प्रहार भी कर सकते

थे, लेकिन आपने मुझे वैसा करने दिया ?'' भाऊजी ने अभी भी मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, ''क्योंकि जो तुम कर रहे थे, मैं उसका आनन्द ले रहा था। हम भी हर समय गम्भीर वातावरण को हलका करने के लिये बाबा के आस पास यही करते थे। यह उनके (बाबा के) साथ हमारी जिन्दगी को सहन करने योग्य बना देता था। तुम वही कर रहे थे और तुम वह बहुत स्वाभाविकरूप से कर रहे थे। यही है जो मैं इस विषय में पसन्द करता था। तुम मण्डली को छोड़कर नहीं गये और दूसरों की तरह तुमने उनके पीछे उनकी आलोचना नहीं की। तुम बाबा को पकड़े रहे और मण्डली के साथ काम करते रहे और अपनी वाक्पटुता और हास्य परिहास का प्रयोग अपने रास्ते में आने वाली परेशानियों और बाधाओं से बचने के लिये किया। यही है जिसकी मैं सबसे अधिक प्रशंसा करता हूँ कि तुम परेशानियों के बावजूद मण्डली से प्यार करते रहे और उनके साथ कार्य करते रहे।''

गाय और गधा

सन् १९६२ में, मैं रासायनिक कारखाने की लड़ाई के सम्बन्ध में सरकारी पदाधिकारियों से मिलने के लिय पहली बार दिल्ली गया था। क्योंकि इसके पहले मैं दिल्ली कभी नहीं गया था, डॉ० गौहर चाहती थीं कि मैं पुराने समय के एक बाबा प्रेमी केकी देसाई से सम्पर्क करूँ और ठहरने के साथ–साथ दूसरे मामलों के भी सम्बन्ध में उनकी सहायता लूँ। डॉ० गौहर ने मेरा परिचय देते हुए और मेरी सहायता करने की प्रार्थना करते हुए केकी देसाई को सम्बोधित करते हुए एक पत्र मुझे दिया था। मैंने पारसी धर्मशाला का पता भी ले लिया था जहाँ पर ठहरने और रहने की सुविधायें उपलब्ध थीं। जब मैं दिल्ली में उतरा, मैं सीधे पारसी धर्मशाला गया। क्योंकि धर्मशाला में मेरी आवश्यकता की हर चीज उपलब्ध थी, मैंने केकी देसाई से सम्पर्क करने की आवश्यता नहीं समझी। इसके अलावा उन दिनों उनके पास कोई फोन नहीं था।

दिल्ली के कुछ बाबा–प्रेमी, जो रासायनिक कारखाने की लड़ाई में मेरी सहायता कर रहे थे, मुझसे मिलने धर्मशाला आते थे। उनसे मुझे सूचना मिली कि केकी देसाई की पत्नी को हाल ही में लकवे का दौरा पड़ा था और वह बिस्तर पर पड़ी थीं। मैंने डॉ० गौहर द्वारा दिये गये केकी देसाई के नाम का पत्र बाबा प्रेमियों में से एक को दे दिया जो अक्सर उनसे (केकी देसाई से) मिलते

थे। जब दिल्ली में मेरा काम समाप्त हो गया, मैं केकी देसाई से मिले बिना सीधे अहमदनगर के लिये चल दिया।

जब मैं मेहेराजाद पहुँचा, मैंने हर चीज की रिपोर्ट मण्डली को दी जो दिल्ली में हुई थी। जब उन्होंने मुझसे पूँछा कि क्या मैं केकी देसाई से मिला था, मैंने नकारात्मक (नहीं में) उत्तर दिया। मैंने उन्हें (मण्डली को) उस दुखद घटना के विषय में बतलाया जो कि उनके (केकी देसाई के) घर हुई थी और वे (मण्डली जन) उसके विषय में सुनकर दुखी हो गये। केवल यही कारण नहीं था बल्कि यह कारण भी था कि मैं केकी और उसके परिवार को बिल्कुल नहीं जानता था इसलिये मैंने उनसे मिलने की उपेक्षा की। इसके अतिरिक्त मैं पूरे दिन सरकारी कार्यालयों में व्यस्त रहता था।

मुझे कुछ दिनों बाद आन्ध्र के एक बाबा–प्रेमी, सी० एच वीराना के साथ दोबारा दिल्ली की यात्रा करनी पड़ी जिनके दिल्ली में अच्छे सम्पर्क थे और उन्होंने न केवल सरकारी पदाधिकारियों से बल्कि स्थानीय बाबा प्रेमियों से भी मेरा परिचय करवाने का प्रस्ताव रखा। वह मुझे केकी के घर पर और अनिल शर्मा नाम के क्लर्क के घर भी ले गये जो उच्चतम न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट) में काम करते थे और जिसने बाद में हमारी तब सहायता की जब मामला सुप्रीम कोर्ट में पहुँच गया। क्योंकि पारसी धर्मशाला सुप्रीम कोर्ट के साथ–साथ केकी के घर से भी पास थी, दिल्ली की अपनी यात्राओं में उनसे मिलना मेरे लिये सुविधाजनक था। फिर भी मैं , केकी के घर पर जाने से बचता था क्योंकि मैं उन्हें ज्यादा नहीं जानता था। इसलिये भी, क्योंकि बाबा प्रेमी जो दिल्ली आते थे, वे निश्चित रूप से केकी से मिलने जाते थे, मैं नहीं चाहता था कि अपनी मुलाकातों से उन पर और बोझ डालूँ।

क्योंकि बाबा उनके स्थान पर मण्डली के साथ आठ विभिन्न अवसरों पर ठहरे थे और नई जिन्दगी के पहलू के दौरान घी व्यवसाय भी मण्डली द्वारा वहाँ किया गया था इसलिये केकी का घर बाबा–प्रेमियों द्वारा एक तीर्थ स्थल माना जाता था। मण्डली बहुधा मुझे केकी के बाबा के साथ सम्बन्धों की याद दिलाती थी और जोर देती थी । मैं उनसे मिलूँ। मैं अभी भी उनके घर पर जाने की उपेक्षा करता था क्योंकि जहाँ तक बाबा के साथ उनके सम्पर्को का सम्बन्ध है, मण्डली के साथ रहने और बाबा की समाधि के निकट होने के कारण मैंने किसी भी बाबा प्रेमी से मिलने या बाबा की मुलाकातों से जुड़े किसी भी स्थान को

देखने की आवश्यकता कभी भी महसूस नहीं की।

उस समय मेरा हृदय केवल मण्डली के पास होने से सन्तुष्ट था। मेरी इच्छा किसी से मिलने या किसी स्थान पर जाने की नहीं होती थी। इसलिये जब भी मैं अपनी दिल्ली यात्रा से वापस आता था, केकी से न मिल पाने के लिये कोई न कोई बहाना बना लेता था। क्योंकि मण्डली मुझसे निश्चित रूप से यह प्रश्न पूँछती थी, कुछ समय बाद मैंने बहाने बनाना छोड़ दिया और निश्चय किया कि मण्डली की झिड़कियों से बचने का सबसे अच्छा मार्ग हर बार दिल्ली छोड़ने के पहले केकी से मिलना था। मैंने ऐसा करना शुरू कर दिया और मण्डली ने अपने प्रश्नों से मुझे परेशान करना बन्द कर दिया।

मुझे केकी बहुत ज्यादा पसन्द आये क्योंकि जब भी मैं उनसे मुलाकात करता था, वह केवल बाबा या मण्डली के विषय में बात करते थे। वह रासायनिक कारखाने की लड़ाई के विषय में पूँछते थे और बार–बार मुझे आश्वासन देते थे कि अन्त में बाबा विजयी होंगे। केकी के विषय में सबसे अधिक प्रभावित मुझे इस बात ने किया कि उन्होंने बाबा का स्पर्श प्राप्त की हुई वस्तुएं बृहद् मात्रा में एकत्र की हुई थी और उसे यादगार के रूप में सम्भाल के रखा था। उनके पास बाबा के कपड़े, उनकी सैन्डिलें थीं और उस तकिये को भी जिस पर बाबा के पसीने के दाग दिख रहे थे, ब्लू बस का लॉटरी टिकट जो उन्होंने जीता था, कपड़े जो उन्होंने नई जिन्दगी के भिक्षा पहलू के दौरान बाबा के हाथ से प्राप्त किये थे, पानी जिससे बाबा ने स्नान किया था और अपने बाल धोये थे, डॉ० गौहर की घड़ी इत्यादि को उन्होंने सुरक्षित रखा दो ट्रंक वस्तुओं से लगभग पूरे भरे थे। जब केकी ने मुझे अपना संग्रह दिखलाया, मैं न केवल उनके संग्रह को देखकर बल्कि उस प्रेम को देखकर जिसने अपने प्रियतम की स्पर्श की हुई वस्तुओं को संग्रह करने और सुरक्षित रखने को प्रेरित किया था मैं पूर्णतया सम्मोहित हो गया।

मुझे याद है कि एरच ने एक अवसर पर उल्लेख किया था बाबा की निशानियाँ और मुख्य चीजें सबसे अधिक महिला मण्डली से प्राप्त हुए थी क्योंकि पुरूष मण्डली को ये सब सुरक्षित रखने का विचार उन्हें कभी भी नहीं आया। इसके अतिरिक्त उनकी बाबा के साथ जिन्दगी इतनी कठिन और अफरा–तफरी की थी कि ऐसी चीजों के लिये उसमें कोई समय नहीं था। एरच के अनुसार, ये महिलायें थीं जिनका झुकाव बाबा की ऐसी व्यक्तिगत चीजों को

संग्रह करने की ओर था क्योंकि व्यक्तिगत पहलुओं में इतने विस्तार में सम्मिलित होने का यह दृष्टिकोण स्त्रियोचित था।

अलोबा ने भी केकी का संग्रह देखकर, विशेष रूप से जब उन्होंने वे कपड़े देखे जो बाबा ने नई जिन्दगी के भिक्षा पहलू के दौरान केकी को दिये थे, इसका उल्लेख किया था। अलोबा ने कहा था, ''मैं यह देखकर बहुत खुश हूँ कि वे सभी चीजें जो बाबा ने तुम्हें दी थीं, तुमने इतनी अच्छी तरह सुरक्षित रखी हैं। ये कई सुन्दर यादों को वापस लेकर आई हैं। हमने भी नई जिन्दगी के भिक्षा पहलू के दौरान वही कपड़े प्राप्त किये थे लेकिन हमने उनका उपयोग कर लिया था और हमें यह कभी नहीं लगा कि हमें उनको चिथड़ों की स्थिति में भी सुरक्षित रखना चाहिये था। कपड़े जब पुराने हो गये और फट गये थे तो हमने उन्हें फेंक दिया था।'' मैंने केकी देसाई के इस पहलू की ओर आकर्षण अनुभव किया और उनके पास होने पर मुझे वैसा ही एहसास होता था जैसा मैं मण्डली के सदस्यों के पास होने पर एहसास करता था।

केकी देसाई हमेशा मण्डली के कुशलक्षेम के बारे में और रासायनिक कारखाने की लड़ाई की प्रगति के बारे में पूँछते थे और उसमें बहुत रूचि लेते थे। अपनी खुद की घरेलू समस्या के बावजूद जहाँ उनकी पत्नी धन लकवा से पीड़ित थी और बिस्तर पर थीं, वह हमेशा प्रसन्न रहते थे और मुझे सहारा देते थे। यहाँ मैं उनकी इकलौती बच्ची मेहेर से मिला। वह उस समय अपनी माँ की देखभाल करने में और छोटे–छोटे घरेलू कार्यो में व्यस्त् रहती थी। कभी–कभी जब वह खाली होती थी, तब वह हमारे पास आती थी और वहाँ बैठती थी।

जब हम रासायनिक कारखाने से सम्बन्धित मुकदमे को उच्च न्यायालय में हार गये और हमने उच्चतम न्यायालय में याचिका दायर की, तो मुझे लगभग हर सप्ताह दिल्ली जाना पड़ता था। इस तरह केकी के घर मेरा आना जाना बड़ गया और उनके साथ मेरी मित्रता भी बढ़ती गई। मण्डली और उनके बीच सन्देशों का आदान प्रदान होता था और बहुधा वह मण्डली के लिये बिस्कुट देते थे जो उनको (मण्डली को) प्रिय थे और केवल दिल्ली में उपलब्ध थे।

केकी को बहुत विश्वास था कि सुप्रीम कोर्ट का फैसला हमारे पक्ष में होगा और कारखाने के मालिक को बाबा की मण्डली को परेशान करने का परिणाम भोगना पड़ेगा। केकी मुझे बतलाते थे, ''मालिक उनकी (बाबा की)

मण्डली के साथ खेलकर आग से खेल रहा है और वह स्वयं को बहुत बुरी तरह जला लेगा।'' उनके शब्दों की सच्चाई के अनुसार सुप्रीम कोर्ट का मुकदमा प्रारम्भ से ही हमारे पक्ष की ओर झुक गया था जब न्यायाधीशों ने अनुभव किया कि सरकारी इकाईयाँ मालिक की अवैधानिक गतिविधियों पर पर्दा डाल रही थी। सुनवाई में लगभग एक वर्ष लग गया और नवम्बर १९६४ में सुप्रीम कोर्ट ने कारखाने के मालिक को अपना कारखाना अन्यत्र लगाने के लिये प्रारम्भिक आदेश कर दिया। न्यायाधीश ने उसे चेतावनी दी कि वह गम्भीरतापूर्वक प्रयास करे और ढील न डाले अन्यथ परिणाम भयानक होगा।

दो दिसम्बर को केकी की मृत्यु ह्रदयाघात से हो गई। अपनी मृत्यु के कुछ दिन पहले उन्होंने अपनी पुत्री मेहेर से कहा था कि वह बहुत प्रसन्नता अनुभव कर रहे थे क्योंकि वह हर जगह बाबा को देख रहे थे। जहाँ वह देखते थे, वह अपने प्रियतम को देख सकते थे। उन्होंने मेरे विषय में भी पूँछताछ की कि मैं अगली सुनवाई के लिये दिल्ली कब आ रहा था। अनिल शर्मा नामक बाबा प्रेमी जो सुप्रीम कोर्ट में कार्य करते थे, उनसे नियमितरूप से मुलाकात करते थे और उसने (अनिल शर्मा) उनको (केकी देसाई को) मेरे आने की तारीख बतला दी थी। उन्होंने तब कहा था ''जब रूस्तम अगली बार आयेगा, उसकी यात्रा बेकार जायगी लेकिन उसके बाद की यात्रा में बाबा चमत्कार करेंगे और हम मुकदमा जीत जायेंगे।''

ऐसा ही हुआ जैसा उन्होंने कहा था। जब मैं दिल्ली आया, सुनवाई नहीं हुई और न्यायाधीशों ने हमारा मुकदमा एक सप्ताह बाद लगा दिया। लेकिन अगली यात्रा में, न्यायाधीशों ने कारखाना बन्द करने और दूसरे स्थल पर ले जाने का आदेश डेढ़ माह की अवधि देते हुए पारित कर दिया। अवधि की समाप्ति पर सरकारी इकाईयों को उद्योग स्थायी रूप से बन्द करने का निर्देश दिया गया था। किसी को भी ऐसे आदेश की उम्मीद नहीं थी लेकिन न्यायाधीश लोग मालिक की देरी करने की चालों से पूर्ण रूपेण क्रोधित थे जिसने मुकदमें को लगभग एक वर्ष तक खींच ले जाने की व्यवस्था की थी।

जब मैं 'नगर वापस गया मैंने मुकदमें का विवरण और केकी की मृत्यु के विषय में भी पूरी मेहेराजाद मण्डली को बतलाया। मैंने केकी के अन्तिम क्षणों का विस्तृत विवरण बतलाया जैसा उनकी पुत्री ने मुझे बतलाया था। उस निर्णयात्मक दिन पर, केकी ने सुबह स्नान किया और बाबा के चित्र के सामने प्रार्थना करने के लिये बैठ गये। उन्होंने मेहेर से स्नान करने के लिये जाने को

कहा और उससे कहा, ''मैं अब बाबा की अपनी प्रार्थनायें करूँगा।''

वह रूके और आगे कहा, ''मैं अब प्रार्थना नहीं करता। मैं उनसे (बाबा से) बात करता हूँ।'' जब मेहेर अपना स्नान समाप्त करके आई उसने अपने पिता को हाथ जोड़ कर बाबा के चित्र को अपने चेहरे पर आनन्दपूर्ण भाव के साथ देखते हुए अपनी कुर्सी पर सीधे बैठे हुए देखा। उसने उनसे कुछ कहा लेकिन उन्होंने उत्तर नहीं दिया। वह पास गई और उन्हें हिलाया। उन्होंने अभी भी कोई उत्तर नहीं दिया। वह पूर्णतया सामान्य सीधी स्थिति में बैठे हुए थे और गिरे नहीं थे। चिन्तित होकर उसने पड़ोसियों को सहायता के लिये पुकारा। पड़ोसियों ने डॉक्टर को बुलाया और यह निश्चित हो गया कि केकी बाबा में समा गये हैं।

डॉक्टर ने कहा कि अपनी प्रैक्टिस के इतने वर्षो में उसने कभी भी किसी व्यक्ति को मृत्यु में इतना आनन्दित नहीं देखा था। उसने कहा कि यह मृत्यु का मामला नहीं था, बल्कि किसी के स्वेच्छापूर्वक समाधि लेने का था और उसने जोर दिया कि मृत शरीर को जमीन पर न रखा जाय बल्कि बिस्तर पर सम्मान सहित रखा जाय। उसने वहाँ का वातावरण बहुम आनन्दमय पाया और कहा, ''क्या सुन्दर मृत्यु है। मैंने इसके पहले ऐसा कभी नहीं देखा है।''

जब मैंने मेहेराजाद मण्डली को यह सब बतलाना समाप्त किया, मैंने निश्चय किया कि मुझे मेहेराबाद में मनसारी से मुलाकात करना चाहिये और उन्हें सब विस्तार से बतलाना चाहिये क्योंकि वह केकी से सम्बन्धित थीं। मनसारी मेहेर के साथ घटने वाली दोहरी दुखद स्थिति से दुखी थीं। न केवल उसे बिस्तर पर पड़ी हुई अपनी माँकी देखभाल करनी थी बल्कि उसके पिता बाबा में समा गये थे जो स्वस्थ थे और जिनके शरीर में कोई रोग की जानकारी भी नहीं थी। हर कोई यह उम्मीद कर रहा था कि मेहेर की माँ धन की मृत्यु होगी लेकिन उनके बजाय बाबा केकी को ले गये जो न केवल स्वस्थ थे बल्कि अपनी पुत्री के लिये अत्यधिक सहायता और शक्ति के स्रोत भी थे। मनसारी उस बोझ के द्वारा कष्ट में थीं जो बाबा ने मेहेर के सिर पर रख दिया था और उन्होंने विनम्रतापूर्वक बाबा से प्रार्थना की कि वह बेचारी बच्ची की सहायता करें। तब वह मुड़ी और वातावरण को हल्का करने के लिये उन्होंने मुझसे कहा, ''ऐसा प्रतीत होता है कि बाबा को सुनने की समस्या है। हम सभी लोग प्रार्थना कर रहे थे कि वह धन को उसके कष्टों से मुक्त कर दें और उसे अपने पास ले लें, लेकिन गल्ती से वह (बाबा) केकी को ले गये।''

मनसारी ने तब आगे कहा, ''मैं इस विषय में तुम्हें एक चुटकुला सुनाती हूँ। एक किसान था जो बहुत गरीब था। उसके पास एक गधा था जो बूढ़ा और कमजोर था, कोई भी उपयोगी कार्य करने में असमर्थ था और एक स्वस्थ गाय थी जो पर्याप्त दूध देती थी जिसे वह बाजार में बेंच देता था और अपने पूरे परिवार का भरण पोषण करता था। जैसे–जैसे समय गुजरता गया, किसान को अपने परिवार को एक समय का भोजन देना भी बहुत कठिन हो गया। वह निरन्तर दैवीय हस्तक्षेप की खोज में ईश्वर से प्रार्थना करता था अपनी प्रार्थनाओं में वह ईश्वर से प्रार्थना करता रहता था कि वह गधे को ले जायें जिससे उसके कन्धों पर का आर्थिक बोझ थोड़ा सा कम हो जाय। अपनी प्रतिदिन की प्रार्थनाओं में वह ईश्वर से इस विषय में याचना करता था क्योंकि वह गधे को अपने हाथों से मृत्यु की नींद में नहीं सुलाना चाहता था।

''एक दिन, उसकी प्रार्थनाओं के उत्तर में, स्वर्ग से एक बड़ी आकाशीय बिजली कड़क कर गिरी जो उस स्थान से टकराई जहाँ पर जानवरों को रखा गया था। उस स्थान का निरीक्षण करने के लिये जब वह झपटकर वहाँ गया तो वहाँ जो हुआ था, उसे देखकर वह किसान निराश हो गया क्योंकि बिजली ने गाय को मार दिया था, गधे को नहीं। स्वर्ग की ओर देखकर किसान ने क्रोधपूर्वक कहा, ''तुम किस प्रकार के ईश्वर हो ? क्या तुम एक गाय और एक गधे में अन्तर नहीं जानते ?'' मनसारी हँसीं और मैं भी हँसने लगा।

बाबा की मण्डली ऐसी ही थी। यह कहा जाता है कि जो सत्य पर अडिग होते हैं, वे बड़ी से बड़ी दुखद घटना से प्रभावित नहीं होते और फिर भी कष्ट पाने वाली आत्मा की छोटी से छोटी तकलीफ भी उनकी चिन्ता को आमन्त्रित करती है। मैंने न केवल मनसारी में, बल्कि पूरी मण्डली में यह देखा था।

मनी की वाक्पटुता और हास्य परिहास

सभी मण्डली के सदस्यों में मनी सबसे अधिक विनोदी थीं। वह शरारतों से भरी थीं और जब वह कहानी सुनाती थीं, उनमें एक साधारण घटना को विशेष बनाने की योग्यता थी। जब वह कोई हास्यजनक घटना या चुटकुला सुनाती थीं, उनकी अभिव्यक्ति, हाव–भाव और बच्चों के समान भोलापन जिससे वह इसे कहती थीं, उस घटना या चुटकुले को आनन्दमय

बना देता था। निम्न घटना मनी के इस गुण को काफी हद तक उजागर करती है क्योंकि जिस तरीके से वह यह करती थीं, कोई भी व्यक्ति वास्तव में इसके विषय में लिखकर इसके साथ न्याय नहीं कर सकता।

मनी को थोड़ा सा भी अवसर मिलने पर बाबा का गुणगान करने से प्रेम था, जबकि एरच, दूसरी ओर, अन्तर्मुखी थे। वह ही थे जो बहुधा गम्भीरता से स्मरण कराकर उनको शान्त करने का प्रयास करते थे जो कि केवल उनको (मनी को) नाम से पुकारना था, जैसा कि मनी स्वयं कहतीं थीं, ''उस विचित्र स्वर में।'' मनी इसके विषय में बात करती थीं और कहती थीं, ''जब एरच अपने विचित्र स्वर में 'मनी' कहते थे, मैं समझ जाती थी कि मैं कुछ गलत कर रही हूँ या कोई महत्वपूर्ण सरकारी पदाधिकारी मुलाकात करने आया था और मुझे शान्त रहना था और अपनी शरारतें बन्द कर देनी थीं।'' मनी जिन्दगी से इतनी भरपूर थी कि केवल उनकी उपस्थिति में होने से ही कोई उनके व्यक्तित्व को समझ सकता था। निम्न घटना कुछ ऐसी है जिसे मनी बहुधा मण्डली हाल में सुनातीं थीं।

मनी ने कहा, ''जब मैं ट्रस्ट की चेयरमैन हो गई थी या इसकी अपेक्षा चैरवूमन कहना चाहिये, मैं पूर्णतया आश्चर्य में थी कि मुझसे क्या करने की उम्मीद की जाती थी। एकान्त जिन्दगी के कारण जो हमने बाबा के साथ बिताई थी, मुझे ट्रस्ट में होने वाले दिन प्रतिदिन के कार्यो के विषय में कोई जानकारी नहीं थी। लेकिन मैं संयोग से उन लोगों को जानती थी जो इसे जानते थे और ये वही लोग थे जिन्होंने मेरी तरफ से इसे करके मुझे दिखलाया। जब मैं ऑफिस जाती थी, मैं बहुधा अपनी शरारतों के साथ होती थी, शरारतें करती थी। जब मैं एरच की वही कठोर आवाज को मनी कहते हुए सुनती थी, मैं अपना नाटक बन्द कर देती थी जिसमें मैं अपना ध्यान केन्द्रित किये होती थी और शान्त रहने का प्रयास करती थी क्योंकि कोई महत्वपूर्ण सरकारी पदाधिकारी उस क्षण मुलाकात कर रहा हो सकता था।

''मुझे सबसे बड़ा आश्चर्य तब हुआ जब ट्रस्ट का पहला बजट मेरे सामने आया। क्योंकि मैं बैलेन्स शीट नहीं समझती थी, मुझे आम आदमी के शब्दों में यह बतलाया गया कि व्यय की तरफ खर्च और जिम्मेदारियाँ और जमा की तरफ अनुदान और पूँजी को लिखकर प्रदर्शित किया जाता है। जब

मैंने उसे देखा मैं यह देखकर पूर्णरूपेण आश्चर्यचकित थी कि अनुदान और व्यय दोनों बराबर थे। यद्यपि लाखों रूपया आया था और लाखों व्यय हुआ था। व्यय और जमा दोनों ओर अन्तिम पैसे तक बराबर था। मैंने अपने आप से कहा, 'यह वास्तव में बाबा का चमत्कार है। फिर भी, मैंने यह प्रसन्नता केवल अपने हृदय में ही रखी, यद्यपि मैं आश्चर्य कर रही थी कि दूसरे लोग इस चमत्कार पर उन्तेजित क्यों नही है।

''जब दूसरी बार बजट मेरे सामने रखा गया, जमा और खर्च को अन्तिम पैसे तक पूर्णरूपेण संतुलित देखकर, बाबा के चमत्कार को पुनः देखकर उस विषय में इतनी उत्साहित हो गई कि मैं प्रसन्नता को अपने हृदय में अब और अधिक नहीं रख सकी। मैं यह सूचना बतलाने के लिये दौड़कर एरच के पास गई। कोई भी व्यक्ति मेरे जितना उत्साहित नहीं दिख रहा था और मैंने सोचा कि उन्होंने इस पर ध्यान नहीं दिया था। इसलिये मैं एरच के पास गई और उनको बतलाया जो मैं सबसे अधिक उत्साहित करने वाला बाबा का चमत्कार सोचती थी। मैं एरच के चेहरे पर कोई हावभाव न देखकर थोड़ा आश्चर्यकित थी। उनका भावनाशून्य चेहरा मुझे आश्चर्य चकित कर रहा था कि मैंने कुछ गलत किया था। इसलिये जब वह अपने विचित्र और गम्भीर स्वर में बोले, तो मैं जान गई कि मैंने बहुत बड़ी मूर्खता कर दी है। उन्होंने मुझसे कहा, ''मनी, यह इसी तरह से होता है। इसी कारण से इसे बैलेन्स शीट कहा जाता हैं।'' मनी ने कहा, ''कोई आश्चर्य की बात नहीं कोई अन्य उत्साहित नहीं था। केवल मैं ही थी जिसने सोचा कि यह बाबा का चमत्कार है।''

मनी की एक आदत यह भी थी कि वह वहाँ के अन्तेवासियों को भी पकड़ लेती थीं जो संयोग से उनके पास से गुजर रहे होते थे और उनको कोई हास्यास्पद चुटकुला या घटना सुनातीं थीं। उनमें अपनी उपस्थिति से उस स्थान को जीवन्त बनाने की योग्यता थी। जो भी उनके आसपास होता था, वह वातावरण में उसे अनुभव कर सकता था। एक अवसर पर जब वह (मनी) मेहेराजाद में मेरे पास से गुजर रहीं थीं, एक चुटकुला सुनाने के लिये उन्होंने मुझे रोक लिया। कई अवसरों पर जब चुटकुला शरारतभरा होता था वह साँस खींचकर विनम्रता से कहतीं थीं, ''तीर्थयात्रियों को जाने दो। उनके सामने मैं इसे नहीं सुना सकती।'' फिर भी, नीचे दिया गया चुटकुला जो मैं तुम लोगों को सुनाने जा रहा हूँ, बहुधा उनके (मनी के) द्वारा मण्डली हाल में सुनाया

जाता था।

''एक व्यक्ति को हर चीज को इस हद तक बढ़ा चढ़ा कर कहने की आदत थी कि कोई भी उस पर विश्वास नहीं करता था। उसके लिये एक विवाह का प्रस्ताव आया था और यह माना जा रहा था कि वह जायेगा और अपनी भावी दुल्हन के परिवार से मिलेगा। उसके परिवार ने उसे उसकी बढ़ा चढ़ा कर कहने की आदत के सम्बन्ध में चेतावनी दी जो उसके भावी विवाह में रूकावट डाल सकता था। यह अनुभव करके कि उसे समस्या थी और चुप रहना उसके लिये असम्भव था, उसने अपने मित्रों में से एक मित्र से अपने साथ चलने की प्रार्थना की जिससे कि वह उसे उसकी समस्या में सहायता कर सके। उसने अपने मित्र को सुझाव दिया कि हर बार जब वह बढ़ा चढ़ाकर बोलना प्रारम्भ करे, उसका मित्र खाँसना प्रारम्भ कर दे और उसका ध्यान उस ओर जायेगा और वह स्वयं को बात करने से रोक देगा।

वे भावी दुल्हन के स्थान पर बैठे हुए थे और उसके पिता से बात कर रहे थे। दुल्हन के पिता ने वार्तालाप के समय बतलाया कि उन्होंने कैसे एक साँप को घर में मारा था। इस पर व्यक्ति ने कहा, ''हाँ आपको वर्षा ऋतु में साँप हर जगह मिलते हैं। हम कार से यात्रा कर रहे थे जब एक साँप हमारी कार के पहिये के नीचे आ गया और आप विश्वास नहीं करेंगे, वह २०० फुट लम्बा था।'' दुल्हन के पिता ने आश्चर्य व्यक्त किया, ''२०० फुट लम्बा।'' मित्र जोर–जोर से खाँसने लगा। व्यक्ति पूर्णरूपेण परेशान हो गया और अपने मित्र को खाँसते देखकर, व्यक्ति ने कहा, ''अब सोचने पर मुझे लगता है की हो सकता है शायद वह २०० फुट का न हो, लेकिन मुझे विश्वास है वह १५० फुट लम्बा था।''

अभी भी आश्चर्यचकित होकर, दुल्हन के पिता ने उससे पूँछा, ''क्या तुम्हें विश्वास है।'' उस व्यक्ति के मित्र ने दूसरी बार खाँसना प्रारम्भ कर दिया। अपने मित्र को पुनः खाँसते हुए सुनकर वह व्यक्ति थोड़ा गुस्से में प्रतीत हुआ लेकिन उसने कहा, ''मैं विश्वास से नहीं कह सकता लेकिन यह निश्चित है कि वह सौ फुट लम्बा था। दुल्हन के पिता अभी भी सन्तुष्ट नहीं थे और उन्होंने कहा, ''इस लम्बाई का साँप मिलना दुर्लभ है। क्या तुम्हें उस की लम्बाई के विषय में विश्वास है?'' जब उसका मित्र तीसरी बार खाँसने लगा व्यक्ति पूर्णरूपेण परेशान हो गया और अपने मित्र की ओर मुड़कर बोला, ''ठीक है मैं ६५ फुट पर सहमत हो जाऊँगा लेकिन मैं इसमें से एक इन्च भी

आगे कम नहीं करूँगा चाहे तुम जितना खासो।'' मनी ने हँसते हुए इसे समाप्त किया और हम सब भी हँसने लगे।

मनी का दूसरा प्रिय चुटकुला निम्न था। ''एक बहुत धनी व्यक्ति (लखपति) अपनी मृत्यु शैय्या पर पड़ा था और उसने अपने सबसे घनिष्ठ तीन मित्रों को व्यक्तिगत रूप से मिलने के लिये बुलाया। उनमें से एक वकील दूसरा पादरी और तीसरा चिकिस्तक था। मरने वाले मित्र ने अपने मित्रों से कहा, मेरे पास बहुत सा धन है और यह कहा जाता है कि जब तुम मर जाते हो, अपने पीछे सबकुछ छोड़ जाते हो, लेकिन कोई नहीं जानता कि क्या यह सच है क्योंकि वहां से कोई भी वापस नहीं आता। इसलिये मेरी यह इच्छा है कि तुम तीनों मेरे सबसे विश्वसनीय मित्र मेरे अन्तिम संस्कार के समय मेरे निर्देशों का पालन करो। मैं तुममें से प्रत्येक को दस लाख रूपया देता हूँ और मेरी इच्छा है कि इस धन को मेरे शरीर पर फुल मालाओं के साथ रख देना जब उसे कब्र पर रखा जाय क्यों कि कौन जानता है, मैं इसे अपने साथ ले जा सकूँ। मुझे विश्वास है कि तुम तीनों इसे मेरे लिये करोगे।' उन तीनों ने अपने मित्र से वादा किया और उन्होंने उससे धन ले लिया और वहाँ से चले गये। अन्तिम संस्कार के दिन तीनों वहाँ पर थे और ताबूत को बन्द करने और कब्र में रखने से पहले प्रत्येक उसके मृत शरीर पर एक पैकेट रखते हुए दिखलाई पड़ा।

''इस घटना के बाद एक माह बीत गया और वे तीनों शाम की चाय पर बैठे बात कर रहे थे। वे कुछ साधारण बातचीत कर रहे थे और अपने लखपति मित्र की कमी महसूस कर रहे थे। पादरी अचानक ही बोल पड़ा, यह मेरी एक ईमानदार स्वीकृति है जिसे तुम दोनों के सामने करने की आवश्यकता है।' अपने मृत मित्र की इच्छा का सन्दर्भ देते हुए पादरी ने कहा, 'मैंने वैसा ही किया जैसा मेरे मित्र ने मुझसे कहा था, लेकिन मैंने पूरा धन उसके मृत शरीर पर नहीं रखा। मैंने आधा धन रखा था और मैंने आधा भाग अलग रख दिया था। यह मैंने अपने लिये नहीं किया था, न ही मैंने खुद पर एक पैसा भी खर्च किया था। मैंने उसका उपयोग चर्च की मरम्मत में और दूसरे खर्चो में किया।'

इस पर, चिकित्सक ने कहा, 'क्योंकि तुमने इसका उल्लेख किया है, मैं भी कुछ कहना चाहता हूँ। मैंने भी उसके मृत शरीर पर केवल पचास प्रतिशत धन रखा था और शेष धन अपने लिये नहीं, बल्कि अपने गरीब मरीजों के लिये अलग रखदिया था।' इस पर वकील ने उन दोनों को झिड़क दिया। उसने

क्रोध पूर्वक बोलते हुए कहा, 'तुम दोनों शर्म करों। उसने हम पर विश्वास किया और इस तरह से तुमने उसके विश्वास को पूरा किया। इस तरह से तुमने एक मरते हुए आदमी की इच्छा का सम्मान किया है। मेरी ओर देखो; मैंने उसकी इच्छा का शत्प्रतिशत (100%) सम्मान किया है। मैंने पूरा धन उसके शरीर पर चेक द्वारा भुगतान करने के लिये रख दिया था। मनी खी–खी करके हँसीं और उन्होंने कहा, ''देखो वकील कितना चालाक है। उसने पूरा धन जेब में रख लिया और मरते हुए आदमी की इच्छा का भी सम्मान किया। केवल एक वकील ही ऐसा कर सकता है।''

मनी बहुधा कहतीं थीं कि कभी–कभी तुम्हें बाबा के समीप वकील बनना पड़ता था। उन्होंने एक घटना बतलाई जब बाबा ने उनसे उनकी इच्छा पूँछी क्योंकि वह बहुत अच्छे मूड में थे। उन्होंने (मनी ने) अपना वकील का दिमाग उपयोग किया और बाबा से कहा, ''मैं आपके साथ रहना चाहती हूँ हमेशा।'' मनी ने आगे कहा, ''मैंने शब्द 'हमेशा' जोड़ना याद रखा क्योंकि वहाँ ऐसे लोग भी थे जिन्होंने वहीं चीज माँगी लेकिन भूल गये कि बाबा कितने चालाक हैं। उन्होंने कहा कि वह बाबा के साथ रहना चाहते हैं और बाबा ने उनकी इच्छा पूरी की लेकिन कुछ वर्षो बाद उन्हें छोड़कर जाना पड़ा।''

बाबा के समीप विकल्प

बाबा की बहिन मनी वाक्चातुर्य और हास्य–परिहास से परिपूर्ण थी। फिर भी, वह उस अन्तेवासी को फटकारने में बहुत कठोर हो सकती थी जो उन्हें नाराज करता था। वह बारम्बार प्रत्येक को याद दिलाती थीं कि उनके (बाबा के) लिये काम करना एक सौभाग्य और एक अवसर था जो कि कुछ भाग्यशालियों को दिया गया था। कार्य करते समय, वह आशा करती थी कि हम यह हमेशा याद रखें। ट्रस्ट से की गई कोई भी अनुचित माँग उन्हें बहुत अधिक नाराज कर देती थी और वह अपनी उग्रता दिखलाने में हिचकिचाती नहीं थीं।

मेहेराजाद में ऐसे ही एक उग्र विस्फोट के बाद, जब एरच उन्हें शान्त करने का प्रयास कर रहे थे जैसा कि वह हमेशा करते थे, वह मेरे पास से गुजरी। जब वह गुजर रहीं थीं, उन्होंने मेरी ओर इशारा किया और मुझसे कहा, ''वह एक ईरानी है। वह जानता है कि ईरानी मिजाज क्या है ? जब कोई

व्यक्ति मुझ पर अनुचित माँग करके दबाव डालता है, तब मेरा ईरानी मिजाज मुझ पर अधिकार कर लेता है। उसके बाद, मैं अपनी तलवार निकालती हूँ और दूसरे व्यक्ति के अहम् को नष्ट कर डालती हूँ।'' तब वह रूकी और मुझको देखा, एक कोमल मुस्कुराहट दी और कहा, ''प्रत्येक व्यक्ति ईरानी मिजाज से भयभीत हो जाता है। जब बाबा 'अवतार' अपनी तलवार निकालते हैं, ईश्वर दुनियाँ को उनसे (बाबा से) बचाये क्योंकि वह (बाबा) भी एक ईरानी हैं। जिन लोगों ने इस आग का अनुभव किया है, वे जानते हैं कि यह कितनी खतरनाक होती है।''

जैसा मैंने पहले कहा है, वह वाक्पटुता और हास्य परिहास से परिपूर्ण थीं। तुम केवल वाकपटुता और हास्य परिहास के द्वारा मण्डली से छूट ले सकते थे। उनसे बहस करना या उन्हें इन्कार करना बहुधा उनके क्रोध को निमन्त्रण देना था। मनी के मामले में आग की चिन्गारी सौभाग्य से प्रायः नहीं होती थी। अधिकांश समय उनके व्यक्तित्व का शरारती पक्ष था जो प्रमुख होता था। एक अवसर पर, जब मैं उनके साथ कुछ कार्य के सम्बन्ध में वार्तालाप कर रहा था, उन्होंने मुझे विस्तार से समझाया कि वह चाहतीं थीं कि किस प्रकार किसी खास चीज को किया जाय। इसके अन्त में वह मुझसे पूँछती थीं, ''क्या तुम यह कार्य करोगे, मेरे बच्चे?''

मैंने यह प्रायः देखा था कि मनी जब मुझे कुछ कार्य करने को देतीं थी और मुझे इसे करने को कहने के बजाय, वह मुझसे पूँछतीं थीं, ''क्या तुम इस कार्य को करोगे मेरे बच्चे ?'' मैं उन्हें अपने मन में भी इंकार नहीं कर सकता था क्योंकि मैं जानता था कि मनी कितनी उग्र थीं। इसलिये इस अवसर पर, मैंने उन्हें तंग करने का निश्चय किया और मजाक में मैंने पूँछा, '' क्या इस विषय में मेरे पास वास्तव में कोई विकल्प है ? 'मनी खुलकर मुस्कुराई और उन्होंने मुझसे कहा, ''हाँ है, मेरे बच्चे, तुम्हारे पास हमेशा विकल्प है। तुम या तो 'हाँ' कह सकते हो या तुम करूंगा कह सकते हो। यह तुम्हारे विकल्प हैं।'' हम दोनों ही हँसने लगे।

भाऊजी पश्चिम की यात्रा करते हैं

प्रत्येक वर्ष, भाऊजी अपना ट्रस्ट का कार्य समाप्त करने के बाद, गर्मियों के दौरान तीन माह के लिये पश्चिम जाते और कम्पाउण्ड में रहने वाले अन्तेवासियों और कर्मचारियों के लिये कार्य की प्रकृति के अनुसार अपने पीछे

निर्देश दे जाते थे जिनको वह चाहते थे कि उनकी अनुपस्थिति में पूरा किया जाय।

वह पश्चिम वहाँ के बाबा प्रेमियों के निमन्त्रण पर जाते थे जो बाबा की मण्डली से प्रवाहित होने वाले बाबा के प्रेम में भागीदार बनना चाहते थे और भाऊजी पश्चिम के लिये बाबा के सम्पर्क सूत्र थे। हम वास्तव में भाऊजी से इस तीन माह के अलगाव की प्रतीक्षा करते थे, क्योंकि ट्रस्ट कम्पाउण्ड के अन्तेवासियों और कर्मचारियों को वास्तव में अपनी शक्ति को पाने के लिये और अपनी निर्णय लेने की क्षमता बनाये रखने के लिये भी इस समय की आवश्यकता थी। भाऊजी स्वाभाविक रूप से वर्ष के प्रारम्भ में ही अपनी योजना बना लेते थे और पश्चिम के बाबा प्रेमियों को पहले से ही जानकारी दे देते थे, जिससे वे उनके तथा उनके सहायको के लिये टिकट की व्यवस्था कर सकें और उनकी यात्रा का यात्रा विवरण बना सकें जैसे कि कौन से स्थानों और केन्द्रों में भाऊजी मुलाकात के लिये जायँगे और बाबा प्रेमियों के साथ सहवास कार्यक्रम में भाग लेंगे।

एक बार जब कि मैं कुछ ट्रस्ट कार्य के लिये मेहेरनाथ के साथ जिलाधिकारी कार्यालय में जा रहा था, उन्होंने मुझसे बहुत गम्भीरता पूर्वक कहा, ''क्या तुमने बुरी खबर सुनी?'' मेहेरनाथ के चेहरे के हावभाव को देखकर, मैंने उनसे पूँछा, ''कौन सी खबर ?'' उन्होंने मुझसे कहा, ''भाऊजी इस बार केवल एक माह के लिये पश्चिम जा रहे हैं।'' यह बुरी खबर थी और इससे मुझे झटका लगा। प्रतिक्रिया में मैंने तुरन्त कहा, ''हम ऐसा नहीं होने दे सकते। हम उन्हें तीन माह के लिये ही जाने को तैयार करेंगे; नहीं तो हम लोग पागल हो जायंगे। मेहेरनाथ ने उत्तर दिया, ''हमने उन्हें बतलाने का प्रयास किया था लेकिन उन्होंने केवल एक माह के लिये जाने का निर्णय किया है। वह कहते हैं कि ट्रस्ट का कार्य बढ़ता जा रहा है जिसके लिये उन्हें अपनी यात्रा का समय कम करना पड़ रहा है।'' मैंने उनसे (मेहेरनाथ से) कहा, ''हम उनको तीन माह के लिये जाने और इस बात के लिये भी सन्तुष्ट करेंगे कि हम उनकी अनुपस्थिति में कार्य की व्यवस्था कर सकते हैं। वह हमारे लिये निर्देश छोड़ सकते हैं और आवश्यकता हुई तो पश्चिम से हमें फोन भी कर सकते हैं और हमारा मार्गदर्शन कर सकते हैं।'' मेहेरनाथ ने मुझसे कहा, ''तुम उन्हें बतलाने का प्रयास करो। इससे शायद काम बन सकता है।''

जब ट्रस्ट कम्पाउण्ड के सभी अन्तेवासी रात्रि के भोजन पर इकट्ठे

हुए, हमने प्रतिदिन के समाचार एक दूसरे को बतलाये और प्रत्येक ने यह समाचार दुख और निराशा के साथ सुना। हमें भाऊजी को तीन माह के लिये पश्चिम जाने के लिये राजी करना था और हमको उन्हें ऐसा करने के लिये सन्तुष्ट करने का प्रयास करना था। यह एक ऐसा प्रयास था जो करने योग्य था, और यदि सब बातें प्रति कूल हो जाती तो इसका अर्थ ठुकाई ही था।

इस समय तक ट्रस्ट कम्पाउण्ड के अन्तेवासियों ने भाऊजी से कोई निश्चित कार्य करवाने की एक युक्ति खोज निकाली थी, जो वह नहीं करना चाहते थे । युक्ति बहुत आसान थी। सभी अन्तेवासियों को भाऊजी के ऑफिस में एक के बाद एक पन्द्रह या बीस मिनट के अन्तर से जाना था और उनसे सम्बन्धित किसी कार्य के विषय में बातचीत करना था। जब हम सब उनके पास एकत्रित हो जाते, तो अन्तेवासियों में से एक को स्वाभाविक रूप से भाऊजी के साथ विवादास्पद विषय की चर्चा करनी थी। भाऊजी आदतन अन्तेवासी के सुझाव को नजर अन्दाज कर देते, तभी दूसरे अन्तेवासी भी भाऊजी पर दबाव डालने के लिये उसी विषय पर पक्ष में बोलने लगते । केवल यही रास्ता था जिससे हम भाऊजी से किसी चीज की स्वीकृति ले सकते थे और केवल इसलिये क्योंकि ऐसा करने से प्रत्येक को लाभ हो सकता था।

स्वाभाविक रूप से, मुझे इस विवादास्पद विषय की चर्चा छेड़ने के लिये चुना गया या हम कहें मैं वह चूहा था जिसे बिल्ली के गले में घण्टी बाँधनी थीं। यह क्रैग था जिसने मुझे सन्तुष्ट किया क्योंकि मैं स्थानीय भाषायें हिन्दी और मराठी दोनों ही–अच्छी तरह बोलता था, मैं ही वह व्यक्ति हूँ जिसे भाऊजी तक हमारे सुझाव पहुँचाने चाहिये क्योंकि भाऊजी प्रायः हिन्दी का सहारा लेते थे, क्योंकि वह अपने आप को हिन्दी में बेहतर ढंग से व्यक्त कर सकते थे। प्रारम्भिक वर्षो में जब मैं बाबा की सेवा करने और बाबा को खुश करने के लिये उत्सुक था, मैं स्वेच्छा से ऐसा करके प्रसन्न होता था। तब मुझे इसका अनुभव नहीं था कि मैं चीज़ में फस रहा हूँ । इसका एहसास तब हुआ जब समय बीतता गया और मैंने अनुभव किया कि डेमोकिल की तलवार (डेमोकिल नामक एक राजा थे) जब कोई उनके दरबार में फरियाद लेकर जाता था तो उसके खड़े होने के स्थान के ऊपर निरन्तर धागे से बंधी एक तलवार लटकती रहती थी जिसके किसी भी क्षण धागो के टूटने से फरियादी के सिर पर गिरने का अन्देशा रहता था) उस व्यक्ति के सिर पर लटकती रहेगी जो यह भूमिका

निभाना चाहेगा। अब मुझे आगे की ओर धक्का देने के लिये अंतवासियों के इरादों पर सन्देह होने लगा और मैंने ऐसा करने के लिये अपनी उत्सुकता पर रोक लगा दी। क्योंकि विषय अत्यधिक गम्भीर था, मैं अपनी गर्दन कटाने के लिये तैयार हो गया क्योंकि उन दिनों जब भाऊजी हमेशा उग्र मुड में रहते थे, तब ऐसा करने का शब्दशः अर्थ गर्दन कटाना ही था।

पाठकों को यह सब मनोरंजक लग सकता है और अतीत का स्मरण करने पर हम भी इनकी स्मृतियों पर हँसते हैं, लेकिन उन दिनों हम रोज की ठुकाई से इतनी परेशानी और मानसिक यातना का अनुभव करते थे कि कई अवसरों में से एक अवसर जब एक मुलाकात करने वाला तीर्थयात्री, इससे अनमिज्ञ कि हम पर क्या बीत रही थी, हम तक पहुँचा और उसने कहा, ''तुम यहाँ के अन्तेवासी कितने भाग्यशाली हो जो भाऊजी जैसे एक मण्डली जन के साथ रहते हो और कार्य करते हो, ''मैं कठिनाई से स्वयं को उस तीर्थयात्री का तुरन्त वहीं पर गला घोंट कर मार डालने से रोक सका। मेरा कष्ट ऐसा था कि तीर्थयात्री के शब्दों से मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे वह मेरे घायल हृदय पर मिर्च और नमक छिड़क रहा हो हमारी वेदना ऐसी ही थी। केवल मैं ही ऐसा अनुभव नहीं करता था बल्कि लगभग सभी ट्रस्ट के अन्तेवासी इसी तरह अनुभव करते थे। हम केवल भाऊजी की ठुकाई के अम्यस्त हो सकते थे। मण्डली के अलावा अन्य किसी से हम और ज्यादा नहीं सह सकते थे। हम सभी विस्फोटित होने के लिये तैयार थे क्योंकि अब हम और नहीं सहन कर सकते थे।

इसलिये अगले दिन भाऊजी के साथ पूरे समय रहने वाले सहायक से जाँच पड़ताल करने के बाद कि किस समय वह खाली थे, हम अपनी योजना के अनुसार एक के बाद एक अन्दर गये और हम उनके पास कुछ कार्यो से सम्बन्धित मामलों में वार्तालाप करते हुए बैठ गये। कुछ समय बाद, देखकर कि यही सही अवसर था, मैंने भाऊजी से अचानक इस विषय पर चर्चा छेड़ दी। भोलेपन के साथ मैंने उनसे पूँछा, ''मैंने सुना है कि आप केवल एक माह के लिये पश्चिम जा रहे हैं भाऊजी?'' भाऊजी ने उत्तर दिया, ''हाँ, काम का बोझ प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है और यहाँ पर परिस्थितियों को संभालने के लिये मेरी उपस्थिति आवश्यक है।''

मैंने उनसे कहा, ''भाऊजी हम यहाँ पर काम की देखभाल करने और

आने वाली किसी भी परिस्थिति को संभालने के लिये हैं। आप हम सबको वर्षो से इस कार्य के लिये प्रशिक्षित कर रहे हैं और आपकी अनुपस्थिति में हम आपकी तरफ से इसकी देखरेख करेंगे। वास्तव में हम हमेशा आपके सम्पर्क में रहेंगे यदि कोई नई प्रगति होती है, आप टेलीफोन पर हमारा मार्ग दर्शन कर सकते हैं या ई—मेल द्वारा विस्तृत निर्देश भेज सकते हैं। हाँ, जहाँ तक प्रतिदिन के कार्य का सम्बन्ध है, आप प्रत्येक के लिये, आपकी अनुपस्थिति में उन्हें जो कार्य करना है, उस विषय में निर्देश देते हुए केवल एक सूची तैयार कर दें। यह एक आसान बात है और इसके कारण आपको अपनी पश्चिम की यात्रा कम नहीं करनी चाहिये। आपको इस विषय में भी सोचना चाहिये कि पश्चिम के बाबा प्रेमी किस तरह आपके साथ बाबा के सहवास में भाग लेने के लिये तड़प रहे हैं। आप उनको और स्वयं को उससे वन्चित क्यो करना चाहते हैं ? आप हमेशा कहते हैं कि कैसे बाबा के प्रेम में भागलेना असली बाबा कार्य है और आप इसको करने में वास्तव में इसका आनन्द लेते हैं। इसलिये आप स्वयं को और पश्चिमी बाबा प्रेमियों को इस अवसर से क्यों वन्चित कर रहे हैं ? आपको बाबा कार्य के इस पहलू में भी शामिल होना चाहिये और इसको समय देना चाहिये। आप बाबा कार्य के इस महत्वपूर्ण पहलू की उपेक्षा नहीं कर सकते।''

जब मैंने अपनी बात समाप्त की क्रैग भाऊजी को बोलने का अवसर न देते हुए बीच में बोल पड़ा। उसने कहा, ''रूस्तम बिल्कुल सही कह रहा है। आप अपनी पश्चिम यात्रा में बाबा कार्य की उपेक्षा नहीं कर सकते। आपके वापस आने तक अन्य सब दूसरे कार्य आपकी प्रतीक्षा कर सकते हैं। हम आपके सम्पर्क में रहेंगे और आप हमें उसी तरह निर्देश देते रहेंगे जैसे कि आप यहाँ होने पर देते हैं। इससे काम पर ज्यादा अन्तर नहीं पड़ेगा कि आप निर्देश यहाँ से देते हैं या वहाँ से देते हैं। इस लिये आपको वहाँ जाना चाहिये।''

इस बिन्दु पर वार्ड भी इसमें शामिल हो गया और बोला, ''भाऊजी, यह एक अच्छा विचार है। आपको ऐसा करने का एक प्रयास करना चाहिये और हम सभी को विश्वास है कि अन्त में यह प्रत्येक के लिये लाभदायक होगा।'' इस बिन्दु पर मैंने पुनः स्पष्ट किया और कहा, ''भाऊजी आप असली बाबा कार्य करने का आनन्द लें। और हाँ, जब आप यात्रा से वापस आयेंगे, तब आप तरोताजा, स्वस्थ और अच्छे दिखेंगे। इसलिये आपको तीन माह के लिये जाना चाहिये। इस तरीके से कृपया आप स्वयं को और अन्य किसी को वन्चित मत करिये।''

हम एक के बाद एक सुझाव देते रहे जब तक कि हमें अपना लक्ष्य नहीं मिल गया और तब हम रूक गये। भाऊजी सोच में पड़ गये और तब उन्होंने मुझसे पूँछा, ''तुम सोचते हो कि मुझे तीन माह के लिये जाना चाहिये ? क्या तुम सभी मेरी अनुपस्थिति में सबकुछ उचितरूप से सँभाल लोगे ?'' क्रैग ने जोर देते हुए कहा, ''बिल्कुल भाऊजी। आपको जाना चाहिये।'' भाऊजी ने तब कहा,''लेकिन मुझे परिवर्तन के विषय में पश्चिम के बाबा प्रेमियों को सूचित करना होगा।'' इस पर क्रैग ने आगे कहा, ''वे परिवर्तन करने पर प्रसन्न होंगे। उस विषय में आप चिन्ता मत करिये।'' भाऊजी ने पुनः पूँछा, ''क्या तुम सोचते हो कि मुझे तीन माह के लिये जाना चाहिये ?'' क्रैग ने पुनः कहा, ''बिल्कुल भाऊजी।'' वार्ड और खुद मैं भी इसमें शामिल हो गये और अन्त में भाऊजी ने कहा, ''मैं इस विषय पर बाद में सोचूँगा''

कुछ दिनों पश्चात ट्रस्ट कम्पाउण्ड के कर्मचारियों में से एक मेरे पास आया और उसने कहा, ''तुमने अच्छी खबर सुनी?'' मैंने उससे मजाक करते हुए कहा, ''मैंने युगों से अच्छी खबर नहीं सुनी। हमारी यहाँ ऐसी ही जिन्दगी है और यहाँ हमारी दुर्दशा है। सभी खबरे बुरी है। इसलिये मैं यह सुनकर खुश हूँ कि तुम अन्त में कुछ अच्छी खबर लाये हो। मुझे बतलाओ कि वह क्या है।'' कर्मचारी ने उत्तर दिया, ''भाऊजी तीन माह के लिये पश्चिम जा रहे हैं।'' मैं खुशी से उछल पड़ा और बोला, ''बाबा आपको इस छोटी सी कृपा के लिये धन्यवाद।'' बाद में दिन में मैंने एरच को पूरी बात बतलाई। हम बहुधा ऐसी चीजों के विषय में एरच से ही बात करते थे क्योंकि वह सामान्यतया ऐसे मामलों में भी उदाहरण देते हुए हमारा मार्गदर्शन करते थे कि कैसे वे लोग बाबा के समीप ऐसी परिस्थितियों को संभालते थे। वास्तव में वह अति महत्वपूर्ण मामलों में भाऊजी से स्वीकृति लेने के लिये हमारी युक्ति का बहुधा एक हिस्सा होते थे।

जब एरच ने इस पूरी घटना को सुना, वह हँसने लगे और उन्होंने कटाक्ष किया, ''जब बिल्ली दूर होती है, चूहे खेलना शुरु कर देते हैं। ऐसा ही होता है। हम बाबा के पास भी ऐसा ही करते थे, जब हम अत्याधिक थक जाते थे और हमें भी इसी तरह उनसे (बाबा से) कुछ समय दूर रहने की आवश्यकता महसूस होती थी। बाबा अंतर्यामी होते हुए भी हमें सन्तुष्ट करने के लिये ऐसा करने देते थे। हम सोचते थे कि हम अपनी योजना में सफल हो गये थे लेकिन अन्त में परिस्थिति ऐसी हो जाती थी कि हम अनुभव करते थे

कि इससे बेहतर था कि हम उनके पास होते।

वर्षो बाद ऐसा हुआ जब भाऊजी ने प्रगट किया कि वह पहले से ही सब जानते थे कि मैं क्या कर रहा था और मेरी कलाबाजी की तुलना उन्होंने बाबा के पास डॉ.गनी की कलाबाजियों से की तब मैंने अपने हृदय में अनुभव किया कि काश मैंने ऐसा न किया होता, यद्यपि यह भोलेपन से किया गया था। आज जब अपनी शारीरिक दुर्बलता के कारण मैं भाऊजी और शेष मण्डली के साथ समय व्यतीत करने में असमर्थ हूँ, तो मैं इच्छा करता हूँ कि काश मैं रात दिन उनके साथ रह सकता और अन्य कोई दूसरा कार्य करने की चिन्ता न करता। पूरे समय मैं अब केवल अपने प्रियतम के साथ रहना और उनकी खुशी का ध्यान रखना चाहता हूँ।

मण्डली मेरे लिये उस तड़प को व्यक्त करने का साकार माध्यम थी लेकिन अब मेरे लिये काफी देर हो चुकी है कम से कम ईमानदारी से कह सकता हूँ कि मैंने यह अवसर खो दिया है—मैंने नाव खो दी है।

चालाकी से एरच को मात दिया

किसी भी परिस्थिति में बौद्धिक स्तर पर एरच को फँसाना असम्भव था। वह सरलता से इससे बच निकलने की व्यवस्था कर लेते थे। फिर भी एक अवसर पर मैंने उन्हें कठिनाई में डालने की व्यवस्था कर ली और वह इसमें फँस गये। यह एक हास्य–विनोद की घटना थी और यह निम्न प्रकार से घटित हुई।

एरच के अन्तिम दिनों में वह अत्याधिक शारीरिक परेशानी में थे। उनमें कठिनाई से ही थोड़ी दूर तक जाने की शक्ति थी और उन्हें प्रायः सहायकों की आवश्यकता होती थी फिर भी वह अपनी दिनचर्या में लगे रहने की व्यवस्था कर लेते थे, चाहे वह मेहेराजाद में हो या ट्रस्ट ऑफिस में हो। कुछ अनजान कारणों से तीर्थयात्री उनकी दुर्बलता पर ध्यान नहीं दे पाते थे जैसा कि सभी मण्डली के सदस्यों के साथ होता था। तीर्थयात्री जो हमेशा मिलते थे वे उनके तेज को देखते थे और उनके कष्ट को कभी नहीं देख पाते थे। एरच हमको प्रायः याद दिलाते थे कि उनका अन्त निकट था और जब कोई उनसे उनके स्वास्थ्य के विषय में पूँछता था, वह कहते थे कि वह क्षीण होते जा रहे थे।

एक बार जब वह अपने ऑफिस में बैठे थे, मैं उनके साथ कुछ समय बिताने के लिये अन्दर गया क्योंकि मैंने अपना कार्य समाप्त कर लिया था। दवाना एरच से औषधि लेने की प्रार्थना कर रही थी। एरच इस बात पर जोर देते हुए ऐसा करने से इनकार कर रहे थे कि औषधियाँ उनको कोई लाभ नहीं पहुँचा रहीं थीं क्योकि उनका अन्त निकट था। दवाना एरच को समझा रहीं थी कि यद्यपि औषधियाँ उनकी जिन्दगी को बढ़ा नहीं सकती थीं, ये उनकी शारीरिक परेशानी को कम कर सकती थीं जिनके न लेने पर वह और अधिक कष्ट पायेंगे। एरच अभी भी औषधि न लेने की अपनी जिद पर अड़े थे। दवाना मेरी ओर मुड़ी और मुझसे प्रार्थना की कि मैं प्रयास करूँ और एरच को औषधि लेने के लिये राजी करूँ एक क्षण के लिये मेरा दिमाग सुन्न पड़ गया। मैं जानता था कि मण्डली किसी बात का निश्चय करने के बाद कभी उसे छोड़ती नहीं थी। तब अचानक ही मैंने एक युक्ति सोची जो कार्य कर सकती थी।

मैंने एरच से औषधियों को लेने के लिये कुछ भी नहीं कहा, क्योंकि वह मेरे सुझावों को मानने से इन्कार कर देते। इसके बजाय, मैंने उनसे कहा, ''एरच आप जानते हैं कि बहुत से लोग विश्वास करते हैं कि आप सद्‌गुरु हैं। क्या आप यह जानते हैं ?'' एरच ने हाँ में सिर हिलाया लेकिन इससे भी इन्कार किया कि वे पूर्ण थे। मैंने एक खास बाबा प्रेमी के नाम का उल्लेख किया और कहा, ''वह विश्वास करता है कि आप एक सद्‌गुरु हैं और जब मैंने उससे इस मामले पर आमने सामने बात की, उसने मुझे कुछ अच्छे कारण बतलाये कि वह ऐसा क्यों विश्वास करता था। मैंने उससे उन बिन्दुओं पर बहस करने का प्रयास किया और मेरा विश्वास करिये, बिन्दु जो उसने मेरे सामने प्रस्तुत किये, बहुत विश्वसनीय थे। लगभग हर कोई उसका विश्वास करेगा।''

इससे एरच की उत्सुकता जागृत हो गई और उन्होंने मुझसे कहा, ''मुझे बतलाओं कि वे बिन्दु क्या हैं ?'' मैंने उनसे कहा, ''जब मैंने उस बाबा प्रेमी से पूँछा कि यदि एरच एक सद्‌गुरु थे तो वे इतना कष्ट क्यों पा रहे थे, उसने उत्तर दिया कि सद्‌गुरु केवल दुनियाँ को कष्ट पाते हुए प्रतीत होता है, वास्तव में वह कष्ट का कोई अनुभव नहीं करता। बाबा ने भी ऐसा ही कहा था। एरच कष्ट नहीं पा रहे है। वह केवल कष्ट पाते हुए प्रतीत होते है।'' मैंने एरच को बतलाना जारी रखा, ''उसने मुझसे आगे कहा 'तुमने ध्यान दिया कि जब भी

कोई व्यक्ति एरच के पास कोई सूचना लाता है, ऐसा लगता है जैसे एरच उसके विषय में पहले से ही जानते हैं। प्रायः वह कहते भी हैं कि वह हर चीज जानते हैं।'' एरच धीरे–धीरे मन ही मन हंसे और बोले, ''जब मैंने वह बात कही थी, मैं मेहेराबाद और मेहेराजाद के कार्य के सम्बन्ध में बोल रहा था।''

मैंने उन बिन्दुओं को बतलाना जारी रखा जैसा कि बाबा प्रेमी ने मुझे बतलाया था, ''जब मैंने उनसे पूँछा कि यदि एरच वास्तव में सद्‌गुरु थे, उनके मण्डल में बारह शिष्य होने चाहिये थे और कम से कम उनको (एरच को) उन पर (शिष्यों पर) अपनी पहचान प्रगट करनी चाहिये थी। उनके निकट के बाबा प्रेमियों को भी इसकी समझ होनी चाहिये थी।'' इस पर बाबा प्रेमी ने उत्तर दिया, ''बाबा ने कहा है कि पाँचों सद्‌गुरुओं को अवतार का पर्दा उठाने के दौरान ही दुनियाँ ने जाना है। अकसर सद्‌गुरु विश्व में छुपे हुए रहते है और पूरे समय अपना कार्य चुपचाप करते रहते हैं।''

इस बिन्दु पर एरच ने कहा, ''सद्‌गुरु दुनियाँ के सामने छुपे हुए रहते है लेकिन उसे स्वयं को अपने मण्डल के शिष्यों के सम्मुख प्रगट करना पड़ता है। क्योंकि वह सत्यता के साथ एक रूप होता है, वह इससे इनकार नहीं कर सकता जब उससे इस विषय में पूँछा जाय या इस विषय पर उससे आमने–सामने बात की जाय।''

मैंने एरच से कहा, ''उसका अन्तिम तर्क था जब उसने आपसे इस विषय में आमने सामने बात की, आपने उससे कहा कि यद्यपि आप सद्‌गुरु नहीं थे, आप बाबा के पूर्ण दास बन गये हैं। इसलिये वह अनुभव करता है कि जैसा बाबा ने कहा है, ''कोई जो ईश्वर साक्षात्कार प्राप्त सद्‌गुरु का पूर्ण दास बन जाता है, उनके साथ एकरूपता प्राप्त कर लेता हैं और इसलिये पूर्ण दास बनने से आप सद्‌गरु हो गये हैं।'' एरच ने केवल अपना सिर इधर से उधर हिलाया और कहा, ''ये लोग कहाँ से आते हैं ?''

मैंने उत्तर दिया और कहा, ''वह मैं नहीं जानता लेकिन मैं इतना जानता हूँ कि उसके तर्क ठोस हैं और यदि मैं उसके तर्को पर विश्वास करता हूँ, तब मुझे यह स्वीकार करना होगा कि आप एक सद्‌गरु हैं, उस स्थिति में आप वास्तव में कष्ट नहीं पा रहे हैं बल्कि केवल कष्ट पाते हुए प्रतीत होते हैं। यदि यह मामला है एरच, तब आपको अपनी औषधियाँ नहीं लेनी हैं। लेकिन यदि

आप सद्‌गुरु नहीं है तब आपको अपनी औषधियाँ लेनी चाहिये क्योंकि इससे आपका कष्ट कम होगा। यह आपको निर्णय करना है क्योंकि आप बेहतर जानते हैं कि आप सद्‌गुरु हैं या नहीं ?''

मैंने अब दवाना को संकेत किया कि वह एरच पर दबाव डालने के लिये मुझे सहारा देते हुए कुछ कहे। दवाना भी तब इसमें शामिल हो गई और बोली, ''हे मेरे ईश्वर, आप सद्‌गुरु हैं और मैंने इतने वर्षो में इसका अनुभव ही नहीं किया। अभी आपकी पूजा करने के बजाय मैं आपको झिड़कती रही। फिर भी देर नहीं हुई। मैं अब आपकी पूजा करना प्रारम्भ कर दूँगी। मैं आप पर अब कभी औषधियाँ लेने या अपने स्वास्थ्य् का ध्यान रखने के लिये दबाव नहीं डालूँगी। अब से मैं एक दासी की तरह आपकी आज्ञा का पालन करूँगी।''

यह सुनकर, एरच ने गहरी साँस ली और कहा, ''ठीक है दवाना, जाओ और मेरी दवायें लेकर आओ।'' मैंने दवाना की ओर देखा और मुस्कुराया। धीरे से केवल उससे कहा, ''यह एक अच्छा नाटक था और इसने कार्य किया। केवल इसी बार मैंने एरच को फसते हुए देखा है। सामान्यतया वह हमसे चालाकी से बच निकलते हैं और अपने रास्ते चले जाते हैं।'' दवाना ने कहा, ''तुमने मेरा मार्गदर्शन किया है।'' मैंने उससे कहा, ''लेकिन तुमने इसे बहुत अच्छी तरह समाप्त किया है।''

ऐसी ही परिस्थिति थी। मण्डली छोटे बच्चों के समान थी। वह बाबा के प्रति अपने प्रेम में बच्चों जैसे मासूम और पवित्र थे लेकिन, उनके शरीर की देखभाल करने में उन्हें बहुधा बच्चों की तरह फुसलाना पड़ता था।

केटी टैक्सी की सवारी लेती हैं।

एक बार केटी को कुछ व्यक्तिगत कार्य से मुम्बई जाना था। उन्होंने मुझसे साथ चलने के लिये कहा क्योंकि उन्हें सहायक की आवश्यकता थी। उनके कार्यक्रम के अनुसार हमें मुम्बई में पूरे एक दिन रूकना था और अगले दिन अहमदनगर के लिये चलना था। मुम्बई पहुँचने पर मैंने उन्हें उस बाबा प्रेमी के स्थान पर छोड़ दिया जहाँ उन्हें रुकना था और वहाँ से तीसरे दिन के लिये टिकट बुक करने के लिये चला गया क्योंकि उन्हें अगले पूरे दिन अपना व्यक्तिगत कार्य करना था। टिकट बुक करने के पश्चात् मैंने उनको फोन पर

अपने रिजर्वेशन का कोच नं० सूचित किया। मैं अपने माता–पिता के घर में रह रहा था जो पास ही में था और मैंने उन्हें (केटी को) सुझाव दिया कि प्रातः जल्दी ही मैं उन्हें घर से ले लूँगा और तब हम साथ–साथ रेलवे स्टेशन जायेंगे।

क्योंकि ट्रेन प्रातः काफी जल्दी जाने वाली थी, केटी ने जोर दिया कि वह मुझे सीधे स्टेशन पर ही मिलेंगी और उन्होंने मुझे कोच में ही रूकने के लिये कहा क्योंकि वह कुलियों की सहायता से अपने बैग लेकर सीधे वहाँ आयेंगी। उन्होंने मुझे बतलाया कि वह वहाँ एक निश्चित समय पर पहुँच जायेंगी। मैंने वैसा ही किया जैसा उन्होंने निर्देश दिया था। मैं ट्रेन में बैठा हुआ था और जब निर्धारित समय गुजर गया, मैं चिन्ता करने लगा। मैं कोच से निकलकर बाहर प्लेटफार्म पर आ गया और प्रवेश द्वार की दिशा में देखने लगा। केटी का वहाँ कोई अता पता नहीं था। यह न समझ पाने पर कि मुझे क्या करना चाहिये, मैं वापस गया और अपने कोच में बैठ गया।

जब मैं ट्रेन में बैठा हुआ था, एक छोटा लड़का मेरे पास आया और उसने मुझसे पूँछा, ''क्या तुम रूस्तम हो ?'' लड़का उन लाइसेन्स रहित बच्चों में से एक दिख रहा था जो लोगों का सामान ले जाने के लिये स्टेशन में चारों ओर घूमते रहते थे, मैंने उससे पूँछा कि वह क्या चाहता था। उसने मुझसे कहा, ''आपकी बड़ी बहिन चाहती हैं कि आप आयें और उनकी सहायता करें।'' मैं थोड़ा आश्चर्य चकित हुआ क्योंकि मेरे कोई बड़ी बहिन नहीं थी, केवल दो छोटी बहिनें थीं। आश्चर्य करते हुए कि क्या वह केटी थी, मैंने उससे पूँछा कि वह महिला कैसी दिखती थी। जो उसने बतलाया उसके अनुसार वह केटी लगती थी, इसलिये मैं उसके साथ हो लिया।

केटी रेलवे स्टेशन के प्रवेश द्वार के बाहर आम की एक बड़ी टोकरी के साथ खड़ी थीं। चिन्तित होकर मैंने किटी से पूँछा, ''क्या कोई समस्या है? क्या कुछ गलत हुआ है ?'' बड़ बड़ाते हुए उन्होंने कहा, ''आम की इस बड़ी टोकरी को ले जाने के लिये कुली के इन्तजार में मैं पिछली पन्द्रह मिनट से यहाँ पर खड़ी हूँ। उनमें से सभी बहुत अधिक कीमत माँग रहे हैं और मैं उन्हें इतना अधिक भुगतान नहीं करूँगी। अन्त में, मैंने एक कुली की व्यवस्था कर ली थी जो उचित दाम लेने को सहमत हो गया था।''

मैंने उससे पूँछा, ''तब आपने उसे किराये पर क्यों नहीं लिया और पेटी सहित ट्रेन में क्यों नहीं आ गई?'' केटी ने मुझसे कहा, ''तुम जानते हो कि ये कुली कितना तेज चलते हैं? मैं उनके साथ नहीं चल सकती और वे थैलों के साथ भाग सकते हैं, इसलिये मैंने कुली से कहा कि वह मेरे छोटे भाई को बुला दे और मैंने उसे तुम्हारा नाम, कोच और सीट नम्बर दे दिया; और कुली ठीक अभी मुझे इस घोर संकट में छोड़कर पुनः चला गया है। अन्त में मुझे यह लड़का मिल गया जो कहताहै कि मैं जो उचित समझूँ, इसे दे दूँ और इसलिये मैंने इसे तुम्हें बुलाने के लिये भेजा।''

केटी ने तब मुझे डाँटना शुरू कर दिया, ''यह बात करने या समय बरबाद करने का न तो समय है और न ही स्थान है, हमें जल्दी करना चाहिये अन्यथा हमारी ट्रेन छूट जायेगी।'' उसने मुझे कुली लड़के के साथ आगे जाने और आम की पेटियों को ले जाकर ट्रेन में रखवाने का आदेश दिया और यह कहा कि वह हमारे पीछे धीरे–धीरे चलते हुए आयेगी।

इसलिये जब केटी हम लोगों के साथ कोच में आ गई, कुली लड़का उसका इन्तज़ार कर रहा था। जब उसने अपने पैसे के भुगतान के लिये कहा, केटी ने उसे दस रुपये दिये जो कि उस समय कार्यालय द्वारा निर्धारित रेट था यद्यपि अधिकांश कुली उससे ज्यादा लेते थे। लड़के ने इस पर ऐतराज किया और कहा कि यह बहुत कम था। उसने कहा अधिकांश लोग पचास रुपये लेते थे। आपको मुझे कम से कम तीस रुपये देना चाहिये। केटी उस पर, चिल्लाई और कहा, ''तुम शैतान। मुझे ठगने का प्रयास मत करो।''

लड़के ने केटी से कहा, ''ठीक है, आप मुझे एक गरीब बूढ़ी औरत दिखती हैं। इसलिये आप मुझे केवल बीस रुपये दे दीजिये।'' केटी के चेहरे का भाव देखने योग्य था अब लड़के ने कहा, ''गरीब बूढ़ी औरत'' मैं अपने को कठिनाई से ही हँसने से रोक पाया। क्योंकि वे लोग जो केटी से मिले हैं जानते हैं कि वह पूरी महिला मण्डली में सबसे अच्छी तरह वस्त्र धारण करने वाली और सबसे अधिक फैशनेबुल महिला थीं। न केवल वह अपनी वेश–भूषा पर ध्यान देती थी, बल्कि वह उचित मात्रा में मेकअप करती थीं और आभूषण पहनती थीं। और किसी के भी सामने जाने योग्य दिखती थीं। केटी ने जल्दी से बीस रुपये निकाले और लड़के को दे दिया जो तुरन्त ही वहाँ से चला गया।

तब वह मेरी ओर मुड़ी और बोलीं, ''क्या तुम इस पर विश्वास कर सकते हो, वह मुझे बूढ़ी और गरीब बतलाता है। क्या गरीब लोग बम्बई में इन दिनों इतने अच्छे कपड़े पहनते हैं ? मुझे लगता है कि लड़का अन्धा था।'' मैं हँसने लगा जब केटी ने ऐसा कहा।

हमने ट्रेन से पूना तक की यात्रा की। वहाँ से हमें अहमदनगर के लिये टैक्सी पकड़नी थी क्योंकि उन दिनों वहाँ से कोई सीधी ट्रेन नहीं थी। मैं उनकी आम की पेटी लिये हुए था और हम लोग टैक्सी स्टैंड की तरफ चल दिये। केटी टैक्सी शेयर करना चाहती थीं जिसमें हमें केवल दो सीट का किराया देना पड़ता। अन्य दो सीटें अहमदनगर की यात्रा करने वाले दो यात्रियों को दी जानी थी। टैक्सी में सामान्य रूप से चार यात्री ही यात्रा कर सकते हैं, तीन यात्री पिछली सीट पर और एक यात्री सामने ड्राइवर के बगल में बैठता हैं। जब तक टैक्सी भर नहीं जाती, ड्राईवर निर्धारित लक्ष्य की ओर नहीं चलते। इसलिये लोग सामान्य रूप से थोड़ी देर इन्तजार करते हैं और यदि कोई अन्य यात्री नहीं आता, एकत्रित यात्री खाली सीट का किराया देने के लिये सहमत हो जाते हैं और केवल तभी ड्राईवर लक्ष्य की ओर चलता है।

मई का महीना था जब गर्मी बहुत अधिक होती है। केटी और अधिक भुगतान न करने के लिये दृढ़ प्रतिज्ञ थीं। हमने आधे घण्टे तक इन्तजार किया पर भाग्य ने साथ नहीं दिया। मैंने केटी से प्रार्थना की कि वह और देर न करे क्योंकि दोपहर में सूर्य पूना से नगर की सड़क पर टैक्सी को गर्म बना देगा। मैंने कहा कि मैं यात्रा का सारा व्यय वहन करूँगा लेकिन हम और अधिक देर न करें क्योंकि इस प्रकार के मौसम में लोगों को प्रायः लू लग जाती है। केटी सहमत हो गई लेकिन उन्होंने जोर दिया कि वह व्यय में हिस्सा देगी और इसलिये हम वहाँ से चल दिये।

टैक्सी बहुत पुरानी थी और जैसे ही यह अहमदनगर की दिशा में चलने लगी, केटी ने इस पर कटाक्ष किया। पूना 'नगर' की सुनसान सड़कों पर कुछ समय यात्रा करने के पश्चात् गर्मी के गरम मौसम में टैक्सी गरम होने लगी। खुली खिड़की से सूखी, गर्म हवा भी आ रही थी। अपनी तरफ की खिड़की मैंने बन्द कर दी। केटी ने अपनी तरफ की खिड़की बन्द करने का प्रयास किया लेकिन दुर्भाग्यवश खिड़की बन्द नहीं हुई। उन्हांने इस विषय में मुझसे

शिकायत की। मैंने उनसे पूँछा कि क्या परेशानी थी। उन्होंने हैण्डिल पकड़ा और उसे वृत्ताकार घुमाया। खिड़की का (काच) ऊपर नहीं गया क्योंकि गियर खराब था। मैंने यह टैक्सी ड्राईवर को बतलाया और उससे इस विषय में कुछ करने के लिये कहा।

इसी दौरान, केटी ने अपना स्कार्फ निकाला और गर्मी से स्वयं को बचाने के लिये उससे अपना सिर ढंक लिया। ड्राईवर ने सहायता करने के इरादे से टैक्सी रोक दी। जो उसने किया, वास्तव में आश्चर्यजनक था। उसने अपना ग्लव कम्पार्टमेण्ट खोला और एक पेंचकस निकाला। तब अपनी सीट पर बैठे–बैठे वह पिछली सीट की ओर झुका और दोनों हाथों से खिड़की को ऊपर की ओर धक्का दिया। तब उसने पेंचकस को खिड़की के काँच और धातु के फ्रेम को संभाले रखने वाली रबड़ के बीच फँसा दिया। केटी और मुझसे उसने खिलखिलाकर हँसते हुए कहा, ''अब समस्या हल हो गई है।''

टैक्सी ड्राईवर ने जो किया था, उसे देखकर केटी स्तब्ध थी और उन्होंने अपनी अनिश्चित चीखती हुई स्त्रियों चित स्वर में मुझे बतलाना प्रारम्भ किया जो कि ऐसी ध्वनित हो रही थी जैसे वह असहाय होकर पुकार रही हो। ''मुझे आशा है टैक्सी में अन्य सब कुछ ठीक है और हम नगर सुरक्षित पहुँच जायेंगे।'' मैंने यह कहते हुए उन्हें आशवस्त किया, चिन्ता मत करो केटी; अधिकांश पुरानी भारतीय टैक्सियों की खिड़कियाँ काम नहीं करतीं। जब तक इन्जन अच्छी तरह कार्य कर रहा है, हम लक्ष्य तक पहुँच जायेंगे।''

पाठकों के लाभ के लिये, मुझे बतलाना है कि केटी कैसे बात कर रही थी। उनकी आवाज़ विशेष रूप से दो स्वर थे। जब वह नाराज़ होती थीं या किसी को बुरा भला कहती थीं या सामान्य रूप से ही बात करतीं थीं, वह धीमे स्वर में लगभग पुरुषोचित गम्भीर आवाज़ में बात करती थीं। लेकिन जब वह अनिश्चय की स्थिति में होती थीं या भय का अनुभव करतीं थीं, उनकी आवाज़ पतली और स्त्रियोचित, असहाय ध्वनित होती थी, लगभग ऐसी जैसे कि वह चीख रही हों। अपनी शेषयात्रा में वह अपनी स्त्रियोचित, असहाय आवाज़ का प्रयोग हर उस चीज़ पर कर रहीं थी जो टैक्सी ड्राईवर करता था।

टैक्सी ने कठिनाई से दस मिनट की ही यात्रा की थी जब खिड़की का शीशा पुनः नीचे की ओर खिसकने लगा। केटी ने मुझे यह दिखलाया और मैंने

यह टैक्सी ड्राईवर को बतलाया। टैक्सी ड्राईवर ने पुनः टैक्सी रोक दी और इस बार उसने अपना ग्लव कम्पार्टमेण्ट खोला और एक बड़ा पत्थर निकाला जो उसमें रखा था। केटी ने भयभीत होकर मुझे देखा और कहा, '' मरे रे, एक विशिष्ट गुजराती उदगार, वह एक पत्थर भी साथ में रखता है। वह इससे क्या करनेवाला है?'' टैक्सी ड्राईवर केटी पर खिलखिला कर हँसते हुए अपनी सीट के ऊपर पीछे की ओर झुका, दोनों हाथों से शीशे को ऊपर की ओर खींचा, पेंचकस को दूसरी बार पुनः जाम किया और तब मजबूत पकड़ के लिये उसने पत्थर से पेंचकस पर प्रहार किया। उसने हमें पुनः आश्वस्त किया, ''अब यह नहीं गिरेगा।'' तब वह घूमा और टैक्सी चलाने लगा।कठिनाई से हमने पन्द्रह मिनट की यात्रा की थी जब खिड़की का शीशा पुनः नीचे की ओर खिसकने लगा। इस पर मैंने केटी को सुझाव दिया कि हम स्थान बदल लेते हैं क्योंकि मेरी तरफ की खिड़की काम कर रही थी और मैंने इसे बन्द कर दिया था। केटी नहीं चाहती थीं कि टैक्सी रुके। इसलिये मैंने सुझाव दिया कि हम चलती हुई टैक्सी में भी सीट बदल सकते थे। केटी को यह विचार पसन्द नहीं आया क्योंकि वह एक दीर्घकाय महिला थीं और उन्होंने सोचा कि जब हम स्थान बदलेंगे तो हम दोनों बीच में फंस सकते हैं जब हम सीट के बीच से एक दूसरे के दूसरी ओर आयेंगे। इसलिये मैंने स्थान बदलने का विचार छोड़ दिया।

थोड़ी देर बाद, जैसे केटी की परेशानी वास्तव में बढ़ गई थी, उन्होंने कहा, ''हमें जगह बदल लेनी चाहिये।'' हमने ड्राईवर को चेतावनी दी कि हम क्या करने जा रहे थे, क्योंकि मुझे खड़े होकर सामने की सीट की ओर झुकना था और केटी को मेरे नीचे की ओर से मेरी तरफ जाने के लिये गुजरना था। जैसे ही हम एक दूसरे की ओर चले, थोड़ी देर के लिये ऐसा लगा कि हम आपस में फंस जायेंगे। बहुत कठिनाई के साथ और पूरे समय बाबा का नाम लेते हुए, केटी ने अपने को सिकोड़कर गुजरने की व्यवस्था की और अन्त में सीट बदलने का कार्य पूरा हो गया। सीट बदलने में सहायता करने के लिये ड्राईवर ने टैक्सी की गति धीमी कर दी थी लेकिन अब जबकि यह कार्य पूरा हो गया था, उसने गियर बदलकर गति बढ़ाना प्रारम्भ कर दिया।

पुनः भय का अनुभव करने पर, केटी ने टैक्सी की गति धीमी करने को कहा, क्योंकि केटी ड्राईवर के ठीक पीछे बैठी थीं, उसने (ड्राईवर ने) उनसे

(केटी से) बात करने के लिये अपना सिर घुमाया। ड्राईवर ने केटी को पुनः आश्वस्त करते हुए कहा, ''चिन्ता न करें मैडम । यह सामान्य गति है जिसमें मैं प्रतिदिन टैक्सी चलाता हूँ। मैं इससे भी तेज टैक्सी चलाता हूँ जब यात्री गति बढ़ाने का अनुरोध करते हैं। चिन्ता न करें, मैं आपको नगर सुरक्षित ले चलूँगा। उसने कठिनाई से ही अपनी बात समाप्त की थी जब गियर बदलने की प्रक्रिया में उसके हाथ के गियर का हैन्डिल स्टेयरिंग से अलग होकर बाहर आ गया। गियर के हैंन्डिल को उसके हाथ में देख कर, केटी ने अपनी चीखती हुई आवाज में ड्राईवर को तुरन्त टैक्सी रोकने के लिये कहा। ड्राईवर ने उनको यह आश्वासन देते हुए टैक्सी नहीं रोकी कि सब कुछ सामान्य था।

गियर का हैन्डिल जो कि बगल में स्क्रू से कसा हुआ था, स्क्रू के धागों के घिस जाने से बाहर आ गया था। इसलिये उसने इसको उसके स्थान पर वापस स्क्रू से लगा दिया और एक हाथ से गियर पकड़ते हुए और दूसरे हाथ से टैक्सी चलाते हुए इसे जाम कर दिया। केटी टैक्सी को रोककर उससे उतरना चाहतीं थी लेकिन ड्राईवर ने यह कहते हुए कि सब कुछ सामान्य था, उनकी बात नहीं सुनी। उसने मुझे समझाना शुरू कर दिया कि हैन्डिल स्क्रू ढीला होने के कारण बाहर आ गया था और यह वास्तव में कोई समस्या नहीं थी क्योंकि मशीन ठीक से काम कर रही थी। इन्जीनियर होने के कारण मैं यह बात समझ गया और मैंने केटी को यह याद दिलाते हुए शान्त करने का प्रयास किया कि हम लोग बीच रास्ते में पता नहीं कहाँ पर थे और वहाँ से हमें दूसरी टैक्सी नहीं मिलेगी। मजाक करते हुए मैंने कहा, ''केटी, लू लगने और प्यास से किसी स्थान पर मरने से बेहतर टैक्सी दुर्घटना में मरना है। केटी ने कहा, ''मरे रे। पहले तो टैक्सी ड्राईवर ही मुझे मारने का प्रयत्न कर रहा है और अब तुम उसका साथ दे रहे हो।'' मैं हँसने लगा और मैंने उनको आश्वस्त किया कि सब कुछ ठीक था और समस्या को हल कर लिया गया था ।

केटी अब सन्देह के साथ ड्राईवर की प्रत्येक गतिविधि पर नजर रख रही थीं। कठिनता से हमने पन्द्रह मिनट की यात्रा की थी जब गियर बदलते समय उसका हैन्डिल फिर से बाहर आ गया। केटी ड्राईवर पर चिल्लाई, ''तुम हमें मार डालोगे। टैक्सी रोको। मैं उतरना चाहती हूँ'' ड्राईवर ने टैक्सी रोकी, ग्लव कम्पार्टमेन्ट खोला, कपड़े का एक टुकड़ा निकाला, गियर के हैन्डिल के

घिसे हुए स्क्रू के धागों के चारों ओर कपड़ा लपेट दिया और वापस स्थान पर हैंडल को स्क्रू से लगा दिया। उसने तब हमें आमन्त्रित किया कि हम स्वयं प्रयास करें और देखें कि गियर अपने स्थान पर कस गया था या नहीं। इन्जीनियर के रूप में मैं जानता था कि अब यह कस गया होगा, क्योंकि आपात स्थिति में कोई भी यही करेगा। फिर भी, केटी को सन्तुष्ट करने के लिये मैंने स्टेयरिंग के हाथ के गियर का हैन्डिल पकड़ा और उसे धीरे से एक झटका दिया। मैंने केटी को आश्वासन दिया कि वह कस गया था और अब वह पुनः नहीं निकलेगा।

केटी ने मुझसे पुनः पूँछा कि क्या सब कुछ ठीक था। मेंने उत्तर दिया, ''मैं हर चीज़ के विषय में नहीं जानता, मैं केवल यह कह सकता हूँ कि गियर का हैन्डिल अपनी जगह कस गया है। केटी ने मुझसे अपनी स्त्रियोचित आवाज में पूँछा, ''क्या हम 'नगर' सुरक्षित पहुँच जायेंगे? मैंने केटी से मजाक करते हुए कहा, ''केटी, आप बाबा का नाम क्यों नहीं लेती और तब हम निश्चित रूप से बाबा के निवास स्थान पर पहुँच जायेंगे।'' मैंने तब आगे कहा, ''यदि टैक्सी सुरक्षित 'नगर' पहुँच जाती है, तब हम मेहेराजाद पहुँच जायेंगे जो कि बाबा का निवास स्थान है लेकिन मान लो कि हम नगर नहीं पहुँचते और हम रास्ते में ही मर जाते हैं, क्योंकि हम बाबा को याद कर रहे हैं, हम निश्चित रूप से बाबा में समा जायेंगे या, हम कह सकते हैं कि हम बाबा के असली निवास स्थान पर पहुँच जायेंगे।'' केटी आवेश में दिखीं और उन्होंने कहा, ''मरेरे, तुम भी चाहते हो कि मैं मर जाऊँ। मैं अभी मरना नहीं चाहती। आम का मौसम अभी शुरू हुआ है और एक पेटी टैक्सी में रखी हैं। मैं उसके विषय में सोच रही हूँ और तुम मरने के विषय में सोच रहे हो।''

मैंने उन्हें तसल्ली दी, ''लेकिन केटी आप मर नहीं सकती। आप हमेशा सभी बाबा प्रेमियों के हृदयों में और यादों में रहेंगी जो आपको उस प्रेम और सेवा के लिये जानते हैं जो आपने बाबा को अर्पित की है। वे आपको कैसे भूल सकते हैं? बाबा ने आपके लिये अपनी समाधि के बगल में एकस्थान बना रखा है जहाँ पर आपके भौतिक अवशेष दफ़नाये जायेंगे और वह वहाँ दुनिया को देखने के लिये अनन्त काल तक रहेंगे। आप इसे पसन्द करें या न करें आप हमेशा अपना भौतिक शरीर छोड़ने के बाद भी रहेंगी।'' केटी यह सुनकर प्रसन्न दिखीं और शान्त हो गई। बाबा की कृपा से शेष यात्रा सुखद रही।

दोषारोपण विभाग का इन्चार्ज

प्रतिदिन की परेशानियों के अलावा जो मुझे उस समय सहनी पड़ रही थीं जब मैं रासायनिक कारखाने के खिलाफ लड़ाई में पहले से तैयारी का कार्य कर रहा था , मुझे प्रतिदिन व्यक्तिगत रूप से, साथ ही साथ सार्वजनिक रूप से अपमान सहन करना पड़ता था। क्योंकि हमने रासायनिक कारखाने के मालिक के साथ–साथ सरकारी इकाईयों को भी अदालत में ले आयें थे, यदि ट्रस्ट की किसी भी योजना में सरकारी स्वीकृति में देर होती थी, भाऊजी उसके लिये मुझे दोष देते थे। वह प्रत्येक को बतलाते थे कि इन सभी परेशानियों का कारण मैं था जिसका सामना ट्रस्ट को करना पड़ रहा था और यह मुख्य रूप से इसलिये क्योंकि मैंने कारखाने द्वारा होने वाले प्रदूषण के सन्दर्भ में निष्क्रियता के लिये सरकार को भी अदालत में खींच लिया था।

भाऊजी मुझे मामले को सुलझाने के लिए अधिक कुशलता और प्रेमपूर्वक पहल न करने के लिये मुझे दोष देते थे। मैं भाऊजी को संकेत करता था कि मेहेराजाद में मण्डली ने इसका प्रयास किया था और वे बुरी तरह असफल हुए थे। उद्योगपति से लड़ाई का यह निर्णय पूरी मेहेराजाद मण्डली का सामूहिक निर्णय था और मैंने केवल लड़ाई प्रारम्भ करने की पूर्व तैयारी करने की स्वेच्छा से सहमति दी थी। वास्तव में मेहेराज़ाद मण्डली ने भाऊजी को भी प्रारम्भ से ही इसमें शामिल कर लिया था और वह इसमें साथ–साथ चल रहे थे।

भाऊजी बहुत अधिक क्रोधित हो जाते थे जब मैं इसका उल्लेख करता था और वह मुझसे कहते थे, ''मैं ऐसा कुछ नहीं चाहता था। यह सब तुम्हारी गल्ती हैं तुमने यह सब शुरू किया। मैंने ट्रस्ट के लिये सब व्यवस्थित कर दिया था। चीजें बिना किसी बाधा के हो रही थी और अब तुमने मेरे लिये ये सब समस्यायें खड़ी कर दी हैं। ट्रस्ट के लिये सभी प्रकार की कठिनाईयाँ खड़ी हो गई हैं क्योंकि तुमने सरकार को अदालत में घसीट लिया है। तुमने सरकार को पूरी तरह बिगाड़ दिया है। बीते दिनों में मैं इन सभी समस्याओं को मैत्रीपूर्ण ढंग से और प्रेमपूर्वक हल करता था। हर जगह वातावरण बहुत अच्छा था और अब तुमने इसे पूरी तरह बर्बाद कर दिया है।''

भाऊ जी लगभग प्रतिदिन ही इसी तरह कहते रहते थे। प्रायः जब

तीर्थयात्री और स्टाफ एकत्रित होते थे, भाऊ जी सब के सामने मुझे तंग करते रहते थे। ऐसा पूरे समय बिना रुके जारी रहा जब मैं रासायनिक कारखाने की लड़ाई में लगा हुआ था जो लगभग तीन वर्ष तक चली। वास्तव में, जब भी मैं सुबह भाऊजी को रिपोर्ट देता था, पहली चीज़ वह कहते थे, आज तुमने मेरे लिये कौन सी नई समस्या उत्पन्न की है।'' तब वह किसी ऐसी चीज का उल्लेख करते थे जो कि अतीत में हुई थी और उसके लिये मुझे दोष देते थे या मुझे किसी ऐसी चीज़ के लिये दोष देते थे जो वर्तमान में घटित हो रही थी। भाऊजी बुरे से बुरे की हद तक भी कल्पना कर लेते थे जो कि भविष्य में घटित हो सकती थी, क्योंकि हमने सरकार को अदालत में घसीट लिया था और वह उन समस्याओं के लिये भी मुझे दोष देते थे जो अभी तक घटित नहीं हुई थीं और शायद उन्हें कभी होना भी नहीं था।

प्रारम्भ में, इससे मुझे खीझ होती थी और मैं परेशानी अनुभव करता था लेकिन, जैसे–जैसे समय गुज़रता गया इसमें मुझे आनन्द आने लगा। पूरी चीज़ मनोरंजक थी क्योंकि भाऊजी मुझे सबसे हास्यास्पद चीज़ों के लिये दोष देते थे और उसे रासायनिक कारखाने की लड़ाई से इस तरह जोड़ देते थे जैसा कि केवल वही कर सकते थे। जब कोई सम्बन्ध भी नहीं होता था, भाऊजी किसी तरह सम्पर्क उत्पन्न कर लेते थे और पूरी चीज़ से मेरा मनोरंजन होता था क्योंकि वह पूर्णतया हास्यास्पद होती थीं। उदाहरण के लिये, एक पश्चिमी बाबा प्रेमी भाऊजी से मिलने आया था और उसने बतलाया कि भारत की यात्रा के लिये वीज़ा मिलने में उसे कितनी कठिनाई हुई थी और ऐसा इसलिये हुआ था क्योंकि उसने आवेदन पत्र को उचित रूप से भरने में एक गल्ती कर दी थी। भाऊजी ने इस तीर्थयात्री को बतलाया, ''यह सब इसलिये हो रहा है क्योंकि रूस्तम ने रासायनिक कारखाने की लड़ाई में सरकार को अदालत में खींच लिया है।'' भाऊजी तब विस्तार से तीर्थयात्री को सभी नकारात्मक चीजें बतलाने लगे जो घटित हुई थीं और उनके लिये मुझे दोष देने लगे। वह ऐसा एक घण्टे से भी अधिक समय तक करते रहे।

जैसे–जैसे समय बीता, मैंने अनुभव किया कि अब मुझ पर दोषारोपण का कोई प्रभाव नहीं पड़ता था जिसकी बौछार मुझ पर हो रही थी। इस तरह से, मैंने अनुभव किया कि भाऊजी दोषारोपण के प्रति उदासीन होने मे मेरी सहायता कर रहे थे। एक बार मैं शान्ति के उस स्तर पर पहुँच गया जहाँ दोषारोपण मेरे

ऊपर प्रभाव नहीं डालते थे, मैं वह करने की स्वतन्त्रता अनुभव करने लगा जिसे मेरा हृदय उचित बतलाता था और भाऊजी से स्वतन्त्रतापूर्वक मन की बात कहता था जो कि उस विषय वस्तु की माँग होती थी। काफी विचित्र ढंग से, मेंने देखा कि भाऊजी बहुधा मेरे पर दोषारोपण करने के बाद और मुझे यह बतलाकर कि मेरे सुझाव कितने बेकार थे, कुछ दिनों बार मेरे सुझावों को कार्यान्वित करते थे। एक बार जब मैं भाऊजी के पास बैठा था, वह मेरी ओर मुड़े और बोले, ''क्या तुमने कभी नारियल देखा है? वह बाहर से कठोर होता है लेकिन अन्दर से मुलायम और मीठा होता है। बाबा की मण्डली के सभी जन इसी तरह हैं। बाहर से वे निर्दयी प्रतीत हो सकते हैं लेकिन अन्दर से वे वास्तव में मधुर हैं। उनकी आन्तरिक मधुरता को अनुभव करने का प्रयत्न करो। उनको केवल बाहरी कठोरता से मत परखों।'' पहले ही, मैं भाऊजी के तथा अन्य मण्डली जनों के विषय में यह समझने लगा था। अपने विचारों की पुष्टि करने के लिये मैंने भाऊजी से पूँछा, ''क्या आप उन नारियल में से एक हैं जो अन्दर से मधुर होते हैं ?'' भाऊजी हँसे और उन्होंने कहा, ''इसका निर्णय तुम्हें करना है।''

जैसे–जैसे समय बीतता गया, मैं वास्तव में उस आन्तरिक मधुरता से जुड़ने लगा जो भाऊजी से प्रवाहित हो रही थी, इसलिये उनके बाहरी क्रियाकलाप और शब्द, कितने भी कठोर होते थे, मुझे परेशान नहीं करते थे। मैं उनके साथ कार्य करता रहा और उनके लिये अपने हृदय में अधिक और अधिक प्रेम का अनुभव करने लगा। जिस बात ने मेरे हृदय को सबसे अधिक स्पर्श किया वह यह थी कि किस प्रकार वह सभी को अपनत्व देते थे। अपनी अस्वस्थता पर ध्यान न देते हुए वह बाबा–प्रेमी को छोटी से छोटी समस्या पर ध्यान देते थे जो उनके पास सहायता के लिये पहुँचते थे। फिर भी, भाऊजी मेरे आध्यात्मिक प्रशिक्षण के हिस्से के रूप में मुझे झिड़कते रहे। ऐसे क्षणों में वातावरण को हल्का करने के लिये मैं अपने वाक्चातुर्य और हास्य परिहास का उपयोग करके उन्हें हँसाता था।

एक बार जब मैंने कार्यालय में प्रवेश किया, भाऊजी ने अपने स्वाभाविक कटाक्षसे मुझ पर दोषारोपण नहीं किया। ''तुमने आज मेरे लिये कौन सी नई समस्यायें पैदा कर दी हैं ?'' उन्होंने मुझे बैठने के लिये कहा, और मुझसे अच्छे तरह बात करने लगे। जब वह रुके, मैंने उनसे कहा,'' भाऊजी आज

घटने वाली एक बहुत बड़ी समस्या के लिये आप मुझ पर दोषारोपण करना भूल गये हैं। आप सामान्य रूप से प्रतिदिन प्रत्येक गड़बड़ी के लिये मुझ पर दोषारोपण करते हैं। आपने आज ऐसा नहीं किया।'' भाऊजी भ्रमित प्रतीत हुए और उन्होंने मुझसे पूँछा, ''क्या समस्या है?'' मैंने मजाक करते हुए आश्चर्य व्यक्त किया और उनसे कहा, ''आपने इस विषय में नहीं सुना? इसकी चर्चा समाचार पत्रों में भी है।'' भाऊजी और अधिक आश्चर्यचकित दिखे और उन्होंने कहा, ''लेकिन वह क्या है? यदि यह समाचार पत्र में हैं तो निश्चितरूप से वह कुछ अप्रिय बात होगी।''

मैंने उनसे कहा, ''हाँ ऐसा ही है। एक बहुत बड़ा भूकम्प महाराष्ट्र राज्य में लातूर जिले में आया है जिसमें हजारों लोग मर गये हैं और कई गाँव लगभग पूरी तरह साफ हो गये हैं। आप इसके लिये मुझे दोष देना भूल गये हैं।'' भाऊजी हँसे और वह मेरी ओर मुड़े और उन्होंने कहा, ''मैं तुम्हें बहुत सी चीजें कहता हूँ और मैंने देखा है कि तुम इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं करते हो। ऐसा क्यों है?'' मैंने उत्तर दिया,''क्योंकि अब मैं जानता हूँ कि आपके कोई भी क्रियाकलाप या शब्द मुझे कभी नुकसान नहीं पहुँचा सकते हैं। वे जो भी हों, वह बाबा से हैं और मूलरूप से मेरी भलाई के लिये हैं।'' भाऊजी प्रसन्न दिखलाई पड़े और उन्होंने मुझसे कहा, अच्छा तुम यह सब अब जान गये हो।'' उन्होंने तब आगे कहा, ''यह अच्छी बात है। भूलना मत। इसे याद रखना।''

मैंने तब मजाक करते हुए उनको बतलाया, ''मैंने अपने कमरे के दरवाजे पर एक बड़ा सा पोस्टर एक कथन के साथ लगा दिया है जिसमें कहा गया है, ''मैं इस स्थान के आस–पास का सबसे अधिक जिम्मेदार व्यक्ति हूँ। यदि कोई बुरी बात होती है, मैं उसका जिम्मेदार हूँ। इसलिये कृपया मुझे दोष दें।'' मैंने तब आगे और जोड़ते हुए उनसे कहा, ''मैं अब दोषारोपण विभाग का इन्चार्ज हूँ, इसलिये हर गलत कार्य के लिये जो हो रहा है, दोष मुझ पर रखा जाय।'' भाऊजी अपनी बच्चों जैसी हँसी हँसे और उससे मेरा हृदय रोमांच से भर गया।

हिमालय का आश्चर्य

कई बाबा प्रेमियों ने मुझसे पूँछा है कि क्या ये सभी कहानियाँ मैंने स्मृतियों से लिखी हैं यद्यपि मेरी स्मरणशक्ति अच्छी है, फिर भी मैंने इन्हें मेहेराबाद में रहने के दौरान नोट किया था। मेरी हमेशा से ही यह आदत रही है

कि यदि मैं कुछ असाधारण देखता हूँ और जिससे मेरे मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है, मैं उसे तुरन्त ही नोट कर लेता हूँ। आने वाले समय में इन नोट की गई बातों को मैं पढ़ता क्योंकि विषम परिस्थिति को संभालने में ये मुझे सान्त्वना और सहारा देती थीं। मैं हमेशा मण्डली के पास होने पर ऐसे नोट्स लिख लेता था क्योंकि वे हमेशा कोई न कोई गूढ़ बात करते थे। मुझे जरा भी ज्ञान नहीं था कि मैं किसी दिन पुस्तक लिखूँगा।

ऐसा हुआ कि एक बार जब मैं एरच के पास बैठा हुआ था, उन्होंने मुझसे कहा, ''मेरी इच्छा है कि मैं तुम्हें एक डायरी दूँ लेकिन तुम इसका उपयोग अवश्य करना। केवल इसको अपनी अल्मारी में न छोड़ देना और न ही इसके विषय में भूल जाना।'' मैंने एरच से कहा कि मैं इसका प्रयोग करूँगा। उन्होंने मुझसे, ''तुम इसमें क्या लिखोंगे ? अपना दैनिक कार्य ?'' मैंने उनसे कहा, ''मैं ऐसा नहीं करता लेकिन यह मेरा शौक है कि जो घटनायें मेरे मन पर गहरा प्रभाव डालती हैं, उनको मैं अपने भविष्य के सन्दर्भ और लाभ के लिये नोट कर लेता हूँ। वर्तमान में मैंने कुछ गूढ़ बातें नोट की हैं जो मैंने मण्डली से सुनी हैं और जो प्रकाशित नहीं हुई हैं। मैं तथा कथित कहानियों और सन्देशों को नोट करता हूँ जो मण्डली हमें एकान्त में बतलाती हैं।'' तब वह बाबा के चित्र वाली एक लाल डायरी लाये और उसे मुझको दिया। मेरा अंदाज़ा है कि एक दक्षिण भारतीय बाबा प्रेमी ने ऐसी कई डायरियाँ मण्डली के सदस्यों को दी थीं और यह उन डायरियों में एक थी जो एरच ने मुझे दी थी जिसमें मैंने नोट करना प्रारम्भ कर दिया था और अभी भी यह मेरे पास है।

इसके साथ ही साथ, मनी और एरच प्रायः अपने अनुभव बतलाते थे कि कैसे उन्होंने केवल बाबा के शरीर छोड़ने के बाद ही उनके ईश्वरत्व की गहराई का अनुभव किया था। जब युवा बाबा प्रेमी अपने अनुभव बतलाने लगे, तब मेहेर बाबा कौन हैं, उनकी विशालता, साक्षात्कार और उनका असली कार्य क्या है, उन पर प्रगट हुआ। मनी कहतीं थी, ''युवा लोग विचित्र तरीके से बाबा के पास आ रहे हैं, कोई व्यक्ति एक चित्र देखता है, दूसरों ने केवल नाम सुना और उनको तुरन्त पहचान हुई, उनका हृदय उनको इस विषय में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिये कि मेहेर बाबा कौन थे हजारो रुपये खर्च करके हजारों मीलों की यात्रा करके केवल कुछ दिनों के लिये यहाँ आने के लिये

आकर्षित करने लगा। यह बाबा का कार्य था जो उन्होंने सम्पूर्ण ब्रम्हाण्ड के लिये अपने अन्तिम दिनों के दौरान किया था जो, चुम्बक के समान या एक पतंगे के समान जो ज्वाला की ओर खिचता है, युवा आत्माओं को अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। वे अपने को रोक नहीं पा रहे थे। नहीं तो क्यों कोई इतना अधिक धन खर्च करता और इतनी कठिनाईयाँ सहन करता केवल यह जानकारी प्राप्त करने के लिये कि जो चित्र उन्होंने देखा था या वह नाम जो उन्होंने सुना था, किसका था।

''इसके द्वारा बाबा मण्डली को अपने दैवीपन की जानकारी दे रहे थे। जब हम उनके (बाबा के) साथ थे, उनका मानवरूप हमें भुलावे में रखता था कि वह ईश्वर थे। हम अब सोचते है कि काश जब हम उनके (बाबा के) साथ रहते थे, उस समय हमें उनके दैवीपन का वर्तमान के समान ज्ञान होता। हम जानते थे कि वह ईश्वर थे लेकिन वह निरन्तर जागरूकता उस समय नहीं थी क्योंकि हम उनके मानव रूप से बातचीत कर रहे थे जो पूर्णता के लिये खेले गये उनके खेल का एक हिस्सा था और हमें भुलावे में रखता था कि वह ईश्वर थे। इस जागरूकता के साथ हम उनको थोड़ा ज्यादा दे सकते थे जो हमने नहीं दिया। हमें अनुभव होता है कि हमसे नाव छूट गई है। अब काफी देर हो चुकी है।''

एरच भी अपना पश्चाताप ऐसा ही कहकर व्यक्त करते थे कि उनसे भी नाव छूट गई है। वे हमें प्रोत्साहित करते थे कि हम स्थिति का अधिक से अधिक लाभ उठायें जिससे हमें भविष्य में कोई पश्चाताप न रह जाये। यद्यपि वे संयोगवश हमें बतलाते भी थे कि हम बाबा की उपस्थिति का लाभ लें और इसका अधिक से अधिक लाभ उठायें, मैं उस समय अनुभव करता था और जैसा हम सोचते थे कि उनके साथ के माध्यम से ही हम इसका अधिक से अधिक लाभ उठा सकते थे। इसलिये यद्यपि मण्डली मुझे उस समय बहुत साधारण दिखती थी, मैं अपनी पूरी योग्यता से उनके आज्ञापालन करने और उन्हें खुश करने का और उनकी सहायता करने के इरादे से उनके समीप रहकर इसका अधिक से अधिक लाभ उठाने का प्रयत्न करता था। मुझे भी मण्डली की महानता की कोई जानकारी नहीं थी जो मुझे अब है। वे महान आत्मायें थीं जिनके भाग्य में ईश्वर साक्षात्कार शायद भावी जिन्दगी में था। मैं तब यही अनुभव करता था क्योंकि उनके क्रियाकलाप बहुत साधारण और प्रायः भ्रम पैदा करने वाले दिखते थे।

यद्यपि मैंने अपनी पूरी क्षमता से उस समय काम किया था, अपनी वर्तमान जागरूकता के साथ, मैं भी थोड़ा ज्यादा देने का प्रयत्न करता जो कि मैं अब अनुभव करता हूँ कि मैंने नहीं किया। मैं भी अब अनुभव करता हूँ कि मेरी नाव छूट गई है, विशेष रूप से जब मैं ट्रस्ट के उन तथा कथित महत्वपूर्ण कार्यो को पूरा करने के लिये यह सोचकर दौड़ रहा था कि वह बाबा का कार्य था।

आज मैं भिन्न तरीके से अनुभव करता हूँ। यह कटाक्ष करते हुए एरच की मुझे याद है जब वह कहते थे, ''यह सब एक टाईम पास है।'' कोई फर्क नहीं पड़ता कि किसी व्यक्ति ने कितना महत्वपूर्ण कार्य पूरा किया है।'' एरच हमेशा यहीं कहते थे मेरी इच्छा है कि काश मैं उनके आस–पास रहता और केवल प्रियतम की खुशी बनाये रखता। मैं अपना ध्यान एकाग्र करके अपना पूरा समय व्यतीत करता क्योंकि वे साकार साधन थे जो बाबा ने हमारे लिये अपने पीछे छोड़े थे।

अतीत की घटनाओं को याद करके, मैं कह सकता हूँ कि मेरी यात्रा उस व्यक्ति की यात्रा के समान थी जो ट्रेन के द्वारा हिमालय जा रहा था। यात्रा के प्रारम्भ में, हिमालय की पर्वतश्रृंखलायें दूर से छोटी सी चीज दिखती हैं जो किसी को भी आश्चर्य में डाल देती हैं कि इनमें इतना महान क्या है। लेकिन जैसे–जैसे ट्रेन पास और पास पहुँचती है, हिमालय पर्वतश्रृंखलायें बड़ी और बड़ी होती जाती हैं और अन्त में जब तुम हिमालय के नीचे खड़े होते हो, तुम उनके भव्य आश्चर्य और दिव्य महानता से पूर्णतया चकाचौंध हो जाते हो। मण्डली के प्रति मेरी यही जागरूकता उन्हें प्यार करने के इतने वर्षो बाद ऐसी ही हो गई है।

कई अवसरों पर भी, जब लोग मण्डली का विरोध करते थे और उनके लिये सभी प्रकार की कठिनाईयाँ उत्पन्न करते थे, भाऊजी वहाँ के निवासियों और बाबा–प्रेमियों का ध्यान बारम्बार बाबा के समय की कहानियाँ बतलाकर आकर्षित करते थे कि कैसे ऐसे लोग अन्त में बहुत अधिक कष्ट पाते थे। इसके साथ ही साथ, वह बारम्बार जोर देकर कहते थे कि हमें मण्डली के साथ इस अवसर का अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिये क्योंकि उनके चले जाने के बाद जब मानवता की विशाल लहर जो बाबा के पास प्रेम से भरे हुए हृदय के साथ आएगी तब उनके हृदय में, जो मण्डली को परेशान करते हैं, आलोचना

करते हैं और उनका विरोध करते हैं, इतना पश्चाताप उत्पन्न होगा कि वे रोते ही रहेंगे लेकिन तब बहुत देर हो चुकी होगी क्योंकि उन्होंने अवसर खो दिया होगा। जब सामूहिक तौर पर विशाल संख्या में लोगों के हृदय जान जायेंगे कि मेहेर बाबा कौन हैं, जब दुनियाँ इस बात को जान जायेगी, ऐसे सभी लोग अपने हृदय खोलकर विलाप करेंगे, लेकिन बहुत देर हो चुकी होगी। भाऊजी को कई अवसरों पर यह कहते हुए सुनकर, मैंने अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करने की प्रेरणा अनुभव की। अधिकांश लोग अनुभव करते थे कि भाऊजी केवल शब्द फेंक रहे हैं (जिनका कोई अर्थ न हो) लेकिन मेरा हृदय मुझे चेतावनी देता रहा कि मैं उन लोगों की बात न सुनूँ जो उस पर विश्वास नहीं करते क्योंकि यदि वह (भाऊजी) सत्य बोल रहे थे, तो फिर मुझे भी अवसर बीत जाने का पछतावा होगा। इस तरह से मैं उनके शब्दों पर ज्यादा ध्यान देने लगा और अपने हृदय की इच्छा पर मैं सब बातें नोट करता रहा। इसलिये, यद्यपि मैंने बड़ी नाव खो दी है, मैंने मण्डली की चेतावनी के कारण उससे छोटी नाव पकड़ ली।

सूक्ष्म ब्रम्हाण्ड और ब्रम्हाण्ड

कुछ पाठकों ने बाबा के मेरे कुछ कथनों की विश्वसनीयता पर प्रश्न किया है। मैं उन्हें यह याद दिलाना चाहता हूँ कि यह पुस्तक मेहेर बाबा के विषय में नहीं है। यह पुस्तक मेहेर बाबा की मण्डली और विभिन्न प्रकरणों पर उन्होंने जो कहा है, उस विषय पर है। मैं मेहेरबाबा के विषय में जो भी जानता हूँ, वह वही है जो उन्होंने (मण्डली ने) वर्षो से कहा है और उदाहरण दिया है। उन्होंने (मण्डली ने) न केवल ये चीजे कहीं हैं बल्कि उसी बिन्दु को बार–बार दोहराकर, ठुकाई करके हमारे अन्दर भरा है जब तक कि यह हमारी चेतना का हिस्सा नहीं बन गया। पुस्तक लिखने के समय मेरे मन में किसी खास बिन्दु के विषय में यदि कोई सन्देह होता था जिसकी पुष्टि करने की आवश्यकता होती थी, मैं भाऊजी और मेहेरवान जसावाला को उस सन्देह के स्पष्टीकरण के लिये फोन करता था। उन पाठकों को, जिनको अभी भी सन्देह है, मैं कहूँगा कि उनकी पुष्टि करना बहुत आसान है क्योंकि मण्डली अभी भी हमारे समीप है। मैं व्यक्तिगत रूप से इसे अपना सौभाग्य मानता हूँ कि मण्डली ने असली ख़जाना और जिस तरह मैंने उनके सन्देशों को चुनकर कठोर आध्यात्मिक प्रशिक्षण को इस तरह प्रस्तुत किया जो हास्य–परिहास से पूर्ण था और एक अनजान व्यक्ति के लिये भी आसानी से समझने योग्य था, उसे बहुत पसन्द किया।

एक अवसर पर जब मैं एक निश्चित बिन्दु की पुष्टि कर रहा था, मैंने मेहेरवान जसावाला से पूँछा कि क्या उन्हें अपनी मण्डली के महत्व के सम्बन्ध में बाबा द्वारा कहे गये किसी विशेष कथन की जानकारी है और मैं बाबा के कहे हुए मूल शब्दों को प्रकाशित अभिलेखों में कहाँ पर पा सकता था। उन्होंने उत्तर दिया, ''मेहेर बाबा के प्रकाशित अभिलेख उसका एक बहुत छोटा सा हिस्सा है जो बाबा ने अपनी जिन्दगी के दौरान मण्डली से कहा हैं। बाबा कार्य के अत्यधिक व्यस्त कार्यक्रम को देखते हुए जो कि एक क्षण की भी फुर्सत दिये बिना पूरी एकाग्रता से उनके प्रयत्नों की माँग करता था, मण्डली के पास प्रत्येक चीज का रेकार्ड रखने का समय कहाँ था। इसके अलावा जहाँ बाबा के रेकार्ड किये हुए शब्दों का होना माना भी जाता है बाबा ने सम्पादकों को संदेशों को सुरक्षित रखते हुए वाक्यों में सुधार करने और परिवर्तन करने की स्वतन्त्रता दे दी थी। इसलिये प्रकाशित अभिलेख बाबा ने मूलरूप से जो कहा था, उसे स्थानीय स्तर पर भाषा के बौद्धिक रूप से समझने के लिये उपयुक्त संशोधित कथन थे। यह बौद्धिक मूर्खता थी जो सही शब्दों पर जोर देती हैं जबकि मण्डली के स्तर के सन्दर्भ में बाबा के शब्दों का अभिप्राय, जो उन्होंने कभी कहे थे और जो प्रकाशित अभिलेखों में है, हर चीज में बहुत स्पष्ट है।

मेहेरवान के कथन ने मुझे कुछ उसकी याद दिला दी थी जो भाऊजी ने इस विषय पर कहा था। मैंने एक बार भाऊजी से उन कठिनाईयों के विषय में पूँछा था जो कि अधिकांश लोगों को डिस्कोर्सिस को समझने में होती थी। जब तक कोई उसे शान्त मन से नहीं पढ़ेगा और शब्दों को पढ़कर उनका गहन अध्ययन नहीं करेगा, वह बाबा के शब्दों के महत्व उनकी आन्तरिक गहराई और उनकी गूढ़ता को नहीं समझ सकता। मुझे आश्चर्य था जब बाबा ने सार्वजनिक प्रोग्राम में जन समुदाय को ऐसे डिस्कोर्सेज दिये थे, उन्होंने कैसे इनको समझा होगा। मैं अनुभव करता था कि अधिकांश नये आने वाले लोग इसको समझने में निश्चितरूप से असफल रहे होंगे। केवल पुराने समय के वही लोग सार्वजनिक सभा में उनके सन्देशों को समझ सके होंगे जो बाबा के आध्यात्मिक जगत के वर्णन से परिचित थे। इस पर भाऊजी ने उत्तर दिया, ''जब बाबा ने एक डिस्कोर्स दिया था, वह इतनी सरल भाषा में कहा गया था कि एक बच्चा भी उसे समझ सकता था। लोगों को बाबा के डिस्कोर्सेज के प्रकाशित अभिलेखों को समझने में कठिनाई होती है क्योंकि सरलता में परिवर्तन करके तथा जैसे ये अब है वैसा करने में संपादन का हाथ है, जिससे केवल अधिकांश बुद्धिजीवी

वयस्क लोग ही इसे समझ सकते हैं। जब बाबा इन विषयों पर बोले थे, वह बहुत सरल था। एक बच्चा भी उसे समझ सकता था।''

अभी हाल ही में, मैं लम्बे समय से रहने वाले एक अन्तेवासी से बात कर रहा था जिसने बाबा के मूल शब्दों पर शोध किया था और बाबा की कई पुस्तकों का सम्पादन किया था। उसने मुझसे कहा, ''किसी भी पुस्तक में बाबा के मूल शब्द नहीं हैं जो उन्होंने (बाबा ने) बोलकर लिखाये थे। उस व्यक्ति को, जो उन्हें संक्षेप में लिखता था, स्वतन्त्रता दी गई थी कि वह जो उचित समझे उसका सम्पादन करे। यह सम्पादित विवरण था जो बाबा के पास भेजा गया था और बाबा ने इसे स्वीकृति दी थी। मूल शब्द जो बाबा द्वारा दिये गये थे कहीं भी प्रकाशित नहीं किये गये हैं।''

एरच हमसे बारम्बार कहते थे कि बाबा ने प्रायः मण्डली के सदस्यों को बतलाया था कि उनके साथ जो कार्य वह कर रहे थे, वह छोटे स्तर पर था और उसका जो विश्वव्यापी प्रभाव अनुभव किया गया था, वास्तव में विश्वव्यापी था। एरच ने कई उदाहरण दिये कि बाबा ने कैसे ऐसा कार्य किया था। उनके अनुसार, जब बाबा ने आरणगाँव के स्कूल के बच्चों के मध्य अस्पृश्यता को समाप्त किया था, तुरन्त ही पूरे भारत में अस्पृश्यता के विरुद्ध आन्दोलन प्रारम्भ हो गया था।

दूसरा आन्दोलन वह सख्ती थी जिसके साथ वह प्रारम्भ के वर्षो में महिला मण्डली को रखते थे जहाँ वे न केवल सख्ती से पुरूषों से अलग रखी जाती थीं, बल्कि उनके लिये कठोरतापूर्वकता से उनके बालों को ढकने के लिये स्कार्फ और बाहों को ढकने वाले लम्बी आस्तीन के ब्लाउज के साथ एक निर्धारित वेशभूषा थी। महिलाये प्रारम्भ में शाब्दिक रूप से बाबा के द्वारा कैद में थीं। जैसे ही महिला मण्डली, विशेषरूप से पश्चिम की यात्रा के दौरान, कैद से बाहर लाई गई, स्त्रियों की स्वतन्त्रता का एक विश्वव्यापी आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। महिलाओं ने, जिनके साथ द्वितीय श्रेणी के नागरिक के रूप में व्यवहार किया जाता था, पुरूषों के साथ उन सभी क्षेत्रों में प्रतिद्वन्द्विता प्रारम्भ कर दी जिनमें केवल पुरूषों का एकाधिकार माना जाता था।

एरच बाबा के कार्य के माइक्रोकॉज्म और उसके विश्वव्यापी प्रभाव (मैक्रोकॉज्म) के दूसरे कई उदाहरण देते थे। वह इस पर जोर देते थे कि जो भी

मेहेराबाद, मेहेराजाद और ट्रस्ट कम्पाउण्ड में हो रहा था, उसके सन्दर्भ में अभी भी वही मामला था। स्थानीय स्तर पर होने वाली परिस्थितियाँ विश्व की अधिकांश घटनाओं में दिखलाई पड़ती थीं। इसके साथ—साथ, जब बाबा की तीन चौथाई दुनियाँ के विनाश की भविष्यवाणी के विषय में पूँछा जाता था कि कब घटित होगी, एरच उत्तर देते थे कि यद्यपि कोई भी सही समय न तो बतला सकता था या भविष्यवाणी कर सकता था फिर भी बाबा ने संकेत दिया था कि ऐसा केवल सभी मण्डलीजनों के जाने के बाद होगा। इस आधार पर जो कि बाबा ने वर्षो से इस विषय में कहा था कि कैसे उन्होंने अपनी मण्डली का प्रयोग सार्वभौमिक कार्य के लिये किया था, एरच अनुभव करते थे कि प्रत्येक मण्डली सदस्य के जाने के साथ, दुनियाँ की परिस्थिति धीरे—धीरे बिगड़ती जायेगी।

उन्होंने इसकी तुलना एक पुरानी बिल्डिंग के गिरने से की। यदि तुम किसी पुरानी बिल्डिंग को गिराना चाहते हो, तुम बिल्डिंग के विभिन्न अति महत्वपूर्ण खंबों पर विस्फोटक पदार्थ लगा देते हो। जैसे ही तुम एक के बाद एक विस्फोट करते हो, बिल्डिंग के मुख्य ढाँचे में दरारें दिखने लगती हैं और जब अन्तिम विस्फोट होता है, अचानक बिल्डिंग ध्वस्त् हो जाती है। एरच अनुभव करते थे कि मण्डली के प्रत्येक सदस्य के गुजरने के बाद, बाबा की भविष्यवाणी के अन्तिम परिणाम की ओर ले जाते हुए ऐसे विस्फोट दुनियाँ में होंगे।

एक अवसर पर मैंने संयोगवश एरच से कहा, ''एक तरफ, बाबा तीन चौथाई दुनियाँ के विनाश होने की बात करते हैं। दूसरी तरफ, वह (बाबा) मानवता के उनकी ओर बड़ी संख्या में आने की बात करते हैं। वह नई मानवता की भी बात करते हैं जो प्रेम, सामन्जस्य और बन्धुत्व का आध्यात्मिक जीवन जियेंगे। ये मुझे पूर्णतया विरोधी कथन प्रतीत होते हैं और इसलिये मुझे आश्चर्य होता है कि आखिरकार कौन सी घटना पहले होगी।'' एरच ने उत्तर दिया, ''यह दुनिया का विनाश है जो अन्त में मनुष्य जाति को ईश्वर की ओर और बड़ी संख्या में झुण्ड के रूप में बाबा की ओर मोड़ेगा।'' विनाश का पहलू समाप्त होने के बाद, नई मानवता शुरू होगी जिसके विषय में बाबा बात करते हैं।''

इन सभी घटनाओं के आधार पर, मैंने उस प्रत्येक बड़ी उथल पुथल पर ध्यान देने का प्रयत्न किया जो प्रत्येक मण्डलीजन के गुजरनेके बाद घटित हुई मानी जाती थी। १९८९ में, जब मेहेरा ने शरीर छोड़ा, तीन बड़ी क्रान्तियाँ दुनियाँ

में थोड़े ही समय बाद घटित हुई। चीन में तिआनन्मेन स्क्वेयर जनसहार हुआ जहाँ चीन के सैनिकों ने तिआनन्मेन स्क्वेयर में प्रजातन्त्र की माँग करने वाले विद्यार्थियों की हत्या कर दी थी। पूर्व और पश्चिमी जर्मनी के बीच की दीवार ढह गई थी। साम्यवाद के समाप्त होने से पूर्व जर्मनी और जर्मनी एक हो गये थे। उसी समय, साम्यवाद का रूस में अन्त हो गया।

इसी समय के आस–पास, मनी ने एक समाचार पत्र की कटिंग (कतरन) देखी जिसमें एक प्रसिद्ध भारतीय ज्योतिषी ने कहा था कि एक महान महिला आध्यात्मिक ऊर्जा पृथ्वी पर मुक्त होगी जो दुनियाँ में बहुत उथलपुथल और विनाश लायेगी। मनी मण्डली हाल में प्रायः इस विषय पर बातचीत करतीं थीं। फिर भी, कई वर्षो तक किसी भी दूसरे मण्डली के सदस्य ने शरीर नहीं छोड़ा और इसलिये मैं मनी के और बाद में खुर्शीद के गुजर जाने के बाद उस समय घटित ऐसी किसी घटना का रेकॉर्ड रखना पूरी तरह भूल गया।

जब एरच ने शरीर छोड़ा, तब कुछ दिनों के अन्दर ही ग्यारह सितम्बर को न्यूयार्क, अमेरिका में ट्विन टॉवर पर आक्रमण हुआ था। टीवी पर उसे देखकर और ट्विन टॉवर को ताश के पत्तों के समान ढहते देखकर, मुझे एरच की बतलाई हुई कहानी याद आ गई कि कैसे जब वह न्यूयार्क में बाबा के साथ थे , बाबा ने कुछ बड़ी इमारतों की ओर इशारा किया था और एरच से कहा था, ‘‘इन इमारतों को देखो। एक दिन ये ताश के पत्तों की तरह ढह जायेंगी।’’ यह घटना के बाद था जब मैंने दूसरे मण्डली सदस्यों के गुजर जाने के बाद होने वाली घटनाओं पर ध्यान देना प्रारम्भ किया था।

जब अलोबा गुजर गये तब कुछ सप्ताहों के अन्दर बुश ने पहली बार ईराक पर आक्रमण करने के अपने इरादे की घोषणा की थी यद्यपि आक्रमण काफी बाद में हुआ था। गौहर के गुजरने के बाद, ईराक में अल–कायदा का पुनरूत्थान हुआ। अमेरिका और ब्रिटिश ने ईराक के युद्ध में विजय पाई और चीजें तुलनात्मक दृष्टि से कुछ समय के लिये शान्त हो गई, लेकिन अल–कायदा के पुनरूत्थान ने, जो गौहर के गुजरने के समय ही संयोगवश हुआ था, वहाँ पर पड़ी हुई अमेरिका और ब्रिटेन की सेनाओं के लिये बहुत सी समस्यायें उत्पन्न कर दीं थीं। इसके थोड़े समय के बाद की सुनामी की लहर आई जिसने कई देशों में लाखों लोगों को नष्ट कर दिया था। जंगले मास्टर के गुजरने के बाद जिन्होंने बाबा की सेवा वर्षो तक की थी, विश्व व्यापी व्यापार में आई मन्दी ने विश्व की अर्थ व्यवस्था पर प्रहार किया था। जब केटी गुजर गई,

स्वाइन फ्लू जैसी महामारी पूरी दुनियाँ में फैल गई और कई लोगों की मृत्यु हो गई जबकि अरनवाज के गुजरने के बाद तालिबान ने पाकिस्तानी सीमा क्षेत्र में पाकिस्तानी सेना पर आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। इससे बाध्य होकर पाकिस्तानी सेना को तालिबान के विरुद्ध खुला युद्ध करना पड़ा जिन्होंने इसकी शुरूआत की थी।

कई पाठक इस पर विश्वास नहीं करेंगे, लेकिन मेरे लिये यदि मण्डली ने ऐसा कहा है, विशेष रूप से यदि किसी ऐसे व्यक्ति ने जैसे एरच, मनी या भाऊजी ने यह कहा था, तब मैं इसे एक स्वीकृत तथ्य के रूप में मानता हूँ कि बाबा ने स्वयं ऐसी चीजें उनसे (मण्डली से) कही थीं।

बाबा की चमक से अन्धे हो गये

कई पाठकों ने असली खजाना का आनन्द लिया है और मण्डली के सन्देशों के आधार पर नई दिशायें प्राप्त की हैं। इसने उन लोगों में मण्डली की स्थिति के प्रति और अधिक जागरूकता और उनके तथा उनके कार्यों के विषय में बेहतर समझ उत्पन्न की है। फिर भी, कुछ पाठकों ने मण्डली के नकारात्मक कार्यो के विषय में शिकायत करते हुए पत्र लिखे हैं और उनका गुणगान करने के लिये मेरी आलोचना की है। उनको मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ, ‘‘थोड़ा सा मूत्र (जैसे मण्डली के नकारात्मक कार्य) समुद्र (मण्डली की स्थिति) को कैसे प्रदूषित कर सकता है ?’’ मैंने दुनियाँ के सामने वही प्रस्तुत किया है जो मैंने और मेरे कई घनिष्ठ अन्तेवासियों ने उनको (मण्डली को) वर्षों से कहते हुए सुना है। उसे स्वीकार अस्वीकार करना प्रत्येक का अपना चुनाव है। प्रत्येक अपनी अज्ञानता को व्यक्त करने के लिये स्वतन्त्र है जैसे कि मैं अपनी अज्ञानता को व्यक्त करने के लिये स्वतन्त्र हूँ। अपने सभी अनुभवों और हर्ष को व्यक्त करने के लिये मैं स्वतन्त्र हूँ जिससे मेरा हृदय भरा हुआ है, जो कि उनकी उपस्थिति को प्रतिदिन अधिक और अधिक अनुभव करता है, मैं अभी भी अज्ञानता में जकड़ा हुआ हूँ। मुझे एरच के शब्द याद आते हैं, ‘‘लोग जो व्यक्त करते हैं, वह उनकी अज्ञानता का स्तर है। ज्ञान जानता है कि ईश्वर के अतिरिक्त कुछ नहीं है।’’ इस बात को और अधिक समझाने के लिये वह इसे अन्य विभिन्न तरीकों से भी प्रस्तुत करते हैं। ईश्वर प्रत्येक चीज और प्रत्येक व्यक्ति में नहीं है, ईश्वर प्रत्येकचीज और प्रत्येक व्यक्ति है। केवल वह ही

हैं–उनके अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।'' इसे अपने लक्ष्य के रूप में अपनाते हुए, मैं भी उनको याद करने में वृद्धि करके इसे अपना मार्ग बना रहा हूँ जिससे मैं किसी दिन न केवल मण्डली में जैसा मैं अब बाबा को महसूस कर रहा हूँ, बल्कि प्रत्येक चीज और प्रत्येक व्यक्ति में भी उनको देख सकूँ और उनको अनुभव कर सकूँ–जो वह वास्तव में हैं।

मेरी एक बाबा प्रेमी दम्पत्ति से मित्रता थी जिन्हें मैं कई वर्षों से जानता था। महिला का सौभाग्य था कि उसने अपनी जिन्दगी में कई बार बाबा का दर्शन और साथ अल्प अवधि के लिये प्राप्त किया था। मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि यह महिला प्रायः मण्डली के विषय में आलोचनात्मक बातचीत करती थी और उनके (मण्डली के) प्रति उसका व्यवहार भी अपमानजनक था। वह इस तरह से व्यवहार करती थी जैसे कि वह मण्डली से ज्यादा महान थी और उनसे अधिक बाबा के मार्ग के विषय में जानती थी। बाबा के साथ अपना सीधा सम्पर्क होने के कारण, जो कि महान था लेकिन अभी भी संक्षिप्त था, वह अनुभव करती थी कि बाबा की दृष्टि में मण्डली की अपेक्षा वह अधिक खास थी और उसके व्यवहार से यह प्रगट होता था।

दूसरी ओर, पुरुष बाबा से नहीं मिला था और मण्डली के प्रति बहुत समर्पित था। उसने असली खजाना पढ़ा था और मुझे यह बतलाने के लिये फोन किया था कि उसने इसका कितना आनन्द लिया था। हम मण्डली के विषय में अपने अनुभव एक दूसरे के साथ बाटने लगे। जब उसने बारम्बार मण्डली की महानता को निश्चयपूर्वक कहा, मैंने नम्रतापूर्वक मण्डली के प्रति उसकी पत्नी के व्यवहार के विषय में उससे चर्चा की। मैंने उल्लेख किया कि कैसे मैंने ऐसा ही व्यवहार कुछ उन लोगों में भी देखा था जो बाबा से मिल चुके थे लेकिन रात और दिन उनके (बाबा के) साथ नहीं रहे थे जैसे मण्डली रहती थी।

उसने मुझसे कहा, ''तुम्हे यह समझना होगा कि वे लोग, जो बाहरी दुनियाँ मे रहते थे और बाबा से मिल चुके थे, शाब्दिकरूप से उनके दैवीपन की चमक से अन्धे हो गये थे क्योंकि उन्होंने (बाबा ने) उनके लाभ के लिये पूरा तेज खोल दिया था। जो उनकी मण्डली थी उन्होंने ऐसा कुछ भी अनुभव नहीं किया था। उन्होंने केवल उनके मानवीय पक्ष और परेशान करने का अनुभव किया था,

जो कि वास्तव में असली उपहार है जो बाबा, एक आध्यात्मिक गुरु के रूप में, अपने निकट मण्डली के सदस्यों को दे सकते हैं। दूसरे प्रेमियों को, उन्होंने अपनी दैवीय चमक के रूप में लालीपॉप दिया था जिसने अधिकांश लोगों को चकाचौंध कर दिया था और कुछ को अन्धा कर दिया था। यह वे अन्धे लोग थे जिन्होंने यह सोचना प्रारम्भ कर दिया कि वे मण्डली की अपेक्षा महान थे और वे उनके (मण्डली के) विरुद्ध हो गये।

''साथ ही साथ, जो उनकी चमक से चकाचौंध हो गये थे वे मण्डली की महानता को नहीं देख सके। अधिक से अधिक वे उनको सम्मान दिलाते थे और कभी–कभी वे उनकी आलोचना करते थे या अपमान भी करते थे। क्योंकि वे जिन्होंने बाबा को नहीं देखा था, वे मण्डली की महानता का अनुभव करते थे और उनके माध्यम से बाबा की उपस्थिति का अनुभव कर सकते थे। कुछ उनके माध्यम से बाबा के चकाचौंध करने वाले दैवीयपन को प्रवाहित होते हुए भी अनुभव करते थे जैसा कि कई लोगों का अनुभव था जो कि अन्तिम दर्शन के लिये आये थे। हम इस विषय मे प्रायः तीर्थ यात्रियो की कहानियों में भी सुनते है। वे मण्डली में बाबा को देखते हैं जैसे कि बाबा वहाँ हैं। जो लोग बाबा से मिले थे,उनकी तुलना में नये आने वालों को ऐसे अनुभव हो रहे हैं। मेरे लिये यह सब देखना एक याद दिलाता है–कि यह सब बाबा हैं। उनके अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। वे जो बाबा से मिलने के अपने महत्व के मिथ्यापन में जकड़े हुए हैं, बाबा की उपस्थिति का लाभ नहीं उठा पाते जो बाबा हमारे लाभ के लिये मण्डली के रूप में अपने पीछे छोड़ गये है।''

उसने आगे कहा,''मुझे यह कहते हुए बात समाप्त करने दो। दुनिया ने बाबा के दैवीपन का अनुभव किया था जबकि मण्डली ने उनकी (बाबा की) मानवता ,उनकी निकटता,उनकी अन्तरंगता का अनुभव किया था। उसी तरह दुनियाँ ने मण्डली को मानव के रूप में अनुभव किया जबकि वे लोग जो उनसे प्रेम करते थे, उनकी सेवा करते थे और उनके साथ रहते थे, उन्होंने उनके दैवीपन को देखा जैसे तुमने देखा था। निकट के लोगों ने अन्तरंगता और मानवता के नीचे–छुपे हुए दैवीपन को देखा था।'' जब उसने बोलना समाप्त किया, मैंने बाबा को न केवल अपना सन्देह दूर करने के लिये, बल्कि अपने भौतिक रूप की झलक न देने पर भी धन्यवाद दिया क्योंकि मैं इक्कीस वर्षों तक मण्डली के माध्यम से उनकी उपस्थिति का आनन्द ले सका ।आज भी, जब

मैं भाऊजी या मेहेरवान को फोन करता हूँ, मेरा ह्रदय उनकी (बाबा की) उपस्थिति के अनुभव से हर्ष से भर जाता है जिसमें मैं डूब जाता हूँ। मैं अनुभव करता हूँ जैसे कि मैं बहुत दिनों तक समाधि में लीन हो जाता हूँ और अपनी अगली फोन कॉल के लिये कोई बहाना ढूंढता हूँ।

उपसंहार

मैंने यह पाया है कि कई बाबा–प्रेमियों ने प्रायः इस विषय में सन्देह करते हुए मेरे साथ इस प्रकरण की चर्चा की है कि वर्तमान मण्डली के सदस्य मण्डल के सदस्य माने जा सकते हैं या नहीं। मैं व्यक्तिगत रूप से विश्वास करता हूँ कि जब बाबा मेहेरा को अपनी राधा, मनी को अपनी सुभद्रा, एरच को अपना पीटर और भाऊजी को अपना जॉन कहकर पुकारते थे, वह उनको मण्डल के सदस्य होने की स्थिति भेंट कर रहे थे। मेरे लिये यह स्पष्ट संकेत है कि बाबा ने हमारे लिये उन्हें अपने पीछे छोड़ा था क्योंकि पीटर और जॉन ईसामसीह के मण्डल के सदस्य थे और राधा और सुभद्रा प्रभु कृष्ण के मण्डल की सदस्य थीं।

अगला प्रकरण इस विषय में उठाया गया कि बाबा ने क्या कभी शब्दों द्वारा या अन्य किसी तरीके से संकेत दिया था कि वे चेतना में उनके (बाबा के) साथ थे लेकिन वे पर्दे के पीछे थे। मण्डली के सदस्यों ने स्वयं विभिन्न अवसरों पर यह कहा है और मुझे विश्वास है कि वे सच बोल रहे थे। मेरे लिये भी 'मेहेर प्रभु' और 'डिस्कोर्सेज' से लिये गये बाबा के निम्न कथन इस ओर स्पष्ट संकेत हैं।

अपने मण्डल के गहराई से जुड़े शिष्यों के सन्दर्भ में, बाबा कहते हैं, ''वे मेरे साथ एक हैं लेकिन पर्दे के पीछे होने के कारण, यह नहीं जानते।'' लॉर्ड मेहेर पृष्ठ १३७१ (१३७१), मेहेर मौनवाणी प्रकाशन (जून १६३४–अगस्त १६३४)।

डिस्कोर्सेज से ''अवतार के अवतरण की प्रक्रिया अद्वितीय है। भौतिक शरीर धारण करने और द्वैत की दुनियाँ में उतरने (नीचे आने) के पहले, वह स्वयं को और अपने मण्डल के सदस्यों को विशेष प्रकार के संस्कार देते हैं जो विद्न्यानी संस्कारों के रूप में जाने जाते हैं।''

बाबा के कथन के विषय में दिलचस्प बात यह है कि मानव शरीर धारण करने और माया (द्वैत) में आने के पूर्व ही वह स्वयं को और अपने मण्डल के सदस्यों को एक जैसे विद्न्यानी संस्कार देते हैं और ऐसा वह अपने मानव रूप

में जन्म लेने के पहले करते हैं। बाद में बाबा कहते हैं, ''भौतिक शरीर में अवतरण के पहले विद्न्यानी संस्कारों को लेना स्वयं पर और अपने मण्डल के सदस्यों पर एक पर्दा डालने के समान है।''

पुनः मैं इसमें दिलचस्प बात यह पाता हूँ कि यह प्रक्रिया अवतरण के पहले बाबा द्वारा प्रारम्भ कर दी जाती प्रक्रिया अवतरण के पहले बाबा द्वारा प्रारम्भ कर दी जाती है और उसके बाद में नहीं की जाती।

''विद्न्यानी संस्कारों के कार्य करने का तर्क आवश्यकरूप से अस्तित्व की एकता के साक्षात्कार को आमन्त्रित करता है। इसलिये वे एकता की दहलीज के रूप में माने जाते हैं,''

''मण्डल के सदस्य विद्न्यानी संस्कारों के पर्दे के पीछे तब तक रहते हैं जब तक वे अवतार के द्वारा निश्चित किये गये समय पर ईश्वर का साक्षात्कार प्राप्त नहीं कर लेते हैं।''

अवतार के द्वारा जब वे साक्षात्कार प्राप्त कर लेते हैं, विद्न्यानी संस्कार जो वे अपने साथ लाते हैं पर्दा नहीं बनाते बल्कि कुछ लोगों के लिये योगायोग संस्कार हो जाते हैं–पृथ्वी पर दैवीय योजना को पूरा करने के लिये केवल एक यन्त्र के रूप में कार्य करते हैं।''

उपरोक्त 'डिस्कोर्सेज' सातवाँ भारतीय संस्करण २०००, मेहेर मौनवाणी पब्लिकेशन्स के पृष्ठ संख्या २६१ और २६२ पर प्रकाशित, से लिया गया है।

'अनन्त बुद्धिमता ' पुस्तक में पृष्ठ संख्या ५६ (५६) पर बाबा कहते हैं कि, ''पूर्ण योगी, मण्डल के सदस्य और सद्गुरु खुदी (Self) का अनुभव जागृत अवस्था में करते हैं।'' (प्रारम्भिक वर्षों में बाबा ने सद्गुरु और अवतार के बीच अन्तर नहीं किया था। काफी लम्बे समय से अन्तेवासियों और तीर्थयात्रियों ने भाऊजी को प्रायः यह कहते सुना है कि कैसे, बाबा के प्रगटीकरण के समय, वे सभी लोग जिन्होंने मण्डली को परेशान किया था, अपने कार्यों पर पश्चाताप करेंगे और रोयेंगे जब वे अपनी गल्ती का एहसास करेंगे, लेकिन उनके लिये काफी देर हो चुकी होगी। मुझे शत् प्रतिशत निश्चय के साथ विश्वास है कि ऐसा ही होगा।

मैं पाठकों का ध्यान उस ओर आकर्षित करना चाहता हूँ जो बाबा ने अक्टूबर १६२६ (१६२६) में रूस्तम ईरानी (आदी के भाई) से अपने कार्य की

वास्तविक प्रकृति के सन्दर्भ में कहा था जब वह (बाबा) मेहेराबाद में अपनी गतिविधियों को बन्द कर रहे थे। ''संक्षेप में, अवतार का सबसे बड़ा कर्तव्य सर्व प्रथम अपने मण्डल के सदस्यों को तैयार करना है और इन लोगों को साक्षात्कार प्रदान करना है। मैं इस कार्य में विलम्ब नहीं कर सकता। मुझे यह निश्चय करना है कि मेरे आन्तरिक मण्डल की तैयारी पूरी हो चुकी है। तब दूसरे नम्बर पर, मण्डल के बाहर के दूसरे लोगों को आध्यात्मिक ठेल देना है। और तीसरे नम्बर पर, मुझे दूसरे लोगों को कुछ भौतिक लाभ देना है जो मेरी सहायता के पात्र सिद्ध होते हैं।''

यह मानकर कि उनका मुख्य कार्य वह है जो उन्होंने ऊपर कहा है—यह केवल १९६८ (१९६८) की समाप्ति के समय बाबा ने कहा था कि उन्होंने अपना कार्य अपने शत् प्रतिशत सन्तोष के साथ पूरा कर लिया था। थोड़े समय के पश्चात् ही बाबा ने अपना शरीर त्याग दिया था और मण्डली ने उनके प्रेमियों का मार्गदर्शन करना प्रारम्भ कर दिया था। एरच सहित अधिकांश मण्डली ने स्वीकार किया था कि केवल उनके (बाबा के) अपना शरीर छोड़ने के बाद ही उन लोगों में एक नई जागरूकता आई थी कि बाबा वास्तव में कौन हैं। मेरा विश्वास है कि मण्डली में यह आन्तरिक परिवर्तन केवल बाबा का कार्य शत् प्रतिशत पूरा हो जाने के बाद ही आया था। मेरा विश्वास है कि उन्होंने (बाबा ने) अपना महानतम कर्तव्य 'अपने मण्डल' के सदस्यों को तैयार करना और उन लोगों को साक्षात्कार प्रदान करना' पूरा कर लिया था। वास्तव में, मेरे लिये यह अब विश्वास का मामला नहीं है बल्कि यह सभी निश्चितताओं का निश्चय है। एक पूर्ण धारण। अधिकांश लोगों ने, जिन्होंने उनको देखा था और उनके साथ बातचीत की थी, वह केवल थोड़ी अवधि के लिये, कुछ सप्ताहों से लेकर कुछ माह तक की अवधि के लिये ही ऐसा किया था। उन्होंने केवल मण्डली के कार्यों को देखा था। मैं उनके साथ रहता था और उन्होंने मुझे अपने हृदय दिखलाये थे जहाँ तुम केवल बाबा और उनके अतिरिक्त कुछ नहीं पाओगे।

माना कि मैं अपनी धारणाओं के विषय में गलत हो सकता हूँ। फिर भी मैने क्या खोया है। कुछ भी नहीं, क्योंकि बाबा जानते हैं कि जो प्रेम, सेवा और आज्ञाकारिता मैंने उन्हें (मण्डली को) अर्पित की थी, वह उनके (बाबा के) लिये था। अब हम यह मान लेते हैं कि मैं अपनी धारणा के विषय में सही हूँ—तब मैंने क्या पाया है? मैंने हर वह चीज प्राप्त कर ली है जो प्राप्त करने योग्य थी और

वह भी इसी जिन्दगी में प्राप्त कर लिया है। मैं अपने प्रभु, अपने ईश्वर, अपने सृजनहार से प्रेम करने, उनकी सेवा करने और उनकी आज्ञा पालन करने को अपनी खुशनसीबी महसूस करता हूँ। किसी ऐसे व्यक्ति के लिये जिसने जिन्दगी एक नास्तिक के रूप में प्रारम्भ की थी, क्या इससे बेहतर कोई अन्त हो सकता था? मैंने ईश्वर को चुनौती दी, उनकी अवज्ञा की, उन लोगों का मजाक उड़ाया जो उनमें विश्वास करते थे और उन लोगों को मैं परेशान भी करता था। बदले में, सर्वाधिक दयालु करूणामय और प्रेममय होने के कारण उन्होंने मुझ पर क्षमा, समझदारी और प्रेम की बौछार करके मेरे पूरे अस्तित्व को अपनी उपस्थिति से भर दिया था।

मेरे जैसे किसी व्यक्ति के लिये उनके प्रेम और उनकी चिन्ता ने इस दुराग्रही बच्चे को विनाश के मार्ग पर चलने से रोक दिया। यह कहा जाता कि, ''यदि तुम उनकी ओर एक कदम बढ़ाते हो, वह तुम्हारी ओर दस कदम बढ़ाते हैं।'' मेरा अनुभव भिन्न है। मेरे छोटे से छोटे ईमानदारी से किये गये प्रयत्न के संकेत पर, वह मुझे पूरे रास्ते ले जाने के लिये दस हजार कदम बढ़ाकर दौड़ते हुए आये। ऐसा उनका प्रेम है जो सृष्टि में प्रत्येक को और सभी को प्राप्त करने के लिये उपलब्ध है। देरी क्यों? क्यों नहीं उनको और उनकी कृपा के लिये इशारा करते जो अभी सबसे अधिक उपलब्ध है? मैं अब शतप्रतिशत धारणा के साथ यह सच कह सकता हूँ कि मैं मण्डली के साथ नहीं बल्कि ईश्वर के साथ रहता था। वास्तव में वे पर्दे के पीछे ईश्वर हैं।

अवतार मेहेरबाबा की जय !!!

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

रूस्तम बी. फलाहाटी

सी/२०१, किशान्त बिल्डींग, गन पाउडर रोड,

मझगाँव, मुंबई -४०००१०

फोन (०२२-)२३७७६३१३, (०२२) २३७५५६०६

ई-मेल : yougoicome@rediffmail.com